राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों का
तुलनात्मक अध्ययन

राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

(राजस्थान विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए
स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

डॉ० जगमल सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय
काचीपुर, इम्फाल-795003, मणिपुर

पंकज पब्लिकेशन, गढ़मुक्तेश्वर

राजस्थान और गुजरात के
लोक देवताओं को
सादर समर्पित !

भूमिका

गत लगभग दस वर्षों से मैं लोकगीतो के क्षेत्र म कार्य कर रहा हू। एम० ए० उत्तरार्द्ध करते समय मैंने 'राजस्थान के त्योहार गीत' विषय पर लघु-शोध प्रबन्ध लिखा था। इससे पूर्व भी लोकगीत सबधी मेरे कुछ लेख विभिन्न पत्रिकाओ म प्रकाशित हुए थे। उदयपुर विश्वविद्यालय से 'राजस्थानी लोकगीतो म जन जीवन का चित्रण' विषय पर मैंने शोधार्थी के रूप मे पजीकरण करवाया था किन्तु कुछ तकनीकी कठिनाइयों के कारण मैं उसको प्रस्तुत न कर सका। बाद म श्रीयुत डा० शिवकुमारजी शुक्ल ने उक्त विषय के स्थान पर लोकगीतों के तुलनात्मक अध्ययन पर शोध प्रबन्ध लिखने की प्रेरणा दी। मैं उन दिनों सयोग से राजकीय कॉलेज, सिरोही म प्राध्यापक था जो राजस्थान और गुजरात का सीमावर्ती स्थान है। उन दिनो मैं गुजराती गीतो का कुछ अध्ययन-सकलन कर रहा था, अत मैंने इस सकलन एव अध्ययन का सदुपयोग करने का निश्चय कर लिया। साहित्यरत्न के लिए पठित गुजराती का ज्ञान भी मानो आह्वान कर रहा था, इसलिए मैंने जब डॉ० शुक्ल के सम्मुख राजस्थानी और गुजराती लोकगीतो के तुलनात्मक अध्ययन का प्रस्ताव रखा तब आपने उस विषय को तो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया ही, साथ ही यह भी कहा कि राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए इस प्रकार का कार्य वस्तुत उत्तम प्रयास है उनकी प्रेरणा से मैंने इसी विषय पर कार्यारम्भ कर दिया।

विषय के महत्त्व के सम्बन्ध म कुछ कहने से पूर्व डॉ० देवराज उपाध्याय का कथन उद्धृत करना चाहता हू। उन्होने अपने सम्पादित ग्रथ 'अध्ययन और अन्वेषण' मे लिखा है—श्री जगमलसिंह ग्रामीण का लेख—'लोकगीतो मे कल्पना का अतिरेक' किस श्रेणी म रखा जाए ? मेरा ख्याल है कि लोकगीत तो पुराने होते ही हैं, भले ही वे आज प्रचलित हो। उनम सामूहिक चिन्तन अधिक रहता है वैयक्तिक कम। वे मूलत समाज की कृति हैं। ठीक इसके विपरीत शिष्ट लिखित साहित्य की रचना मे रचयिता का व्यक्तित्व प्रबल रहता है। परन्तु, चूकि इस लेख मे किसी नूतन तथ्योपलब्धि की बात नहीं, मतलब नए लोकगीतों की खोज नही, केवल प्राप्त लोकगीतो म एक समानधर्मी सूत्र

की खोज की गई है, अत इस लेख को हम अध्ययन ही कहेगे।'[1] डॉ० उपाध्याय का यह कथन इसलिए बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वे यहा 'अध्ययन' और 'अन्वेषण' के बीच मे कोई लकीर खीचना चाहते है। वास्तव मे केवल प्राप्त लोकगीतो मे (अर्थात् सग्रहो मे उपलब्ध लोकगीतो मे) किसी समानधर्मी सूत्र की खोज करना अध्ययन ही कहा जा सकता है, किन्तु जब उस अध्ययन मे स्वय सकलित अनेकानेक गीतो के अध्ययन को जोडकर किसी नवीन तथ्य की शोध की जाय, या उस तथ्य को नए रूप मे प्रस्तुत किया जाय, तब उसको 'अन्वेषण' कहना ही उचित होगा। तुलनात्मक अध्ययन से अन्वेषण और अधिक निखर जाता है। अध्ययन तो प्रबन्ध का शीर्षक है ही, क्योकि इसमे प्राप्त लोकगीतो और सकलित लोकगीतो का तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

राजस्थानी और गुजराती लोकगीतो के सकलन एव अध्ययन का यह प्रथम प्रयास नही है, बल्कि इन लोकगीतो के विभिन्न पहलुओ का निरूपण पहले भी किया जा चुका है। किन्तु इन दोनो भाषाओं का यह कार्य अलग-अलग किया गया है, जबकि यह अध्ययन उन भाषाओं के तुलनात्मक दृष्टिकोण को लेकर प्रस्तुत किया जा रहा है, यही इसकी प्रमुख नवीनता है। ऐसा विश्वास है कि लोकगीतो के क्षेत्र की अध्ययन परम्परा को यह शोध-प्रबन्ध एक नवीन दिशा प्रदान कर सकेगा, जिससे भविष्य मे भी इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन अधिकाधिक मात्रा मे किए जा सकेंगे—यही इस ग्रथ का महत्त्व होगा।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए विभिन्न क्षेत्रो मे आजकल विविध प्रयत्न किए जा रहे हैं। दो प्रान्तो के, दो भाषाओ के लोकगीतो का यह अध्ययन भावात्मक एकता के क्षेत्र मे वस्तुत. एक ठोस साहित्यिक प्रयास है, जो दो भिन्न भाषा-भाषी लोगो को एक-दूसरे के निकट लाने का एक सच्चा प्रयोगात्मक कदम कहा जा सकता है।

राष्ट्रभाषा के सदर्भ में हिन्दी वालो पर प्राय यह आरोप लगाया जाता है, कि वे अन्य प्रान्तो की भाषा सीखने को तैयार नही है और फिर बदले की भावना से यह भी कहा जाता है कि तो फिर अन्य भाषा-भाषी ही, हिन्दी क्यो सीखें। ऐसे लोगो के इस आरोप को निराधार सिद्ध करने के लिए भी यह शोध प्रबन्ध एक प्रमाण हो सकेगा।

इसके अतिरिक्त इस ग्रथ मे हिन्दुओ द्वारा गाये जाने वाले गीतों के साथ-साथ मुसलमानो द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतो का भी यथा स्थान उल्लेख किया गया है। पीरजी के गीत जो वस्तुत. धर्म-निरपेक्षता सिद्ध करने वाले हैं ही जिनका विवेचन देवी-देवता विषयक लोकगीतो के अन्तर्गत किया गया है। इस प्रकार साम्प्रदायिक-एकता के लिए भी इस शोध-ग्रथ का अपना महत्त्व है।

यदि देखा जाय तो लोकगीतो के असख्य पहलू है और उनका विभिन्न दृष्टिकोणो से अध्ययन भी किया जा सकता है, यथा—काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से, जन-जीवन के चित्रण के दृष्टिकोण से, समाज-शास्त्रीय दृष्टिकोण से भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि-

---

1 अध्ययन और अन्वेषण—सम्पादक—डॉ० देवराज उपाध्याय, वक्तव्य, पृ० ग

कोण से आदि-आदि । इन्ही दृष्टिकोणो के आधार पर दो क्षेत्रो या दो भाषाओं के लोकगीतों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे राजस्थानी और गुजराती के कतिपय लोकगीतों मे वर्णित कुछ महत्त्वपूर्ण पक्षो को ही इस तुलनात्मक अध्ययन का आधार बनाया गया है । कतिपय इसलिए, क्योकि लोकगीत तो असख्य हैं और इनके पक्ष भी असख्य हैं, अत सम्पूर्ण लोकगीतों का अथवा उनके सभी पक्षो का अध्ययन एव शोध प्रबन्ध मे यदि असम्भव नही, तो दुष्कर अवश्य है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे राजस्थानी और गुजराती लोकगीतों मे चित्रित उन कतिपय महत्त्वपूर्ण पक्षो को पाच अध्यायों के अन्तर्गत विभाजित करके उनसे सम्बन्धित गीतों का तुलनात्मक आधार पर विवेचन किया गया है । प्रथम अध्याय मे पारिवारिक जीवन-चित्रण से सम्बन्धित लोकगीतों का विवेचन किया गया है, जिसमे परिवार के रुचिकर एव अरुचिकर सबधो का निरूपण उल्लेखनीय है । द्वितीय अध्याय मे समाज के विभिन्न सस्कार सबधी लोकगीतो का विस्तार से विवेचन किया गया है । तृतीय अध्याय के प्रथम भाग के अन्तर्गत त्योहार-पर्व सम्बन्धी लोकगीतो का और उसके द्वितीय भाग मे धार्मिक गीतो का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ अध्याय के भी दो भाग हैं--प्रथम मे जीवन के आर्थिक पक्ष से सबधित गीतों का और द्वितीय मे राजनीति सबधी लोकगीतो का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । अत मे उपसहार मे समस्त शोध-प्रबन्ध मे निष्कर्ष रूप से प्राप्त तथ्यो का निरूपण किया गया है ।

लोकगीत सम्बन्धी इस अध्ययन के लिए आधारभूत सामग्री की उपलब्धि के तीन साधन हैं--एक तो राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो के प्रकाशित, अप्रकाशित एव प्रकाश्य सकलन, दूसरा, स्वय द्वारा सकलित लोकगीत और तीसरा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित सामग्री । यथावसर लोकसाहित्य सम्बन्धी अन्य ग्रथों से भी उदाहरण दिए गए हैं ।

इस प्रबन्ध को पूर्ण करने मे प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से जिन विद्वानो का सहयोग मिला है, उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा पुनीत कर्त्तव्य है। सर्वप्रथम (ससकोच) मैं अपनी धर्मपत्नी को साधुवाद देना अपना कर्त्तव्य मानता हू, जिन्होंने राजस्थानी लोकगीत सग्रह मे सहयोग दिया । इनके अतिरिक्त मेरी माताजी, बहिन माया व पिता जी के प्रति भी आभार प्रदर्शन आवश्यक मानता हू, जिन्होंने गीतो के सकलन मे निरन्तर सहयोग प्रदान किया । इनके अतिरिक्त भी कई पुरुषो एव महिलाओं ने, जो स्वय गायक थे या जिन्होंने गायको से सग्रहीत करके मुझे सामग्री प्रेषित की, उनको भी मैं साधुवाद का पात्र समझता हू ।

निर्देशक महोदय श्रीयुत डॉ० शिवकुमार जी शुक्ल का इस प्रबन्ध-निर्देशन के लिए हार्दिक आभार स्वीकारना ही पर्याप्त नही है, क्योकि आपका निर्देशन मुझे गत एक युग से भी अधिक समय से निरन्तर प्राप्त हो रहा है । आप मेरे मात्र गुरु-अध्यापक अथवा निर्देशक ही न होकर अभिभावक भी रहे हैं । आपका घर एव परिवार एक युग से भी अधिक समय से मेरे अपने घर-सा रहा है । समय-समय पर परिवार के गुरुजनो की भाति श्रीमान एव श्रीमती शुक्ल मुझे स्नेह, प्रेरणा एव प्रोत्साहन देते आये हैं । आदर

एव जयपुर मे रहते हुए आपसे मुझसे हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। अतः मैं उनके तथा उनके परिवार के प्रति न केवल हृदय से आभारी हू, बल्कि मैं सदैव उनका ऋणी रहूगा।

प्रोफेसर श्रीयुत पुष्कर चन्दर वाकर, रीडर, गुजराती फोक्लोर एण्ड लिटरेचर, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट का सहयोग इस शोध-ग्रथ को पूर्ण करने मे बराबर मिलता रहा है। आप स्वयं लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान हैं, आपने पत्रो द्वारा गुजराती लोकगीतो सम्बन्धी प्रत्येक समस्या का समाधान किया। यही नही आपने अपने लेखो की टकित प्रतिया भी प्रेषित करने का अनुग्रह किया। श्री भोगीलाल जे० साडेसरा, निदेशक, ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट, बडोदा ने भी समय-समय पर पत्राचार द्वारा सहयोग प्रदान किया, जिसके लिए मैं आभारी हू।

गुजराती लोक साहित्य समिति, अहमदाबाद ने मेरी प्रार्थना पर अनेक पुस्तकें एव पत्रिकाए प्रेषित की। अतः मैं समिति एव समिति के सचिव महोदय को भी हार्दिक धन्यवाद देता हू।

प्रत्यक्ष रूप से उक्त महानुभावो, विद्वानो एव सस्थाओ से मुझे जो सहायता प्राप्त हुई, उनका मैं ऋणी हू। अप्रत्यक्ष रूप से भी जिन विद्वानो के ग्रथो एव लेखो से मुझे जो प्रेरणा मिली है, मैं उनके प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रदर्शित करता हू। मेरे विद्यार्थी श्री शभूसिंह पवार, एम० ए० संस्कृत, हिन्दी, एल० एल० बी०, आर० ए० एस०, का सहयोग भी सदैव स्मरणीय रहेगा।

मेरे मित्र एव सम्बन्धी श्री दूर्दसिंह जी के सहयोग के बिना यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर सकना मेरे लिए असम्भव था—उनका मैं सदैव आभारी रहूगा।

इम्फाल
1 मई, 1986

—जगमलसिंह

विषय-सूची

तृतीय अध्याय

1

द्वितीय भाग : राजस्थानी एवं गुजराती धर्म-सम्बन्धी लोकगीत

(क) देवी देवताओं के गीत

(1) गणेश
(2) सरस्वती
(3) शिव-पार्वती
(4) सूरज
(5) चन्द्रमा
(6) इन्द्र
(7) जल देवता
(8) राम-सीता
(9) हनुमानजी
(10) कृष्ण राधा

लौकिक देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत

(क) क्रान्तिकारी वीरो के लोकगीत

(1) झूझारजी
(2) पाबूजी
(3) गोगाजी
(4) वीरवर तेजाजी महाराज
(5) बाबाजी रामदेवजी महाराज

अन्य लोक देवताओ के लोकगीत

(1) माता जी
(2) पितर-पितराणी
(3) सती माता
(4) भैरव जी
(5) शमलिया जी
(6) पीर जी

(ख) व्रत-उपवास सबंधी लोकगीत

(ग) अन्य विश्वासों से सम्बन्धित लोकगीत

(1) शकुन-अपशकुन सम्बन्धित लोकगीत
(2) नजर लगना
(3) डायन का विचार से सम्बन्धित लोकगीत
(4) गण्डे तावीज सम्बन्धी लोकगीत
(5) कामण या जादू-टोना सम्बन्धी लोकगीत
(6) शीतला माता से सम्बन्धित लोकगीत
(7) पुत्रादि दाता देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत

प्रथम अध्याय

राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतो में चित्रित पारिवारिक-सम्बन्ध

यदि व्यक्ति परिवार की प्रथम इकाई है, तो परिवार समाज की। अत हमे परिवार एव समाज की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए परिवार के सदस्यो की मनोवृत्ति, व्यवहार एव आपसी सम्बन्धो का विवेचन करना होगा। लोकगीत लोक-जीवन की सहज अभिव्यक्ति होते हैं। अत लोकगीतो मे चित्रित सम्बन्धो के विवेचन से पारिवारिक एव सामाजिक स्थिति का परिचय प्राप्त हो सकता है।

अत यहा राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतों का विवेचन तुलनात्मक दृष्टिकोण से किया जा रहा है।

परिवार के सदस्य एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हैं। इन सम्बन्धो के कारण तथा दैनिक जीवन मे व्यवहार के दौरान विविध प्रसग आते है, जिनके कारण सम्बन्ध रुचिकर अथवा अरुचिकर हो सकते हैं। अत हम परिवार के सदस्यो के सम्बन्धो को दो भागो मे विभक्त कर सकते है—

(1) रुचिकर सम्बन्ध, एव
(2) अरुचिकर सम्बन्ध।

प्रत्येक के अन्तर्गत विभिन्न सम्बन्धो को रखा जा सकता है। अतएव दोनो के अन्तर्गत रखे जाने वाले सम्बन्ध निम्न हो सकते हैं :

(1) रुचिकर सम्बन्ध

(अ) माता-पुत्र—राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो मे मा की पुत्र-प्राप्ति की उत्कृष्ट अभिलाषा का विशद वर्णन प्राप्त होता है। लोकगीतो मे पुत्र-प्राप्ति हेतु नारी विभिन्न देवी-देवताओ के आगे आंचल पसारकर पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना करती है। एक राजस्थानी लोकगीत मे भैरूजी को प्रार्थना करती हुई एक स्त्री कहती है कि कभी

भी मेरी कचुकी दूध से नही भीगी, न कभी मेरा कधा बालक की लार से भीगा। हे काशी के वासी भैरुजी ! मैं एक पुत्र बिना कुल मे बध्या हू।[1] नारी के हृदय मे मातृत्व की लालसा कितनी बलवती होती है यह इन पक्तियों से स्पष्ट है।

एक गुजराती गीत मे माता पुत्र को देवता द्वारा दिया हुआ अनमोल धन मानती है।[2]

इसी प्रकार एक नारी की प्रार्थना (किसी देवता से) देखिए। वह कहती है कि मेरा आगन लीपा पुता हुआ है अब दूध का पीने वाला देना।[3] यही भाव गुजराती गीत मे भी देखिए—गुजराती माता रन्नादे (देवी से) यही प्रार्थना करती है कि मेरा *आगन* लीपा-पुता है, इस आगन म पैर माडने वाला पुत्र दो।[4] उपर्युक्त उदाहरणो से माता की हृदयस्थ पुत्र-प्राप्ति की भावना स्पष्ट ज्ञात हो जाती है।

एक राजस्थानी लोकगीत मे पुत्र को मा की प्रसन्नता के लिए अपनी पत्नी को वन मे छोडना पडा। इससे मा का अह सन्तुष्ट हो गया। वह पुत्र को वधू को लौटा लाने की आज्ञा देती है। वह (पुन) पुन पत्नी को लौटा लाने के लिए जाता है, परन्तु उस समय तक उसकी पत्नी धरती मा की गोद मे समाधिस्थ हो जाती है। पुत्र रोता हुआ घर लौटता है। घर आकर वह यह घोषणा करता है—हे भाइयो ! सुनो, हे अडोसी-पडोसी लोगो सुनो ! मा का कहना मत मानना, मा तो घर नष्ट कराती है।[5] मा के प्रति सम्मान एव स्नेह के परिणामस्वरूप वह पत्नी को निर्वासित कर देता है, परन्तु उसी सती साध्वी के समाधिस्थ होने पर, उसके मन मे मा के प्रति वितृष्णा होती है, तब वह इसी वितृष्णा के परिणामस्वरूप ये उद्‌गार प्रकट करता है। गुजराती लोकगीत 'अजना सती' मे भी सम-भाव है, किन्तु यहा बहू के चरित्र पर सास को सन्देह है। इस गुजराती

---

1 भैरुजी, कदेय न भीजो म्हारी कांधो लाल सू
कामी री वासी एक पुतर बिन कुल मे बाझडी।
—राजस्थान के लोकगीत (भाग 1), स० त्रय, पृ० 236

2 तमे मारा देवना दीधेल छो,
तमे मारा मागी दीधेल छो
आव्या त्यारे अमर थई ने रो।
—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 2

3 लीप्यो चुप्यो म्हारो आंगणो
दूधरा पीवा वालो दो जी !
—मालवी लोकगीत एक विवेचनात्मक अध्ययन
—डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय, पृ० 422

4 लीप्यु ने गूप्यू मारू आगणु
पगलो नो पाडनार घोने रन्ना दे।
—रढियाली रात (भाग 1), पृ० 80 81

जदी रे लाला दातण मोडू, तलही री अरथ दताय
जदी रे लाला दातण मोडू राधा ने देश निकालो
मायड को कियो मतो मानज्यो, मायड घर मनाय। ~ सकलित

गीत मे बहू अपने पति पवन से ही गर्भवती होती है, परन्तु सास उस पर सन्देह करती है और उसे घर से निकाल देती है। जब पवन घर आता है और मा से अजना की बात पूछता है तब मा बहाना करती है कि अजना पानी लेन गई है। अन्त मे वह यह भी कह ही देती है कि उसने अजना बहू को वन मे भेज दिया है। इससे पवन के हृदय मे भी मा के प्रति वितृष्णा उत्पन्न होती है और वह मा को धिक्कारता हुआ कहता है, 'हे माता! तुम हत्यारी हो, तुम्हे धिक्कार है, धिक्कार है!" इतना कहकर वह अपने घोडे पर सवार होकर अपनी पत्नी को खोजने के लिए लौट जाता है।[1] क्योकि उसको तो अपनी पत्नी के गर्भवती होने का रहस्य ज्ञात ही था।

उक्त दोनो गीतो म माता-पुत्र के तनावपूर्ण सम्बन्धो का चित्रण है। मा, अपने पुत्र के साथ इन गीतो मे अन्याय करती हुई दिखाई गई है, जिसके फलस्वरूप पुत्र के हृदय मे भी मा के इस अत्याचारी रूप से वितृष्णा हो जाती है।

मा की अपेक्षा पुत्र, पत्नी को ही विवाह के पश्चात् अधिक महत्त्व देता है। एक राजस्थानी लोकगीत मे वियोगिनी नायिका पति को घर बुलाने के लिए विभिन्न यत्न करती है। वह प्रवासी पति को यह सन्देश भिजवाती है कि तुम्हारी माता का देहान्त हो गया, तुम घर आ जाओ। उसने सोचा कि माता के प्रति प्रेम-भाव के कारण पुन तुरन्त नौकरी छोडकर घर आ जाएगा किन्तु पुत्र का उत्तर सुनिए—मा मर गई यह बुरा हुआ। खैर, लोकाचार करना।[2] इस गीत म से पुत्र का मा के प्रति जो भाव है, वह देखा जा सकता है।

मा के ममत्व के उदाहरण लोकगीतो मे अनेक स्थलो पर प्राप्त हैं। जब मा मरने लगती है तो उसको अपने पुत्र की बडी चिन्ता होती है। वह मृत्यु शैया पर भी अपनी सन्तान को नही भूल सकती। पुत्र-जन्म के गीत मे प्रसव पीडा मे तडपती हुई स्त्री कहती है कि मेरी कमर मे पीड चल रही है, अब मैं मर जाऊगी। अत मेरी सास को बुलाओ उन्हें मैं अपने पुत्र-पुत्री सौंप देना चाहती हू। परन्तु जब वह नारी प्रसव-पीडा मे पुत्र को जन्म देकर मुक्त होती है तो कहती है कि मेरी सासू को बुलाओ बच्चे-बच्ची तो मेरे हैं।[3] इस गीत से यह स्पष्ट होता है कि मा के हृदय मे अपनी सन्तान के प्रति कितनी ममता

---

1 बार-बार बरसे पवन घेर आव्या, सूना ओरडिया दीठा रे
कहो मोरी माता! अजना देखाडो।
फट रे हत्यारी माता! फट रे गोझारी। चढये घोडे पाछा वलिया रे
अजना ते बहुनी गोते रे चाल्या।
—रढियाली रात (भाग 3) पृ० 14 15

2 जाय ससकरिये ने यू कहे—थारी माय मुई घर आय, सौदागर मैंहदी राचणी
माय मुओ था बुरी हुई, करज्यो थ लोकाचार, सौदागर०
—राजस्थान के लोकगीत—स० सय, पृ० 14

3 म्हारी सासू जी ने बरी ए बलाय म्हारा छोरा छोरी सूपू।
म्हारे चाले ए कमर माँई पीड अब मर जासू।
म्हारी सासूजी ने बरी ए बलाय छोरा-छोरी मारा।—सकलित

होती है। एक गुजराती गीत मे वरुण देवता को प्रसन्न करने के लिए जल-समाधि लेने जाने वाली नारी अपने पुत्र को पालने म सुलाती है। उस समय मा की ममता क्रन्दन कर उठती है और उसके नेत्रो से जलधारा बहने लगती है।[1]

बालक को सुलाने के लिए जो गीत गाती है उन्हें राजस्थानी एव गुजराती म हालरा कहते हैं। मां पुत्र को पालन म सुलाकर झूला देती है और गीत गाती है। मां कहती है—मैं झूले को हिलाती हू हां हां करती हू तुम सोओ न। तुम पालन, घोडिया, (गुज०) घोडी (राज०) म सो जाओ।[2]

पालने या झूले के इन गीतो मे मा की ममता उमडी पडती है। बालक का न सोना मां के लिए एक समस्या है और बालक का अधिक समय तक सो जाना उसके लिए दूसरी समस्या है। बालक को नीद आती है। मा केवल उसको लेकर तो बैठ नही सकती क्योकि उसको गृहस्थी के सारे कार्य भी निबटाने हैं। मा बालक को झूला झुलाते हुए गाती है कि तुम्हे हालरा बहुत प्रिय है परन्तु रे मेरे वीर ! तुम चुप हो जाओ तो मैं जल भर लाऊ फिर लौटकर तुम्हारे झूले की रस्सी खींचू।[3] कभी माता पुत्र के लिए नीद को आमन्त्रित करती है और कहती है कि हे नीद ! तुम जाना और मेरे बच्चू से भाई के लिए लाना—पेडे, बताशे, खारक खोपरे बादाम एव मिसरी।[4] इस प्रकार बालक को सुलाने के लिए माता अनेक प्रयत्न करती है। एक और गुजराती गीत म ही देखिए मा प्रयत्न करके हार गई बालक सोता नही। जब वह किसी तरह सो जाता है, तब मां घर क काम समाप्त करके बालक को जगाने का प्रयत्न करती है परन्तु वह जागता नही। मा का हृदय पाप शकी होता है वह फौरन दौडकर पडोसी स्त्रियो से पूछती है। वे कहती हैं—कि बालक को नजर लग गई है अत लूण' (नमक) उतारो। फिर सभी सखिया एकत्र होती हैं और बालक को मिलकर जगाती हैं।[5] इस प्रकार माता का हृदय

---

1 पूतर जई न पारणे पोढइयो
नेणने आसुडाने धारूजी रे।—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 21

2 हां हीचोलू ने हां हां करू तमे पोढोने
घरो जाव न छोडिया मांय, अबर तमे ओढोने।
—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 3

3 बालक ने हालरडू वालू। (के स्थान पर कान कुवर मे मीठा मोहन नु के साथ पुनरावृत्ति)
छानो मारा वीर भरी आवु नीरे
पछी तारी दोरी ताणु। बालक० —वही पृ० 5

4 नीदरडी तु आवो जो आवो जो।
मारा बचु ने भाई सारू लावे जो —नींदरडी०
तु पेडा पतासा लावे जो —नीदरडी० (के स्थान पर खारक-खोपरू, बादाम मिसरी के साथ पुनरावृत्ति) —वही, पृ० 9

5 बाई तारू बालक वीनु छरे लावो उतारीए लूण बाला०
सरखी साहेली भली थई ने रे, जगाडया माता बाल बाला० पोढो ने।
—रढियाली रात (भाग 2) पृ० 7

न केवल प्रेम, स्नेह एव ममता से पूर्ण होता है किन्तु पुत्र के प्रति वह सदा आशक्ति भी रहता है ।

राजस्थान की एक प्रसिद्ध लोरी देखिए जिसमे मा, नान्या (बालक) को झूलने (झूलने) को कहती है और साथ ही यह भी कहती है कि दूध बताशा पी । तेरा झूला सामी माळ (कमरे के सामने) बधवा दू जिससे कि परिवार का प्रत्येक सदस्य आते-जाते हुए तुम्हे झुलावे ।[1] एक अन्य लोरी गीत मे भी सुथार (बढई) के पुत्र से गीगे (बालक) के लिए गाडूल्यो (छोटी सी गाडी, खेलन की) गढकर लाने का अनुरोध करती है और कहती है कि ऐसा गाडूल्या लाना जो गीगे के मन भाए । तुझे मैं रोकड रुपया दूगी और तेरी मा को पीला ओढना दूंगी । तेरी पत्नी को जाली कढवा करके दूगी ।[2]

मा पुत्र को इसलिए झुलाती है कि उसका पुत्र धरती को, जितनी बार झूले दिए गए हैं, उतनी बार ही डोलाएगा । दुग्ध-पान कराते हुए वह उसस कहती है कि इस श्वेत दूध पर कायरता का कलक मत लगाना ।[3] यह वीर माता सिंहनी है जिसके ममत्व का मूल्य राजस्थानी वीर को जीवन देकर ही ब्याज सहित युद्ध-भूमि मे अदा करना होता है ।

'बध्या की होश' का चित्रण एक गुजराती लोकगीत 'वाझियानी होश' म देखा जा सकता है । एक नारी के मान-सम्मान म पुत्र-प्राप्ति के बाद वृद्धि होती है, जिसको प्राप्त करने के लिए नारी के हृदय मे तीव्र उत्कण्ठा होती है । राजा सिद्धराज जयसिह के सन्तान उत्पन्न नही हुई—वे राणक देवी के शाप से अभिशप्त थे । उनकी पत्नी की मनोभावना का चित्रण इस गीत मे हुआ है । वह कहती है कि मैंने पीला पहनकर कभी देवता के चरणचिन्ह बनाकर भरे नही । न कभी मैं सम्माननीय अतिथि बनकर पीहर का सुख ले सकी, न भाई ही लेने आया । कभी मैं पोशणिये (बैलगाडी का एक भाग) पर पैर रखकर नहीं बैठ सकी, कभी भी भाई का घोडा मेरे द्वार पर नही बाधा जा सका । ऐसा सुख तो हे मा ! मैं अपनी नजर से न देख सकी और मेरा जीवन दुःख से

---

1 न्यान्या थारो पालणो बदा दू सामी साल रे ।
आवतडा जावतडा बावो सा झोट्या देसी रे ॥—सकलित

2 सुण-सुण रे खाती रा बेटा, गाडूलो गडल्याय
गाडूलो गडल्याय, म्हारे गीगे के मन भाग ।
—राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 53

3 बालो पांचा बाहर आयो, माता बैण सुणवै यूं ।
म्हारो गोद सिलाय रे बाला, मैं थोय सपरी घूटी दयू ।
—राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 51 52

दूभर हो गया।[1]

ये है वन्ध्या के हृदय के उद्गार। उसको पुत्र जन्म होने के उपरान्त होने वाली एक एक घटना के प्रति कितनी उत्कठा है, जिनसे वह वचित रह गई है। मातृत्व प्राप्त करने के लिए नारी के हृदय म कितनी तीव्र उत्कठा होती है—राणी के इन उद्गारो से स्पष्ट हो जाता है। पुत्र-प्राप्ति की याचना, अम्बा माता (देवी) के सम्मुख करती हुई एक गुजराती स्त्री कहती है—हे अम्बा माता! सोने का पालना बधवा दीजिए और छोटी बहू की उत्कठा शान्त कीजिए।[2] पुत्र-प्राप्ति नारी-जीवन की सचमुच एक बहुत बडी उपलब्धि मानी जाती है।

पुत्र भी मा के द्वारा किए गए लालन-पालन के आभार को स्वीकार करता है। एक गुजराती गीत म जब पुत्र वरराजा बनकर घोडे पर चढ़ता है तो मा उसका दामन पकडती है। वह मा से कहता है कि मा मेरा दामन छोड, मैं तुम्हारा कर अदा करूगा। जिसने नौ महीने तक मेरा भार ढोया है, उसके गुण मैं कैसे भूल सकता हू।[3]

इस प्रकार माता पुत्र के विभिन्न सम्बन्धो का चित्रण राजस्थानी और गुजराती लोकगीतो म मिलता है।

(आ) माता-पुत्री—लोकगीतो मे माता और पुत्री के बडे मधुर सम्बन्ध देखने को मिलते है। मा की ममता बेटी के ससुराल जाने के समय और उसके पश्चात् अधिक बढ जाती है। पुत्री को भी मा से मिलने की उत्कण्ठा, ससुराल म जाने के बाद अधिक हो जाती है।

एक राजस्थानी लोकगीत मे बहिन को ससुराल से लेने के लिए उसका भाई जाता है, किन्तु उसके ससुराल वाले उसे भेजते नही हैं। पुत्री को मातृ हृदय का, माता की ममता का पूर्ण ज्ञान है। वह जानती है कि मेरी मा मेरी करुणकथा सुनकर व्यथित हो

---

1 भोंया तो थई ने मैयर नो माण्यु जो,
धोरो जी न आव्या आण हो जी,
पींझणीये पग मूकी वेल्यमां न बैठा जो,
ठाठे न बांध्या रगत घोडिया हो जी
अंवु तो सुख माडी नजरे न दीठू जो,
दु ख ने दाड ढूली गयां हो जा।—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 150

2 नानी वहुनी होंण पूरी करो मोरी मां–अबाजी माईमा
सोना नां पारणां बधावो मोरी मां–अम्बा जी माईमा।
—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 182

3 मेलो मेलो रे माता छेडा अमारा,
तमारा कर अमे भार शु।
जेणे ते नव मास भार वहायो,
तेनां ते गुण केम भूल शु।   –चूदडी (भाग 1), पृ० 68

जाएगी अत वह अपने भाई से कहती है कि मा के सम्मुख मेरी करुण कथा मत कहना।[1] यही भावना एक गुजराती लोकगीत की पुत्री की भी है।[2] जब मां पुत्री के दुःखों को नही देख सकती, तो पुत्री भी मा के कष्ट को कैसे सह सकती है।

विदाई का दृश्य बडा करुण होता है। मा उस समय पुत्री के वियोग मे बिलखती है।[3] गुजराती लोक गीत मे भी यही भाव व्यक्त हुआ है। वहा भी पुत्री मा के स्नेह को भूलकर ससुराल जा रही है।[4] माता और पुत्री के इस स्नेह सम्बन्ध का चित्रण विदाई के इन लोकगीतो मे करुण रस से सिंचित है।

मातृ-हृदय की ममता वहा अधिक मुखरित हो रही है जहा वह पुत्री की सासू से कहती है कि तुम मेरी पुत्री को गाली मत देना। मैंने इसे पेड़े देकर पढाया है। इसको लड्डू खिलाकर स्नेह दिया है। यह मेरे हरे बागों की कोयल है और मेरे आगन का खिलौना है। हे सासू! तुम इसे गाली मत देना।[5] यही बात गुजराती माता पुत्री के ससुराल पक्ष की स्त्रियो से कहती है कि घर मे सभी लोग हिलमिल कर रहना। इस लाडवाई को कोई कुछ मत कहना। इसे गाली-गलौज मत देना, मारपीट मत करना और धमकाना भी मत।[6]

माता के हृदय मे वियोग-वेदना के साथ-ही-साथ पुत्री के भावी जीवन मे आने वाली बाधाओ के लिए कितनी चिन्ता है। यही भाव एक भोजपुरी गीत मे भी देखने योग्य है। वहा मा पुत्री के ससुराल पक्ष के लोगो से, उसकी प्रार्थना समधिन (पुत्री की सासू) तक पहुचा देने को कहती है। वह कहती है कि उसकी पुत्री को लात नही मारी जाए और न ही गाली दी जाए। साथ ही उसकी प्रिय पुत्री को कच्ची नीद से नही जगाया

---

1. माता तो सुणते, वीरा, मत कहो
   झुरसे बरसाले री रात। मेहा झड़ मांढियो।
   —राजस्थान के लोकगीत—स० लय, पृ० 81
2. दादा ने के जे मारी माता ने नो के जे जो,
   माता छे मायालु आंसु झेरशे।
   —रढियाली रात (भाग 2) —श्री मेघाणी, पृ० 169
3. बनखड की ओ कोयल, बनखड छोड कठै चली
   थारी माऊजी थारे बिना झुणमणा
   माऊजी थारी बिलख रही। —राजस्थान के लोकगीत—स० लय, पृ० 190
4. सरमाल सासरे चाली, वरमाल कण्ठे घाली
   माता ना हेत बिसारी, सासू ना हेत चाली।
   —राष्ट्रभारती, (सित० 64), गुजराती लोकगीतों म बेटी की विदाई, पृ० 452
5. ए सासू गाल मत देजे ए। मैं तो पेडा देन पढ़ाई ए।
   मैं तो लाडू देन लडाई ए। म्हारे हरिया बागा री कोयल।
   म्हारे राय आंगण रमल्यो ए।
   ए सासू गाल मत देजे ए।—सकलित
6. लडवाई ने गार ना देशो रे।
   गारे तो गड़गिडिया पड़ जाय रे।—राष्ट्रभारती, (सित०, 64) पृ० 452

जाए ।[1] मातृ हृदय की यह आशका लोकगीतो मे शाश्वत है, सार्वभौमिक है । कुमाऊ के लोकगीत मे भी यही भाव व्यक्त किया गया है ।[2]

माता और पुत्री के सम्बन्धो का चित्रण करते हुए लोकनायक न मातृ-हृदय के वात्सल्य पक्ष क चित्र के अग अग को उभार कर ममत्व का मूल्याकन किया हैं। ससुराल के दु खो से दु खी होकर पुत्री जब पीहर जाती है और मा से मिलती है, तब मा की आखो से अश्रुधारा प्रवाहित होती है। मा के उन आसुओ से सरोवर उमडन लग। पुत्री के उस रुदन स पर्वत डोल उठे ।[3] पुत्री से मिलते समय मा के अश्रुओं से सरवर का पानी छलक गया और पुत्री के रुदन से पर्वत काप गए—कहकर लोक गायक ने माता-पुत्री के हार्दिक सामीप्य को कितने प्रभावपूर्ण ढग से व्यक्त किया है। मा अपनी बेटी को दु:खो को सदैव धैर्य-पूर्वक सहने की सलाह देती है। जब पुत्री चील के साथ मा को सदेश भेजती है कि हे मा (ससुराल के) इतने दु ख किस प्रकार सहे जाए ? तब मा उत्तर देती है कि पुत्री ! जैसे भी हो इन दु खो को सहना । तुम बडे घर की बेटी कहलाती हो ।[4]

एक राजस्थानी लोकगीत मे कोई पत्नी अपने पति से चिनाशुक (या ओढने का वस्त्र) ला देने का आग्रह करती है, क्योकि उसको चिनाशुक ओढने का चाव है किन्तु पति उत्तर देता है कि तुम्हारी देवरानियो जेठानियो ने तो पुत्र को जन्म दिया है जबकि तुमन पुत्री को जन्म दिया है ।[5] तात्पर्य यह कि चिनाशुक पहनने का अधिकार तो पुत्रवती स्त्रियो को ही है तुमने पुत्र को जन्म नही दिया इसलिए तुम्हे नहीं मिल सकता। पुत्री के जन्म पर माता को कोई सम्मान नही दिया जाता है, यह इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है।

(इ) *पिता पुत्र*—लोकगीतों मे पिता पुत्र के सम्बन्ध रुचिकर ही मिलते है। पिता की पुत्र के प्रति सर्वदा कोमल भावनाए ही रहती हैं। वह सदा अपन पुत्र का मगल चाहता है। पुत्र भी पिता के प्रति सम्मान एव श्रद्धा की भावना रखता है। पिता की सेवा

---

1 सुन-सुन लोरनी, सुनहु जठ भाई,
कहिह समधीनी आग अरज हमारी
साते जनि मारि हैं, पाराते जनि गारी
आरे कांच ही नोमीये, जनि जगह हैं मोरि दुलारी।
—भोजपुरी ग्रामगीत (भाग 1), डा० कृष्णदेव उपाध्याय, पृ० 189

2 अरे अरे लोको पहिल सोको मेरि धिया दुख जन दिया ए
दस भैंस मेने करहो मैं वोको दस धारि मेरे दून पैंवायो।
—कुमाऊ का लोक साहित्य–डॉ० त्रिलोचन पांडे, पृ० 126

3 गगा माटीनां धीडो तमे भडया, गगा जमना तमे वया,
श्रीकृष्ण भरथार रे धीडो तमे वया। रढियाली रात (भाग 2), पृ० 68

4 'धोकरी ज्यन वेंडाय तेम वेठ जो
मारण मोटानां छोरु के 'वाय' —नवोदगरो, पृ० 21

5 ए हो देरांण्या–जेठांण्या जाया हालरा,
मारवण थे कांई जाई है धीव। —राजस्थानी लोकगीत–स० डॉ० दाधीच, पृ० 50

एव आज्ञा का पालन करना पुत्र अपना पवित्र कर्तव्य समझता है। पिता विभिन्न सामाजिक अवसरो पर पुत्र के लिए आवश्यक त्याग करता हुआ दृष्टिगत होता है। पुत्र जन्म ही पिता के लिए हर्ष एव प्रसन्नता का विषय है। एक राजस्थानी लोकगीत मे कोई व्यक्ति भगवान से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि—

म्हारा राम रघुनाथ
इतरा वर तो म्हाने दीज्यो नित उठ जोडू दोनू हाथ।
घरवाली ने छोरो दीज्यो भैस लावे पाडी।—सकलित

मेरी घर वाली को लडका देना और भैस को पाडी (भैस का मादा बच्चा या पडरी।)

पुत्र पिता की आज्ञा का पालन करता है। एक गुजराती गीत म पिता अपने पुत्र को बुलाकर जल-देवता के लिए बलिदान देने की बात कहता है। पुत्र तुरन्त कहता है कि इसमे क्या बात है मेरे समर्थ दादा।[1] यदि यही आपकी आज्ञा है तो मैं सहर्ष तैयार हू, इसमे पूछने की क्या बात है।

लोकगीतो मे पिता-पुत्र के सम्बन्धों के आदर्श मात्र दशरथ और राम हैं। एक गुजराती गीत म पिता की आज्ञा पालन करने के लिए ही राम वनवास मे आए हैं, इस बात का उल्लेख किया गया है।[2]

राजस्थानी लोकगीतो मे पुत्र अपने पिता को कष्ट नही देना चाहता। जब उसकी पत्नी उससे कहती है कि इस बार तुम विदेश मत जाओ, अपन पिता को भेजो तो वह कहता है कि मेरे पिता की जाए बला। वह क्यो जाएगे जब मेरे जैसे युवा पुत्र हैं।[3] पुत्र द्वारा आज्ञा पालन एव सेवा भाव इन उदाहरणो से स्पष्ट हो जाता है।

पिता के हृदय मे भी पुत्र के प्रति असीम स्नेह-भाव रहता है। एक लोरी मे माता पुत्र से कहती है कि अब मेरा ननद का वीर आएगा तेरे लिए अच्छे खिलौने लाएगा। मुझे हस कर गले लगाएगा और तुझे गोद मे लेकर खूब खेलाएगा।[4] गुजराती गीत मे नद जी का कृष्णजी के वियोग मे विचलित होने का उल्लेख किया गया है।[5] दोनों उदाहरणो मे पिता के प्रेम की अभिव्यक्ति है। एक राजस्थानी लोकगीत मे युद्धभूमि मे अपने

1 अर्पा तो शु मारा समरथ दादा।
पार की जणी ने पूछी आवो रे ॥—रढियाली रात (भाग 1) पृ० 19

2 राजा पाले वचन माग्या, माग्या पोता नैं काज।
पोताना ने राज आप्या, अपने तो वनवास ॥—वही, पृ० 5

3 गोरी ए ससुराजी रो जावे ए बलाय
म्हारे जे सरीसा कुवर मोहे घड़े।—राजस्थानी लोकगीत—श्री देवड़ा, पृ० 53

4 अब नणदी रा वीरो आसी, थारे आछा रमता लासी।
थंने हसकर गले लगासी, थने घणो खेलाई गोद।
—राजस्थानी लोकगीत—स० श्याम एव पारीक, पृ० 23

5 नदजी तलसे ने जशोदा जी तलसे,
तलसे अमथा वीरा ॥ —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 58

बालक वीर पुत्र को जाते हुए देखकर पिता तुरन्त चिन्तित हो जाते हैं और युद्ध म न जान का अनुरोध करते हैं।[1] इसी प्रकार एक गुजराती लोकगीत म पिता को पुत्र अत्यन्त प्रिय है यह बात माता द्वारा बालक को कही जा रही है।

पोढो ने मारा हरि हालो हालो।

तू तोरे तारा बाप ने वी वा लो पाढो ने०।[2]

गुजरात क जीलुभा नामक कोई वीर पुरुष युद्धभूमि म वीरगति को प्राप्त हुए। जीलुभा की स्मृति म जो गीत गाया जाता है उसम कहा गया है कि इनक पिता गद्दी पर बैठे रो रहे हैं। क्या गद्दी का बैठन वाला आएगा।[3] यहा भी पिता क स्नेहमय हृदय का दशन होता है।

पुत्र जब तक स्वय आत्मनिर्भर नही होता तब तक उसको पिता पर आर्थिक दृष्टि स निभर रहना पडता है। एक राजस्थानी विवाह गीत म कोई वधू वर स कलमी आम लान की बात कहती है तो वह उत्तर देता है कि अभी तक मरा रोजगार नही लगा है मैं कहा स लाऊ? तो वधू कहती है तुम्हारे पिता जी दिन रात कमात हैं आप झूठ मत बोलिए।[4] इसम पिता के कमान से पुत्र का सम्बन्ध बता कर उपयुक्त तथ्य को स्पष्ट कर दिया है।

अपवाद स्वरूप पिता पुत्र क बीच म झगड का भी एक गुजराती लोकगीत मे उल्लख मिलता है। टीटउ ग्राम के कनका ठाकुर और उनके पुत्र लालजी कुवर के बीच म झगडा हो गया। बेटे ने बाप से घोडी व बन्दूक मागी बाप ने देने से मना किया, अत झगडा हुआ।[5] यह अपवाद ही कहा जाएगा। साधारणत पिता पुत्र के बीच सौहार्द एव स्नेह पूण सम्बन्धो की झलक ही लोकगीतो म उपलब्ध है।

(ई) पिता पुत्री---राजस्थानी लोकगीतो म पिता पुत्री क सम्बन्धों के मधुर चित्रण मिलत हैं। नायिका को अपन बाल्यकाल की मधुर स्मृतिया व्यथित करती हैं। वह सोचती है कि उसे जो सुख पीहर म मिला, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उसे अपन पिता की स्मृति आती है। पिताजी खेत म काम करक जब भरी दुपहरी म लौटत थे मा उनके सम्मुख भोजन का थाल परोस देती थी। उस समय व मुख पुकारते---आओ ए लाड

---

1 सूरा ओ रण मैं जूझिया हथायाँ बैठा ओ दादाजी बरजिया
बटा मती जाओ रे रण सूरा ओ रण में जूझिया ॥
—राजस्थानी लोकगीत (भाग 6) सं० शास्त्री, पृ० 38

2 रढियाली रात (भाग 2), पृ० 4

3 बापू रुवे छ अनी घाम्भे अ, क्यारे आवे धादी नो बसनार ?
—गु० लो० सा० मा० (भाग 7) पृ० 81

4 बनी काई हट लागी ए, म्हारो नहीं ए लागो है रुजगार।
बना झूठ मत बोलोजी थाका बाबल कमावे दन रात ॥ —सकलित

5 बाप ने बटा नो कजीयो लागो है रे रसियो।
साकुकली घुडलीनो कजीयो लागो है रे रसियो।
नाराली बदूक नो कजीयो लागो है रे रसिया। —गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 58

कवर ! हम भोजन करें और जब मैं रूठकर जीमने नही आती और इधर-उधर जा छिपती तब वे मेरी सौ-सौ मनुहारें करते और हाथ पकडकर ले जाते।[1] पिता का पुत्री के प्रति स्नेह भाव इन पक्तियो से छलका पडता है।

एक गुजराती गीत मे पुत्री अपनी सखी से कहती है कि पिता के बिना पीहर ही सूना है।[2] वास्तव मे पिता के कारण ही पुत्री का पीहर मे सम्मान है, वरना वहा पुत्री के स्वागत सत्कार की व्यवस्था कौन करे।

पिता पर पुत्री पूरा विश्वास करती है। अत जब उसको ससुराल मे दुख मिलता है तब वह अपने पिता को समली (चील पक्षी) के साथ सदेश प्रेषित करती है जिससे उसका पिता आकर उसके दुख दूर कर दे।[3]

ससुराल मे आए हुए भाई से वह पिता जी को जाकर उसकी व्यथा कथा कहने को कहती है, जिससे वे तुरन्त ऊट पर सवारी करके आ जाय।[4] पिता के प्रति पुत्री के मन मे अटूट एव अडिग विश्वास है। तभी तो विदाई गीत मे भी यह कहा गया है कि हे लडकी ! हम तुमसे पूछते हैं कि तुम इतना पिता का प्रेम छोडकर कहा जा रही हो।[5]

पुत्री और पिता के सम्बध विविधता से युक्त हैं। कही पुत्री अपने पिता से उसके लिए अनुकूल पति खोजने की प्रार्थना करती है, तो कही उसे अमुक प्रदेश मे विवाह करने और अमुक प्रदेश म न करने की प्रार्थना करती है। तो कभी वह पिता से युवा होने पर गौना कर देन का आग्रह भी करती है। यद्यपि भारतीय पुत्री पिता से इन विषयो पर कभी स्पष्ट रूप से बात नही कर सकती, क्योकि पिता-पुत्री के बीच इन विषयो पर बात करना निषिद्ध है किन्तु पुत्री की जो भावना इस सामाजिक निषेधाज्ञा से दमित हो गई है, वह लोकगीतो के माध्यम से खुलकर व्यक्त हुई है। एक अविवाहिता पुत्री अपने पिता से अनुरोध करती है कि आप भले ही देश मे न देकर विदेश म दे देना, परन्तु मेरी जोडी का वर ढूढना। काला वर मत ढूढना जो कुल को लजावे। गोरा वर मत ढूढना, वह

---

1 जिसडो सुख पीवर में पायो जिसडो जुग में नाय
जद म्हैं रूस जीमण नही जाती, लुकती कुला लार
सो-सो म्हारा न्होरा खाना, हाथ पकड ले जाय ॥
—राजस्थानी लोकगीत—डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया, पृ 77

2. सखी ! पिता विनानु पियर सूनू जो।—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 48

3. मारा दादा नो डेली अे जाए के ज
तमारी दीकरी न पडिया है दुख। मोरी०
—वही, पृ० 58

4 बाप जी तो सुणतो, बीरा, मत कह्ये
माडे रे करहे पलाण। मेहा झड माडियो।
—राजस्थान के लोकगीत—स० त्रय, पृ० 81

5 म्हे थाने पूछां म्हारी धीवडी
म्हे थाने पूछां म्हारी बालकी
इतरो बाबो सा रो लाड
छोडेर सिद चाल्या। —वही, पृ० 18

थोड़ा सा परिश्रम करते ही पसीने से भीग जाएगा।[1] (यहां गोरा होना सुकुमारता का द्योतक माना गया है) इसी प्रकार वह वर के अन्य गुणों का भी उल्लेख करती है। यही समान भावना एक गुजराती लोकगीत में भी व्यक्त हुई है।[2] एक अन्य राजस्थानी लोकगीत में पुत्री पिता से शिकायत करती हुई कहती है कि हे पिताजी ! आपने मुझे मारवाड़ में दे दिया वहां प्रतिदिन एक घड़ी धान पीसना पड़ता है जिससे मैं काली पड़ गई। एक दूसरी कन्या पिता से कहती है कि किसी अकेले व्यक्ति को देना जहां दो रोटी बनाकर मैं मौज करूं। मुझे अजमेरा में देना मैं वहां कारी कंचुकी पहनूंगी और उसमें फूल भरूंगी। मुझे किसी नौकरी करने वाले को देना जिससे मैं बैठी मौज कर सकूं।[3]

एक गीत में विवाहिता पुत्री अपने पिता से कहती है कि मेरा गौना कर दो। पता नहीं मेरा पति मर गया है कि जीवित है। मैं अपनी फटी हुई कंचुकी को तो सीकर रखती हूं परन्तु उठी हुई छातियों का यौवन किससे ढांककर रखूं। अतः मेरा मुकलावा (गौना) कर दो।[4] एक दूसरे गीत में पुत्री पिता से विवाह करने का अनुरोध भी करती है।[5]

कोई कन्या(तुलसी)घर पर आकर सो गई। उसके पिता चिंतित हो गए। उन्होंने पुत्री से पूछा कि क्या तुम्हारा सिर दुखता है कि तुम्हें ज्वर हो गया है ? पुत्री उत्तर देती है कि न मेरा सिर दुखता है न ज्वर चढ़ा है, मैं सहेलियों के साथ पानी भरने गई थी, वहां उन्होंने मुझे ताने दिए हैं। पिता कहते हैं कि कहो तो हे तुलसी मैं तुम्हारा सूर्य के साथ विवाह कर दूं ? कहो तो चन्द्रवर मांगू ?[6]

पिता अपनी पुत्री की प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करता है उसके बिना पुत्री को कोई वस्तु कैसे उपलब्ध हो ? एक राजस्थानी गीत में पुत्री के मन में पीला क्रय करने की इच्छा भी है किन्तु पिता के अभाव में कौन पीले का मूल्य दे। पुत्री अपने पिता पर ही आश्रित

---

1 कालो मत हेरो बाबा जी कुल ने लजावै
गोरो मत हेरो बाबा जी, अंग पसीजै। —राजस्थानी के लोकगीत–स० ब्रय, पृ० 160

2 अक कालो तो वर नो जोशो के दादा
कालो तो कटब लजावश। —चूंदड़ी (भाग 1), पृ० 11

3 बाबल अजमेरा मे दीज्यो रे कालो पैंह काचली,
मू फूल भरूला रे।
बाबल नौकरिया ने दीज्यो रे मू बैठी हुला मौज करूला। —सकलित

4 हां रे (बाबल) कर दे मुकलावो। म्हारो परणियो मरियो के जीव रे ?
साथ री सहेल्यां बावन दो दो ललवा जणिया ओ
फाटियोड़ो कांचलो बाबल टांका दे दे राखू ओ
डडियोड़ो छतियां रो जोवन कामे ढांढू ओ। हां रे —सकलित

5 सुण म्हारा बाबल म्हाने तो परणाई दे आखा तीज की
म्हारो पूंयू को मत पुबो ब्याव ! —सकलित

6 सखी साहेली जल भरवा गया था, सैंयर मैणां बोली हो राम। पाणी०
को तो तमने तुलसी सूरज परणा वू, चंदर वरना मागा हो राम। पाणी०
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 18

दृष्टि से निर्भर रहती है—

पाली रो तो पीलो वापरियो, कोई आयो आपणे देश
गजरो लूबा रो ।
कोई बावल वे तो मोल करे, ब्योपारी भो फर-फर जाय ।—सकलित

इसी आर्थिक-निर्भरता के कारण पुत्री अपनी मा को गीत के माध्यम से अनुरोध करती है कि—हे मा ! मेरी पीहर से दी हुई चुनरी फट गई, और वह फटी भी घूघट पर से, अत मुझे लेन के लिए किसी को भेजो । मा का उत्तर भी देखिए—बाई ! मैं किसे लेने के लिए भेजू, तुम्हारे पिताजी दिल्ली के दरबार मे गए हैं ।[1] यहा तात्पर्य है कि यदि पिता घर पर होते तो पुत्री को ससुराल से ले आते और उसको नई चुनरी आदि वस्त्र भी देते । इसी प्रकार एक अन्य गीत मे पिता द्वारा पुत्री के लिए 'आड' और मादलिया (आभूषण) घडाने का उल्लेख है ।[2] पिता सामर्थ्यानुसार पुत्री को वस्त्र-आभूषण भी देता है । पुत्री आर्थिक दृष्टि से अधिकतर पिता पर निर्भर रहती है और पिता स्नह के कारण पुत्री की आवश्यकताए यथा-शक्ति पूरी करता रहता है ।

पिता-पुत्री के प्रेम का कारण आधुनिक मनोविज्ञानवेत्ता विपरीत लिंग मानते हैं । पुत्री माता से अधिक पिता को और पिता पुत्र से अधिक पुत्री को चाहता है । फ्रायड ने तो 'इडिपस काम्पलेक्स' का सिद्धान्त इसी आधार पर स्थापित किया था । एक राजस्थानी लोकगीत मे पुत्री कहती है कि पिताजी की लाडली (प्रिय) पुत्री भीग रही है ।[3] गुजराती गीत मे पुत्री कहती है कि इस धरा पर शक्ति युगल का सृजन हुआ है । एक ससुरजी और दूसरे पिताजी । पिता ने प्रेम से मेरा पालन-पोषण किया और ससुरजी ने मुझे मर्यादा प्रदान की ।[4] यहा दोनो ही उदाहरणो मे पिता का पुत्री के प्रति प्रेम छलक पडता है ।

पिता-पुत्री से सम्बन्धित गीतो मे प्रतीक-योजना भी बडी सुन्दर बन पडी है । एक राजस्थानी गीत मे पुत्री पिता से कहती है कि छज्जे पर चिडिया बैठी हुई है, हे पिताजी उडाते क्यो नही हो ? पोल मे अतिथि बैठे हैं, उन्हें भोजन क्यो नही करा रहे हैं ।[6] गुजराती गीत मे पुत्री पिता से कह रही है कि चवरी मे चिडिया बोल रही है, हे दादाजी ! आप इसका अर्थ निकालिए ।[5] इन दोनो उदाहरणो मे 'चिडिया' पुत्री का सुन्दर एव

---

1. चूड़न फाटीये मां पीवर की, कोई फाटी घूघट माय,
मायड ने कईयो जे कोई आवं लेवण नैं ।
—मरुभारती—जुलाई, 6, सन् 1965, पृ॰ 46-47
2 सोन्दलिए की आड घडाद्यू, रुपे को मादलियो ये ।
पैर ये मुरलीधर की गोरी तेरो बाप घडायो ये । उपरिवत्, पृ॰ 49
3 भीजें बामोसा री धीया लाडली । —दीरो धीया ने सासरो—स॰ देपा, पृ॰ 32
4 बापे तो लाड लडावीओ, ससरा ए आपी लाज ।
5. छाजे बैठी चिडकलिया, उडासो क्यू नी ओ बामोसा । —चूदडी (भाग 1), पृ॰ 5
पोलां बैठा पावणा जिमाओ क्यू नी ओ बामोसा ।—गई-गई समद तलाव, पृ॰ 13
6 चोरी मां चकलो रे बोले,
दादाजी अरथ उकेलो ।
—चूदडी (भाग 1), पृ॰ 97

भावपूर्ण प्रतीक बन गई है। चिड़िया के साथ पुत्री के लिए कोयल प्रतीक का भी प्रयोग लोकगीतों मे किया गया है। राजस्थान के विदाई गीत में पिता का घर छोड़कर विदा होती हुई पुत्री से प्रश्न किया जाता है कि तुम पिता का इतना प्रेम छोड़कर हे मेरी कोयल! कहा चली? कुमाऊं के लोकगीतों में भी कहा गया है कि बागा की कोयल तुम बाग छोड़कर कहा चली? हाड़ौती लोकगीत मे चिड़िया एव कोयल दोनों का ही पुत्री के प्रतीक रूप मे प्रयोग हुआ है।[1]

(उ) भाई-बहन—लोकगीतो मे भाई-बहन के पवित्र प्रेम का विशद चित्रण देखने को मिलता है। भाई के प्रति बहन के हृदय मे गहरा प्रेम होता है।

जब बहन भाई की प्रतीक्षा कर रही थी तब राजस्थानी गीत मे देवर ने भाभी को व्यग्य-वचन कहा कि तुम्हारा भाई तो निमन्त्रण लेकर बैठ गया है। इधर गुजराती गीत मे ननद व्यग्य करती है कि तेरा लोभी भाई अब तक नही आया। इन व्यग्य-वाणो से बहन तिलमिला उठी और वह घड़ा लेकर सरोवर पर चली गई। वहां भी उसके मन को चैन कहा। वह सरोवर के ऊचे-नीचे किनारो पर बार-बार चढ़ती और उतरती है और अपने भाई की प्रतीक्षा करती है। इतने में ही सुदूर क्षितिज पर झीनी झीनी खेह उड़ती दिखाई देती है, जिसका धुंधला-सा बादल बनकर दिखाई दे रहा है। आखिर भाई आ ही गया। यह प्रतीक्षा राजस्थानी बहन की है।[2] उधर गुजराती गीत मे जब भाभी को ननद ने यह व्यग्य-वचन कहे कि तुम्हारा लोभी भाई अभी तक नही आया तो बहन की बड़ी दयनीय स्थिति हो जाती है। इतने मे ही उसका भाई आ जाता है फिर तो बहन के आनन्द का परिवार नही रहता, उल्लास उसके हृदय मे समा नही रहा है।[3]

भाई आ गया, परन्तु बहन को व्यग्य-वचन तो सुनने पड़े? अत वह भाई से

1 (अ) इनरो दादो सा रो लाड छोड़ने,
कोयल म्हारी सिद चाली? —सकलित
(ब) मेरी ए बागे दी ए कोयल,
बागे छड्डो कदयू चली ए? —प्राच्य भारती से
(स) वन खण्ड की ए कोयल,
वन खण्ड छोड कठे चाली। —मालवी लोकगीत वि० अ०, पृ० 159
(द) धीयड़ म्हारा बागा की कोयलिया काल दिने उड़ जासी
चाढे बैठी चिड़कली जी फुरकता उड जाय।
—हाड़ौती लोकगीत—डॉ० क इशखर भट्ट, पृ० 111

2 सरवरिया री, वीरा, ऊची-नीची रे पाल
एक चढू दूजी उतरू जे
झीणी-झीणी रे वीरा उड छे खेह
बादल दीसे धूधला जे। —राजस्थान के लोकगीत (भाग 1) स० स्वय, पृ० 211

3 नणदी मचको करीने बोल्या रे
भाभी! नो आव्यो तारो लोभी वीर—सोहन०
वाई रे वसु रे छूटी ने वेणु मोकली
मारे हैड़े रे काई ऊतर्यो तबोल—सोहन०—चूंदड़ी (भाग 1), पृ० 5

विलम्ब से आने का स्पष्टीकरण मागती है। भाई को भी स्पष्टीकरण देना ही होता है। वह कहता है कि मेरे घर पुत्र का जन्म हुआ है अत विलम्ब हो गया। फिर मैं बजाज की हाट तुम्हारा भात (भारत) खरीदने गया था।[1] राजस्थान के लोकगीत के सम्पादको ने गीत की व्याख्या करते हुए लिखा है — 'व्यग्य प्रेम का स्वायत्त अधिकार होता है, उससे प्रेम की पुष्टि होती है और वह निखरकर उज्ज्वल हो जाता है।[2]' इसी प्रकार गुजराती बहन ने भी भाई से स्पष्टीकरण मागा। वह कहती है कि भात का समय हो जाएगा। मैं तुम्हारी कब तक राह देखू ? तुमने विलम्ब कैसे किया ?[3]

भाई को बहन द्वारा मांगे गये स्पष्टीकरण का विस्तृत उत्तर देना पड़ा।

भात भरने के लिए (राजस्थानी) भाई आया तो बहन के लिए अत्यन्त सुन्दर चूदडी बनवाकर लाया। बहन कहती है कि यदि मैं इस चूदडी को ओढू तो इसके हीरे झड जाए। और यदि मैं इसे रख देती हू तो मेरा जीव इसे ओढने को तरसता है।[4] घण देवा (अधिक देने वाले) भाई ने बहन को सचमुच दुविधा मे डाल दिया। गुजराती भाई भी अपनी बहन के लिए चूदडी अहमदाबाद से लेकर आया है।[5]

बहन भाई की प्रतीक्षा बडी उत्सुकता से करती है। वह भाई के आने के लिए शकुन मनाती है। काग को उडाती है। राजस्थानी लोकगीत मे बहन कौवे से कहती है कि यदि मेरा भाई आने वाला हो तो तू उड जा।[6]

गुजराती गीत म भाई के आने की सूचना शुभ शकुन होने के कारण मिल जाती है। मैं तो अमुक भाई की प्रतीक्षा कर रही हू। भाई के आने पर ही रग रहेगा।[7] शकुन मनाने वाली बात से बहन का भाई के प्रति जो असीम प्रेम है, वह स्पष्ट ही व्यजित हो रहा है।

---

1 म्लो मे बधावा हो रह्या जे
गया छा, के वाओ, भारतिये री हाट
घा ने भारत बाओ मोलवा जे।—राजस्थान के लोकगीत—स० मप (भाग 1), पृ० 212

2 वही, पृ० 213

3 बेनी ? पाटणमा पडी छी हड़ताल
अमदाबाद म्यो तो बोर वा रे।

4 मेलू तो तरसे बाओ री जीव
ओढायो घणदेवा चूदडी —चूदडी (भाग 1), पृ० 59 60

5 मोटा भाई हाल्या छे चाकरो रे —राजस्थान के लोकगीत (भाग 1) स० मप, पृ० 217
नानुभाई हाल्या अहमदाबाद
मैं तो ओढी छै चूदडी रे

6 उड रे मेरा काला कागा, जे मेरा बीरा आर्व राज —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 64
आवेगो आधी रात पहर क तडके तेजी घोड पलाण्या राज।

7 मारे किया भाई आव्या किया भाई आवशे रे —राजस्थान के लोकगीत (भाग 1) स० मप, पृ० 72
हु तो जोई रही छू—भाईनी बाट रे
—भाई आव्ये रग रेशे रे ॥—चूदडी (भाग 1), पृ० 58

भाई-बहन के प्रेम की चरम पराकाष्ठा का एक उदाहरण यहां देकर इस प्रसंग को समाप्त करना ही उचित होगा।

बहन ससुराल जा रही है। भाई का प्रेम देखिए—अधिक धूप पड़ने से पसीना चू रहा है, अतः वह धूप को मन्द होने की प्रार्थना के साथ पवन से भी आग्रह करता है कि मन्द-मन्द चलो—मेरी बहन ससुराल जा रही है।[1] यह राजस्थानी भाई के स्नेह की चरम पराकाष्ठा है कि वह बहन की सुविधा के लिए प्रकृति से प्रार्थना करता है। इधर गुजराती बहन के भी भाव देखिए। वह कहती है कि यदि मुझे विधाता ने चिड़िया बनाया होता तो मैं भाई के सिर पर जा बैठती। विधाता ने यदि बदली बना दिया होता तो मार्ग में जाते भाई के सिर पर जाकर छाया करती।[2] भाई का बहन के प्रति और बहन का भाई के प्रति अगाध प्रेम भाव इन उदाहरणों में प्रकट होता है।

भाई-बहन के सम्बन्धों से सम्बन्धित गीतों का विवेचन करते हुए 'राजस्थान के लोकगीत' (पूर्वार्द्ध) की प्रस्तावना में सम्पादकों ने लिखा है—"बहन के पावन प्रेम की सुधा सिंचित सरस्वती ने तो गजब ढा दिया। जैसा स्वर्गीय सम्बन्ध भाई-बहन का है, वैसा ही निर्मल मधुर बहन का गान।[3]" श्री झवेरचन्द मेघाणी ने रढियाली रात भाग-2 के प्रवेशक में लिखा है—"परन्तु कुटम्ब-संसार के इन नवरंग चित्रों में से सर्वोपरि चित्र भाई-बहन के है।"[4]

उक्त गीतों के विवेचन के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भाई बहन के सम्बन्ध लोकगीतों में मधुरतम रूप में चित्रित हुए हैं। राजस्थानी एवं गुजराती दोनों ही प्रांतों के इन लोकगीतों में प्रथा परम्परा में भी साम्य है। बहन के घर पर भाई विभिन्न अवसरों पर मायरा या भात भरने जाता है। बहन के द्वारा इस अवसर पर भाई की प्रतीक्षा का अत्यन्त सुन्दर चित्र वहां चित्रित किया गया है।

भाई के यहां पर पुत्र जन्म के अवसर पर भाई के द्वारा बहन के यहां दोनों ही प्रांतों में घूघरी भेजने की प्रथा का उल्लेख है और बहन भी नवजात शिशु के लिए सामर्थ्यानुसार वस्त्राभूषण लेकर आती है। इस प्रथा का एवं भाई-बहन के चिरन्तन प्रेम सम्बन्धी गीतों का उल्लेख ननद भावज सम्बन्धी गीतों के विवेचन में किया गया है।

(ऊ) भाई-भाई—भाई-भाई से सम्बन्धित गीत बहुत ही कम मिलते हैं। जहां भी यह उल्लेख प्राप्त होता है वहां मधुर सम्बन्ध ही देखे जा सकते हैं। किसी नायिका का पति चाकरी के लिए जा रहा है तो उसकी पत्नी उसको यह कहती है कि इस बार

---

1. पड़े तावड़ो चूवै पसीनो, मोरियो बोलै पीपल डाल।
   वायरा थोड़ो धीमो चलजा रे, बाई म्हारी चाली रे सासरे।—संकलित
2. ओ रे सरजी होती चरकलो,
   वीरने भाले बेठी जात जो!
   ओ रे सरजी होती वादलडी,
   वीर ने छायो करती जाय जो। —रढियालो रात (भाग 3), पृ॰ 41
3. वही पृ॰ 3
4. वही, पृ॰ 25

तुम अपने बड़े भाई को भेज दो और मेरे प्रियतम तुम इस भरे भाद्रपद मे घर पर ही रहो। किन्तु पति उत्तर देता है कि हे गोरी! बड़े भाई के घर मे झगडालू स्त्री है, वह सध्या समय ही रूठ जाएगी और मेरे बड़े भाई से मोर्चा लेगी। नि सदेह नायक यह नही चाहता कि उसके स्थान पर उसके बड़े भाई को कष्ट उठाना पड़े। इसी प्रकार जब नायिका छोटे भाई को भेजने का प्रस्ताव रखती है तो फिर वह कहता है कि हे गोरी! छोटे भाई के घर मे छोटी-सी स्त्री है, वह कमल के पुष्प की भाति खडी खडी ही कुम्हला जाएगी।[1] बडे तथा छोटे भाई के प्रति भाई की यह भावना स्नेहपूर्ण ही कही जाएगी।

यो भी भारतीय जनता के सम्मुख राम, लक्ष्मण एव भरत के भ्रातृ-प्रेम का आदर्श है। गुजराती गीतो मे कृष्ण एव बलदेव के भ्रातृ-प्रेम को भी आदर्श रूप म चित्रि किया गया है। जिस समय कृष्ण मथुरा जा रहे हैं उस समय बलभद्रजी वियोग वेदना से विचलित होते हैं।[2] इन गीतो मे राम के साथ लक्ष्मण के वन मे जाने का भी उल्लेख मिलता है।[3]

भरत जब राम को लेने वन मे जाते हैं तब राम उनको प्रेमपूर्वक विदा करते हुए कहते हैं कि तुम जाकर अयोध्या नगरी म निवास करो। माता-पिता को धैर्य दो।[4] परन्तु इस आदर्श प्रेम का चित्रण सर्वत्र नही मिलता है। अनेक अपवाद भी उपलब्ध हैं। एक गुजराती गीत म देवरानी-जेठानी के झगडे को लेकर दो भाइयो मे झगडा होता है और वे परस्पर झगडकर मर जाते हैं। उनके बीच तलवारें चलती हैं, रक्त की धारा प्रवाहित होती है और इस प्रकार दो भाई लडकर मर जाते हैं।[5]

एक राजस्थानी कहावत मे कहा गया है कि धीणा (पशुपालन) तो भैंस ही का हो चाहे सेर भर दूध ही क्यो न होता हो। चलना हो तो सडक पर ही चला जाए चाहे देर लगे और बैठना हो तो भाइयो म बैठना को मिले चाहे उनसे शत्रुता ही हो। यथा—

---

1 छोटोडे वीरे री गवराद नानकडी सी नार
राय कमोडो कुमलाइजे कवल फूल ज्यों।—राजस्थानी लोकगीत—डॉ॰ दाधीच, पृ॰ 107

2 तलखे बलभद्र वीरा गोकुल रयवाला—हा॰ रे॰ —रढियाळी रात (भाग 2), पृ॰ 59

3 राम लखमणवन चालिया न साथे सीता नार
वणे जणा पथे पडयां, थने पूछे पुरनी नार। बाई॰ —रढियाळी रात (भाग 3), पृ॰ 5

4 जाई ने अजोध्या नगरी मा वस जो,
मा-बाप न धीरज दे जो, भरत जी तमे घेर जाव।

5 देराणी-जेठाणी बाडे बढ़ से, —गु॰ सा॰ सा॰ मा॰ (भाग 7) पृ॰ 15
भादलेयी जुदा-जुदा।
वे भईला बढ़ी मर से, तरवायूंनी तडी पडे से,
लोरी नी धाने नेक, वे भईला बढ़ी मरे से।

—वही (भाग 10)

धीणो भैंस को होवे चाहे सेर दूध इ
चालणो सडक को चाहे देर इ
बैठणो भाया म होवे चाहे वेर इ।[1]

विदेश जाते हुए पति से जब पत्नी कहती है कि मेरी सुरक्षा के बारे मे आप क्या प्रबन्ध करके जा रहे हैं, तो पति कहता है कि (मेरा छोटा भाई) तुम्हारा छोटा देवर घर मे है वही तुम्हारी रक्षा करेगा।[2] भाई का भाई के प्रति अटूट विश्वास यहा व्यक्त हुआ है।

(ए) पति-पत्नी—दाम्पत्य जीवन विविधता से परिपूर्ण है। पति-पत्नी से सबधित विभिन्न गीत उपलब्ध हैं, जिन्हें निम्न शीर्षकों मे अध्ययन की सुविधा के लिए विभाजित किया जा सकता है—

(ग) अवैध सम्बन्ध और पति-पत्नी

(1) हास्य-विनोद—सामान्यत सयोग-पक्ष मे शृगारिक भावनाओ का चित्रण लोक-गीतो मे अधिक हुआ है। पत्नी पानी लेने जा रही थी कि प्रिय ने ककर मारा। पत्नी ने पति से पूछा कि मेरे ककर किसने मारा है, तो पति कहता है कि मैंने हसकर ककर मारा है, तुम्हें कहा लग गया? यह गीत सयोग-शृगार से पूर्ण है। आगे भी पति पत्नी के साथ इसी प्रकार हास्य-विनोद करता है।[3] पत्नी पति की मन स्थिति को भली भाँति समझती है। एक गुजराती गीत मे पति ने पत्नी को नीबू से मारा। पत्नी समझ गई कि पति प्रसन्न है। अत उसने पैरो के नाप के 'कडलों' की माग कर दी।[4] इस प्रकार उसने कुशलतापूर्वक कभी व्यग्य-वचन न कहने की निषेधाज्ञा जारी की और तुरन्त विभिन्न आभूषणो की माग भी प्रस्तुत कर दी।

सवत उद्धृत राजस्थानी गीत म पत्नी पति से कहती है कि हे प्रिय! तुमसे रूठ कर तो हिरनी हो जाऊगी, जल की मछली हो जाऊगी। इस पर पति कहता है कि यदि

1 मरुभारती, वर्ष 12 अक 4
2 थू मत डरपे ए गोर ज्या
नहरालो देवर लारा ए।
हाथो में तरवारियाँ राखे ए
कडियाँ में कटारियां राख ए।—सकलित
3 पाणीडे ने जातां गोरी रा सायबा,
प्यारी धण रे कांकडी कुण म्हारी राज?
म्हे हस मारी जो गोरी धण, थारे कोठे से लागी म्हारा राज?
—राजस्थानी लोकगीत (भाग 3) श्री देवडा, पृ० 4
4 लीबुनी मारी हु तो ने मरू रे वालमा
लींबडू झूले छे बाग माँ।
तारा मैणाँ नी मारी मरी जाऊ मारा वालमा। लीबडु०
—रढियाळी रात (भाग 3), पृ० 61

तुम वन की हिरणी बन जाओगी तो मैं असली सिकारी बन जाऊगा। यदि तुम मछली बन जाओगी तो मैं मछुआ।[1] इस गीत में पति-पत्नी के प्रेम की अभिव्यक्ति देखने योग्य है। एक गुजराती गीत मे पति पत्नी आमोद-प्रमोद करते करते कल्पना मे ही आख-मिचौनी (सता कूकडी) खेलते है। पत्नी अपने पति को राम कहकर सम्बोधित करते हुए कहती है कि मैं तुम्हारी बोली (व्यग्य) के कारण नदी-नाला बन जाऊगी। पति ने उत्तर देते हुए कहा कि यदि तुम नदी नाला बनोगी तो मैं धोबी बन जाऊगा। पत्नी कहती है मैं मछली, आकाश की बिजली और अन्त म जलकर राख की ढेरी बन जाऊगी। पति उत्तर देता है कि मैं मछुआ, मेघ और भभूतिया (शरीर पर राख मलने वाला योगी) बन जाऊगा।[2] दोनो गीतो मे पति-पत्नी के उत्कृष्ट प्रेम की व्यजना है।

(2) रूठना मनाना—पति-पत्नी के बीच रूठने-मनाने का कार्य-व्यापार भी चलता रहता है। एक राजस्थानी गीत मे पत्नी राधा अपने पति श्याम से रूठ गई है। पति मना रहा है किन्तु वह कहती है कि हे श्याम ! मैं तुम्हारी बात नही मानूगी। एक दिन तो हे ढोला तुमने कहा था कि 'सालू' मगवा दूगा, दूसरे दिन हा भी नही भरी।[3] गुजराती गीत मे राधा के पास पैरो मे पहनने को कडले तो हैं पर उसने 'कांबीए' (पैरो का ही आभूषण) के लिए विवाद किया।[4] गुजराती गीतो मे ही कही पत्नी पति से रूठ-कर घर से निकल पडती है और ननद जब बुलाने जाती है तो वह ननद से कहती है कि तुम्हारा भाई बुलाने आए तो मैं लौटू।[5] एक दूसरे गीत म पति को मोर की उपमा दी है और पत्नी को मोरनी की। मोर मोरनी से बोलता है, परन्तु मोरनी रूठ गई है।[6] एक राजस्थानी लोकगीत मे नायिका घर का द्वार नही खोलती है और कहती है कि

---

1 जे थ होसो घण जगल, हिरणी, पन्ना मारू असल सिकारी म्हारा राज।
ज थे धण होसो जल री माछली, पन्ना मारू असल तरवाई म्हारा राज।
—राजस्थानी लोकगीत (भाग 3) सं० श्री देवड़ा, पृ० 45

2 राम ! तमारे बोलडोजे हु नदी के नालु थाईश जो
तमे थसो जो नदीने नालु हु धोबीडो थईश जो।
राम तमारे बोलडी म हुं बली ने ढगलो थईश जो
तमे थशो जो बली ने ढगलो, हु भभूतियो थईश जो।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ 54

3 अेक दिन बोल्यो ढोलो स्यालूडो मगाद्यू
दूजे दिन भरी अे न हामलडो, नही मानू जी।
—राजस्थानी लोकगीत–डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 160

4 राणीराधा जी ने पैरण रे कडलां, अेनी कांबीअे लीधा वाद रे
—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 98

5 नणदी तमारी वाली नै बलु, कांई आवे तमारो वीरो। कोयलडी।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 51

6 मारा नाथ परमाणे नथडी, मे तो टीलीअे लीधेलवार,
अेक वार बोलो ने ढेलडरिसाणी–मोर बोले न ढेलडरिसाणी।
—वही

मेरा प्रियतम एक पक्ष के लिए गया था, किन्तु छ महीने से लौटा है अत मैं नहीं बोलूंगी।[1] इसी प्रकार एक गुजराती गीत में भी कृष्ण राधा को द्वार खोलने का आग्रह करते हैं, किन्तु जब राधा द्वार नहीं खोलती है तब वे कौशल से द्वार खुलवा लेते हैं। आंगन के कुएं म एक बड़ा-सा पत्थर डाल देते हैं और स्वयं छिप जाते हैं। परिणामस्वरूप आशंकाग्रस्त होकर पत्नी तुरन्त द्वार खोलकर चीख मारती हुई बाहर निकल पड़ती है। अनिष्ट की आशंका से पत्नी का मान एवं रोष पिघल जाता है।[2]

प्रेमी हृदय पापशंकी होता ही है। एक राजस्थानी लोकगीत में पत्नी अपने 'गैर' नृत्य में नाचते हुए पति को धीरे नाचने को कहती है क्योंकि उसकी यह असाधारण त्वरा देखकर कहीं उसको डाईन नहीं खा जाए।[3] गुजराती नायिका 'गैर' नाचते प्रिय को धीरे नाचने का आग्रह करती है क्योंकि उसके शरीर में खून का जमाव हो जाएगा।[4]

पत्नी ही नहीं, पति भी रूठते हैं और पत्नी मनाती है। एक गीत म पत्नी पति से कहती है कि आप मुख से बोलिए आपके बोलने स ही गुजर होगा। रे पन जी ! मुंह से तो बोलो।[5] इसी तरह गुजराती पत्नी अपने रूठे श्याम को मनाती हुई कहती है कि आपने 'अबोला' क्यों लिया।[6] पत्नी, पति के रूठने से बड़ी चिन्तित हो जाती है। वह अपनी ननद स रूठे पति को मनाने की तरकीब पूछती है। ननद न बताया—

पालो काटण ए लारै जाए, रूस्योड़ा राजन वटै मनै।

किन्तु बेचारी नायिका का श्रम व्यर्थ ही गया, बारह बीघा जमीन का पाला (घास) काट डाला परन्तु प्रियतम नहीं माने। न बोले, न आंख से ही देखा, यथा—

> बाई जी बारह बीघां को पालो मैं काटियो।
> मूडें न बोल्यो थाको बीर, नजरा न माल्या थांको बीर।

---

1 पखवाड़ा रो काप कर्‌यो छो छै महीना सू आया बोला
म्हे रावल सू नांय बोला।
खोलो खोलो गोरी जड़िया किंवाड़ बाहर ऊभो थारो सायबो जी राज ॥
—राजस्थानी लोकगीत–डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 160

2. प्रभु जी ने आंगण ऊंडी कुई मे नकर नारयोआ र सोल
धबकै ऊघड़यां जोड़ कमाड़, प्रभनी गोते मीरयाँ रे लोल।
—रढ़ियाली रात (भाग 3), पृ० 41-42

3 धरी बैंठी परणियोड़ी ओनम्बिया झाड़ र, धीरे नाच।
थेने डाकणियाँ झकराय राते रे, धीरे नाच।
—राजस्थान के त्योहार गीत–लेखक की पुस्तक से

4 अे घणो नाचे मा ! घे घणो नाचे मा।
लोहीरा भराव पयला र, घणो नाचे मा।—नवोद्‌सवो, पृ० 88

5 बोल-बाल म्हारा हियड़ारा जिवड़ा, बोल्यां सरसी र,
पनजी मुख बोल। —राजस्थानी लोकगीत–डॉ० सुधी अग्रवाल, पृ० 160

6 ल्लिखा भी रहो आर्भो हाथ, अबोलड़ा लेना लीधा रे
हैयामा रहो आर्डो हाथ, अबोलड़ा शेना मीधा रे।—रढ़ियाली रात (भाग 2) पृ० 96

अन्त में ननद की सलाह से वह अपने पीहर चल दी। आधे मार्ग में पति ने आकर उसको रोका और विश्वास दिलाया कि इस बार किसी प्रकार से लौट चलो। भविष्य में कभी भी मैं घर में रूठा नहीं करूंगा—

गोरी अबके सबके ए पाछी चाल
अब कदम ए नी गालू घर मे रूसणो।—संकलित

एक गीत में पति के रूठने पर, पत्नी की सखी उससे कहती है कि मुझे बता कि तुम्हारे और तुम्हारे पति के बीच वैर कब से हो गया? वह कहती है कि तुम अपने पति से 'राजीपा' (समझौता) कर लो। फिर क्या था पत्नी ने पति से जाकर प्रार्थना की कि आप सोने के पात्र में मदिरा पान कर लीजिए, परन्तु समझौता कर लीजिए।[1] इस प्रकार पति पत्नी के बीच रूठना मनाना चलता ही रहता है।

(3) पत्नी द्वारा पति सेवा—पत्नी पति की सेवा करती है। इस सेवाभाव का उल्लेख भी गीतों में देखा जा सकता है, राजस्थानी पत्नी अपने प्रियतम को पखा झलकर हवा करती है। एक ऊंची 'मेड़ी' है जिसमें उसने चौमुख दीपक प्रज्वलित कर रखा है। 'निवार' से बने पलग पर उसके पति सो रहे हैं और वह हवा करने के लिए फूलों का पखा हाथ में लेकर खड़ी है।[2] इसी प्रकार एक गुजराती गीत में राधाजी कृष्ण को पखे (वीझणें) से हवा करती है। कृष्ण भी सादे लोक वैभव के बीच आराम कर रहे हैं—सागवान एवं शीशम का बना पलग है, 'अमरा डमरा' से बुना हुआ है। इस पर कृष्ण सो रहे हैं और राधा हवा कर रही है।[3] एक और गुजराती गीत में पत्नी पति की सेवा में खड़ी है। उसके प्रियतम स्नान कर रहे हैं और वह दातुन लेकर खड़ी है। कहती है कि दातुन कीजिए मेरी सखी ननद के वीर।[4] इस प्रकार दोनों ही प्रांतों के लोक गीतों में पत्नी को पति की सेवा में तत्पर दिखलाया गया है। कहीं पति को 'ननद का वीर' कहा गया है, कहीं सास सपूती के पुत्र, सायबा, बाई जी रा वीरा, कृष्ण जी, प्रभु जी आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। कारण यह है कि पत्नी सामाजिक निषेधानुसार पति के नाम का उच्चारण नहीं कर सकती। दोनों ही प्रांतों में यही परम्परा है। यहां एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। एक गीत में पति पत्नी से बातें करता है। परिणाम-

---

1 करले राजीपो, हेरे करले राजीपो
सोना ने पाले दारू पीले र। करले राजीपो॥—नवोहूलको, पृ० 90

2 ढोल्यो पलग निवार को सो गयो सायबो,
अबी म्हें बाव डुलाऊ फूलां री पखी म्हारे हाथ म।
—राजस्थानी लोकगीत—डॉ० अग्रवाल, पृ० 160

3 रयां के पोढे परभु जी पातलो था,
राणी राधाजी ढोले वाय रे शामलीया जी।
—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 71-72

4 आछडामां नाजो जीवण झीलता रे
ह सो दातणियां लेई ने ऊभी रही रे

स्वरूप पत्नी चवरी मे ठीक तरह से अनाज नही डाल पाती है, अत वह कहती है कि हे बीर ! दूर रहिए, ये क्या बात है । आगे वह कहती है कि मैं तो फुलके बना रही थी कि भवरजी बातें करने लगे। मेरे फुलके जल-जल जा रहे हैं। हे सासु के पुत्र ! तुम दूर रहो ।[1] यहा भवर, ननद का बीर, सासु का जाया आदि विभिन्न शब्दो का प्रयोग पति को सम्बोधित करने के लिए किया गया है।

(4) गृहकार्यों मे सहयोग—पत्नी और पति दोनो मिलकर गृहकार्य करते है। कृषि कार्यों मे दोनो एक-दूसरे को सहयोग देते हैं। पति-पत्नी जीवन रूपी रथ के दो चक्र हैं जो समाज एव परिवार को गतिशील रखने के लिए निरन्तर स्वय सक्रिय रहते हैं। राजस्थानी लोकगीत म पत्नी पति को कहती है कि हमारे गेहू 'लावणी' (कटने) आ गए हैं। चन उखाडने चले। खेत म ही बैठकर छाछ और राबडी खाएगे।[2] एक गुजराती लोकगीत देखिए—जिसमे पति पत्नी स कह रहा है कि आज मुझे बाजरा बोना है, राणी कणवण भात लाएगी। पत्नी तुरन्त उत्तर देती है कि आप बोकर शीघ्र लौटिए मैं भात लेकर आऊगी।[3] इस प्रकार इन गीतो मे पति-पत्नी मिलकर कृषि-कार्य करते हुए दिखाई देते हैं।

(5) सुहागरात का वर्णन—पति-पत्नी के जीवन म सुहागरात महत्वपूर्ण रात्रि होती है। लोकगीता म सुहागरात सम्बन्धी गीत भी उपलब्ध हैं। राजस्थानी गीत मे *नायक बडे कौशल के साथ नायिका से सब कुछ माग लेता है। यह* कहता हुआ कि मैं तुम्हारा कुछ नही मागता वह कहता है कि मुझे तुम्हारा झीना घूघट खोलने दो। फिर कहता है कि तुम्हारी कचुकी के कसणे (बधन) निरखने दो और अन्त म नागोरी नाडे को खोलने की आज्ञा मागता है।[4] गुजराती सुहागरात के अवसर पर गाए जाने वाले गीत को उद्धृत करते हुए श्रीयुत मेघाणी ने लिखा है—"इसका (सुहागरात का) वर्णन नही

---

1 मूं तो म्हारे फलका पोऊ, भवर बातां लागा जी,
आगा रेज्यो जी सासु का जाया, म्हारो बाटियो बल बल जावेजी।
ए काँई बातां रे ?—सकलित

2 म्हारा गोऊ लावणी आया जी,
म्हारा चणा पाडवा चालो जी भवर।
छाछ और मक्का की राबडी
वा बैठ खत में खावां जी भवर। —संकलित

3 आज मारा बाजरो बाववो राणी कणवण लावणे भात।
वाबी करी तमे बला पधार जो, हु ने आवु भात। —नवाहुलको, पृ० 157

4 मू थारो काँई नी मांगू राज।
झीणोडो घूघट खोलण दे।
मू थारो काँई नी मांगू जी राज।
म्हाने लाला रा कसणा निरखण दे।
मूं थारो काँई नी मांगू जी राज।
म्हाने नागौरी नाडो खोलण दे।
मू थारो काँई नी मांगू जी राज। —सकलित

होता। इसके लिए शब्दों का प्रयोग उचित नही। यह दृश्य दुनिया को दिखलान का नही, इसकी गोपनीयता अत्यन्त पवित्र एव मगलकारी है। पाच छ पक्ति का ध्वनि काव्य इसके लिए लोक कवि न पर्याप्त माना। गीत का भाव यह है कि 'अमुक बहू आई है और वह अच्छी पचेडी ओढने के लिए लाई है।'[1] बहुत ही सयत शब्दा म यहा सुहागरात का वर्णन कर दिया गया है। ऐस अनक गीन हैं जिनम सयोग शृगार की उद्दाम धारा प्रवाहित है, किन्तु सयम के साथ।

(6) पति से वस्त्राभूषण की मांग—पत्नी अपन प्रियतम स विविध वस्तुआ की माग करती है। कभी पति उसकी इच्छाओ को पूरी करता है तो कभी नही भी। राजस्थानी पत्नी पति से लालर मगाती है।[2] गुजराती गीत म पत्नी न विभिन्न वस्तुए मगवाई किन्तु पति कुछ भी नहीं लाया।[3] पति से पत्नी अनका गीतो म अधिकारपूर्वक विविध वस्तुओ की मांग करती है। पति क अतिरिक्त वह मांग भी किसस सकती है।

(7) बेमेल विवाह—पति पत्नी के सम्बन्धा पर आधारित गीतो म जहा हर्ष उल्लास का वणन है वहा पर जीवन क विभिन्न कटु प्रसगो का भी उल्लेख हुआ है। इस गीत मे कन्या के पिता ने वृद्ध वर से रुपया लेकर अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया है। एक दूसरे गीत म कल्पित वृद्ध विवाह का वणन है—

एक दुपडो जी म्हारा बाप को
म्हाने बूढ़ान परणाई रे डावडा।

युवा कन्या का छोट बच्चे क साथ उसकी मा न विवाह कर दिया सासु उसको रगमहल म सोने भेजती है परन्तु वहां बालक पति झूने मे झूल रहा है—

सासु खदावै जी रग रा मै ल म,
उ तो पालणे ही हीदे रे डावडा।

अधे के साथ विवाह कर दिया वह टटोलता ही रहता है उसको कुछ दिखाई नही देता है बधिर के साथ विवाह कर दिया, वह तो काना से सुनता ही नही—

म्हाने आधा न परणाई रे डावडा।
सासु खदावै जी रग रा मै ल म
उ तो टटोला ही मारे रे डावडा॥

म्हाने बोला ने परणाई रे डावडा
उ तो काना ऊ सुणेइ कोने रे डावडा॥—सकलित

एक साखी मे क्लीव पति के साथ विवाह का भी उल्लेख है। पत्नी को इस बात

---

1 हाँ हाँ र हमली बाछो पछेडी ओढवा आव्याँ
हाँ हाँ र हमसो पानलिया। पग चापवा आव्याँ
हाँ हाँ र हमली मोतैया लाडू जमवाने आव्या। —चुदडी (भाग 1), पृ० 113

2 लाभर ले दे र नणदारा बीरा हरिया डाबर री। —सकलित

3 ओ मारा रगीला लाल। तु तो मने गमतो ज नथी।
तु तो मार ओढणी लाईवो ज नथी।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 1) पृ० 98 99

का बहुत दु ख है कि वह मा नही बन सकी ।

गाडी ने सोवै पाखला, बलदा ने सोवै झूल ।
इ राडिया के पाने पडगी, कोई फल लागो न फूल ।।—संकलित

अब एक गुजराती गीत म छोटे बालक के साथ विवाह का वर्णन देखिए । पत्नी कहती है—अढ़ाई वर्ष का पति है और बारह वर्ष की पत्नी । यह भाग्य का दोष है कि 'कजोड़' (बुरा जोडा) मिला । हे राम ! मैं अपना दु ख किसे कहू ? छाछ लेने जाती हू तो मेरा आचल पकडकर हठ करता है ।[1] इस प्रकार इन गीतो मे बेमल विवाह और उसके कारण जीवन की कटु अनुभूतियो को नारी ने अभिव्यक्त किया है ।

(8) *पति का पत्नी पर अत्याचार—भारतीय जीवन म स्त्री की स्थिति बडी* दयनीय है । आर्थिक दृष्टि से वह पति पर आश्रित रहती है, शारीरिक दृष्टि से भी वह अबला होने के कारण पति पर सुरक्षा की दृष्टि से भी आश्रित है । नारी की इस विवशता का पुरुष दुरुपयोग करता है । वह कभी पत्नी को व्यग्य वचनो द्वारा व्यथित करता है तो कभी वह उसको पीटता भी है । पुरुष की, परिवार एव समाज म भी स्त्री की अपेक्षा श्रेष्ठ स्थिति होती है, अत वह छोटी छोटी बातो को लेकर पत्नी पर अत्याचार करता है । नारी-जीवन के इस करुण-पक्ष का चित्रण लोकगीतो मे मार्मिक रूप से किया गया है ।

पति पत्नी को छोटी से छोटी भूल का दण्ड देता है । दण्ड देते समय कभी थप्पड, लात, तो कभी डडे, तो कभी रस्सी का प्रयोग करता है । एक राजस्थानी गीत म राधा ने पति से प्रार्थना की कि आप विदेश जाए तो मेरे लिए वीणा लाना । इस पर रामजी ने राधा से कहा कि तुम निर्धन घर की स्त्री हो तुम वीणा मे क्या समझो ? इतना ही नही, रामजी को क्रोध भी आ गया और उन्होंने राधा के गोरे गालो पर थप्पड मारा और कमर मे लात मारी ।[2] एक गुजराती गीत मे राधा को प्रभुजी ने यह आज्ञा दी कि पर्वत पर चढी गाय को वापिस मोडो किन्तु राधा गाय को लौटाने मे अपनी असमर्थता प्रकट करती है । बस फिर क्या था प्रभुजी को क्रोध आया और वे भोजन करते हुए उठ खडे हुए और राधा को उन्होंने सोटे से पीटा और बाए पैर के जूते से भी पीटा ।[3] प्रभुजी सो

---

1 अढीवरसनो पईणो ने, बार बरस नी कैना राम
करमनु कजोडु मालो । दुख केने कईअे ? राम
छाश लेवा जम तारे, छेडलो झालो मड । करम०
—गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 166

2 राम जी जाज्यो-जाज्यो देश-परदेश
परदेशा का लाज्यो वीणा बाजणा
गोरा सा गाला पर दी दो थापको
पतली सी कमर मे दी दो लात की ।।—संकलित

3 राधा गोरी डुगर चढियेल धैन,
कँ धैन पाछी वालजो रँ लोन ।
मारी-मारी अवला सबलो टाट
के डाबा पगनी मोजडी रे लोल ।—रढियाली रात (भाग-3), पृ० 41

रहे थे राधा वीझणे (पखे) से हवा कर रही थी कि अचानक उसके हाथ स वीझणा छु
गया और हरि क हृदय म जाकर लगा। फिर क्या था प्रभुजी कहन लगे—तुम नीचे कु
की पुत्री हो। तुम नीचा म भी नीच हो। तुमन पराए घरो म पानी भरन का कार्य किय
है।[1] इन उदाहरणो से ही स्पष्ट है कि पति पत्नी पर अत्याचार करता है और पत्नी को
मौन रहकर यह सब कुछ सहना पडता है।

(9) पति द्वारा पत्नी हत्या—पति पत्नी की चरित्रहीनता सहन नही कर सकता।
जब पति को पत्नी के चरित्र पर सन्देह हो जाता है तो वह पत्नी की हत्या करता है।
लोकगीतो से इस प्रकार क प्रसग उपलब्ध हैं।

एक राजस्थानी गीत का उदाहरण देखिए। ननद भाभी कुए पर पानी भरन
गईं वहां उनके बीच झगडा हो गया। ननद ने अपनी मा को जाकर शिकायत की कि मा
तुम अपनी बहू को समझा दो वह कुए पर अकेली घूम रही है। मा ने पुत्र को सिखाया।
कुए पर अकेली घूमने म नारी की चरित्रहीनता का भाव छिपा हुआ है। अत पति
पत्नी को मारकर घर जाता है और अपनी मा से हाथ धुलवान को कहता है। अत म वह
पश्चाताप भी करता है। उसने माता का कहना मानकर पत्नी की हत्या की, किन्तु मार
देने के बाद अब वह कर भी क्या सकता है, हा अन्य लोगो को उपदेश दता है कि मां के
कहने से कोई अपनी पत्नी की हत्या मत करना[2]।

इस प्रकार का कोई गुजराती गीत उपलब्ध नही हो सका।

(10) पत्नी की सतीत्व रक्षा—लोकगीतों म पत्नी का चरित्र आदर्श सतीत्व की
ओर उन्मुख है। वह अपनसतीत्व की रक्षा के लिए बडे स बडा त्याग एव बलिदान
करन को तत्पर रहती है। सतीत्व की रक्षा के सम्मुख प्राणा का कोई मूल्य ही नारी
ने नही माना। गुजराती लोक गीतो म भी आदर्श सतीत्व की प्रतिष्ठा देखने का
मिलती है।

एक राजस्थानी लोकगीत म पनघट पर पनिहारी को कोई पथिक प्रलोभन देकर
उसके सतीत्व का हरण कर लेना चाहता है। वह उस पनिहारी से घडा पटक कर उसके
साथ चलन का प्रस्ताव करता है तथा विभिन्न प्रलोभन देता है। उत्तर म पनिहारी उससे
कहती है कि हे ओठी! (ऊट के सवार) मैं तेरी जीभ को जला दू। तेरी आखो म साभर
का नमक भर दू। फिर भी ओठी कहता है कि मैं तरे लिए चूडला (चूडिया) लाऊगा

---

1 तमैं नीचा तो कुलनां छोरू रे शामलिआ जी
तमैं नीचां तै मायला नीचक हा
तमैं परघैर भरिया पाणी रे शामलिया जी।—रढियाली रात (भाग 2) पृ० 72

2 म्हैं किणरी मानी सीख
जरणी री कणा मानियो कूवा पर अकेली रे।
मावड री कैणों कोई मत करज्यो
म्हैं मारी घर री नार कूवा पर अकेली रे॥
—गई गई रे समद तलाव—स० विजयदान देथा, पृ० 42

तो उत्तर में पनिहारी कहती है कि चूड़ियां मेरा पति लाएगा।[1] इतने प्रलोभन देने के उपरान्त भी नारी उस ऊंट के सवार की बातों में नहीं आती है। इससे पनिहारी की सतीत्व-भावना स्पष्ट हो जाती है।

यही भाव एक गुजराती गीत में रावण एवं सीता के प्रसंग द्वारा व्यक्त किया गया है। रावण सीताजी से कहता है कि यदि तुम मेरा प्रणय प्रस्ताव स्वीकार करो तो मैं तुम्हारे लिए सवालाख का चूड़ा मंगवाऊं और जैकावल हार भी दूं। किन्तु सीता कहती है कि मैं तेरा चूड़ा पत्थर पर पछाड़ कर फोड़ दूं और तेरे एकावल हार को जला डालूं। मैं तेरी अंगूठी में आग रख दूं, मेरे तो जन्म जन्मान्तर के राम ही पति हैं।[2] नारी आभूषणप्रिय होती है, इसीलिए उक्त गीतों में कामुक पुरुष उसको आभूषणों का प्रलोभन देता है। नारी हृदय के दुर्बल अंग पर ही यद्यपि कामुक व्यक्ति प्रहार करता है, किन्तु उसको भर्त्सना के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। नारी प्राणों की आहुति देकर जहां सतीत्व की रक्षा करती है, वहां आभूषण उसके लिए क्या महत्व रखते हैं? पति के प्रति पत्नी की यह निष्ठा दर्शनीय है।

वियोग पक्ष

(1) पत्नी की वियोगजन्य दशा दाम्पत्य-जीवन के प्रेम का उत्कृष्ट रूप वियोग की स्थिति में देखा जा सकता है। पति जीविकोपार्जन के लिए पत्नी को छोड़कर विदेश चला जाता है, परिणाम स्वरूप दोनों का वियोग होता है। वियोग की स्थिति में पति-पत्नी का प्रेम निखर जाता है। वियोग से संबंधित लोकगीतों में नारी हृदय में छिपी हुई प्रेम भावना की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति मिलती है।

राजस्थान मरुभूमि होने के कारण यहां का पुरुष-वर्ग देश के अन्य भागों में जीवन यापन के लिए जाता है। सेना में नौकरी करना तो अत्यन्त प्राचीन परम्परा है। राजस्थान का वणिक् सम्प्रदाय भी सारे भारत में फैला हुआ है। पर्दे की प्रथा के कारण साधारणतया पति पत्नी को घर पर ही छोड़कर चला जाता है। पत्नी विदेश गमन के लिए उद्यत पति को रोकने का प्रयत्न करती है, किन्तु कर्त्तव्यनिष्ठ पति, पत्नी को रोती-बिलखती छोड़कर विदेश चला जाता है। गुजराती लोकगीतों में भी वियोगदशा का विशद चित्रण देखने को मिलता है। यद्यपि दोनों प्रान्तों की सामाजिक परिस्थितियों में अन्तर है, किन्तु फिर भी उभयत्र वियोग गीतों का बाहुल्य है और वियोगजन्य अनेक दशाओं का विस्तार से चित्रण दोनों प्रान्तों के लोकगीतों में हुआ है।

---

1. वालूं तो झालूं थारी जोमहली लजा ओठी जो अं लो
आख्यों में साभरिया रो लूण म्हारा बाल्हा जी

—राजस्थानी लोकगीत—सं० डॉ० दाधीच, पृ० 82

2. चूडलो तैं तारो पथर पछाडूं नैं बालूं अकावल हार,
अंगूठी मां तारी आग मेलावुं मारे भवोभव राम भरथार। तुरं०

—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 4

एक राजस्थानी लोकगीत म पत्नी पति को इसलिए रुकन का आग्रह करती है कि गणगौर का त्योहार मनाकर जाइये, किन्तु पति कहता है कि मुझे जान दो मेरे साथी बाहर खडे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[1] इसी प्रकार का भाव एक गुजराती गीत म भी व्यक्त हुआ है। वहा दरबार की चाकरी पर जाते हुए पति को पत्नी रोकने का प्रयास करती है। एक अन्य गुजराती गीत म पति यह कहकर असमर्थता प्रकट करता है कि उसके भाई-बन्धुओ की टोली चलन को उद्यत है, वह रुक नहीं सकता।[2]

वियोगिनी अपने विरह का समय जैसे-तैसे काट भी ले किन्तु ये बदलती हुई ऋतुए एव कोयल, मोर, पपीहा आदि उसको वियोग के इन क्षणो को व्यतीत नही करने देते हैं। एक राजस्थानी लोकगीत मे तो वियोगिनी अपने विदेश जाने वाले पति से कहती है कि यदि तुम रुक नही सकते तो गगन मे चमकने वाली बिजली को मना करके जाओ वन के मोरो, कोयल और पडोसिन का दीपक इन सबको मना करके जाओ? पति कह देता है कि मैं न बिजली, न वन के मोर और न कोयल को रोक सकता हूँ, क्योकि ऋतु आने पर बिजली चमकेगी, मोर और कोयल भी बोलेंगे ही और पडोसिन के प्रियतम घर पर हैं अत उसके घर मे प्रकाशित दीपक को नही रोका जा सकता।[3] गुजराती वियोग-गीत मे वियोगिनी वन मे मोरो का झीना स्वर सुनकर, कोयल की किलोल (कूक) सुन कर और मेघों द्वारा वर्षा देखकर कहती है, मेरा प्रियतम कब आएगा।[4]

वियोगिनी की विवशता यह है कि प्रियतम के अभाव मे वह अपने यौवन रूपी सागर मे उठते हुए ज्वार को रोकन म असमर्थ है। वह प्रवासी प्रियतम से कहती है कि यदि कुवा हो तो मैं उसकी थाह ले लू, किन्तु समुद्र की थाह कैसे लू, कागज हो तो उसे पढ लू किन्तु भाग्य को कैसे पढ़ूँ और बच्चे हो तो उनको रख लू, किन्तु यौवन को कैसे

---

1. (क) था नै गेला मे होसी गणगौर,
यां हा रैवो जी, यां हो रैवो जी, यां हो रैवो जी।—सकलित
(ख) तमनें वा ली दरबारी चाकरी रें, थें अपने बा'लो तमारो जीव
गुलाबी। नैं जावा दऊ चाकरी रें।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 92
2 रातलडी नें रही थें गोरी रें, साथें भाई बधनी टोली ॥—वही, पृ० 101
3 बिजली घण बरजो न जाय, वारी०
सावण भादवो रे चमकें बिजली को राज, जें थें पना०।
—राजस्थानी लोकगीत—स० देवडा, पृ० 101
4 (क) झीणा झरमर बरसें मेघ, बादलडो बाये वलें रें लोल। वन मां०
वैंनी मारो उतारानो करनारो, जादवरो क्यारें आवे रें लोल।
—रढियाली रात (भाग 2) पृ० 88
(ख) सावण लागो पिया भादवो जी, कांई बरसण लागो जी मेह,
अब घर आय जा गोरी रा बालमा ओ जी।
—राजस्थानी लोकगीत—स० देवडा, पृ० 69

रखू ।[1]

इसी प्रकार वियोग व्यथा मे तडपती गुजराती नायिका अपने पिता को सदेश प्रेषित करते हुए कहती है कि हे पिताजी । यदि खेत हो तो उसको जोता जा सकता है किन्तु पर्वत को कैसे जोता जाए ? कुवा हो तो उसकी थाह भी ले लू परन्तु सागर की थाह कैसे लू ? पशु हो तो बेच दू किन्तु पति को कैसे बेचू ? यदि पत्र हो तो पढ लू परन्तु कर्म मुझसे नही पढा जा सकता ।[2]

(अ) शकुन विचार

राजस्थानी नायिका वियोग की इस दशा मे जोशी के पास जाकर उससे अपने प्रियतम के आने का समय पूछती है ।[3] गुजराती नायिका वियोग की स्थिति म जोशी से पूछती है कि तुम यह बताओ कि मेरे कर्मो के किन दोषो के कारण मुझे इस वियोग की स्थिति का सामना करना पड रहा है ।[4] हाडौती लोकगीत मे भी यही भावना व्यक्त की गई है ।[5]

वियोग दशा मे पत्नी को शांति कहा ? जोशी से पति के आगमन का समय पूछने से भी उसे सतोष नही होता है । वह प्रवासी के आगमन के लिए शकुन मनाती है । कौए से कहती है कि यदि तुम उडकर मेरे प्रियतम के आगमन की सूचना दो तो मैं तुम्हें खीर-खाड के व्यजन खिलाऊगी । तरी चोच सोने से मढवाऊगी और तरे पैरो मे घुघरू बाधूगी ।[6] एक गुजराती गीत म भी कौए के बोलने पर वियोगिनी कहती है कि मुझे कोई

---

1 कूवो तो हुवें तो ढाला डाक लू जी, कोई समदर डाक्यो न जाय । हांजी ढाला जाय ।
अब घर आयजा आमा थारी लाग रही जी
कागद हुवै तो ढोला बाचलूं जी, करम न बाच्यो जाय । हांजी०
अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी
टाबर हुवै तो पिया राख लू जी, ए जोवन न राख्यो जाय ? हांजी०
—राजस्थानी लोकगीत—स० श्री दैवडा, पृ० 69

2 दादा ! डांदोरे होय तो वेची ओ, ओल्यो परण्यो वच्यो कैम जाय—मोरी०
दादा ! कागल होय तो बाची अे, ओल्या करम वाच्या कैम जाय—मोरी०
—रढियाली रात (भाग 3) पृ० 85

3 जोसी ने बूझण बाई जी म्ह गई जी,
हां ओ जोसी कह पतडे री वात,
कितरा दिनां में आवै गोरी रो सायबो ।
—राजस्थानी लोकगीत—डॉ० अग्रवाल पृ० 167

4 भाई जोषीडा ! जोजे रुडा जोष रे वाला जी
आ के जे मारा करमडी आना दोष मारा वाला जी ।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 76

5 देखो न जोसी टीपणू, म्हारा बालम री खुद आवेगा ।
—हाडौती लोकगीत—डॉ० भट्ट पृ० 324

6 उड उड रे म्हारा काला कागला, कागला कद म्हारा पीवजी घर आवै ।
खीर खाड रो जीमण जीमाऊ, सोना री चोच मढाऊ म्हारा काग ।—संकलित

पत्र पढकर समाचार सुनाओ।[1] एक कागडा गीत मे भी काग द्वारा वियोगिनी अपने प्रवासी प्रिय को सदेश प्रेषित करती है।[2]

(आ) सदेश-प्रेषण

सदेश-प्रेषण वियोगिनी के हृदय मे सुख की सृष्टि करता है। एक राजस्थानी गीत मे सावन की बदली के साथ विरहणी सदेश प्रेषित करती है। वह बदली से कहती है कि मेरे प्रियतम को जाकर यह कह देना कि तुम्हारे बिना तुम्हारी पत्नी बीमार पड गई है और अन्न पानी भी नही लेती है। वह 'मेडी' पर बैठे कौओ को उडाती रहती है और तुम्हारी गोरी वन की मोरनी के समान आसू बहाती रहती है। हे प्रिय! तुम शीघ्र आ जाओ तुम्हारी प्रिया स्वप्न सजोए बैठी है।[3] गुजराती गीत मे वियोगिनी कहती है कि कोई जाकर मेरे प्रियतम को यह सदेश देना कि तुम्हारी प्रियतमा जूही के पुष्प के समान सूख गयी है। वह अपने प्रियतम के स्वागतार्थ प्रतीक्षारत है।[4] एक कागडा गीत मे वियोगिनी विरहदशा मे मछली की भाति तडप रही है।[5]

'हिचकी' आने पर नायिका यह समझती है कि उसको उसका प्रियतम स्मरण कर रहा है।[6] गुजराती वियोगिनी को तो प्रत्येक कार्य करत हुए मानो उसका प्रियतम उसको स्मरण कर रहा है अत उसका मन उदास हो जाता है। उसका प्रियतम भोजन करते-करते स्मरण करता है तो उसके हाथ से कूवा (ग्रास) छूट-छूट पडता है। सोते-सोते प्रिय ने स्मरण किया उसकी सेज गिर-गिर जाती है।[7] हिचकी द्वारा दिनचर्या के प्रत्येक कार्य के साथ वियोगिनी को प्रियतम द्वारा स्मरण करने का ध्यान आता है,

---

1 कटको कागलियो रे, कोई मने वाची ने विगते सुणावो।

—रढ़ियाली रात (भाग 3), पृ० 62

2 नी तेरे सग प्रीतिया टगाई गई जान, भली होई जाण पछाण
काग उडावां सदेसड़े भेजा, चन्ना तेरे बाजी रेशमी सेजां
दौड़ दौड़ी ओड़िया रवाणां।

3 ए सावण की भरी बादली यूं कह दीजे जाय

—ग्राम्य भारती—अगस्त-सितम्बर 1964, पृ० 35

थां बिन मरवण माड़ी पड़गी अन्न पाणी न खाय—सकलित

4 जेम सुकाई तारी जूईनां फूल मारा वाला जी रे।
तेम तारी गोरी हे करमाय, जई ने कहजो मारावाला ने रे।

5 थोड़े-थोड़े पाणी की मछली जे तड़फे।
इजा करी तड़फे नौकरे दी नार।

—रढ़ियाली रात (भाग 3), पृ० 59

6 म्हारो बादीलो चीतारे म्हाने आवे वैरण हिचकी,

—प्राच्यभारती—अगस्त सितम्बर, 1964 पृ० 35

आवे हिचकी, आवे वैरण हिचकी।—सकलित

7 हूं तो ढोले रमु ने हरि सांभरे रे, मारा मनडां उदासी थाय।
ढोले रमु ने हरि सांभरे।

—रढ़ियाली रात (भाग 2), पृ० ..

परिणामस्वरूप वह न खा सकती है और न सो सकती है।

प्रवासी प्रियतम को पत्र द्वारा संदेश भेजकर वियोगिनी नायिका घर आने का बार-बार निमंत्रण देती है। राजस्थानी लोकगीतों में पत्र लिखकर प्रियतम को कई गीतों में वियोगिनी ने आमंत्रित किया है। एक गीत में नायिका कहती है कि मृगनयनी के स्वामी! आप घर पधारिए। मैं आपको कोरे कागज में पत्र लिखवाऊं, इस पत्र को जैसे-तैसे खोलेंगे कस्तूरी के समान इसमें से सुगन्ध आएगी। इसको आप यदि तोलेंगे तो भी यह तौल में भी पूरा उतरेगा।[1] यहां नायिका ने अपने प्रेम में कस्तूरी-सी सुगन्ध बताकर तथा तौल में पूरा उतरने की बात कहकर अपने प्रेम की उत्कृष्टता एवं श्रेष्ठता प्रदर्शित कर दी है। दूसरे गीत में नायिका सास से अनुरोध करती है कि उसके पति को पत्र लिखकर बुला दो।[2] एक पत्र में नायिका पति को मिथ्या समाचार देकर बुलाना चाहती है। नायक को उसके भाई के विवाह, मां की मृत्यु आदि अनेक घटनाओं के मिथ्या समाचार नायिका ने दिए, किन्तु नायक नहीं आया और अन्त में जब उसने अन्तिम झूठ लिखा कि तुम्हारी पत्नी मर रही है तो नायक नौकरी छोड़कर ही चला आया।[3] नायक का नायिका के प्रति प्रेम इस घटना से प्रकट हो जाता है। वह परिवार के सदस्यों में से पत्नी से ही सबसे अधिक प्रेम करता है। प्रियतम को भी नायिका पत्र प्रेषित करने का मधुर आग्रह करती है। कहती है कि मैं आपकी सूरत भूल गई हूं, अतः आप अपनी सूरत पत्र पर लिखकर भेजो ताकि मैं आपकी सूरत को हृदय में रख सकूं।[4] इस प्रकार अनेक गीतों में नायिका पत्र प्रेषित करके अपने प्रवासी प्रियतम को बुलाती है। एक गुजराती गीत में पत्नी (राधा) अपने प्रिय कृष्ण को पत्र प्रेषित करती है। पत्र में कई 'मैणां-टोणा' (व्यंग-वचन) देती है। वह कहती है कि कोई कृष्ण को जाकर मेरा यह पत्र देना। कहना कि कंस की दासी कुब्जा से जाकर तुमने प्रेम किया। हे प्रियतम! तुमने यादव

---

1. कोरा जी कोरा कागज लिखावां ढोला कागद में रे,
   कस्तूरी रे ज्योंही ने खोलो ज्योंही सुगंध घणेरी साहिब,
   ज्योंही ने तोलो ज्योंही रे
   हां जी रे मिरगानैणी रा साहिब घरां पधारो रे।
   —राजस्थानी लोकगीत—सं० डॉ० दाधीच, पृ० 112
2. सासू म्हारी ए लख परवानो नाख
   भवर ने जल्दी बुलाले ए।—संकलित
3. मायल में कागद मोकल्या थांकी मारुणी मरे है
   छाल्यो राजाजी थांकी नौकरी, बगड गया घर बार।—संकलित
4. (क) मूं उणियारो भूली आपरो,
   मूं सूरतियां भूली आपरो।
   उणियारो लिख दो कोरा कागदां,
   थारी सूरतियां ने हरदै राखूली।—संकलित
   (ख) गोरां' बहु ते छाना कागल मोकले,
   घर आवो नणदवाना वीरा रे श्रावण रंगी ओ। —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 61

कुल को लज्जित कर दिया। साथ ही बलभद्र भाई को भी लज्जित किया है।[1] यहा भी राधा पत्र के माध्यम से व्यग-वचनो द्वारा कृष्ण को बुलाने का प्रयत्न करती है।

(ड) मानवेतर प्राणियों के साथ सदेश-प्रेषण— मानवेतर प्राणियो के साथ सदेश-प्रेषण का कार्य न केवल अभिजात साहित्य मे उल्लेखनीय है बल्कि लोक-साहित्य मे भी ऐसे अनेक गीत उपलब्ध हैं, जिनमे वियोगिनी नायिका पक्षियो के साथ अथवा मेघ के साथ सदेश प्रेषित करती है। वियोगिनी की विवशता है कि वह मानवेतर प्राणियो के साथ सदेश भेज रही है। परिवार के सदस्यो अथवा किसी मनुष्य के साथ वह सामाजिक मर्यादा के कारण सदेश नही भेज सकती। फिर भारतीय नारी शिक्षा के अभाव म पत्र भी तो नहीं लिख सकती। तव वह अपने हृदय की वेदना को मानवेतर प्राणियो से कहकर ही अपने हृदय को सतोप देती है। पक्षियो को सबोधित करके वह अपने हृदयस्थ भावो का उदात्तीकरण (सबलीमेशन) करती है। यदि यह साधन वह नही अपना पाती तो मर्यादा के बधनो के कारण और शिक्षा के अभाव के कारण उसकी वेदना उसके जीवन पर भार बन जाती, किन्तु उसकी ये दमित-भावनाए पक्षियो आदि को सबोधित करते हुए लोकगीतो के माध्यम से मुखर हो गई हैं।

कुरज पक्षी को सबोधित करते हुए राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो की नायिकाओ ने अपने प्रवासी प्रियतम को सदेश प्रेषित किए है। राजस्थानी वियोगिनी ने कुरज पक्षी को धर्म की बहिन बनाकर अपना सदेश अपने प्रवासी प्रियतम तक ले जाने का आग्रह किया। सदेश लेकर कुरज नायिका के पति के पास जा पहुची। गीत मे आगे कहा गया है कि मैं चुनडी को तो नही त्याग सकती क्योकि यह तो सुहाग का चिह्न है किन्तु गोट मिसरू (बढिया ओढनी) न ओढने का मैंने प्रण ले लिया है उसके प्रियतम यह सदेश प्राप्त कर उदास हो गए और वह घर के लिए तुरन्त चल दिए।[2] यहा एक बात उल्लेखनीय है कि यह वियोग-वर्णन कितना सरल एव स्वाभाविक है। एक ओर अभिजात-साहित्य मे वियोग वर्णन करते समय कवियो ने कितनी ऊहात्मक उक्तियो की रचना की है, किन्तु यह वियोग-वर्णन केवल सत्य पर आधारित है।

अब गुजराती गीत 'कुजलडी' मे नायिका ने 'कुरज' से उसके प्रवासी प्रियतम तक सदेश पहुचा देने का अनुरोध किया है। नायिका ने प्रवासी प्रियतम को जो संदेश दिया उसमे उसने वियोगावस्था का कोई उल्लेख नही किया। हा, उसने प्रियतम से हाथ के नाप के चूडा लाने का तथा गूजरी (हाथ मे पहनने का गहना) मे रत्न जडाने का आग्रह

---

1. रे कागल देजो कानुडा ने जाई
कसनी दासी बोली कुबजा ने तेमु प्रीत लगई,
जाय शु कुल लजाविषु रे वा'ला,
लजव्या बलभद्र भाई रे—कागल०—रढियाली रात (भाग 2), पृ० 61

2 तू छै ए कुर्जा मायली, तू छै धरम री बैण
एक सदेशो ए बाई म्हारो मे उडो ए म्हारी राज
कुर्जा म्हारा पीव मिला दे ए
—राजस्थानी लोकगीत—स० डा० दाधीच, पृ० 128 129

अवश्य किया है ।[1] दोनो गीतो मे कुरज के साथ सदेश प्रेषित किया गया है ।

(ई) वियोग एव प्रकृति—वियोग की स्थिति मे प्रकृति नायिका को अधिक व्यथित करती है। उस समय शीतल पदार्थ उसके दाधकारी हो जाते हैं। पपीहे, दादुर, मोर, कोयल आदि का मधुर स्वर वियोगिनी के लिए कर्णकटु हो जाता है। वियोगिनी नायिका प्रकृति को कोसती है। प्रकृति का उद्दीपन रूप मे यह चित्रण अधिक मार्मिक बन पडा है। एक राजस्थानी लोकगीत मे वियोगिनी नायिका अपनी दासी रतनादे से कहती है कि इस कौए को तीर मारो यह नित्य आकर मेरी नीम पर बोलता है। यह मेरे मन को क्यो भ्रमित करना चाहता है।[2] एक दूसरे गीत मे मोर रात को बोला और वियोगिनी के हृदय मे दुसार (करवत) चल गई। वह कहती है कि मैं रगमहल म सो रही थी इस मोर ने मेरे नेत्रो की नीद उडा दी।[3] यहा वियोगिनी को मोर की मधुर ध्वनि दुसार के समान लगती है। इसी प्रकार वियोग की स्थिति मे प्रकृति का उद्दीपन रूप मे चित्रण गुजराती लोकगीतो म भी उपलब्ध है। माह महीने मे मन्दिर (भवन) नायिका को खाने दौडता है। यह शय्या किस काम की ? फाल्गुन मे गोपिया फूलो का हार क्यो बनाकर लाती हैं ? चैत्र मे सूर्य आकाश मे तपता है और उससे मेरा हृदय भी दग्ध हो रहा है।[4] इस प्रकार वियोग की स्थिति मे प्रकृति नायिका के लिए कष्टप्रद हो जाती है और उसकी वियोग-व्यथा को प्रकृति के उपकरण प्रबल कर देते हैं।

(उ) बारहमासा वियोग गीत—'बारहमासा' के रूप मे वियोग-गीत प्रचलित है। इन गीतो मे प्रत्येक मास एव ऋतु मे वियोग-वेदना के कारण नायिका की क्या दशा होती है, इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है। बारहमासा की यह परम्परा राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो मे समान रूप से प्रचलित है। डॉ० स्वर्ण लता अग्रवाल ने लोकगीतो के वियोग पक्ष का विवेचन करते हुए लिखा है—"पहले तो पति के परदेश जाते समय ही वह अपनी अनुमानित विरह दशा के गीत गाने लगती है, फिर चले जाने पर 'औल्यू' सपनो, चौमासो, बारहमासा और सन्देशो तथा 'सुगन-विचार' आदि अनेक प्रकार के

---

1. कुजडली रे सदेशो अमारो, जई वालमने के' जो जी रे
   माणस होय तो मुखोमुख बोले, लखो अमारी पाखलडी र कुजलडी रे०
   —रढियाली रात (भाग 2) पृ० 86 87
2. मारो, ए रतनादे दासी । कागलिया रे तीर !
   नित नित आय करके, म्हारी नीमडली रे बीच । मारो
   —राजस्थानी भारती (वर्ष 1, अक 2 3 जुलाई-अक्टूबर, 1946), पृ० 100
3. हां रे मोरिया आछियो बोल्यो रे ढलती रात को, रात को,
   म्हारा हिवड़ा में वेगी छै दुसार
   हा रे मोरिया म्हें तो सूती छै रगरा मैं'ल मे,
   म्हारा नयणांरी उडादी नींद । हां रे · —सकलित
4. आषाढ़े भीणी मवूके बीज, मधुरा बोले मोरला रे लोल
   श्रावणी सोल सज्या शणगार, के मांखडी न आजिये रे लोल ।
   —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 88

गीत नारी के कंठ पर खेलने लगते हैं।"[1] श्रीयुत मेघाणी ने इस सम्बन्ध में लिखा है—हमारे बारहमासी गीत भी इस लम्बे विरह एवं प्रवास में से निःसृत होते हैं।[2] विदेश जाने वाला प्रिय अपनी पत्नी को आश्वासन एवं वचन देकर जाता है कि वह शीघ्र विदेश से लौटेगा, किन्तु जब वह दीर्घकाल तक प्रवास से लौटकर नहीं आता है तब नायिका उस प्रवासी की प्रतीक्षा में एक-एक दिवस, मास गिन-गिन कर काटती है। यहाँ तक कि बेचारी की अंगुलियों की रेखाएं गणना करते-करते घिस जाती हैं।[3] वियोगावस्था में जो अनुभूति नायिका को होती है, वही इन गीतों का वर्ण्य विषय है। ऋतुएं आती हैं, उसके हृदय में नवीन भावों का संचार करती हैं और चली जाती हैं, किन्तु उसका प्रियतम नहीं आता है। ऐसे निष्ठुर प्रियतम को नायिका अपने दैनिक जीवन की वेदना का विवरण इन गीतों के माध्यम से देती है। ये गीत उसके वियोग-जीवन की दैनंदिनी (डायरी) हैं।

वियोगिनी पत्नी अपने प्रियतम को वर्षा ऋतु में घर आने का निमन्त्रण देती है। वह कहती है कि भाद्रपद मास में वर्षा झुक रही है और गगन में घटाएं छा गई हैं। कोकिल कूकती है और दादुर-मोर बोल रहे हैं। पपीहा पीव-पीव का शब्द सुना रहा है। बिजली चम-चम चमक रही है और टप-टप वर्षा बरस रही है। शरद् ऋतु का भी आगमन हो गया किन्तु प्रियतम नहीं आए। प्रिया ने आमंत्रित करते हुए कहा—हे प्रियतम! अब तो घर आ जाओ, अनन्त जाड़ा पड़ रहा है। अन्त में बसन्त ऋतु भी आ गई। नायिका की सभी सखियों ने चीर रंगवा लिये, किन्तु प्रियतम के अभाव में वियोगिनी तो विरंगी ही रही, क्योंकि उसका सब रंग तो उसके प्रियतम लेकर चले गए।[4] इस बारहमासा में वर्षा, शरद् एवं बसन्त ऋतुओं में नायिका के हृदय में मिलन-भावना की जो आतुरता जागृत होती है, उसका मार्मिक चित्रण किया गया है। वर्षा ऋतु में वियोगिनी को प्रकृति में सर्वत्र संयोग के दर्शन होते हैं, इससे उसकी व्यथा और भी द्विगुणित हो जाती है। वह अपने प्रियतम से कहती है कि सावन आ गया है, पैरों में मिट्टी लिपटने लगी, वृक्षों से लताएं लिपट गई हैं और पुरुषों से नारी। यथा—

सावण आयो सायबा, पगां बिलूगी गार।
तरां बिलूंबी बेलड्या, नरां बिलुबी नार॥[5]

---

1. राजस्थानी लोकगीत, पृ० 164
2. रढ़ियाली रात (भाग 2), पृ० 18
3 सावण भावण बह गया, कर गया कौल अनेक,
गिणतां-गिणतां घस गई, म्हारी आंगलियां री रे
केसरिया बालम आवजो पधारो म्हारे देस।
4 आई बसन्त सब की सखी सभी रगावे चीर
मेरो सब रंग ले गयो आई जी को बीर
ओ बसन्त बसन्त में बारो नार विरंगी मेरे प्राण॥
5 राजस्थान की रसधारा—डॉ० मेनारिया, पृ० 42

प्रकृति का यह सयोगी रूप देखकर वियोगिनी नायिका अत्यधिक दु खी हो जाती है। प्रकृति का लोकगीतो मे उद्दीपन रूप मे बहुत चित्रण किया गया है। प्रकृति एव अन्य सखियो की सयोग की स्थिति, वियोगिनी के जले हुए हृदय पर नमक का कार्य करती है।

गुजराती गीतो का बारहमासा राधा-कृष्ण के वृत पर आधारित है। राधा यहा वियोगिनी नायिकाओं का प्रतिनिधित्व करती है। वह कृष्ण को 'रमवा' (खेलने) आने का निमत्रण देती है। वह कहती है कि कार्तिक मास तो मैंने कष्टपूर्वक व्यतीत किया। हे नन्दलाल ! आप क्यो इतन निर्दय हो गए हैं। प्रत्येक माह मेरे कष्ट को बढाता है। इधर होली भी आ गई, राधाजी ने अपनी झोली अबीर-गुलाल से भरा ली, किन्तु प्रिय के अभाव म उसको कौन होली खिलाए ? प्रत्येक मास म अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए राधाजी वर्षा ऋतु के आगमन को देखकर अधिक उद्विग्न हा गई। अब उसको यह चिन्ता सतान लगी कि अत्यधिक वर्षा के कारण जब नदियो का जल बहुत बढ जाएगा, तब मेरा प्रियतम कैसे पार उतरेगा ? अस्तु वर्षा भी किसी तरह व्यतीत हुई अब दीपावली का त्योहार आ पहुचा और लोग दीपावली के उपलक्ष मे 'सेव सुवाडी' बनान लगे, किन्तु राधाजी कहती है कि प्रियतम के बिना मेरे लिए कैसी दीपावली ? अत हे हरि आप आइये।[1] राजस्थानी लोकगीतो मे भी होली एव दीपावली के त्योहारो पर वियोगिनी नायिका अपने प्रियतम को आमन्त्रित करती है।[2]

एक राजस्थानी गीत मे नायिका कहती है कि हे प्रिय ! छप्पर पुराना पड गया है और उसमे लगे हुए बास भी तडकने लग गए है, वर्षा बहुत हो रही है अत अब तुम घर आ जाओ।[3] एक ओर नारी ने छप्पर पुराना पड गया है और बास तडकने लगे है कहकर जीवन के अभावो की ओर पति का ध्यान आकृष्ट किया है तो दूसरी ओर इसमे प्रतीकात्मकता है, यौवन ढल गया है, शरीर मे वृद्धावस्था के लक्षण दिखाई देन लगे हैं। इसी प्रकार का एक उदाहरण श्री पुष्कर चदर वाकर ने दिया है और उसके सबध मे लिखा है—फुलवाडी महक उठी है। कौन फुलवाडी ? यौवन की हो तो। फुलवाडी का भोक्ता भ्रमर तो चाहिए ही।[4] उस गीत मे नायिका कहती है कि झिरमिर झिरमिर वर्षा हो रही है, पानी गन्दा हो गया है। मेरे जीव की रक्षा के लिए हे प्रिय आओ।

---

1 आवो ते मासे आवे दिवाली, लोक वणे छे सेव सुवाली,
बा'ला बिना अमो दिवाली रमवा आवो ने रे—आवो०।
—रढ़ियाली रात (भाग 3), पृ० 83-84

2. (क) काई थारावो रो मुजरो, दीवाल्या घर री करज्यो म्हारा राज।
—राजस्थान के लोकगीत—स० श्रीमती चूडावत

(ख) फागण फीको ए सहेल्या। एक स्याम बिना फागण फीको।
—राजस्थान भारती (1 वर्ष 1 अक), अप्रैल, 1946 पृ० 103-104

3 सावण लागो पिया भादवो जी,
काई बरसण लागा, बरसण लागो जी मेह, होजो ढोना मेह।
अब घर आयजा गोरी रा बालम आ जी,
—राजस्थानी लोकगीत (भाग 3), श्री देवडा, पृ० 69

4 नवोहलको, पृ० 37

जैसे ही तुम्हारे पैर पड़ेंगे, फुलवाडी महक उठेगी। हे प्रिय! घर आवो।[1] यहा यौवन का प्रतीक महकी फुलवाडी एवं पति का प्रतीक भ्रमर है।

(2) पति की वियोग जन्य दशा लोकगीतों में चित्रित वियोग को एकाकी कह सकते है। जहा नारी ने प्रियतम को इतने सदेश प्रेषित किए हैं, उपालम्भ दिए हैं, प्रियतम की प्रतीक्षा मे आखें बिछाए बैठी रही है वियोग व्यथा म थोड़े पानी मे तड़पती मछली की भांति तड़पी है काग उडा-उडा कर थक गई है, सदेश ले जाने वालो को कितना आग्रह अनुरोध एवं अनुकम्पा के लिए याचना की ही है वहा पुरुष की वियोगावस्था का चित्रण नाम-मात्र को एक दो स्थानो पर मिलता है।

कुरज गीत मे जब पक्षी ने प्रियतमा का पत्र लाकर नायक को दिया, तब वह उदास हो जाता है। वह राजा से जाकर नौकरी न करने का निश्चय बता देता है और घर पहुचने को व्यग्र हो जाता है। उसके हृदय म सुषुप्त-प्रेम प्रिया के उस सदेश को सुनते ही जागृत हो जाता है। वह नौकरी का तुरन्त त्याग कर देता है और साथ ही अपने ऊट को शीघ्र अपनी प्रिया तक पहुचा देने का मधुर अनुरोध करता है।[2] एक गुजराती गीत म कोई नायिका नगर मे कही गई हुई है। उसी समय जब काल बादलो मे बिजली चमकने लगती है और मोर बोलने लगते है[3] तब नायक उस नायिका के अभाव मे बडे ही सयत रूप से अपने वियोग की अभिव्यक्ति करता है।

(ग) अवैध सबध और पति-पत्नी राजस्थान के प्रसिद्ध गीत 'रामू-चनणा' मे रामू नामक सुनार के लडके और 'चनणा' नामक राजा की पुत्री म बाल्यकाल से ही प्रेम का वर्णन मिलता है। युवा होन पर यह प्रेम और भी प्रगाढ़ हो जाता है। अन म जब चनणा को लेन के लिए उसका पति आ जाता है तब रात्रि के समय चनणा वर्षा मे भीगते हुए रामू के घर पहुचती है और उससे अपना द्वार खोलने का आग्रह करती है। रामू द्वार नही खोलता है और चनणा से कहता है कि तू जिधर से आई है उधर ही चली जा, किन्तु चनणा अपने बाल्यकाल के प्रेम की दुहाई देकर रामू को विवश कर देती है। द्वार खुलने पर वह रामू से लिपट कर रोने लगती है और उसको यह बताती है कि उसका पति रिसालू उसे कल ले जाएगा। रामू ने उसको कहा कि मैं तुम्हें रोकूगा। इस पर चनणा कहती है कि मुझे अब तुम्हारे प्रेम पर विश्वास नही रहा, तुमने सारी

---

1. मोगावे ढारो पगलां पड़शे, फुलवाड़ी फोरी, आव्ये लेरीड़ा,
   घेर आव्ये, मारा जोबना साव जो।—नवोढ़लको, पृ० 37
2. बोल्या साथीड़ा थारो साथ, बोल्यो राजाजी, थारी नौकरी जी।

   करवा म्हाने बेग पुगावो जी।

   —राजस्थानी लोकगीत—डॉ० दाधीच, पृ० 129
3. कानी काली बादली मां बीजली झबूके।
   मेंवनो करे पनघार, बोन बनायल बोलै छै मार।
   ढकमानी पं'र मारी गई छै नगरमां।

   —रढ़ियाली रात (भाग 2), पृ० 90

रात व्यर्थ ही खो दी, द्वार खोलने में इतनी देर कर दी। उसी समय चनणा का पति योगी का वेश करके रामू के द्वार पर आता है और भिक्षा मांगता है। चनणा ने भिक्षा के रूप में योगी को मोती-मूंगे देने चाहे किन्तु उसने चनणा से उसका हार मांगा। रामू से सलाह लेकर, चनणा ने अपना हार भिक्षा में दे दिया। दूसरे दिन राजा रिसालू हठ करके चनणा को विदा कराके ले चला। चनणा को जाते देखकर रामू बेहोश होकर गिर पड़ा और मर गया। मार्ग में राजा रिसालू ने जब चनणा से हार के विषय में पूछा तब उसने बहाना किया कि वह तो उसे महलों में भूल आई है, जब राजा ने चनणा को रात को योगी बनकर हार लेने की बात बता दी तब वह भी रामू की भांति ही बेहोश होकर मर गई।[1] इस गीत में जाति एवं वर्ग के आधार पर होने वाले विवाह के परिणाम स्वरूप दो सच्चे प्रेमियों को अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा। यहां हमारा उद्देश्य सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विवेचन न होकर पति पत्नी के अवैध संबंधों की ओर संकेत करना मात्र है। इस गीत से चनणा की अनैतिकता स्पष्ट हो जाती है।

रामू-चनणा के समान ही दूसरा प्रसिद्ध गीत 'नागजी' है। नागजी एवं उसकी प्रेमिका दोनों ही बाल्यकाल से एक दूसरे को प्रेम करने लगे थे और युवा होने पर भी उनका यह प्रेम-व्यापार चलता रहा। नायिका की इच्छा के विरुद्ध उसके पिता ने उसका विवाह किसी अन्य व्यक्ति से तय कर दिया। जिस रात्रि को विवाह होने वाला था उसी रात्रि को नाग जी ने आत्मघात कर लिया। जहां नाग जी चिरनिद्रा में सो रहे थे, वहां दुल्हिन की वेश-भूषा में उनकी प्रेमिका भी पहुंची। नाग जी को उसने बहुत पुकारा, किन्तु अब नागजी कैसे बोलते? अंत में उसने भी अपने प्राणों का वहीं पर त्याग कर दिया।[2] इस गीत में भी अवैध संबंधों का वर्णन है।

तीसरी कथा 'बीजा-सोरठ' की है। सोरठ बीजा की मामी थी, किन्तु दोनों में प्रेम हो गया। इनके संबंध में भी कई गीत प्रचलित हैं।[3]

बीजा सोरठ की प्रेम-कथा के अनेक रूपान्तर उपलब्ध हैं। राजस्थान में भी और गुजरात में भी। बीजा सोरठ की कथा 'मामी-भाणेज' गीतों के नाम से भी प्रचलित है। एक गुजराती गीत में मामी अपने भानजे को खेती करने को आमंत्रित करती है। बाजरा

1 भिरमिर-भिरमिर चनणा मेह पड़ै जी। कोई तो रही मूसलाधार
धारा तो आवण एक चनणा क्यूं हुयो जी?

हार ज बकस्यो जी क चनणा चाव सूं जी, ले म्हारे रामूड़े की खैर,
खैर मनाओ र रामूड़े कै जीव की जी।
—राजस्थानी लोकगीत—डा० मेनारिया, पृ० 62 से 65

2 नागजी, तावड़िया पाणी पड़े, हो रे बैरी,
घायल कर दी तावड, ओ नाग जी।

नागजी भली निभाई प्रीति, रे बैरी रैन बिछोवो कर चालियो, ओ नाग जी।
—राजस्थानी लोकगीत (भाग 3), स० दवेश, पृ० 108-109

3 मधुमती (वर्ष 1 अं 1) सोरठ और बीजा की प्रेम कथा सम्बन्धी प्राचीन राजस्थानी लोकगीत श्री अगरचन्द नाहटा, पृ० 78

लगाकर काटने एवं मसलकर साफ करने तक के लिए वह भाणज को संबोधित करती हुई कहती है। यथा—

सेतरा सुडवा रे भोणजु रे,
सूडशु मोमी भोणेज, वालम हेरी नु भोणजु रे।
× ×
बाजरो महळवो रे भोंणजु रे।
महळशु मोमी भोंणेज वालम हेरी नु भोणजु रे।[1]

यहां खेती वास्तविक न होकर, लाक्षणिक अर्थ द्वारा यदि यौवन की मान ली जाए तो मामी भाणेज के अवैध-संबंधों का स्पष्टीकरण हो जाता है।

आमल खीवड़ा भी अविवाहित होते हुए एक-दूसरे प्रेम करने लगे थे।[2]

इसी प्रकार का प्रेम राजकुमारी मूमल (लोद्रवा-जैसलमेर) एवं राजकुमार महेन्द्र (सोढा राजपूत-उमरकोट-पाकिस्तान) के बीच भी विवाह से पूर्व वर्णित किया गया है। बाद में इनको भी आजीवन वियोग-वेदना में तड़प-तड़प कर प्राण देने पड़े।[3] इन अवैध संबंधों से पूर्ण अनेक गीत हैं, जिनका विवेचन यहां विस्तार भय के कारण नहीं किया जा रहा है। देवर-भाभी के संबंधों का विवेचन करते हुए भी इसी प्रकार के अवैध संबंधों से संबंधित गीतों का उल्लेख किया गया है।

अब पति के अनैतिक व्यवहार सम्बन्धी कुछ गीतों का विवेचन किया जा रहा है। एक राजस्थानी गीत में पत्नी कहती है कि मेरा अमुक आभूषण तो वहां सन्दूक में पड़ा है जहां मेरा पति भायेली (प्रेयसी) के साथ खेल रहा है।[4] इसी प्रकार एक गुजराती स्त्री अपनी सासु जी से कहती है कि हे सासुजी मुझे रात को सच्चा स्वप्न आया (सच्चा स्वप्न कहने में ही घटना की सत्यता प्रकट हो रही है) तुम्हारा पुत्र पराई हवेली में पैर दे रहा था। आप अपने पुत्र को रोकिए, अन्यथा लाखीणा (लाखों का) घर का पानी (मर्यादा) लज्जित होता है।[5] पुरुष के ऐसे अनेकों प्रसंग उपलब्ध हैं, जहां वह परकीया प्रेम में पड़कर स्वकीय की उपेक्षा करता है।

कहीं-कहीं परकीया नायिका का पर-पुरुष के प्रति आकर्षण तथा समर्पण एवं अपने पति के प्रति उपेक्षा भाव देखकर आश्चर्य भी होता है। एक राजस्थानी गीत में नायिका कहती है कि हे पनजी ! (प्रेमी) तुम मुंह से बोलो। यदि तुम्हारी आंखें दुखती हैं तो मैं सुरमा डालूंगी। मेरे पति की आंखें दुखें तो मैं लाल मिर्च डालूं।[6] यहां पति की

1 गुजरा तेनो लोक साहित्य माला (भाग 10), पृ० 233
2 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 174
3 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० दाधीच, पृ० 158
4 म्हारा बटे पड़िया रे मजेंवरा (मंजूषा) के मांय
गोरी को ढोलो बटे रमे रे भायलियां रे साथ।—संकलित
5. मारा आया ने ! अंहू रे, परत्रो आया नै
लाखेणा घर रो पाणी लाजे ओ ! परजो आया ने।—नवीहूनको, पृ० 90
6 हां रे पन जी मूंडे बोल। हीवड़ा रा छीवड़ा पनजी मूंडे बोल।
पन जी थांरी आंख्यां दुखे सुरमो सारूं रे।
परण्या रा आंख्यां दुखे रातो मरच्यां वाटूं रे, मूंडे बोल।—संकलित

उपेक्षा ही नहीं, बेचारे की आंखों में लाल मिर्च डाली जा रही है और प्रेमी की आंखों में सुरमा। एक गुजराती गीत में तो पत्नी पति को विष देकर चिर निद्रा में ही सुला देती है।[1]

गुजराती का एक गीत 'पड़ोसी साथे प्रेम' में पत्नी की चरित्रहीनता स्पष्ट देखी जा सकती है। वह कहती है कि मेरा पति तो झाड़ीवाले प्रदेश में गया और पड़ोसी गया गुजरात। पति खोपरे (नारियल) लाया और पड़ोसी लाया गुड़। खोपरे खाने से मुझे निद्रा लगती है और गुड़ मुझे बड़ा मधुर लगता है। पति लूगड़ा (चुनरी) लाया, पड़ोसी घाघरा लाया। मैं लूगड़ा ओढ़ती हूं तो गिर पड़ता है और घाघरा बहुत ही सुन्दर लगता है, यथा—

पेईणो लाइवोलू गलां, पड़ोशी लाइवो घाघरो, जलेबी भीगे।
लूगलूं ओलूं तो ढली पले, सोरो शोभे तारो घाघरो, जलेबी भीगे।[2]

यहां पति को झाड़ीवाले प्रदेश में, तो प्रेमी पड़ोसी को गुजरात, पति के खोपरों से पड़ोसी के गुड़ का मधुर लगना पति की लाई चूनरी का गिरना और प्रेमी का घाघरा सुन्दर लगना। ये बातें स्पष्ट ही पति से पड़ोसी की श्रेष्ठता व्यंजित कर रही हैं। जलेबी भीगे कहना भी एक लाक्षणिक प्रयोग है। पति एवं पड़ोसी दोनों के अभाव में नायिका की यौवन रूपी जलेबी भीग रही है अर्थात् व्यर्थ जा रही है, यह अर्थ लगा लेना असंगत न होगा। यह तो स्पष्ट ही है कि पत्नी दुश्चरित्र है और पति से अधिक अपने प्रेमी पड़ोसी को चाहती है, हां सीधे शब्दों में न कहकर लाक्षणिक रूप से ही यह बात कही गई है। एक राजस्थानी अश्लील लोकगीत में भी नायिका के रूप-सौन्दर्य एवं यौवन के लिए क्रमशः 'गुड़ की भेली' एवं 'जलेबी' प्रतीकों का प्रयोग किया गया है—

'फाड़ू तो गुड़ की भेली, तोड़ू तो टूक जलेबी'[3]

यहां परकीया फोड़ने पर गुड़ की भेली सी कठोर है और तोड़ने या चखने से रस भरी जलेबी के समान मधुर है। अश्लील एवं अवैध सम्बन्धों में प्रतीकात्मक प्रयोग ही अधिकतर देखने को मिलते हैं।

(ए) देवर-भाभी : भारतीय जन-जीवन में एवं अभिजात साहित्य में देवर-भाभी के सम्बन्ध बहुत ही आदर्श माने जाते रहे हैं। बाल्मीकि ने रामायण में जिस आदर्श की स्थापना की उसी को उत्तरकालीन कवियों ने भी अपनाया।

यों जन-जीवन में इसी आदर्श की बात कही सुनी जाती है, परन्तु आदर्श यदि यथार्थ से भिन्न न हो तो कैसा आदर्श लोकगीतों के आधार पर यहां इसी आदर्श का परीक्षण किया जा रहा है।

पानी के लिए कुएं पर जाती हुई भाभी से देवर कहता है कि कुएं की मुंडेर पर पड़ा काच-कथा लेती आना। भाभी कहती है कि मेरे सिर पर जल से भरा घड़ा है, अतः

---

1 सो तू रे बु तो नानीवउ, नो तु आवुकरबु जो।
राआला कुवर सरखो मार्यो रे, नानी वउ जो। —नवोहूनको, पृ० 38

2. गु० लो० सा० मा० (भाग 10), पृ० 232

3. संकलित

मैं झुकने मे असमर्थ हूँ। साथ ही मुझे अपने पति का भय भी है। यहां गीतकार ने प्रतीक शैली का प्रयोग किया है। गावो मे काच-कथा छैले रखते हैं। फिर जिस कुए पर स्त्रिया भरने जाती हो, वहा काच कथा रखन वाला व्यक्ति तो निश्चित रूप से छैला होगा। देवर का भाभी से काच-कथा मगवाना प्रणय-प्रस्ताव का प्रतीक है। इस प्रतीक के पीछे लोकजीवन की पृष्ठभूमि है। जिसके सदर्भ से इस प्रतीक को समझा जा सकता है। भाभी का उत्तर—मेरे सिर पर जल से भरा घडा है प्रतीक है—उसके सुहाग का। यहा ज्ञातव्य है कि जिन जातियो मे स्त्रियो का पुनर्विवाह होता है उनम वह विवाहिता जब नए पति के घर मे प्रथम बार प्रवेश करती है, तब वह सिर पर पानी से भरा घडा लेकर ही प्रवेश करती है। अत यहाँ जल से भरा हुआ घडा सुहाग का प्रतीक है। फिर भाभी का यह कहना कि मुझे अपने पति का भय है—सारे प्रतीक विधान की कुजी है, जिससे उसके द्वारा न झुक पान वाली बात का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है।[1] यहा स्पष्ट है कि देवर भाभी के सम्मुख प्रणय प्रस्ताव रखता है और भाभी को भी इस प्रस्ताव से कोई विरोध नही, किन्तु उसको पति का भय-मात्र है।

इसी सदर्भ मे एक भोजपुरी गीत को भी उद्धृत किया जा सकता है। भाभी मिट्टी खोदने गई और पापी 'देवरवा' न उसकी बाह पकड ली। भाभी कहती है कि मेरी कलाई छोड दो अन्यथा मरी साहनी रग की चूडिया टूट जाएगी।[2] बाह पकडने का तात्पर्य तो बहुत स्पष्ट ही है। भाभी बाह पकडन पर कलाई छोड देने की बात कहती है। साथ ही 'देवरवा पापी' कहती है, किन्तु यहा देवरवा वैसा ही पापी है जैसा 'बलमवा वैरी'। जैसा बलमवा वैरी म वैरी अत्यधिक प्रेम का द्योतक है उसी प्रकार देवरवा पापी मे पापी भी। साहनी-रग की चूडिया यहा सुहाग का प्रतीक है उनक टूटने के भय से ही भाभी कलाई छुडाना चाहती है। उक्त दोनो गीतो म दवर के प्रणय प्रस्ताव स भाभी को विरोध हो ऐसा नही लगता, केवल सुहाग का प्रतीक जल भरा घडा एव साहनी रग की चूडियो के टूटने का भय मात्र है। देवर-भाभी के लोकगीता मे इस प्रकार के अवैध-सम्बन्धो का चित्रण देखा जाता है।

अब गुजराती गीतो का उदाहरण प्रस्तुत है, यथा—

यहा देवर भाभी को उसके पीहर से लेकर लौट रहा है। भाभी के पीहर की सीमा जहा समाप्त हुई और ससुराल की सीमा आरम्भ हुई वही देवर झगडा आरम्भ कर देता है। वह भाभी को सौभाग्य-शृगार के प्रतीक काजल, ककू, चम्पा वर्ण की चूदडी,

---

1. म्हारे माथे जल की झारी ओ देवर
   म्हांने हर परण्या को लागे ओ देवर
   मू झपान लुलुला आ देवर। —सकलित
2 माटी खाने गइलोरे ओ हो माटी खोनवा
   देवरवा पापी धइने मोरी बहियां
   छोड छोड देवरा हमरी कलइयां
   से फूटी जइहै, साहनी रग की चूडिया
   —भोजपुरी लोकगीतो के विविध रूप—प्रो० श्रीधर मिश्र, पृ० 100

नवरग चीर, पुलम की ओढनी दिखाने का प्रस्ताव रखता है। साथ ही भाभी से सुपारी, इलायची तथा लवग भी देखना चाहता है।[1] स्पष्ट ही भाभी से इन वस्तुओ को दिखाने का आग्रह करना, देवर के मन के कलुष को प्रकट कर रहा है। कुरू प्रदेश के लोकगीत म तो भाभी को शिकायत है कि यदि देवर नादान न होता तो यह यौवन व्यर्थ नही जाता।[2] इस प्रकार इन उद्धरणो म देवर-भाभी के अवैध सम्बन्धो की ओर स्पष्ट सकेत प्राप्य है। हमारे साहित्यिक आदर्शो के ये ठीक विपरीत है।

जहा कही विदेश जाने का अवसर आता है और बडा भाई जब जाने को तैयार होता है, तब उसकी पत्नी उसको रोक कर उसके स्थान पर देवर का नाम प्रस्तावित करती है। एक राजस्थानी लोकगीत म जब पति विदेश जाने लगता है, तो उसकी पत्नी देवर को भेजने की बात कहती है।[3] इसी प्रकार एक गुजराती लोकगीत म भी भाभी देवर को ही नौकरी पर भेजने का आग्रह करती है और कहती है कि मेरा प्रियतम नौकरी करने नही जाएगा।[4] देवर के प्रति भाभी की उपेक्षा के इन उदाहरणो से उसकी अरुचिकर भावना का ही प्रदर्शन होता है।

अन्य उदाहरणो म भी देवर भाभी के अरुचिकर सम्बन्धो का चित्रण मिलता है। बहिन अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर भात लेकर आते हुए अपने भाई की प्रतीक्षा बाहर खडी हो कर रही है, कि उसका देवर उसको उपालम्भ देता है।[5] इस उदाहरण से भी देवर-भाभी मे कटु सम्बन्धो का ही ज्ञान होता है। एक गुजराती गीत म भाभी को लेने के लिए जब देवर जाता है तब वह देवर के साथ नही जाना चाहती। क्योकि उसको भय है कि देवर अपनी पत्नी मे साथ-साथ उससे भी पानी भरवाएगा। जबकि उसकी अवस्था अभी कम है।[6] इससे भी देवर के प्रति भाभी की उदासीनता ही प्रकट होती है।

---

1 देखाड तारा नवरग चोर देखाड पुलम केरी ओढनी रे
देखाड तारी सोपारी एलचडी, देखाड लीलेरा लवीगडा रे।
—रढियाली रात (भाग 4), पृ॰ 47

2 कोठी भरी कमूम की रे, कोई कर लेगा पिहान,
थोजन वाला है नहीं, कोई देवरियो नादान॥ —जनपद, खण्ड 1, पृ॰ 5

3 कथा जी मारू अबके सियाले तो देवरिया ने भाड भेल।
देवरिया की कहिज भोली नार, राख्यु तो आसू रानसी॥ —सकलित

4 चाकरी म मार' देवर जी ने मेलो
रे अलबेलो नै जाय चाकरी रे लोल।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ॰ 29

5. वीरा ऊभी मोरिया रे बार,
देवर भूण्डा बोलियो।
—राजस्थानी लोकगीत—सं॰ शिवसिंह चोयल, पृ॰ 64

6 देर आणे आव्या, मारी ओछी उमर मां
देर भेलो ने जाऊं, मारी देराणी जोड्यूं
भुज ने पाणीडा भरावे, मारी ओछी उमर मां।
—रढियाली रात (भाग 2), पृ॰ 171

यों भी जब कभी भाभी को वनवास के लिए भेजने का अवसर आया है तब देवर को ही उसको काले बैल वाले काले रथ में बिठाकर विदा करने जाना पड़ता है।[1] इस प्रकार जहा कहीं अप्रिय प्रसंग आता है, देवर को ही उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है।

देवर-भाभी के इन अप्रिय सम्बन्धों के उल्लेख के साथ ही साथ अनेक प्रिय प्रसंग भी देखने को मिलते हैं। देवर-भाभी शब्दों में ही एक विचित्र मधुरता भरी हुई है। यदि अवैध-सम्बन्धों वाले प्रसंग को नैतिक मानदण्ड की कसौटी पर न परखें तथा भारतीय आदर्शों के परिप्रेक्ष्य में न देखें तो ये अवैध-सम्बन्ध भी संभवत. रुचिकर एवं प्रिय ही जान पड़ेंगे। अब देवर-भाभी के रुचिकर एवं प्रिय प्रसंगों की चर्चा यहा की जा रही है।

भाभी के हृदय में सामान्यत. देवर के प्रति कोमल भावनाएं देखने को मिलती हैं। एक गुजराती लोकगीत में भाभी देवर को 'चम्पे का छोड़' कहकर उसकी प्रशंसा करती है।[2] भाभी के हृदय का असीम प्रेम भी लोकगीतों में देवर को मिला है। एक राजस्थानी लोकगीत में भाभी खिन्न होकर कहती है कि मार्ग में धूल अधिक होने के कारण मुझे धीरे-धीरे चलना पड़ रहा है। उधर मेरा देवर भूखा होगा, विलम्ब से पहुंचने पर वह उपालम्भ देगा और वह मुझे पुकारेगा।[3] यहा भाभी को देवर के उपालम्भों की उतनी चिन्ता नहीं है, जितनी उसको देवर की भूख की भी बड़ी चिन्ता है—जिस प्रकार भाभी के हृदय में देवर के प्रति कोमल एवं मधुर भावनाएं हैं, उसी प्रकार देवर के हृदय में भी भाभी के प्रति इसी प्रकार की अच्छी भावनाएं हैं। जब भाभी को सर्प काट लेता है तब देवर को यह खेद होता है कि उससे ठिठोली करने वाली आज चली गई।[4] राजस्थानी भाभी को जब उसके पति पीटते हैं तो देवर तुरन्त दीवार लांघ कर सहायतार्थ आता है।[5] देवर के अतिरिक्त भाभी के प्रति इतना सौहार्दपूर्ण व्यवहार कौन कर सकता है। तभी तो संकीर्ण गली में जब देवरजी मिलते हैं, तब भाभी के मन में हंस बोलने की स्वाभाविक उमंग उठती है।[6] एक गीत में भाभी प्यास लगने पर देवर से टूटी (नल) खोलने का बड़ा मधुर आग्रह करती है—

---

1. लक्ष्मण-लक्ष्मण बधवा रे, सीता वन मेली आवो।
   काला ने रथडा जोतवा रे कालों बैल्या ने वाका।
   —रढियाली रात (भाग 3), पृ०7
2. देर मारो, चंपलिया रो छोड जो।
   —वही, पृ० 46
3. होले-होले हालू म्हारा सेरिया में धूळों रे। थोड़ी होले हाल
   म्हारो देवर भूखो रे, देनो ओलम्भिया, मारेला हेला॥ —संकलित
4. देर आव्या जोता रे, ठेकडीनो करनार गई मारा वाला।
   —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 52
5. होली डाक देवरियो आयो
   सो आयो म्हारी भीड बटावा ने। —संकलित
6. सांकडी शेरी मां देरजी सामा मळ्या रे
   मनें हस्या बोल्यानी घणी होंश।
   —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 48

शीतल को मेळो काई रोज के भरे।
टूटी छोन रे देवरिया भाभी तसाया भरे ।।

—सकलित

एक गुजराती गीत में देवर भाभी से वन में चलने को कहता है, तो भाभी कहती है कि वन में उसे धूप लगती है। इस पर देवर भाभी को धूप से बचाने के लिए आम लगाकर छाया की व्यवस्था कर देता है।[1] तो दूसरी ओर राजस्थानी गीत में भाभी स्वयं को धूप से बचाने के लिए देवर से छतरी तानने का अनुरोध करती है।[2] एक गीत में देवर अपनी भाभी से कहता है कि यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए अंगिया सिलवा दूं और उसमें गोटा लगवा दूं। राजस्थानी भाभी देवर के इस मधुर अनुरोध को इसलिए स्वीकार नहीं कर सकती कि देवर का बड़ा भाई उससे लड़ेगा।[3] इधर गुजराती भाभी ने देवर की सोने की कटोरी में केसर घोल कर रंग में रंग दिया परन्तु अब उसको सास का भय लग रहा है कि घर जाने पर सासू लड़ेगी और गाली देगी।[4] इस प्रकार देवर-भाभी के सम्बन्धों में स्नेह झलकता है, किन्तु सामाजिक नियमों का तथा मर्यादा का भय उन्हें बराबर बना रहता है। यों साधारणतः सामाजिक नियमानुसार देवर-भाभी को आपस में हंसी-मजाक करने का अधिकार है। यही कारण है कि देवर-भाभी को समाज द्वारा दी गई यह छूट ही आगे चलकर अवैध सम्बन्धों में परिणत होने की सम्भावना रखती है।

गुजराती के साथ साथ भोजपुरी एवं कुरु प्रदेश के लोकगीतों के उदाहरणों के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि देवर-भाभी के सम्बन्धों में समाज द्वारा, आदि कवि द्वारा और उत्तरकालीन कवियों द्वारा स्थापित आदर्श का पालन यहां नहीं हुआ है। आदर्श के प्रतीक अभिजात साहित्य के तदनन्तर भी लोकगीतों में मर्यादा रूपी लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन करते हुए दिखाई देते हैं। इन अवैध सम्बन्धों में भी देवर भाभी के बीच में सम्बन्ध यद्यपि रुचिकर होते हैं परन्तु सामाजिक मर्यादा एवं नैतिक मानदण्ड को आधार मानकर इन सम्बन्धों को यहां अरुचिकर सम्बन्धों के अन्तर्गत ही रखा गया है।

---

1. चालो भाभलडी, वन मा जावो, वनमां तडका रे, दिवरिया।
   नाना दिवरिये आंबो रोपाव्यो, छाय वेसे रे भाभलडी ।।
   —नवाहूलको, पृ० 56

2. शीतला को मेलो कांई रोज के घरे
   छतरी ताण रे देवरिया भाभी तावडे बले ।।
   —सकलित

3. नहीं ! नहीं रे !! रंगीला म्हारा देवरिया,
   थारो तो दादो भाई सांमू लड़सी रे ।।
   —सकलित

4. सोना वाटकडी रे, केशर घोल्या, वालमिया।
   नाना दियरिये ने रंग मां रोल्यो वालमिया।
   घरे जाशू तो रे, सासु मारो वढश, वालमिया।
   सासु जी देश गाल रे, वेगला रो ने, वालमिया ।।
   —नवोहूलको, पृ० 57

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय लिखते है कि ये अवैध-सम्बन्ध केवल निम्न जातियो शूद्रों आदि मे ही प्रचलित हैं। आपने रामायण मे वर्णित देवर-भाभी के सम्बन्धो के आधार पर ही शायद इस मत की स्थापना की है किन्तु यहा जो विवेचन किया गया है, उसके आधार पर यह लगता है कि यह कहना न्यायसगत नही है कि शूद्रो मे ही ऐसे सम्बन्धो का प्रचलन है। मानव स्वभाव से ही मधुकर वृत्ति का होता है। नारी मे भी यौन सम्बन्धो के प्रति सदैव पवित्रता बरती गई हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। विपरीत लैंगिक-प्राणियो मे आकर्षण स्वाभाविक होता है, यह नैसर्गिक सत्य है, इसमे जाति अथवा धर्म की कोई सीमा निर्धारित नही की जा सकती। वैसे डॉ० उपाध्याय ने स्वय भी स्वीकार किया है कि देवर और भावज के सम्बन्ध को हम भारतीय आदर्श के अनुरूप नही पाते। इन गीतो म भावज और देवर के अनुचित प्रेम का वर्णन प्राप्त होता है।[1] इस सम्बन्ध मे डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय ने भी लिखा है 'लोकगीतो मे देवर भोजाई की प्रणय कथाए तो प्रचलित ही हैं'।[2]

इस प्रकार राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो के देवर-भाभी सम्बन्धी गीतो का विवेचन करने पर यह स्पष्ट हो गया कि दोनो प्रान्तो के इन गीतो मे कोई विषमता नहीं है। दोनो के उद्धरणो मे ही अवैध सम्बन्ध, रुचिकर एव अपवाद स्वरूप अरुचिकर सम्बन्धो का उल्लेख उपलब्ध होता है।

(2) अरुचिकर सम्बन्ध

(अ) सास-बहू परिवार के स्त्री-सदस्यो मे शीर्ष स्थान सास का होता है। बहू को सास के शासन मे रहना पडता है। सास के कठोर नियत्रण के कारण बहू सास के विरुद्ध रहती है। सास से बहू उसका पुत्र छीन लेती है, इसलिए सास के मन मे प्रतिशोध की भावना जन्म लेती है। यह भी प्रसिद्ध है कि सास बहू पर इसलिए भी अत्याचार करती है कि उसकी सास ने उस पर अत्याचार किए थे। अपनी सास के प्रति प्रतिशोध की भावना जो उसमे दमितावस्था मे होती है वह बहू को पाकर उभर जाती है और फिर सास के अत्याचारो का श्रीगणेश होता है।

एक राजस्थानी गीत मे सास के उत्पीडक रूप का चित्रण देखा जा सकता है। जिस समय बहू की सखिया झूला झूलने जाती हैं, सास उससे धान साफ करवाती है। सखिया जब खेलने जाती हैं, तो सास उसको रोटी पकाने के लिए बैठा देती है। वह और सब लोगो को गेहू की रोटी देती है किन्तु बहू को बाजरे का टिक्कड देती है। दूसरो को मुट्ठी-मुट्ठी शक्कर देती है तो उसको नमक की चुटकी। यथा—

> बीजोडी-बीजोडी, अै मा, रमबा ने जाय
> बायी ने दीनो सासू पोवणो।[3]

गुजराती गीत मे सास बहू से दिन मे अनाज पिसवाती है और रात मे (सूत)

---

1 भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, पृ० 275
2 मालवी लोकगीतो का एक विवेचन, पृ० 32
3. राजस्थान के लोकगीत, स० सग, पृ० 66

कतवाती है। वह उसको बडे सवेरे पानी लेने भेज देती है—

दी अे दळावें मन रातडी अें कतावे जो
पाछने न परोढिये पाणीडा मोकले।[1]

एक ओर जहा सास बहू को ये कष्ट देती है, बहू भी सास की पुत्री को ठुकरान की बात कहकर सास के प्रति अपने मन का आक्रोश व्यक्त करती है, यथा—

म्हारी सास वे वेगी छोकरी ठुकरावा ने चाला[2]

गुजराती बहू सास को स्पष्ट शब्दो म भूडी (भदेस) कहती है—

शॅमडामा भूडी मारी सासूडी रे।[3]

राजस्थानी बहू भूडी' सासूजी के दुख से इतनी दुखी है कि पीहर से ससुराल नही जाना चाहती है—

सासरिया मे म्यारा सासूजी भूडा
म्हाने घणा-घणा घूघटिया कढावे, नी जाऊ।[4]

गुजराती वधू ससुर के साथ भी जाने को तैयार नही क्योकि घर पर सास 'भूडी' है जो उससे कम आयु म भी पीसना पिसवाती है—

ममरा भेली ने जाऊ, मारी घरे सासू भूडी
मने दलणो मेल्ये सूडी मारी ओछी उमर मो।[5]

एक दूसरे गुजराती गीत मे सास बहू को अर्द्धरात्रि मे जगा देती है और आधा मन पीसना पिसवाती है। खाने के लिए बेचारी को बचा खुचा देती है, यथा—

अर्धी रातनी जगाडती तो मारा नदलाल
× ×
अधमण दलणा दलावती तो, मारा नदलाल
× ×
वध्यु-घटयु मने आपती ती, मारा नदलाल।[6]

सास का यह उत्पीडक रूप दोनो प्रान्तो के गीतो मे समान है। एक गुजराती गीत मे सास को हत्यारी के रूप मे चित्रित किया गया है, वहा सास ने बहू को सोने के लिए टूटी खाट दी है और उसके सिरहाने काला सर्प भी रख दिया है।[7] राजस्थानी गीतो मे

---

1 रढियाली रात (भाग 2), पृ० 168
2 सकलित
3 नवोढ़लको, पृ० 120 121
4 सकलित
5 रढियाली रात (भाग 2) पृ० 170
6 लोकसाहित्य माला (भाग 10), पृ० 4
7 सासु अें ढाली तूटल खाटली,
ओशीके कालो नाग, सासु मोने सांभरे।
—रढियाली रात (भाग 2) पृ० 54 55

इस प्रकार का कोई उदाहरण नहीं मिलता है। सास के दुर्व्यवहार की यह चरम सीमा है कि उसने बहू के सिरहाने सर्प रख दिया। सास-बहू के बीच अरुचिकर सम्बन्धो का इसी प्रकार का वर्णन अनेक लोकगीतों मे हुआ है। यहा दिए गए उदाहरणो से सास-बहू के ये अरुचिकर सम्बन्ध स्पष्ट हो गए हैं।

लोकगीतो मे सासू के प्रति कहीं-कही सम्मान का भाव भी अभिव्यक्त हुआ है। हा, ऐसे स्थल ढूढने पर बडी कठिनाई से मिलते हैं। राजस्थानी लोकगीतो मे एक स्थान पर सासूजी को रत्न भण्डार कहा गया है, इसी गीत में बहू सास की कोख पर न्यौछावर जाती है क्योकि उसमे अर्जुन-भीम जैसे पुत्र रत्नो का जन्म हुआ है।[1] दूसरे गीत में सासू जी को गढ़ की नीव कहा गया है।[2] तीसरे म पूगलगढ की पद्मिनी की उपमा दी गई है।[3] गुजराती लोकगीतो मे इसी प्रकार सासू के प्रति सम्मान के भाव भी मिलते हैं। एक स्थान पर सास को समुद्र की लहर कहा गया है।[4] दूसरे दो गीतो में सास को जन्म की मा कहा गया है।[5] जहा बहू ने सास को पति अथवा परिवार के सदर्भ में देखने का प्रयत्न किया है वहां वह सास की क्रूरता को विस्मृत कर गई है और उसने सास की भूरि-भूरि प्रशसा इसलिए की है कि वह सास उसके पति जैसे पुत्र-रत्न की जननी है। परिवार के लिए वह उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी गढ के लिए नीव। बहू सास को जन्म की ही मा मान लेती है।

एक राजस्थानी गीत मे ही 'सास सुलक्षणी' का चित्रण देखिए। वह सास अपनी बहू से बहुत प्रेम करती है। वह बहू को खिलाने-पिलाने आदि की कैसी विशेष व्यवस्था करती है इसका भी उल्लेख मिलता है।[6] इस प्रकार कही-कही सास के इस भव्य रूप का भी चित्रण दिखलाई पडता है किन्तु सामान्यत सास-बहू मे अच्छे सम्बन्ध बहुत कम देखे जाते हैं। सास-बहू का झगडा चिरन्तन है।

---

1. म्हे तो वार्‌या जी, सासूजी, थॉरी कोख ने
   थे तो जाया अरजण भीम। सहेल्यां जै ओंबो मोरियो।
   —राजस्थान के लोकगीत (पूर्वार्द्ध), स० सव, पृ० 112-113
2. म्हारो सासुजी गढरी नींव। आज म्हारो अमली फल रही
   —वही, पृ० 115
3. जिण तो ओगणिये, सायबा, सासूजी फिरैला जी
   जाणे पूगलगढ़ रा पदमणी जी।
   —वही पृ० 117
4. ससरो मारो राजियो, सासुडॉ समदर लेर —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 81
5. सासु रे ओल्या अलमनो भावडी
   —वही, पृ० 45-46
6. म्हारी सास सुलखणी
   कोई करै घणेरा लाड
   घर भी ने घाले खींचडो
   कोई म्हांने बूरो भात।
   —राजस्थानी लोकगीत, डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया, पृ० 73

(2) ससुर बहू ससुर परिवार का साधारणत प्रमुख व्यक्ति होता है, इस कारण बहू को ससुर के आदेशों का पालन करना पड़ता है। अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं को दबाकर जब आज्ञा पालन करना, उसकी विवशता हो जाती है तो मन-ही मन उसमें विरोध भावना भी पलती रहती है। यही भावना ही लोकगीतों का वर्ण्य विषय है।

जब नव वधू विदाई के समय अपने पति से कहती है कि मुझे मेरे पिता की स्मृति आती है तब पति उत्तर देता है कि तुम्हारे पिता की स्मृति ससुर द्वारा दूर हो जाएगी।[1] *यह तो आदर्श की बात हुई, वास्तव में पिता का प्रेम ससुर कहाँ दे सकते हैं?* इस राजस्थानी गीत में ससुर से पिता का प्रेम मिलने का आश्वासन मिलता है, किन्तु गुजराती गीत में बहू स्वयं ही ससुर की तुलना पिता से करती है।[2] ससुर (बहू के) पति का पिता होने के नाते तथा घर का प्रमुख सदस्य होने के नाते बहू द्वारा आदर सत्कार प्राप्त करने का अधिकारी होता है। एक राजस्थानी गीत में बहू ससुर को प्रणाम निवेदन करती है।[3] *समान रूप से गुजराती बहू भी ससुर को 'पगा लागना' (प्रणाम) निवेदन* करती है।[4]

ससुर का परिवार में श्रेष्ठ स्थान होने से बहू को सदैव उसकी आज्ञा का पालन करना होता है। जब बहू को पीहर जाना होता है तो ससुर की आज्ञा मांगना अनिवार्य होता है। जब पीहरवाले लिवाने के लिए आ गए तो राजस्थानी बहू कहती है कि मैं भागी-भागी ससुर के पास गई। उनसे प्रार्थना की कि मुझे पीहर भेज दीजिए।[5] इसी प्रकार एक गुजराती गीत में भी बहू ससुर से आज्ञा मांगने जाती है। पीहर में उसकी छोटी बहिन का विवाह हो रहा है अतः वहां से निमंत्रण आया है। पहले ससुर की स्तुति करती हुई वह कहती है कि मेरे चौगान में बैठने वाले ससुरजी, आप चिरायु हों। यदि आप भेजें तो मैं पीहर जाऊं।[6] पीहर जाने के लिए दोनों ही प्रान्तों में ससुर से बहू को

---

1 बाबोसा रा भोला सुसरोजी भोगसी।
—राजस्थानी लोकगीत, सं० दाधीच—पृ० 98

2 ससरो मारो ओल्या जलम नो बाप जो।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 45

3 सूवा नरवर जाईयो तूं ही ओ
सासू सुसरे जी ने कहिये पगां लागणां ॥
—राजस्थानी लोकगीत हनुमन्तसिंह देवड़ा, पृ० 111

4 ससरा रे लली लागु हु पाय,
तो रे आव्याने नायक क्यां रिया। वणझारा हो जी।
—*रढियाली रात (भाग 3), पृ० 27*

5 *दौड़ी दौड़ी सुसराजी कनै ग्ई गई सुसरोजी पीवर भेल*
आणों आय गियो। दोरो धीया ने सासरो —सं० देथा, पृ० 72

6 *पियरिये परणे मारी बेन्य, के पियरियानां नोतरां रे लोल*
मारा चौराना बेहराना, ससराजी मारा घणु जीवो रे लोल
ससराजी तमे मे लो तो अमे पियरीअे पधारी अे रे लोल।
—गु० लो० सा मा० (भाग 7), पृ० 153

आज्ञा लेने की प्रथा का प्रचलन है।

ये हुई आदर्श की बातें। अब जीवन मे इन सम्बन्धो के वास्तविक रूप का अवलोकन किया जाए। एक राजस्थानी बालिका कहती है कि मुझे पीहर प्रिय लगता है, मैं ससुराल नही जाऊगी वहा मेरे ससुर हैं वे मुझसे घूघट निकलवाते हैं और मुझे गाली देते हैं।[1] यही शिकायत गुजराती गीत मे भी की गई है, वहा भी बहू ससुरजी को बाहर भेजने की बात कहती है क्योकि उससे वे घूघट निकलवाते हैं।[2] दोनो प्रान्तो मे ससुर से पर्दा करने के लिए वधू बाध्य है। इस प्रथा के प्रति वधू के मन मे जो विरोध है वह भी यहा प्रकट हुआ है। ससुरजी गाली भी देते हैं अत. यहा नायिका ससुराल जाने को तैयार नहीं। इसी गीत के एक रूपान्तर मे कहा गया है—ससुराल मे मेरे श्वसुर भुडे (बुरे) हैं वे मुझे बहुत-बहुत गालिया देते हैं और घूघट निकलवाते हैं। यथा—

सामरिया मे म्हारा ससुराजी भूडा
म्हाने घणी-घणी गालिया दिरावे, नी जाऊ सासरिये
× × ×
म्हाने घणा-घणा घूघटिया कढावे, नी जाऊ सासरिये।

यहा श्वसुरजी के लिए भूडा (भद्देस) शब्द का प्रयोग किया गया है। यही शब्द ससुर के लिए एक गुजराती गीत मे भी प्रयुक्त हुआ है।[3] एक अन्य गीत मे ससुरजी इस लिए बुरे हैं कि वे बहू को खेलने नही जाने देते। जब खेलने का अवसर आता है तो ससुर जी द्वार बन्द कर देते हैं। बहू कहती है कि मैं द्वार तोडकर खेलने जाऊगी।[4] इस प्रकार बहू ससुर की अवज्ञा भी करने को प्रस्तुत है।

जब कभी बहू का पति नौकरी करने के लिए बाहर जाने को उद्यत होता है तब बहू पति को कहती है कि तुम इस बार नौकरी के लिए ससुरजी को भेजो।[5] इससे स्पष्ट है कि बहू ससुर का घर मे रहना पसन्द नहीं करती। यही बात विदेश गमन के लिए प्रस्तुत नायक को गुजराती वधू भी कहती है।[6]

---

1. म्हाने घणी घणी घूघटियो कढावे, नी जाऊ सासरिये।
म्हाने घणी घणी गालियाँ कढावे, नी जाऊ सासरिये। —सकलित
2. ससरा जी ने चौवट करवा मेलो। मनो घुघटडा कढावे।
— रढियाली रात (भाग 3), पृ० 72
3. ससरो अमारो भूंडा रे, रग रसिया ढोला।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 48
4 मारा ससराजी भूडा, रमवा टाणे झाँपला वास्या
झाँपला ठेकीने जईश, झाँपला भांगी ने जईश।
—वही (भाग 6), पृ० 221
5 चौमंग थारा बाबाजी ने भेज पन्ना मारू
इबके चौमासा राजन घरवसोजी म्हारा राज।
—राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 132
6. चाकरी ए मारा ससराजी ने मेलो
रे मलदेसो ने आप चाकरी रे लोभ। —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 29

एक गीत में जब नायक विदेश जा रहा है तो नायिका पूछती है कि जब मैं प्रसव-काल मे होऊंगी तब मेरे लिए अजवायण कौन लाएगा ? नायक कहता है कि मेरे पिताजी ला देंगे। तो वह कहती है कि मेरे मन मे विश्वास नही है। न जाने वे एक का लाए या दो का लाए।[1] ससुरजी पर बहू का अविश्वास इस उद्धरण से स्पष्ट प्रकट होता है। ससुर भी बहू पर विश्वास नही करता वह उसे पीसने के लिए दिए गए आटे को तौलने के लिए तराजू लेकर बैठता है और एक चीमटी (चुटकी) आटा कम हो जाने से बेचारी को घर से बाहर निकाल देता है।[2] यही नही एक गुजराती लोकगीत मे तो बहू अपने सास-ससुर को जो कि अंधे हैं को कुए मे डालने को तैयार है। जब श्रवण से उसके ससुर पूछते हैं कि तुम मेरी पुत्री को त्यागने से पूर्व उसके अवगुण तो बताओ ? तो श्रवण उत्तर मे कह देते हैं कि इस अभागी स्त्री के गुण-अवगुण कहा तक देखे जाए, यह तो मेरे अंधे माता-पिता को कुए मे डालना चाहती है।[3] परन्तु यह व्यवहार एकपक्षीय नही है। ससुर के हृदय मे भी बहू के प्रति विशेष स्नेह भाव नहीं। एक गुजराती गीत मे जब बहू की मृत्यु हो जाती है तो ससुर आकर कहते है कि मेरे पाच सौ रुपए पानी मे चले गए।[4] यहा बहू का मूल्यांकन पाच सौ रुपए से करना यह प्रकट करता है कि ससुर बहू का महत्त्व केवल पाच सौ रुपयो तक समझते हैं। इससे अधिक उनके लिए बहू का कोई महत्त्व नही है।

ससुर यथावसर बहू को व्यग्य भी करते हैं। बेचारी के पुत्र नही होता, निसतान है, अत ससुरजी बहू को बोल बोलते (व्यग्य करते) हैं। बहू भैरव (भैरूजी) को जाकर पुत्र-प्रदान करने की प्रार्थना करती है।[5] गुजराती बहू को ससुर अपने पिता के यहा से गाय नही लाने के अपराध मे व्यग्य करते हैं तो वह धरती मे समा जाने के लिए सोचने को विवश हो जाती है।[6]

इस विवेचन के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि ससुर-बहू के सम्बन्धो का आदर्श तो बहुत ही सुन्दर है, परन्तु वास्तव मे जीवन मे उस आदर्श का पालन नही

---

1 थांरा भावोजी एकरोई लावे दोयरोई लावे
म्हारो मन नहीं पतीजे हो राज, थे इज ओ केसरिया साहिब।
—राजस्थानी लोकगीत, दाधीच, पृ० 46

2. सुसरो जी तोलण बैठा सासू आंख गडाई अे
ताकडी री डांडी तूठी चिमटी चूण घटायो अे
हाथ पकडने बारे काढी अबे कठे जाऊ अे। ---दोरो धीया ने सासरो, देथा, पृ० 44

3. इरे अभागणी नां में कोण जुअे
(मारां) आंधलां मा बाप ने नाखे कूवे। समरो राम मे।
---रढियाळी रात (भाग 3), पृ० 10

4. ससरो आव्या जोवा रे, पांच से रूपिया पाणी मारा मा ला।
वही, पृ० 52

5 एक अडूल्या के कारणे म्हारो ससुरोजी बोले मोने बोल
सःतालो मेक अणवट नूतिया। —मरुभारती—वर्ष 12 अक 4

6. ससरजी तो मेंणां बोल्यां ने धरती रेद लागी जो ---रढियाळी रात (भाग 3), पृ० 57

होता है और ससुर-बहू के बीच कटु एव अरुचिकर सम्बन्ध प्रचलित है। यह बात दोनो प्रान्तो के लोकगीतो मे समान रूप से उपलब्ध है।

जेठ-बहू

बहू के लिए परिवार मे ससुर के बाद जेठ ही महत्त्वपूर्ण पुरुष सदस्य होता है। पति का बडा भाई होने के कारण वह बहू के लिए सम्माननीय पात्र होता है। वह जेठ का सदैव आदर करती है, किन्तु जेठ परिवार मे अपनी महत्त्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ स्थिति के कारण बहू पर नियन्त्रण रखता है। इस नियन्त्रण के कारण ही बहू के हृदय मे जेठ के प्रति विरोध भावना का जन्म होता है और जेठ-बहू के सम्बन्ध रुचिकर नही होते।

बहू आदर्श सम्बन्धो के रूप मे जेठ की प्रशसा करती है। एक राजस्थानी गीत मे ससुराल के सभी सम्माननीय पात्रो को बडी सुदर उपमाओ से विभूषित किया गया है बहू कहती है कि जेठजी बाजूबद (आभूषण) है और मेरी जेठाणी उस बाजूबन्द की लूम (गुच्छा) है।[1] इसी प्रकार एक गुजराती गीत मे जेठजी को यदुपति कहकर सम्मानित किया गया है।[2] अन्यत्र जेठ को आषाढ का मेघ भी कहा गया है।[3] जेठजी को अपेक्षित सम्मान लोकगीतो को बहू को विवशतापूर्वक देना पडा है। राजस्थानी बहू जब बालाजी (हनुमानजी) को धोक देने जाती है तो जेठजी की प्रशसा करते हुए कहती है कि जेठजी! आप मेरे बडे जेठ है, मैं बालाजी को धोक देने जा रही हू अत अपनी मोटर भिजवा दीजिए।[4] इसी प्रकार गुजराती गीत मे जब पुत्र अथवा पुत्री का विवाह होता है तब बहू उन्हें ससम्मान बैठाती है।[5] परम्परा निर्वाह के लिए बहू को विवश होकर यथावसर जेठजी का सम्मान देना होता है। इसी प्रकार जब उसको पीहर जाने की आवश्यकता होती है तब उसको जेठजी से आज्ञा मागनी पडती है।[6] एक गुजराती गीत मे जब बहू से घडा फूट गया तब उसके सास, ससुर ने उसे विदा दे दी कि तुम अपने घर जाओ।

---

1 म्हारा जेठजी बाजूबद थी हदा, जेठाणी म्हारी बाजूबद री लूम
—राजस्थानी साहित्य की कुछ प्रवृत्तियाँ—नरेन्द्र भनावत, पृ० 107

2 जेठ मारा जदुपति जेठाणी घरनो थभ, वे आर्णा आध्या रे मोरार
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 81

3 जेठ मारो अषाढीलो मेघजो, जेठाणी झबूके बादल बीजली।
—वही, पृ० 46

4 जेठजी म्हारा थे छा बडेरा जेठजी, म्हारी आधी का बदावनजी,
थारी मोटर जुडाद्यो म्हूँ बालाजी ने धोकस्यो।
—सकलित

5 त्यां बड़ी बेसो भारो देरे न जेठ।
—चूंदडी (भाग 1), पृ० 58

6 (क) दोडो दोडो जेठजी कने रहूँ गई जेठजी पीयर मेल, आणो आय गियो।
—दीरो धीया ने सासरो—स० देथा, पृ० 72

(ख) जेठजी तमे मेलो तो अमे पियरीये पधारीशे रे लोल।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 153

इस पर बहू जेठजी के आने पर ही जान का निर्णय लेने की बात कहती है।[1] उसको यह विश्वास है कि जेठजी उसक द्वारा घडा फोडने का अपराध क्षमा कर देंगे। जेठजी रुष्ट होकर जाती हुई बहू को मनाते भी हैं।[2] जेठजी को सम्मान देन के लिए बहू जेठ से घूघट करती है उसको जठजी से लाज लगती है।[3] जेठजी उससे बार-बार घूघट निकलवाते है।[4] गुजराती गीत मे भी बहू से जेठजी घूघट निकलवाते हैं।[5] गुजराती गीत मे बहू जेठजी के झुककर पाव लगती है।[6] जेठजी के सम्मुख उसको धीमा बोलना पडता है।[7]

जेठजी को यदुपति, बाजूबद वाका, आषाढ का मेघ, आदि सुन्दर उपमाए देकर जेठजी क भव्य रूप की कल्पना अच्छे सम्बन्धो की परिचायक है। जेठ द्वारा रूठी बहू को मनाना भी इसी श्रेणी का प्रयास है। इसी शृखला मे कुछ उदाहरण और भी प्राप्य है। एक राजस्थानी गीत म बहू कहती है कि जेठ मेरे घोडे फिराते हैं।[8] दूसरे म जेठजी को इसलिए अच्छा कहा गया है कि वे घास (पाला) काटने का कार्य करते है।[9] तात्पर्य यह कि जेठजी बहू के कामा म हाथ बटाते हैं। एक गीत म जेठजी खत म घास काटत है और पति हल चलाता है, ऐसा वर्णन मिलता है।[10] बहू को देवर-जेठ दोनो प्रिय हैं।[11] क्योकि सुखी एव समृद्ध परिवार म सदस्यो की अधिकता महत्वपूण है। जब भाई बहिन के यहा भात भरन आता है तो बहिन जठो को शाल दुशाले देन को कहती है।[12] बहू को उन्हे

---

1 आम नो जाऊ, तेम नो जाऊ जठजी आवे त्यारे जाऊ।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 59

2 (क) बीजा मनामणे जठजी आया । —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 144
(ख) लीलो घोडो लाल घूमालो जठ मनावण आयो अ।
—दोरो धोया ने सासरो—स० देथा, पृ० 44

3 लाज मरू देवर जठ।—गई गई रे समद तलाव —स० देथा, पृ० 26

4 सासरा म म्हारा जठजी मूडा, घडी घडी घूघटिया कढावै।
पीवरियो म्हन भालो भालो लाग नही जाऊ सासरिये।। —सकलित

5 सासरिया म जठजी मूडा घुघटडा कढावे रे, नहि जाऊ सासरिये।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 7) पृ० 20

6 जठ रे लली लागू छु पाय। —रढियाली रात (भाग 3) पृ० 27

7. साकडी शेरी मां जठजी सामा मल्या रे मने झीणाँ बोल्यानी घणी होश
—वही, पृ० 48

8 जठजी तो घुडला फरे। —दोरो धीया ने सासरो स० देथा पृ० 74

9 म्हारा तो घर मे जठजी है सरवरा, अेक पोऊ तो आधो खाय तो है पालो बाढ़ण जाय।
—वही, पृ० 52

10 जठजी तो मेरो घुझा काट, परण्यो हलियो ल्यावै ए। —सकलित

11 मैं तो जठ की भागू मैं तो देवर की मागू म्हारी सौतेली न अलग करदो
म्हारी बाडी रा करेला मन तोडो रसिया, मतो बोलो ओ सारा अलग करदो
—राज० सा० की कुछ प्रवृत्तियां—नरेन्द्र मनावत पृ० 109

12 म्हारे जेठों ने चीरा साल दुसाल —राजस्थानी लोकगीत—स० तय, पृ० 212

सामाजिक उत्सवों पर अवश्य ही सम्मान देना पड़ता है अत गुजराती गीत म बहू जहां अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर जेठ के लिए बैठने की उचित व्यवस्था करती है, वहां यहां उन्हें शाल दुशाले भाई से दिलवाने का आग्रह भी उसे करना पड़ता है। एक गीत में बहू जब जेठ से अलग हुई अर्थात् सम्मिलित परिवार भग हुआ तो जेठ ने आधी सम्पत्ति जो बहू के हिस्से मे आनी थी, दे दी।[1] यहां बहू के प्रति जेठ के न्यायोचित व्यवहार का उल्लेख मिलता है। गुजराती गीत में बहू जब काटे की पीड़ा से पीड़ित होती है तो कहती है कि मेरे जेठजी को बुलाओ मैं अपना भाग उन्हें सौंप दू, किन्तु काटे की पीड़ा से मुक्त होने पर वह जेठ से अपना भाग वापिस मांग लेती है।[2] दूसरे गीत में बहू की मृत्यु पर जेठ दु ख व्यक्त करता हुआ कहता है कि घूघट निकालने वाली चली गई।[3] तीसरे उदाहरण में जेठ बहू से उसके कुशल समाचार पूछता है।[4] इस प्रकार औपचारिक रूप से तो जेठ के प्रति बहू सम्मान प्रदर्शन करती हुई दिखाई देती है और जेठजी भी बहू के प्रति सद्व्यवहार व्यक्त करते हुए जान पड़ते हैं।

यह हुई आदर्श की बात, यथार्थ इससे कहीं भिन्न है। जब बहू का पति विदेश जाने वाला होता है तो दोनों ही प्रान्तों के गीतों म नायिका पति स घर रुकने तथा जेठ को विदेश नौकरी पर भेजने की बात कहती है।[5] जेठजी को घूघट निकलवाने के कारण दोनों ही प्रान्तों के गीतों म भूडा (भद्देस) कहकर उसकी उपेक्षा की गई है,[6] जेठजी के साथ बहू रहना नहीं चाहती, अत एक राजस्थानी लोकगीत म बहू जेठ को अलग कर देने की बात कहती है।[7] दूसरे गीत म नायिका अपने रूठे प्रियतम को मनाते हुए कहती है कि हे प्रिय ! देवर-जेठो मे तो बिना बोले निभ सकता है, परन्तु प्रियतम एव प्रियतमा

---

1 जेठजी सतोदया थे गथिया मोरी, अपण राज
म्हा ने दीनो छै आधा धन बाट। —राजस्थानी के लोकगीत—स० सय, पृ० 198

2 नहि जीवु केसरिया लाल काटो मरी छै
मारा जेठ ने पाछा वालो रे लागभाग मागी लऊ —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 160

3 जेठ ते आव्याजोवा रे, घूमटानी ताणनार गई मारा वा ला
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 52

4 घोड़ा खलकना जेठजी अे पूछयु जो,
आजू वे आण रे वऊ केम दुबला। —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 176

5 (अ) ओलग थारे बड़ोड़े बीरे न भेज हजारी ढोला परत चौमासे लो
राजिन धरकमो ओ राज। —मरुभारती, वर्ष 13 अक 3, पृ० 37
(ब) चाकरी के मारा जेठी डाले मेलो,
रे अलबलो ने जाय चाकरी रे लाल। —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 29

6 (क) सामरिया मे म्हारा जठजी भूडा। —सकलित
(ख) जठ अमारा भूडा रे —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 48

7. जेठजी ने न्यारा करस्यां, देवरजी ने चाकरडी मेलां जे
—दोरो धीया ने सासरो म० देपा, पृ० 56

के बीच 'अबोला' कैसे रह सकता है ?[1] देवर-जेठों के प्रति उपेक्षा का भाव नायिका के इस कथन से स्पष्ट होता है। देवर-जेठ का स्थान परिवार में अधिक महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण उन्हें खाने के लिए भी पहले दिया जाता है और वह भी अच्छी-अच्छी वस्तुएं किन्तु बहू को तो महत्वहीन सदस्य मानकर सबके बाद खाने को दिया जाता है और वह भी निकृष्ट वस्तु।[2] यही नहीं परिवार में देवर, जेठ एवं ननद आदि के साथ ससुराल में पग-पग पर श्रेष्ठ व्यवहार किया जाता है और बहू के साथ निकृष्ट व्यवहार, अतः इन सदस्यों के प्रति बहू के मन में स्वभावतः ईर्ष्या का भाव जन्म लेता है।

गुजराती गीतों में भी ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण प्राप्य हैं। कहीं बहू जेठ को शाप देती है[3] तो कहीं वह जेठ के साथ जाने को तैयार नहीं है।[4] बहू को मेला देखने जाना है परन्तु जेठ नहीं जाने देता है।[5] जेठ बहू से लड़ता है।[6] जेठ बेचारी बहू को व्यंग्य करता है।[7] अतः बहू कहती है कि मैं इस घर में कैसे रहूं।[8] उपर्युक्त दोनों प्रान्तों के गीतों से यह स्पष्ट है कि जेठ बहू के सम्बन्ध औपचारिक रूप से तो आदर्श ही हैं और दोनों प्रान्तों के गीतों में ये आदर्श पालन का प्रयत्न भी करते दिखाई देते हैं, परन्तु वास्तव में इनके बीच में सम्बन्ध तनावपूर्ण ही होते हैं और यथावसर जेठ का बहू के प्रति और बहू का जेठ के प्रति आक्रोश प्रकट हुआ है। लोकगीतों में जेठजी को बहू के साथ यौन सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करते भी देखा जा सकता है। यद्यपि इस प्रकार का कोई लोक-गीत न तो गुजराती गीतों में देखने को मिला और न ही राजस्थानी गीतों में, परन्तु डॉ० भट्ट ने 'हाड़ौती लोकगीत' नामक अपने शोधग्रन्थ में तीन गीतों को 'जेठजी का दुर्व्यवहार' शीर्षक के अन्तर्गत उद्धृत किया है। इनमें से पहले में जेठजी ससुराल की सीमा आने पर गाड़ी में मुस्कराकर बहू से कहते हैं कि तुम यह नव रंगीचीर देखो, चम्पा वर्ण की चुनरी देखो। निस्संदेह यहां जेठ अप्रत्यक्ष रूप से बहू के समक्ष प्रणय प्रस्ताव रख रहा है। बहू भी जेठजी के भाव को समझ लेती है और कहती है कि आप मेरे पति के बड़े भाई हैं, आप मेरी जेठाणी जी को ही चम्पा-चूनरी दीजिए।[9] यहां ज्ञातव्य है कि जेठ-बहू का

---

1. जी सायबा अबोलो देवर जेठ,
   अबोलो गोरी सूं नी निभै जी राज। —मरुभारती, वर्ष 12 अंक 2, पृ० 17
2. देवर जेठां ने ओ मा म्हारी गवा रा रोट, बाई ने बालडवाटियो
   —दोरो धीया ने सासरो—म० देथा, पृ० 34 36
3. जेठ मारो बैठ पड़ी, जेठाणी ने तरियो ताव। —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 80
4. जेठ आणे आव्या, मारी ओटी उमरमां, जेठ भोली ने जाऊं —वही, पृ० 170
5. मारो जेठ के छे के बहू, नथी जावु मेले। —नवोहलको, पृ० 55
6. घरे जाशु तो रे, जेठ मारे वढशे वा लमिया —वही, पृ० 57
7. जेठ मारा मेणा मारे रे, सैयर मारी साद करे छे।
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 14
8. मारो जेठजी मा राज, मेण रा बोले छे,
   आ घर मां केम रे थाय ? था दुःख माड्यां छे। —वही, पृ० 2
9. आई आई सासरिया नी सीम
   गाडी में जेठे मुलकी बोलिया जी राज। —रढियाली रात (भाग 1) पृ० 112

वार्तालाप परम्परानुसार वर्जित है फिर जेठ का अनायास वस्त्र दिखाना उसके मन के कलुष की ओर संकेत करता है।

दूसरे उदाहरण में जेठजी जलेबी लेकर आते हैं, वह भी दुपहरी में। बहू को जेठ जी के दुपहरी में घर आने पर संदेह हो गया। कारण कि उसने शायद उनका दुपहरी का भोजन भेज दिया था किन्तु घर को खाली जानकर जेठजी अवसर की ताक में आए और जलेबी एवं मिठाई लाए। बहू समझ गई कि इस समय घर में बच्चे-बच्ची भी नहीं फिर जेठजी मिठाई क्यों लाए।[1] इतनी ही पंक्तियां वहां उद्धृत की गई हैं और इनमें जेठ का मन्तव्य जाना जा सकता है। तीसरे उदाहरण में तो स्पष्ट ही जेठ ने बहू के यौवन का निरीक्षण किया इस पर बहू उसकी कुचेष्टा का उचित दण्ड भी देती है।[2] इस प्रकार डॉ० भट्ट ने जेठ का बहू के प्रति अनुचित व्यवहार का उल्लेख किया है। इन अन्तिम दो गीतों का उल्लेख डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय ने भी अपने शोध प्रबन्ध 'मालवी लोकगीत एक विवेचनात्मक अध्ययन' में किया है।[3] भाव एवं बोल समान हैं। डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय ने जेठ के साथ बहू के जाने का भी उल्लेख किया है।[4] डॉ०कृष्णदेव उपाध्याय ने भी 'भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन' पुस्तक में जेठ-बहू के अवैध सम्बन्धों के उदाहरण दिए हैं और कहा है कि वहां तो जेठ बहू को प्राप्त करने के लिए अपने छोटे भाई की हत्या तक कर देता है।[5] इस प्रकार विवेच्य के अतिरिक्त भी लोकगीतों में जेठ-बहू के अरुचिकर सम्बन्धों का ही चित्रण उपलब्ध है।

(4) ननद-भावज

सास-बहू के समान ही ननद-भावज भी चिरन्तन विरोध-भावना-युक्त है। यहां भी फ्रायड का इडिपस काम्पलेक्स ही कार्य करता है। भाई-बहिन के मध्य असीम प्रेम होता है और भाभी से भाई के विवाह के साथ ही, वह भाभी उस असीम प्रेम में भागीदार बन जाती है। यह बात ननद से सहन नहीं होती और वह भाभी के विरुद्ध हो जाती है। कभी वह भाभी को अपमानित कर अपने अहम् (ईगो) को संतोष देती है और कभी वह भाभी को अनेक आदेश देकर तथा उनका पालन करवा करके भी अपनी अहम् भावना को तुष्ट करती है।

राजस्थान में ननद को 'उनाळा' ही लाय और 'आभा बिजळी' की उपमा दी जाती है। जिस प्रकार ग्रीष्म ऋतु (उनाळा) में भयंकर ताप (लाय) राजस्थान में पड़ता

---

1. आजो अटे नहीं है छोरयां छोटी, जेठ जलेबी क्यू लाया ?
   ओजी जेठ मिठाई क्यू ल्याया। —वहीं, पृ० 112
2. रोटी पोती ओवण निकल्यो, अबे देखे तो कडछी की
   फेर बाने तो मरत्या की, मारू मुरका के पाली की —वहीं, पृ० 112
3. वही, पृ० 351
4. घाघरो ऊको घेरदार, चोलो ऊको तंग।
   सोला देवर छोडके, गई जेठ के संग ॥ —वही, पृ० 351
5. वहीं, पृ० 276 277

है और वह जितना कष्टप्रद होता है, उत्पीडक होता है, उतनी ही कष्टप्रद एवं उत्पीडक ननद भाभी के लिए होती है। श्री झवेरचन्द मेघाणी ने भी लोकगीतों में प्रयुक्त ननद की उपमाओं का उल्लेख करते हुए उसको पीहर में झगडा कराने वाली, कटक के घोडे जैसी, परिवार में बहू के पीछे लगा जासूस आदि कहा है।[1] इन उपमाओं से ननद का उत्पीडक स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। भाभी की शिकायत करना तो उसका जन्मजात अधिकार है।

ननद एवं भावज दोनों पानी लेने के लिए जलाशय पर गई। वहा भाभी ने मोर की प्रशसा कर दी और यह भी कह दिया कि इस मोर का रूप तुम्हारे भैया के रूप से दो तिल आगे है। बस ननद तुरन्त रूठ गई। भाभी ने प्रार्थना की कि कृपा करके इस बात को गुप्त रखना, किन्तु ननद कहा मानने वाली थी।[2] चुगली करना या भाभी की शिकायत करना वह अपना पुनीत कर्तव्य मानती है। भाभी के मना करने पर भी वह कहती है कि मैं अपने भाई को जाकर अवश्य ही कहूगी। यद्यपि भाभी ने उसे दक्षिणी चीर देने का प्रलोभन दिया किन्तु वह कहती है कि तुम्हारे दक्षिणी चीर मे आग लगाऊ। इतना ही नही, वह भाभी से कहती है कि तुम इस मोर के साथ जाओ, मैं तो अपने भाई का गढ की गूजरी से विवाह कर दूगी। अन्त में ननद ने जाकर अपने भाई से भाभी की शिकायत कर ही दी। इसी गीत का एक गुजराती रूपान्तर भी उपलब्ध है। राजस्थान में इस गीत का नाम मुरला है और गुजरात में मोरला। मोरला गीत में भी ननद भावज जलाशय से पानी लेने जाती हैं। वहा पर भाभी मोर के रूप की उत्कृष्टता ननद से बताती है। ननद घर जाते ही अपने भाई से कहती है कि हे भाई! मेरी भाभी ने मोर का रूप तुमसे श्रेष्ठ बताया है। राजस्थानी लोकगीत में भी भाई मोर को मार देता है और यहां भी यही हुआ।[3] दोनों ही गीतों का कथानक एक ही है, केवल यहा-वहां शब्दों का हेर-फेर है। दोनों ही गीतों में ननद का उत्पीडक रूप ही प्रदर्शित किया गया है।

ननद अपने भाई एवं भावज के दाम्पत्य जीवन के स्नेह-पूर्ण सम्बन्धों में विकृति उत्पन्न करने का कारण बनती है। ननद भाभी के सुख एवं समृद्धिपूर्ण जीवन से ईर्ष्या करती है और उसकी यही ईर्ष्या भावना पारिवारिक जीवन में विभिन्न रूपों से विकार उत्पन्न करती हुई दिखाई देती है। अतः लोकगायक ने ननद के उत्पीडक रूप के लिए बहुत ही उपयुक्त उपमान चुने हैं। एक राजस्थानी गीत में कहा गया है कि ननद

---

1 रढियाली रात (भाग 2) पृ० 24

2 बालू थे मालू थारो नवसर हार, म्हारा वीरा ने जा मर मल के कसी
साइया साइया रे तीर कबाण, मोरिया ने राजन मारियो

—गई गई रे समद तलाव—विजयदान देथा, पृ० 21-22

3 जूओ नणदी मोरलियाना रूप राज, तमारा वीराथी वा सो मने मोरलो
सुणो वीर, मारी भाभलडी नांवेण राज, तमथी वखाण्या रूडो मोरलो।
ये नूं तीर खेंच्यू ने ने वींध्यू तीर नाह्युराज वीजा ते तीरे मोरलो मारी ओ।

—गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 201

ग्रीष्म ऋतु का भयकर ताप है।[1] तो एक गुजराती गीत मे ननद को 'वैरण रात' कहा गया है।[2] एक राजस्थानी लोकगीत मे ननद को आभा बिजली' (आकाश म चमकने वाली बिजली) की उपमा दी गई है।[3] 'वा फिरे कुआ पर अकेली रे' शीर्षक गीत मे कहा गया है कि ननद-भावज के साथ कुए पर पानी लेने गई, तब झगडा हो गया, फिर क्या था उसने आकर अपनी मा से भाभी की शिकायत की और भाभी के चरित्र पर लाछन लगाया। भाई तक यह शिकायत बहिन ने मा के द्वारा पहुचा दी। परिणाम स्वरूप भाई ने भाभी को मार डाला।[4] एक अन्य गीत म ननद भाभी के यहा अतिथि बनकर जाती है तो भाभी उसके सत्कार हेतु अनेको व्यजन बनाती है। उसको आशा थी कि ननद मेरे द्वारा बनाए गए भोजन की प्रशसा करेगी किन्तु ननद ने भोजन म दोष ही दोष देखे। अत दोनो मे झगडा हो गया।[5] ननद-भाभी का यह झगडा भी चिरन्तन है।

ननद भाभी के सुन्दर वस्त्राभूषणो से भी ईर्ष्या करती है। अत भाभी के सुन्दर वस्त्राभूषण भी इन दोनो के बीच विवाद का कारण बन जाते हैं। राजस्थान में लाल चूडा पहनने की बात को लेकर गीत गाया जाता है। जब पत्नी पति से अनुरोध करती है कि मुझे लाल चूडा पहना दो,~ तो पति कहता है कि लाल चूडा तो मेरी बहिन को शोभा देता है, तुम्हारे लिए तो मैं नवसर हार ला दूगा। इस पर पत्नी रूठ गई। बाद मे पति किसी प्रकार राजी हुआ कि चूडा पहनाया जाए, तो पत्नी इस भय से कि पति अथवा ननद फिर क्रोधित न हो जाए इसलिए यह प्रस्ताव रखती है कि मेरी ननद को पहले चूडा पहनाओ तब मैं पहनूगी। ननद को चूडा पहनने को आमत्रित किया गया किन्तु ननद को भाभी के विवाद का ज्ञान था। अत वह कह देती है कि मेरी भाभी यदि मेरे सम्मुख मोरनी बनकर नाचे, तो मैं चूडा पहनू। भाभी न ननद की इस शर्त को बडे ही कौशल से टाला। उसने उत्तर मे कहा कि मोर तो घडी-आधी घडी नाचेगा मेरे ननदोई तो मेरी नटखट ननदी के आगे सारी रात ही नाचत हैं।[6] गुजराती गीत मे भाभी कहती है कि मेरा सुन्दर रगाया हुआ लेहरिया मेरी ननद मागती है। यह लेहरिया उसके भाई द्वारा लिया गया है जिसमे उसकी भाभी के द्वारा भात (डिजाइन) बनाई गई है,

---

1 भैरुजी नणदन उनाले री बलती अैं लाय।—राजस्थान के लोकगीत स० ग्रथ, पृ० 236

2 नणदी वैरण रात, थारो आऊ ढोला। —गु० ला० सा० मा० (भाग 7), पृ० 49

3 इण तो आगण, मायडा, बाईजी फिरेसा जी, जाणे आभा में चमके बीजली जी।

—राजस्थानी लोकगीत—स० ग्रथ, पृ० 117

4 नणद सिखाई मायां ने, बे म बहू ने समझाय। बे वा फिरे' ..

—सकलित

ए भा मारी घर री नार, वा फिर कुवा पर अेकली।

5 भाभी, बबमा मेनावोग आनियुं हुं तो निरव धडाका लइश।

—गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 206

6 हे मोर न नाचे अधघडी, मुदारियो लै

नणदेभी नाचे सारी रात, बाओ मरवो लै—राजस्थान के लोकगीत—स० ग्रथ, पृ० 58

यहा भी घूघरी दे आया । जब प्रसूता ने घूघरी देने का विवरण नाई से पूछा तो नाई ने इसकी ननद के यहा घूघरी देने का उल्लेख कर दिया । प्रसूता ने पति से शिकायत की कि नाई मूर्ख घूघरी बाटना नही जान सका और वह मेरी ननद के यहा घूघरी दे आया । तुम जाकर घूघरी लौटा लाओ । पति विवश होकर घूघरी लौटा लाने बहिन के यहा पहुचा । उसने जाकर बहिन को भाभी द्वारा घूघरी मागे जाने का वृतान्त कह सुनाया । बहिन ने भाई से कहा कि धीरे कहो मेरी देरानी-जेठानी न सुन लें । घूघरी मैंने बच्चों को बाट दी और जो बची मैंने स्वय ने खाई अब तुम घर चलो मैं तुम्हारी घूघरी लेकर आती हू । बहिन बाजे गाजे के साथ अपनी देरानी-जेठानी को साथ लेकर घूघरी लौटाने गई । बाई को आया जानकर भाई घर के पीछे भागा और भाभी घर मे घुस (छिप) गई, परन्तु ननद ने उसे बुलाकर कहा कि तुम अपनी घूघरी वापिस लो, तो भाभी भी लज्जित हो गई, परन्तु उसने फिर भी गज भर का घूघट निकाल लिया और पल्ला पसार कर घूघरी लौटा ली । तब ननद ने कहा कि मेरा भाई तो दिल का दरियाव है परन्तु मेरी भाभी कुत्ती है । हे भाभी ! मैं यदि निर्धन के घर की विवाहिता होती तो तुम्हारी घूघरी कैसे लौटाती । हे भाभी ! तुम्हारा दो कौडी का माल था किन्तु मैंने डेढ सौ रुपया खर्च किया है ।[1] इस गीत से भाभी का ननद के प्रति तथा ननद का भाभी के प्रति आक्रोश भाव स्पष्ट व्यजित हो रहा है । समान भावयुक्त गुजराती गीत भी उपलब्ध है । वह गीत इतना लम्बा नही है परन्तु भाव एव कथा साम्य है । सोन रुपय के दो-चार कटोरों मे भाई घूघरी लेकर बहिन के यहा गया । लौटकर भाई जब घर पहुचा तो पत्नी ने पूछा कि तुमने घूघरी किसके लिए खरीदी ? राम भाई और उनकी पत्नी रेवा रात मे लड पडे । रेवा ने कहा कि मेरी घूघरी वापिस लाओ । राम भाई घोडे पर चढकर बहिन के यहा पहुचे और कहा कि बहिन तुम्हारी भाभी घूघरी मागती है अत लौटा दो । बहिन ने कहा कि हे भाई ! मैंने न तो खाई, न ही काम मे ली । मैंने थोडी सी बच्चों को फुसलाने के लिए अवश्य दी है । तुम अपनी घूघरी ले जाओ ।[2]

भाभी ननद से ईर्ष्या इसलिए भी करती है कि ननद को परिवार मे भाभी से श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होता है । एक राजस्थानी लोकगीत मे पुत्री अपनी मा से ससुराल के कष्टो का उल्लेख करते हुए कहती है कि ननदो को बडे-बडे कटोरो मे भोजन दिया गया । उनको गेहू की रोटिया दी गई किन्तु मुझे बाजरे का टिक्कड दिया गया । उन्हें मुट्ठी शक्कर मिली किन्तु मुझे मिली नमक की एक चुटकी । उनको करी भर घी परसा गया और मुझे थोडी-सी तेल की धार । ननदा की कतार 'पडवे' मे सोती जहा कि वे सुरक्षित है, परन्तु मुझे वहा सोना पडा, जहा मैं अकेली भीग रही हू । मैं बडे-बडे थाल और ननदों के जूठे

---

1 नीसर भावज बाहर आव थारी पाछी ल्याय घूघरीजी, म्हारा राज०
लीनी भावज पल्लो ए पसार कोई गज को काढ्यो घूघटोजी, म्हारा राज —सकलित

2 वीरा नथी रे खाधी नथी वापरी
तें तो हनरावी छाल्डां फोसनाव्यां
तारी पाछी लेई जा न घूघरी । —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 217-218

वर्तन मात्र रही हू ।[1]

इमी का परिणाम है कि राजस्थानी एव गुजराती गीता म भाभी ननद को शीघ्र ससुराल भेज देन का प्रस्ताव रखती है ।[2] वह नही चाहती कि ननद घर म रहे । भाभी भी ननद को समय समय पर व्यग्य वचन कहती है । ननद भाभी दोनों पानी लान गई, वहा मुमरा (नायक) की बारात आई तो भाभी व्यग्य करती हुई ननद स मुमरा के साथ जाने को कहती है । वह आगे कहती है कि सोढा मुमरा तुम्हे सुन्दर पीला पोमचा ओढ़ाएगा ।[3] इस प्रकार ननद भावज के बीच व्यग्य बाणो का विनिमय भी होता रहता है । राणा काछवा गीत तो ननद भावज की द्वेष भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण ही है । राजस्थान एव गुजरात दोना ही प्राता म यह गीत प्रचलित है । भाभी न ननद को धोखा दिया कि तुम्हारा विवाह जिसके साथ हुआ है वह यही (पानी का कछुआ दिखाकर) काछवा राणा है । ननद ने भाभी की बात पर विश्वास कर लिया और राणा काछवा के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा दिया । भाभी चाहती थी कि उसकी ननद उसक भाई क साथ विवाह करक उसकी भाभी बन जाए । इसलिए उसन पानी का कछुआ ननद को दिखाया, परन्तु बाद म ननद न राणा काछवा को किसी अन्य स्थान पर विवाह करके लौटत हुए देखा तो वह उसके सौन्दर्य को देखकर मुग्ध हो गई और उसने राणा काछवा के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा । काछवा के अस्वीकार करन पर वह जीवित ही चिता म प्रविष्ट हो गई । चिता म प्रविष्ट होते समय उसने भाभी को शाप दिया कि उसका भाइ मर जाय । यहा भाभी की ननद क प्रति ईर्ष्यापूर्ण मनोवृत्ति प्रकट होती है । राजस्थानी गीत म तो ननद चिता पर सवारी ही जलकर मरती है किन्तु गुजराती गीत म गीत का आरम्भ समान होन हुए भी आख्यान म थोडा अन्तर है । वहा भाभी द्वारा ननद को भ्रमित

---

1 पहरे नणदा री हालरो बरसँ बरसँ थ मा मोरो मेह भीजै भाया री बहनड़ी
   मांग्या मांग्या अ मा मोटोडा थाल, मंग्या नणंदी रा बाटका
   —राजस्थानी लोकगीत—रा० लय, पृ० 66-67

2 (क) नणदल बाईसा न सासरिय पहुचाय, ओ था परवारो रे सैया
   —राजस्थानी लोकगीत—स० दायाध, पृ० 92

   (ख) हूं के राज ! नणदडी न सासरिय बलावो ।
   —रढियाली रात (भाग 3) पृ० 72

3 नणदी रे भारी सुवरा ने जाव
   हो सुवरो ओढाड पाली पामरी, मारा राज०
   हो वहो रे भोजाई मैंतू वाणियु मारा राज०
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 114-115

4 (क) कवारी लिया बाढे म्हे बडाला म्हारा राज
   काउलिय म्हाडियो सिर रो सेवरो जी राज ।।

   (ख) दादा मोरा मणनियो मलय रे, मणनियो मलय रे
   गढ़ि रे परणु हू अम काचबो रे भाल ।
   चोम्दी नो पाल्ला भरपानो बर्पग रे
   पोरे बेनी को पोढि गदा रे लोम । —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 152 53

करने का उल्लेख नही हुआ है किन्तु ननद ही स्वय किसी भ्रम स काछवा से विवाह न करने का निश्चय प्रकट करती है। गीत म आग जब ननद को अपनी भूल का भान होता है तो वह अफीम खाकर मर जाती है। दोनो प्रातो के राणा काछवा से सम्बधित लोक गीतो म यह अन्तर अवश्य है किन्तु इस सम्बन्ध म हम यह नही भूलना चाहिए कि लोक गीतो के विभिन्न रूपातर एक ही प्रात म मिल जाते हैं। अत स्थान भेद के कारण यह अन्तर हो जाना कोई आश्चर्य की बात नही किन्तु दोनो का मूल भाव एक ही है।

एक राजस्थानी गीत म भाभी कहती है कि हे काल सप ! तुम सासू की जीभ म काट खाना और ननद की कनिष्ठा अगुली म।[1] इसी प्रकार एक गुजराती गीत म भाभी ननद को कुए म डूब मरने की सलाह देती है।[2]

दोनो प्रांतो म भाभी द्वारा ननद का माथा गूथन (सिर के बालो को कघी से सवारकर धागो द्वारा बांधना) की प्रथा है। अत राजस्थानी बहू को सास की आज्ञा मिली है कि तुम अपनी ननद का माथा गूथ दो। पर भाभी कहती है कि मैंने भूल से यह सुना कि ननद का माथा (सिर) कूटो।[3] यहा भाभी न ननद स अरुचिकर सम्बध होने क कारण ही एसा सुनने का बहाना किया है। गुजराती बहू कहती है कि मुझ एक सकीर्ण गली म ननद सामन आती हुई मिली। मुझ उनका माथा गूथन का बहुत इच्छा है।[4] ननद का स्थान परिवार म बहू के लिए सम्माननीय होना है अत उसको ननद का सिर गूथन की प्रथा का पालन करना होता है। सामाजिक विधि निषेध राज्य के विधि विधान स भी कही अधिक प्रबल होते है और उनका पालन करना अनिवाय होता है।

यहा तक उन गीतो का विवेचन किया जिनम ननद भावज के मनो मालिन्यपूण एव वैमनस्यपूण सम्बन्धो का उल्लेख हुआ है किन्तु कई लोकगीतो म ननद भावज क सम्बन्धो के दूसरे पहलू का भी चित्रण है। अब ननद भावज के अच्छे सम्बन्धो वाले गीतो का विवेचन किया जा रहा है। राजस्थानी भाभी ननद क लिए विदाई क अवसर पर विविध वस्त्राभूषण मगवान की बात एक गीत म कहती है। वह अपन पति से आग्रह करती है कि ननद के लिए बैलगाडी जुतवा दो चूदडी रगवा दो चूडा चिरवा दो

1 खाज खाज रे कालोडा सासूजी री जीभ
खाज नणदल री चिटटू आगली। —हीरो घीया ने सासरो देवा पृ० 38

2 नणन्दी मारु कीध न मान्य मोरी नणदी रे जावनियु
नणदी आखे पाटा बाधो। मारी०
नणदी आपणा बाडा मे उडो कूवो मारो०
नणदी जाय ने अदर धुबको मारो मारो०
—गु० लो० सा० मा० (भाग 10) पृ० 296

3 म्हैं भोलयावण यू सुण्यो
नणदल रो माथो कूट मिंदर मे झालरियो।
—हीरो घीया ने सासरो—म० विजयदान दथा, पृ० 60

4 साकडी शरीमां नणदी सामां मल्या रे
मनें माथु गूथ्यानी होश रे—मोली०
—रढियाली रात (भाग 3) पृ० 49

आभूषण गढवा दो और लापसी बनवा दो।[1] गुजराती गीत मे जहा ननद का विवाह हो रहा है, वहा उसकी भाभी मनियारे से चूडा, सोनी से हसली, दोसी से चूदडो आदि विभिन्न वस्तुए मगवाती है।[2] निसदेह ननद के प्रति भावज के हृदय मे यहा अनेक सद्भावनाए हैं इसीलिए वह ननद के लिए इतनी सामग्री मगवा रही है।

इतना ही नही भाभी ननद के साथ शृगार प्रसाधन की वस्तुए भी क्रय करती है। एक राजस्थानी गीत मे भाभी गाधी (चूडे वाले) से चूडे का मोल पूछती है और कहती है कि हम ननद-भौजाई जोडे से चूडा पहनेंगी।[3] एक गुजराती गीत मे जब भाभी का प्रियतम उसके लिए थैले मे झूमके लेकर आता है और अपनी पत्नी को पहनने को आग्रह करता है तो भाभी कहती है कि हे नाथ! मैं अकेली कैसे पहनू? मैं तो अपनी छोटी ननद को भी भागीदार बनाऊगी अन्यथा वे मन मे दुखी होगी।[4]

ननद को भाभी का पुत्रवती होना बहुत ही प्रिय लगता है। राजस्थान के एक घुडला गीत मे ननद कहती है कि घुडला सुपारी से छाया हुआ है, रात्रि तारो से छाई हुई है और इसी प्रकार मेरे बडे भाई की पत्नी और मेरी भाभी पुत्रो से छाई हुई है।[5] एक अवसर पर चार स्त्रियों को आते देखकर ननद कहती है कि उनमे से बीच वाली मेरी भाभी है, जिसके हाथ मे पुत्र है और वह पुत्र को खिलाती हुई चली आ रही है।[6] भाभी का स्नेह एव विनोद भी ननद के लिए चिरकाल तक स्मरणीय होता है। एक गुजराती गीत मे ननद कहती है कि भाभी के बिना स्नेह कैसा।[7] एक राजस्थानी गीत म ननद-भावज का विनोद चित्रित किया गया है। भाभी ननद से पूछती है कि किसमे सौठ चाहिए किसमे जीरा चाहिए और किसमे तुम्हारा भाई चाहिए? तो ननद तुरन्त उत्तर देती है कि जापे मे सोठ चाहिए, साग मे जीरा चाहिए और सेज मे तुम्हे मेरा भैया चाहिए।[8] इस

1 नणदल बाई रे बैंनडा जुताय, ओ धण वारी थो हूजा।
नणदल बाई र चूदडियां रगाय ओ धण—राजस्थानी, लोकगीत–स० दाधीच, पृ० 92

2 मारो नणदल परणे रे सोभी वणजारा
लाये लाये सोनीडा तारी हासडी लाभो वणजारा।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 6), पृ० 186

3 के नीं गांधी रा बेटा चूडला री मोल
नणद भोजायां जोड पैरस्या —नई गई समद तलाव—स० स० देपा, पृ० 24

4. नाथ हु केम पह अेकली
मारी नानी नणदबा दुभाय रे श्रावण रेनी ओ। —रढियाळी रात (भाग 3) पृ० 91

5 घुडलो अे सुपारया छाया, तारा छायो रात
भावज अे म्हारी पूतां छायी, बडोडे वीरे घर नार।
—राजस्थानी लोकगीत—सं० जय पृ० 54

6 मारी भाभी ना हाथ मों बेटडा रे हेली•
भाभी बेटो धवरावती आवे, हेनी•
—रढियाळी रात (भाग 3), पृ० 53

7 सखी भोजाई विना शा हेत ओ–बांदलो•
—वही, पृ० 48

8 जापे में चाहे सूठ, थो साग सवारे जीरो।
सेजां में चाहे ए, मोनो भावज म्हारो वीरो॥
—राजस्थानी लोकगीत

प्रकार ननद भावज के बीच में कहीं-कहीं स्नेह एवं हास्य विनोदमय सम्बन्धों का उल्लेख भी लोकगीतों में प्राप्त होता है।

भाभी को विभिन्न अवसरों पर ननद को वस्त्राभूषण देने पड़ते हैं। ऐसी प्रथा दोनों प्रान्तों में प्रचलित है। अतः जब ननद के घर में कोई विवाह होता है, तो भाभी भात या माहेरा लेकर जाती है और अपनी ननद को रमुवल की उपमा देती है।[1] अपने पुत्र उत्पन्न होने पर भी वह ननद को वस्त्राभूषण भेंट करती है। भाभी को पुत्र जन्म के अवसर पर उठकर और अपना कोथला खोलकर सास-ननद को वस्त्र पहनाने का उल्लेख एक राजस्थानी गीत में मिलता है।[2] भाभी ननद से आशीर्वचन भी प्राप्त करने को उत्सुक रहती है। अतः एक गीत में भाभी ननद से आशीर्वाद मांगती है और ननद आशीर्वाद देती है कि भाभी! तुम सात पुत्रों को जन्म देना और साथ में एक पुत्री भी। तुम अपनी पुत्री का विवाह परदेश में करना जिससे जब तुम्हें पुत्री की स्मृति आएगी तो ननद की भी स्मृति आ जाएगी।[3] ननद जब पीहर छोड़कर ससुराल प्रस्थान करती है, तब भाभी ननद की विदाई के समय बिलखती है।[4] बहिन जब भाई को माहेरा लेकर आने के लिए आमन्त्रित करती है तो भाभी को भी साथ लाने की बात कहती है।[5] जब ननदोईजी ससुराल वालों को पुत्री के विवाह के अवसर पर आमन्त्रित करने गये तो ननद की भाभी ने नणदोईजी से कहा कि आप घर लौटिए, हम भात सजाकर ला रहे हैं।[6] फिर भाभी अपने पति से कहती है कि मैं भानजे के विवाह के अवसर पर भात भरने जाऊंगी। मैं ननद के लिए हार लूंगी और बहुमूल्य चुनरी भी।[7] इसी प्रकार एक गुजराती गीत में भाभी अपनी ननद को आदर सत्कारपूर्वक बैठने का आग्रह करती है और कहती है कि मेरी परदेशी ननद बैठिए—बैठिए, बात कीजिए। ननद भी कहती है कि मैं बैठूंगी—

---

1 म्हारी नणदी रमुवल बांयको
नणदोई म्हारो रे गज मोत्यां रो हार।
—राजस्थान के लोकगीत-स० प्रथ, पृ० 113

2 उठा मानेतण खोलो कोथलो पार सासु नणद ने ओढ़ाया।
—राजस्थानी लोकगीत-स० दाधीच, पृ० 48

3 चितर से आंगण म्हारी नणदल ऊभी, दयो म्हारा बीजी, आसीसड़ो
सात अँ, भाभी, पूत जणज्यो अँक जणज्यो छोकरी
थांरी धीहड़ ने परदेश दीज्यो, ज्यूं चित आवे रूड़ो नणदली
—राजस्थान के लोकगीत—स० प्रथ, पृ० 120-21

4 बिलखत थारी भावजड़ी, वनखड को ए कोयल, वनखड छोड़ै कठे चाली।
—राजस्थान के लोकगीत—स० प्रथ, पृ० 190

5 बीरा थ आज्यो र, भाभी लाज्यो। —वही, पृ० 216

6 चालो नणदोई घर आपणे ल्यावां भात सजोय। —वही, पृ० 222

7 लेस्यां जी पना मारू म्हे बाजी जी खातर हार
चूनड़ लेस्यां घण मोलडी। —वही, पृ० 226

बैठूंगी, बैठकर बात करूंगी, ऐ मेरे भाई की जोडायत।[1] ननद अपनी भाभी की प्रशंसा भी यथावसर करती है। वह कहती है कि उसकी भाभी को सब कोई राणी-राणी कहते है, परन्तु वह तो पटराणी है।[2] ये अच्छे-अच्छे हार तो उसी (भाभी) के अंग पर शोभित होते हैं।[3]

ननद के लिए भाभी बहुत त्याग भी करती है। एक गीत में जब ननद ससुराल जा रही है तो भाभी उसको बैलों की जोडी देती है।[4] ननद को ससुराल में जब मार पडती है, तब उसको प्रत्येक सोटे (डंडे) के पडने के साथ ही अपने भाई एवं भावज की स्मृति आती है।[5] भाई-भाभी की स्मृति उसे आए भी क्यों नहीं, क्योंकि जब वह विदा होकर पीहर से चली तो भाई ने उसे नीलम का हार दिया था और भाभी ने उसको नीली कचुवी दी थी।[6] ननद भी भाभी के इस स्नेह-सम्बन्ध का प्रतिदान करती है। जब उसके भाई व भौजाई उसके यहां अतिथि बनकर आते हैं तब वह विशेष रूप से उनके लिए भोजन की व्यवस्था करती है, परन्तु उसकी भी ननद इस सौहार्दपूर्ण व्यवहार को देखकर रोष व्यक्त करती है।[7] ननद जब भौजाई को छोडकर ससुराल जाती है तो भाभी को बहुत दुःख होता है क्योंकि आज ननद-भावज की जोडी भंग हो गई। भाभी इस विछोह से इतनी व्यथित होती है कि वह एक गीत में ननदोई को यह शाप तक देती है कि उसका नाश हो जाए क्योंकि उसने उनकी जोडी को बिखेर दिया है।[8]

दोनों ही प्रांतों के लोकगीतों में ननद-भावज के शाश्वत वैमनस्यपूर्ण सम्बन्धों के साथ-साथ इन स्नेहपूर्ण सम्बन्धों का भी उल्लेख हुआ है किन्तु वास्तव में ये स्नेहपूर्ण सम्बन्ध केवल अपवादस्वरूप ही है, अन्यथा इनकी द्वेष-भावना एवं ईर्ष्या-भावना ही चिरंतन है, जिसका लोकगीतों में विस्तार से उल्लेख मिलता है।

1, कैसो वैसो ने मारी परदेसण नणदी, वैसी ने बात करो गोठडी
धि सोरा बेसीरा रे मारा बीरानी जोडये, बैसी ने बात करीश गोठडी।
—चून्दडी (भाग 1), पृ० 32

2 राणी राणी सहु करे कई पाटनी पटराणी जो। —वही, पृ० 179

3 ई रे ते हार मारे भाई ने सोईजी,
भाई ने सोई स्पारे' बहू ने सोईजी। —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 178

4 भाभी धो रे वेलडियुनी जोड, नणद चाल्या सासरे
—गु० लो० सा० मा० (भाग 8), पृ० 250

5. धीजो सोटो रे कै वंली मने सगसप्या रे, साभर्या भाईने भोजाई
बहु मारु नदराणु रे —वही (भाग 7) पृ० 142

6 वीरे दीयों लीलम वैरो हारजो, भाभी अे दीयों रे लीलो कचवो —वही, पृ० 175

7 मैं तो जमाइयां भाई भोजाईरे, मारो नणदी तो रोपे भगाई रे।
—चूनडी (भाग 1), पृ० 24

8. जोडी बिखर गई, हेरे, जोडी बिखर गई
नणदोई थारो नास जाओ, जोडी बिखर गई।
—नणदल चाली सासरे। —नबोहमको, पृ० 92

(5) देरानी-जेठानी

जेठानी देरानी से श्रेष्ठ स्थिति मे होती है क्योकि उसके पति की स्थिति भी परिवार मे पिता के बाद पहली है और स्वय उसकी स्थिति भी सास-ननद के बाद पहली होती है। इस कारण से देरानी पर जेठानी का नियन्त्रण रहता है और देरानी को अपनी जेठानी को सम्मान देना होता है तथा उसकी आज्ञाओ का पालन भी करना पडता है।

पारिवारिक कार्यों मे भी दोनो को मिल-जुलकर कार्य करना होता है। देरानी को सासू के साथ-साथ जेठानी का भी सम्मान करना पडता है। उसको सास-ननद के साथ-साथ जेठानी के भी पाव छूने होते हैं। एक राजस्थानी गीत म कोई वियोगिनी नायिका कुरज पक्षी के साथ अपने ससुराल को सदेश प्रेषित करती है। वह नायिका पक्षी से कहती है कि तुम मेरी जेठानी को भी पाव लगना कहना।[1] सामाजिक मर्यादा के *पालनार्थ देरानी को जेठानी के प्रति सदैव विनम्रता आज्ञाकारिता एव सम्मान की भावना व्यक्त करनी पडती है। यही सामाजिक जीवन का आदर्श है, जिसका पालन भी करना ही पडता है। अत एक गीत म जेठानी को 'बाजूबद की लूम' की सुन्दर उपमा से अलङ्कृत किया गया है।*[2] गुजराती गीत म जेठानी को घर का थम कहा गया है।[3]

इसी क्रम म जेठानी को बादल म चमकने वाली सुन्दर बिजली भी कहा गया है।[4] देरानी को पीहर जाने के लिए जेठानी की भी आज्ञा प्राप्त करनी होती है। अत देरानी दौडी-दौडी जेठानी के पास जाती है और जेठानी से पीहर भेजने की प्रार्थना करती है, क्योकि उसे लिवाने के लिए उसके पीहर वाले आ गए हैं।[5] जेठानी एक अन्य गीत म देरानी को जाने की आज्ञा भी देती है।[6]

पारिवारिक कार्य भी दोना ही मिलकर किया करती है। राजस्थानी गीत गोरबन्द मे नायिका कहती है कि देरानी-जेठानी ने मिलकर गोरबन्द गूथा। उसम लूम मेरी छोटी ननद ने लगाई।[7] यहा दोनो घर के कार्यों म एक-दूसरे का सहयोग देती है, यह स्पष्ट हो जाता है। उत्सवो के अवसर पर देरानी जेठानी मिलकर गीत गाती है और उत्सव की श्रीवृद्धि करती है।[8] *एक अन्य गीत म नायिका कहती है कि हम देरानी-जेठानी*

---

1 *जेठाणी ने कहिज्यो कुरजा पगा लागणा म्हारा।* —सकलित

2 *जठाणी म्हारी बाजूबद की लूम।* —*राजस्थान के लोकगीत- स० स्वय, पृ० 112*

3 जेठ मारो जदुपति, जेठाणी घरनो थभ
के आणा आव्यां रे मोरार —रढियाली रात (भाग 3), पृ 81

4 जेठाणी झबूके बादल बाजली। —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 46

5 *दौडी दौडी जेठाणी कनै म्हें गई जेठाणी पीवर भेल*
आणो आय लियो। —*दोरो धीया न सासरो—स० देपा, पृ० 72*

6 जेठजी भेले म्हारी जेठाणी भेले, गायो को गुवालियो डोडो बोले। —सकलित

7. देराणी जेठाणी मिल गोरबद गूथिया
छोटकी नणद लूम लगाई जी आ, गोरबद लूम्यालो। —सकलित

8 *इसडो बधावो सायबा मोल मगाय दो जी,*
देवर जेठाण्यां रिलमिल गावस्यां जी। —राजस्थान के लोकगीत--स० स्वय, पृ० 117

काम करने मे एक-दूसरे को बराबर सहयोग देंगी ।[1] एक गीत मे जेठानी के द्वारा देरानी के मेहदी चित्रित करने का भी उल्लेख है ।[2] इस प्रकार देरानी-जेठानी घर के कामो मे एक-दूसरे का सहयोग देती हैं। इसी सहयोग भावना का चित्रण गुजराती गीतों में भी उपलब्ध है। देरानी जब देवपूजा के लिए जाती है तो विनम्रतापूर्वक अपनी जेठानी से पानी गर्म करने का आग्रह करती है ।[3] एक गीत मे देरानी की मृत्यु पर जेठानी कहती है कि पानी भरने वाली चली गई ।[4] यहा देरानी द्वारा पानी भरने का कार्य करने का उल्लेख किया गया है, इससे भी दोनो के बीच सहयोग का पता चलता है। एक अन्य गीत मे दोनों के द्वारा मिलकर पानी भरने का वर्णन किया गया है ।[5] कृषि कार्यों म भी दोनो मिल-जुलकर हाथ बटाती हैं ।[6] एक गीत मे दोनो भैंडा बेचने बाजार भी जाती हैं ।[7] इन उदाहरणों से देरानी-जेठानी का पारिवारिक कार्यों म एक-दूसरे का सहयोग करने की भावना का पता चलता है।

यो आदर्श रूप मे देरानी जेठानी का सम्मान करती है, एक-दूसरे का घरेलू कामो मे हाथ बटाती है, परन्तु परिवारो म कलह उत्पन्न करने का तथा सम्मिलित परिवारो के भग होन के पीछे भी इन्हीं लोगों का हाथ रहता है। ये अपने-अपने पति को प्रोत्साहित करके कलह का सृजन करती हैं। एक राजस्थानी गीत म पत्नी अपने पति से देरानी-जेठानी दोनो की ही शिकायत करती हुई कहती है कि मुझसे देरानी-जेठानी दोनो ही ईर्ष्या करती हैं अत मेरी टोकरी कौन उठाएगा ।[8] दूसरे गीत मे जब जेठानी देरानी को चने के खेत की रखवाली करने तथा चिड़िया उड़ाने के लिए भेजना चाहती है तब वह उसको कहती है कि जाकर अपने देवर से कह दो, मैं चिड़िया उड़ाने नहीं जाऊंगी ।[9] यहा धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया गया है जिससे इनके बीच वाद-विवाद का पता चलता है। एक गुजराती गीत म नायिका इस वाद-विवाद का निषेध करती है, साथ ही जेठानी की शिकायत करती हुई कहती है कि मेरी जेठानी मुझसे अर्धरात्रि से ही दलना दलवाती या

1 म्हारी देराण्यां जेठाण्यां बराबर रहस्यां, काम के गुण गांगलो । वही, पृ० 120
2 महदी मांडी मांडी वडी अ जेठाणी बैठ । वही, पृ० 139
3. उठो ने रे मारा गमरथ जेठाणी, ऊना पाणी मेलो जो रे ।
—रढियाली रात (भाग 3), पृ० 20
4 जेठाणी बाती जोवा रे, पाणीनी भरनार गई मारा घर ना —वही, पृ० 52
5 जनहु रे मह नं मारो जेठाणी मरे, त्यां तो शोरय नी तापवी माडी करे
पाणीना कोण दे मरे ? अल बादनीनो —गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 12
6. देराणी जेठाणी बंध बीणवा चाल्यां,
ताणीने चोरस्यां बांध्या राड़ कर मरीं ।
—वही, पृ० 104
7. देराणी जेठाणी भैंडा वेचवाने ग्या थां । —वही (भाग 9), पृ० 194
8. देराण्यां जेठाण्यां इसको रै हाली जी । म्हाने कुणो उचावे हैम —मकलित
9. कह देई ए जेठाणी थारा देवर ने
नहीं जाऊ ए खेत रुखालवा ने
—संकलित

पिसवाती है।[1] दूसरे गीत म तो देरानी-जेठानी के वाद-विवाद के कारण भाई-भाई लडने लगते हैं, उनके बीच तलवार चलती है और रक्त की धारा प्रवाहित हो जाती है।[2] देरानी-जेठानी इतनी भयकर स्थिति भाई भाई के बीच उत्पन्न कर देती हैं। एक गीत मे भाभी अपने देवर को पत्नी का दास कहती है और उसको अपनी पत्नी को पीटने के लिए प्रोत्साहित करती है।[3] देरानी को पिटवाने के लिए यहा जेठानी देवर पर व्यग्य करती है और उसको पत्नी का दास तक कह देती है। जेठानी देरानी को यथावसर गाली भी देती है।[4] इस प्रकार के एक नही, अनक अप्रिय प्रसगो का लोकगीतों म वर्णन मिलता है। देरानी जेठानी को इसलिए एक राजस्थानी गीत म बुरा कहती है कि वह उसस रसोई बनवाती है।[5] तो गुजराती देरानी कहती है कि मेरी जेठानी मुझसे टोकरी भरकर पिसवाती है, अत वह भूडी है।[6]

एक वियोगिनी नायिका गुजराती गीत म अपनी जेठानी को शाप दती है और अपने प्रियतम से स्वय को लिवा ले जाने का अनुरोध करती है।[7] एक राजस्थानी गीत मे विवाह के अवसर पर लाई गई कचुकी का घेर कम देखकर नायिका अपन पति स कहती है कि मेरी जेठानी ने लालच किया है अत मेरी कचुकी का घेर उसने छोटा कर दिया।[8] एक दूसरे गीत मे जब नायिका कहती है कि मेरी जेठानी को बेचकर मेरे लिए बाजूबद बनवा दो तब उसका प्रियतम पूछता है कि यदि मैं जेठानी को बेचूगा तो फिर रसोई कौन बनाएगा।[9] जेठानी को 'बैरिन रात' की उपमा भी दी जाती है।[10] बेर का काटा लगन पर

---

1 देराणी जेठाणी आपण वादडियावादी अ
अगधी ते राने जेठाणी दलणा दलावेजो।
—गु० लो० सा० भा० (भाग 6), पृ० 120

2 देराणी जठाणी वादे वढ स काटनगी जुदा जुदा बे भाईला मडा भरे स तरवायुनी तडो पड से, लोहीनी घाल नॅक। —वही (भाग 10), पृ० 60

3 देर, केड बांची में घाव सोधा, ने मागी देराणीना ढीढा के देर मारो बैरीनो दास छं।
—वही (भाग 9) पृ० 240

4 जेठाणी देशे गाल रे, बंगला रो ने, वा लभिया। —नवोहमको, पृ० 57

5 सासरिया में म्हारी जठाणी जी भूडा
म्हाने घडी घडी रसोईया करावें, नहीं जाऊ सासरिये। —सकलित

6 जेठ भोली नें जाऊ, घरे जेठाणी छं भूडी
मनें दलणु मेलें भूडी, मारी ओछी वमरयां। —रढियाला रात (भाग 2), पृ० 170

7 जेठ माथे बेडपडी जेठाणी ने तरियो ताव,
के व्याणी मोकलने मोरार। —वही (भाग 3), पृ० 80

8 कोई कांचली को घेर ओछो लाग जी बना।
कोई जेठाणी लालच कीदोजी, बालक बना। — सकलित

9 जेठाणी ने बैंच घडाई दे बाजूबन्द
जेठाणी न बेचूला तो रसोईयां कुण वणावेला ? —सकलित

10 जेठाणी बैरण रात वारी जाऊ ढाला। —गु० लो० सा० भा० (भाग 7), पृ० 148

एक देरानी अपनी जेठानी को द्वार पर भेज देने की बात करती है।[1] देरानी तो जेठानी के व्यग्य वचन भी नहीं सुनना चाहती है। वह कहती है कि जेठ बोला तो बोला, परन्तु जेठानी क्यो बोली।[2] एक वध्या स्त्री भैरूजी से पुत्र देने की प्रार्थना करती है क्योंकि देरानी जेठानियो के व्यग्य उससे नहीं सुने जाते हैं।[3] देरानी के पुत्रवती होने पर जेठानी वध्या होने के कारण और अधिक दुखी हो जाती है।

इस प्रकार जेठानी के सम्मान के आदर्श का पालन देरानी विवशतापूर्वक करती है किन्तु वास्तविक जीवन मे तो देरानी जेठानी के सम्बन्ध अप्रिय प्रसगो से भरे है। दोनो ही प्रांतो के गीतो मे देरानी जेठानी के तनावपूर्ण अरुचिकर सम्बन्धो का उल्लेख मिलता है। इन दोनो के बीच ईर्ष्या एव स्पर्द्धा की भावना भी रहती है, जो इनके सम्बन्धो को कटु एव अरुचिकर बनाती है।

(6) सौत-सौत

मनुष्य अपनी पत्नी पर एकाधिकार चाहता है, उसी प्रकार स्त्री भी अपने पति पर एकाधिकार चाहती है। जब स्त्री अपने पति के प्रेम को सपत्नी मे विभक्त होते हुए देखती है तो उसके हृदय पर साप लोट जाता है। यही मूल कारण है कि सौत-सौत के बीच कभी रुचिकर अथवा प्रिय सबध नही पाए जाते। राजस्थान मे एक कहावत है कि 'सौक तो चून की ई बुरी' अर्थात् आटे की भी सौत बुरी होती है। सौत के लिए राजस्थानी मे सौक शब्द का प्रचलन है। यो भी सौतिया डाह तो जगत प्रसिद्ध ही है। राजस्थानी एव गुजराती गीतो मे भी इस सौतिया डाह का विविध उल्लेख हुआ है।

राजस्थान मे तो बहुत लम्बे समय तक बहुपत्नी-प्रथा प्रचलित रही है और गुजरात भी इसका अपवाद नही रहा है। सौत को सौत फूटी आख से भी नही देखना चाहती है। एक राजस्थानी गीत मे कोई नायिका कचुकी के विभिन्न भागो पर परिवार के विभिन्न लोगो का चित्रण करवाना चाहती है। वह कहती है कि मेरी कचुकी की टूकियो पर (अग्रभाग पर) मेरी मौजी सायबा चित्रित कर दो और पृष्ठ भाग मे लोड़ी-सौक (छोटी सौत)।[4] नायिका ने परिवार के सभी सदस्यो को प्रिय एव अप्रिय सबधो के आधार पर अपनी कचुकी के विभिन्न अगो पर चित्रित करवाया है। सब उसको दिखाई पडते रहे इस स्थिति की उसने कल्पना की, किन्तु उसने सौत को पृष्ठ भाग मे

---

1 जेठजी ने पेड़ो ऊपर मेल्यो जेठाणी माटे पनिय, मनें केर कांटो साप्यो।

—वही, पृ० 49

2. जेठ बोल्या तो भले बोल्या, न मारी जेठाणी शा माटे बोली। —वही, पृ० 9

3 भैरूजी देराण्यां जेठाण्यां मनें मोसो बोलियो

देराण्यां जेठाण्यां के हीड़े पालणे

भैरूजी, हू थेंन पुतर बिन दुख में बांझडी।

—राजस्थानी लोकगीत, म० वय, पृ० 236

4 म्हारी टूकियां पर लिख मौजी सायबो

पछवाड़े लिख म्हारी लोड़ी सौक।

—[illegible]

इसलिए चित्रित करवाया जिससे वह उसको दिख न सके। कितना गहरा आक्रोश है सौत के प्रति। नारी को उसके पति की दूसरी पत्नी से ही नहीं, किन्तु किसी भी स्त्रीलिंग प्राणी से अथवा वस्तु से जो उसके पति के सम्पर्क में आए, उसको ईर्ष्या हो जाती है। गुजराती गीतों का विवेचन करते हुए श्रीयुत झवेरचन्द मेघाणी ने एक बड़ा सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। ननद के वीर दातुन कर रहे थे कि उनकी झारी पर एक मक्खी आकर बैठ गई। वह मक्खी तो उनसे प्रार्थना करती है और मैं क्रोधित होती हूं। हे सायब! वह मक्खी तो मेरी हजारण सौत है।[1] सूरदासजी ने गोपियों की मुरली के प्रति ईर्ष्या भावना का चित्रण किया है। किन्तु यहां तो बेचारी मक्खी केवल पानी की झारी पर बैठी है, फिर भी उसके प्रति ईर्ष्या का भाव नायिका के हृदय में उत्पन्न होता है। इसी का नाम तो सौतिया डाह है। सौत की कल्पना से ही नारी के हृदय में क्रोध फूट पड़ता है।

एक स्त्री जब पानी भरने गई तो वहां उसको ज्ञात हुआ कि उसका पति दूसरा विवाह करने जा रहा है। घर आकर उसने अपने पति से पूछा कि क्या यह सत्य है? यदि सत्य है तो सौत लाने के पूर्व मुझे मेरे अवगुण बताओ जिनके कारण तुम्हें दूसरी स्त्री लानी पड़ रही है। पति ने उत्तर दिया कि तुम्हारे गुण अधिक हैं और अवगुण कम, परन्तु मुझे दो पत्नियों की इच्छा है। हे गोरी! तुम्हारी कलाई सांवली है। मुझे गोरे रंग की कलाई की इच्छा है। अब बेचारी नारी क्या करे? उसको ईश्वर का दिया सांवला रंग अभिशाप बन गया। तब उसने कल्पना का आश्रय लिया और सौत की चौथे फेरे के साथ ही मृत्यु की कल्पना कर ली। जब सौत मर गई तब वह कहती है कि अच्छा हो गया। अब ताले एवं चाबियां तो मेरे ही हाथ रहेंगी। छोटी सौत तो मरकर बहुत दूर चली गई अब इसलिए बड़ी का ही आदर रह गया।[2] यहां छोटी सौत का मरना बड़ी का सम्मान रहने का कारण बन गया। यदि छोटी आती तो नव विवाहित होने के कारण उसको अधिक सम्मान दिया जाता और ताले-चाबी भी उसको सौंप दिए जाते, इसीलिए पूर्व विवाहिता पत्नी ने सौत की विवाह वेदी पर ही मर जाने की कल्पना करके सुख की सांस ली। एक गुजराती गीत में भी यही भाव व्यक्त हुए हैं। वहां भी जब पत्नी पानी लेने गई तो किसी से पति के दूसरा विवाह करने की चर्चा उसने सुनी। उसने घर आकर पति का पल्ला पकड़ लिया। पति कहने लगा कि मेरा पल्ला छोड़ो, किन्तु वह भला क्योंकर छोड़ती? पति ने भी दूसरा विवाह करने के अनेक कारण बताए और उनमें से एक यह भी कि तुम्हारी कलाई सांवली है और मुझे गोरी कलाई

1 माखलडी हजारण शोक्य हो सायबा
अरे! माखलडी अरजु करे।
—रढियाली रात (भाग 3), प्रस्तावना पृ० 41

2 सायबा ल्योडी मरिया भलो हियो, म्हारे ताला कूंची हाथ। धण०
सायबा ल्योडी ल्योडी तो अलगी गई। बडी रो रंगो आघ। धण०
—गई गई रे समद तलाव—सं० देथा, पृ० 58-60

की इच्छा है।[1] दोनों गीतों में कितना साम्य है। पानी लेने जाने पर ही दोनों ने पति के विवाह की इच्छा के समाचार सुने। दोनों का रंग उनके लिए अभिशाप बन गया।

एक अन्य गुजराती गीत में सौत के घर पहुंचने से पूर्व ही मृत्यु की कल्पना कर ली गई है जैसे उक्त राजस्थानी गीत में चौथे फेरे में ही सौत के मर जाने का उल्लेख किया गया था। जब सौत मर गई तो लोक व्यवहार के नाते उसको रोने तो जाना ही है।[2] राजस्थानी लोकगीत में कहा गया है—मैं छोटी सौत की मृत्यु पर झीना घूंघट निकाल कर रोने गई। मैं घूंघट की ओट में रोना तो रो रही हूं किन्तु मेरा हृदय असीम आनन्द से तरंगित हो रहा है।[3] एक गुजराती गीत में सौत के मरने पर पति जब विलाप करता है तो पत्नी कहती है कि हे मां! मुझे तो जोर की हंसी आती है।[4] इस प्रकार सौत की मृत्यु सौत के लिए सुखप्रद होती है। चाहे यह केवल कल्पना में ही क्यों न होती हो।

एक गुजराती गीत में केवल इस सूचना से एक स्त्री रोने लगी कि उसके पति दूसरी पत्नी ला रहे हैं।[5] दूसरे गीत में जब सौत उसके यहां अतिथि बनकर आती है तो वह उसका विचित्र सत्कार करती है। वह अपनी मां से कहती है कि मेरी सौत मेरे यहां अतिथि बनकर आई है, इसका किस प्रकार सत्कार करूं? तो मां कहती है कि इसको बारह वर्ष की बनी रोटी दो और तेरह वर्ष का तेल दो। आगे जब वह मां से पूछती है कि मेरी सौत रुग्ण हो गई इसको क्या-क्या औषधि दूं तो मां ने आक व धतूरा घोटकर पिलाने की सलाह दी। माता की सलाह के अनुसार पुत्री भी ऐसा ही करती है और सौत बेचारी मर जाती है।[6] एक गुजराती गीत में जब सौत के झांझर गली में

---

1 तमारा ने पोचा गोरी घमला रे वालव छोडजो।
गोरा पोषानी छे घांत
नबजादी! नव पानव छोडजो। —चूनड़ी (भाग 1), पृ० 119-120

2 सायबोजी रूठे ने अमारां हैयां हरे रे सैयां जी रे
लोकनी लाज हीजे मोड़ा वालशु रे सैयां जी रे। —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 159

3 मायब हथोडी रोवण म्हैं गिया, कोई झीणो घूंघट काढ घण रा सायबा ओ राज।
मायबा घूंघट रोवे रोवणा, म्हारो हियो हिलोला लेय। घण०
—गई गई रे ममद तलाव—स० देपा, पृ० 60

4 मा, अेनो परण्यो तो रूअे धुसके
मा, मने धड धड आवे हांस रे, मानीती शकने रे। —गु० लो० सा० मा० (भाग 9), पृ० 303

5 गोखे घमघम करती, गोवय रे हर मो हाल्यो।
मानी बहु कमाइ वांस रूअे के हरयो हाल्यो। —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 184

6 मा, मारी शोक्य आव्यां परोणला रे, मा, अेने शां शां भोजनियां
देऊं रे, मानीती शोक ने रे।
दीकरी! बार वरसनो बाटो रे, दीकरी! तेरे बरसनुं तेल रे,
मानीती शोक ने रे। —गु० मा० मा० भा० (भाग 9),

इसमें तो सौत अपनी पडोसिन से कहती है कि मेरी डावी (बायी) आख उठी है। अत तुम मेरी आखो के पट्टी बाध दो।[1] वस्तुत: वह सौत को देखना नही चाहती है।

सौत-सौत के बीच छोटी-छोटी बातो व वस्तुओ को लेकर विवाद रहता है। एक स्त्री अपने पति से कहती है कि जो भी वस्तु लाओ वह बराबर लाना, अन्यथा सौत लडेगी।[2] एक दूसरे गीत मे सौत यह शिकायत करती है कि मेरा पति सौत के लिए सब कुछ लाता है किन्तु मेरे लिए कुछ नही लाता है।[3] तो एक स्थान पर छोटी सौत बडी सौत के लिए भी विविध वस्तुए मगवाती हैं।[4] एक गीत मे सौत को सौत फटी हुई ओढनी देती है।[5] एक गीत म स्त्री अपने पति से कहती है कि यदि सौत लाओगे तो तुम्हारी आर्थिक स्थिति बिगड जाएगी। वह कहती कि पहले घोडे पर चढने वाले प्रियतम, दो राडो के मिलने पर अब गधे पर चढते हैं। अत यदि तुम दूसरी पत्नी लाना तो इतना जानकर लाना।[6] इसके अतिरिक्त भी वह आर्थिक स्थिति के पतन के विविध रूपो का वर्णन करके पति को यह समझाना चाहती है कि दो स्त्रियो के रहन से गृहस्थी पर दुष्प्रभाव पडेगा। दो पत्नियो के दुष्परिणामो का उल्लेख निम्न दो गुजराती उक्तियो मे बडे सुन्दर ढग से किया गया है—

(1) बहुत वणज, बहुत बेटिया, दो नारी मरधार।
इनकु कहो क्या मारना, मार रिया करतार॥
(2) धरटीपुर जिम विषरणी, कणह सरीखउ कन्तु।
कहु, आहु किम उगरई, मरडी आणई अत।[7]

पहली मे कहा गया है कि जिस पुरुष के बहुत वाणज (कर्ज) हो, बहुत बेटिया हों, और दो नारिया हो इनको कोई क्या मारेगा, इनको तो ईश्वर ने ही मार दिया

---

1 शोकयना झाझर शेरी सैं झमक्या, मारी डावी आख उठी जो
बाई रे पाडोसण। मनै आखे पाटी बाध, रै सैयरू जी। —वही, पृ॰ 294
2. लावो तो बेजोडी लावजो रे, बालम नानेरी,
घरे सोक्य लडाका लेशे रे, एक बालम॰॥ —वही (भाग 5), पृ॰ 257
3 सोंम्यना कारणिये परण्यो कडला रे लायो,
अमारा कारणियो कापना लायो रे।
कैरारियो लाल, अमारी ऊतरयी नजरू उतरी जई छे। —वही, पृ॰ 251
4 पैली मानीनी मजरो लेशे रे मारवाडा
पैली अलखामणी आंसु पाडशे रे, मारवाडा।
—गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 10), पृ॰ 266
5. मारी फाटी तूटी ओढणी रे मारी शोक्य ने जई देजो,
माडी सँजल वावमां बूडो रे। —वही (भाग 1), पृ॰ 239
6 पहेला से चडता मारू घोडले रे लोल
हवे गधेडे चडाव्या, राडा बे मली रे लोन
केटलु जाणी ने बीजी लावजो रे लोन। —वही, (भाग 9) पृ॰ 261
7. वही, (भाग 5), पृ॰ 26

है। दूसरी मे कहा गया है चक्की के दो पाटों के समान दो वधुएं होती हैं और उनका पति उन पाटो के बीच मे फसा हुआ दाना है। अतः वह उन दो पाटो के बीच से किस विधि से पूरा साबुत निकल सकता है, उसका अत तो निश्चित ही है। इस प्रकार दो पत्नियों के रखने से जीवन के दूभर होने का वर्णन इन दो उक्तियो मे किया गया है।

एक राजस्थानी गीत मे भी दो पत्नियो के कारण पति की दयनीय दशा का उल्लेख किया गया है वहा कहा गया है कि दो गोरी का पति बेचारा पगात्यां (खाट के पैरो की तरफ वाले भाग) मे पडा है।[1] दो पत्नियो के कारण पति एव पत्नियो की स्थिति बडी विचित्र हो जाती है। एक सौत कहती है कि मेरी सौत को बेचकर मेरे बाजूबन्द घडवा दो।[2] एक गीत मे सौत कहती है कि हे प्रियतम ! तुम बूदी से चार फूदी लाना। एक फूदी ऐसी लाना जो लोडी (छोटी) बडी का अन्तर प्रकट कर सके।[3] आर्थिक स्थिति के विषम हो जाने का उल्लेख भी एक गीत मे हुआ है। छोटी सौत कहती है कि मेरे शालू खरीद दो। बडी कहती है कि मेरे ओले गिर गए हैं, अत खेत बोए नही जा सके। इस बार तो मेरे देवर भी कवारे रह गए।[4] दो पत्नियों की ईर्ष्या भावना का चित्रण एक गीत मे और देखिए जिसमे पत्नी कहती है कि जीरा बोओ मत, यदि जीरा बोओ तो जीरे को काटो मत। इससे मेरे हृदय को दुख होगा। सौत मत लाओ और यदि लाओ तो भी उसके साथ सोओ मत, सोओ तो भी पुत्र उत्पन्न मत करो।[5] इस प्रकार दैनिक जीवन के अनेक प्रसगो म सौत सौत के बीच अप्रिय एव अरुचिकर सबधों का उल्लेख किया गया है।

निष्कर्ष

यहा आठ विभिन्न रुचिकर सबधो से सबधित गीतो का विवेचन किया गया। दोनों प्रान्तो के गीतो के विवेचन के आधार पर निम्न तथ्य प्राप्त हो सकते हैं।

(1) माता पुत्र प्राप्त करने के लिए विभिन्न देवी-देवताओ की मनौती मनाती है, तथा वह अपना नारी जीवन तभी सार्थक मानती है जबकि वह पुत्रवती हो। यह उसके नारी जीवन की सबसे बडी साध है।

---

1 दो गोरियां रो मायको पड्यो पगोत्यां बीच। —सकलित

2 सौकड़ली न बेच घडायदो बाजूबद
सोकड़ली ने बेचालां तो मेमां में चुण पोडेला। —सकलित

3 बूंदी जाज्यो सायबाजी फूंदी लाज्यो चार,
एक फूदी इसीक लाज्यो लोहो वडी को सार। —सकलित

4 ल्योड़ीडोजी केवे म्हारे सालूडो मोलाय दो बडोडी कवे छै म्हारे गडा पडग्या
ढोल्यां रा खेत पडत रहेग्या, म्हारे अबारके तो देवरिया कुवारा रेहग्या।
—राजस्थानी साहित्य की कुल प्रवृत्तियां, नरेन्द्र भानावत, पृ० 105

5 जीरो वावो तो जीरा ने काटो मती, म्हारा हिवडा रा जीवडा ने दुख देलो
सौकड लावो मती, लावो तो भेलो पोढ़ो मती, भेलो पोढ़ो तो,
बीणा जणो मती, म्हारा०

(2) पुत्र जन्म के अवसर पर दोनो प्रान्तो के गीतो मे परिवार मे आनन्द मनाया जाता है और मा का सम्मान पुत्रवती होने के कारण बढ़ जाता है।

(3) मा का हृदय स्नेह एव ममता से परिपूरित है। स्नेह एव ममता का यह भाव दोनो प्रान्तों के गीतों से मानो छलका पडता है। लोरियो मे यह स्नेह एव ममता बहुत मुखरित हुई है।

राजस्थानी लोरियो मे माता अपने पुत्र को वीर बनाने को उत्सुक है। गुजराती लोरियो (हालरडो) मे वीर-भावना का अभाव नहीं है। वनराज चावडा और शिवाजी नु हालरडु नामक लोरियो मे गुजराती माता भी अपने पुत्र को वीर बनाने को उत्सुक है।

(4) माता पुत्र के विवाह के उपरान्त पुत्रवधू के प्रति ईर्ष्यामयी हो जाती है तथा पुत्रवधू को यथावसर पुत्र द्वारा दण्डित करवाती है।

(5) माता एव पुत्री दोनो एक-दूसरी के प्रति स्नेह भाव रखती हैं और मा पुत्री के सुखी एव सम्पन्न जीवन की कामना करती है। पुत्री भी मा के ममत्वमय हृदय की स्थिति को समझकर उसको कभी दुख नही पहुचाना चाहती।

(6) पुत्री के जन्म के कारण माता के सम्मान मे वृद्धि नही होती बल्कि उसका मान घट जाता है।

(7) पुत्र पिता की आज्ञाओ का पालन करता है और पिता के प्रति सेवा भावना रखता है। पिता पुत्र के प्रति स्नेह भाव रखता है।

(8) पिता पुत्री के प्रति अत्यधिक स्नेह रखता है। उसके लिए योग्य वर ढूढता है और विवाह के उपरान्त भी पुत्री के सुख दुख का ध्यान रखता है। आवश्यकतानुसार पुत्री के लिए पिता विवाह के पूर्व तथा पश्चात् भी वस्त्राभूषण क्रय करता है और पुत्री की प्रत्येक इच्छा पूरी करने की चेष्टा करता है।

(9) भाई-बहिन के सबधो का दोनो प्रान्तो के गीतो मे विशद चित्रण उपलब्ध है और भाई बहिन के लिए प्रत्येक अवसर पर वस्त्राभूषण लेकर ससुराल मे भात अथवा मोहरा भरने जाता है। साधारणतया जब भी बहिन भाई के यहा आती है तब वह उसका आदर सत्कार करता है और उसको वस्त्राभूषण देकर विदा करता है। बहिन भी भाई के पुत्र-जन्म के अवसर पर विभिन्न वस्तुए लेकर आती है तथा स्वस्तिक चिह्न चित्रित करती है। इस प्रकार दोनो प्रातो मे न केवल समान रूप से भाई बहिन के सबधो का चित्रण है बल्कि प्रथाओ और परम्पराओ मे भी विशेष समानता है।

(10) लोकगीतो मे भाई-भाई के सबधो का उल्लेख बहुत कम मिलता है, परन्तु जहां भी है वहा वह शुद्ध प्रेम पर आधारित है। कोई राजस्थानी गीत ऐसा नही मिला जिसमे भाई-भाई लडते हों। हा, एक गुजराती गीत मे अपनी-अपनी पत्नियों के विवाद को लेकर वे अवश्य लडते हैं। सभवत गुजरात से राजस्थान मे भाई-भाई के सबध अधिक प्रिय हैं।

(11) पति-पत्नी दोनो एक दूसरे से प्रेम करते हैं। प्रेम मे मनोविनोद, पत्नी के द्वारा पति से विभिन्न वस्तुओ की माग और पति द्वारा उनकी पूर्ति आदि के एक नहीं,

अनेक अवसर मिलते हैं जहां पति-पत्नी के सौहार्दपूर्ण सबंधो का उल्लेख लोकगीतो मे उपलब्ध है। हा, अपवाद स्वरूप कुछ गीत ऐसे भी है जिनमे बहिन या मा के कारण पति अपनी पत्नी पर सदेह करता है, पीटता या हत्या तक कर देता है। पति पत्नी की छद्मवेष मे चरित्र की परीक्षा भी करता है। पति चरित्र के मामले मे अधिक स्वेच्छाकारी है। पत्नी भी कही-कही दुराचारिणी के रूप मे चित्रित की गई है। दोनो प्रातों मे समान दृष्टिकोण युक्त गीत उपलब्ध है।

(12) देवर-भाभी का आदर्श तो बहुत पवित्र माना गया है किन्तु वास्तविक जीवन मे देवर-भाभी के सबधो का अवैध स्वरूप दिखाई देता है। देवर-भाभी के इन सबधो वाले रूप को छोडकर प्रिय सबधो का उल्लेख दोनो प्रान्तो के गीतो म प्राप्त होता है।

दोनो प्रान्तो के रुचिकर सबधो के अन्तर्गत पर्याप्त समानता दिखाई देती है। केवल अपवाद स्वरूप एक दो विभिन्नता पूर्ण उदाहरण भी उपलब्ध हैं।

अरुचिकर सबधो के विवेचन के पश्चात् निम्न तथ्य प्रकट होते हैं—

(1) सास बहू के अप्रिय प्रसग ही दोनो प्रान्तो के लोकगीतो मे चित्रित किए गए हैं। सास का उत्पीडक रूप, पुत्र द्वारा पुत्र वधू को दण्डित करवाना, खाने-पीने मे भेद भाव बरतना आदि अनेको अप्रिय प्रसग उपलब्ध हैं, जहा बहू के प्रति सास का व्यवहार अनुचित, उत्पीडक और अन्यायपूर्ण होता है वहा बहू भी सास के प्रति घृणा-भाव रखती है। कही-कही आदर्श सबधो का उल्लेख भी अपवाद-स्वरूप हुआ है।

(2) ससुर-बहू के सबधों मे आदर्श सुरुचिपूर्ण है किन्तु सामान्यतया अप्रिय प्रसगो का उल्लेख ही दोनो प्रान्तो के लोकगीतो मे प्राप्य है।

(3) जेठ-बहू की भी ससुर-बहू जैसी स्थिति है।

(4) ननद-भावज के ईर्ष्या-द्वेष पूर्ण सबध दोनो प्रान्तो के लोकगीतो मे सामान्यतया चित्रित हुए हैं।

(5) देरानी-जेठानी के भी ईर्ष्या-प्रेम, वैमनस्य पर आधारित अरुचिकर सबध दोनो प्रान्तो के गीतो मे उपलब्ध है।

(6) सौत-सौत के सबध तो सौतिया डाह के विभिन्न अप्रिय प्रसगो से युक्त हैं। दोनो प्रान्तो के अरुचिकर सबधों से भाव, विषय एव घटनाओ तक की एकता उल्लेखनीय है। अनेक प्रथाओ मे भी बहुत साम्य दिखाई देता है।

द्वितीय अध्याय

संस्कार-संबंधी राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दू शास्त्रों मे षोडश-संस्कार का विधान है, उन संस्कारो का विधिपूर्वक पालन करने-कराने मे पुजारी, पुरोहित एव ब्राह्मण वर्ग सक्रिय योग देते हैं। सामान्य लोक जीवन इस शास्त्र-सम्मत विधि-विधान से अनभिज्ञ होता है। अत वह अपने ढग से ही, इन संस्कारो का आयोजन करता है। सोलह संस्कारों मे से लोक-जीवन मे प्रमुख रूप से निम्न संस्कारो का ही पालन देखा जाता है—

(1) जन्म-संस्कार,

(2) विवाह-संस्कार एव

(3) मृत्यु-संस्कार।

इन तीनो संस्कारो के साथ अनेक स्थानीय विधि-विधान अथवा लोकाचार प्रचलित है। लोकगीत लोकजीवन के लिए वेदवाक्य हैं, अत कोई लोकाचार इन लोकगीतों के अभाव मे सम्पन्न नही हो सकता। प्रत्येक प्रथा एव लोकाचार के साथ परम्परानुसार प्रचलित अनेक लोकगीत गाए जाते हैं।

राजस्थानी और गुजराती जन-जीवन मे भी उपर्युक्त तीन संस्कार ही महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। यहा इन संस्कारो से सम्बन्धित कुछ गीतों का विवेचन किया जा रहा है, जिससे राजस्थान और गुजरात के लोकाचारों की समानता अथवा असमानता ज्ञात हो जाएगी।

(1) जन्म-संस्कार के गीत

जन्म से विवाह के बीच हिन्दू-शास्त्र ग्रंथो मे निम्न बारह संस्कारों का विधान है—

(1) गर्भाधान (2) पसवन
(3) सीमन्तोन्नयन (4) जातकर्म
(5) नामकरण (6) निष्क्रमण
(7) अन्नप्राशन (8) चूडाकर्म
(9) कर्णवेधन (10) उपनयन
(11) वेदस्वाध्याय और (12) समावर्तन

ये शास्त्र सम्मत सस्कार लोक जीवन मे प्रचलित नही है। इनका स्थानीयकरण हो गया है और अब जन्म से पूर्व केवल साध पुराई एव आगरणी नामक सस्कार किए जाते हैं। जातकर्म अथवा प्रसव सस्कार के गीत 'जापे' के गीतो के नाम से गाए जाते है। इन गीतो मे नौ मासों म गर्भवती की प्रत्येक मास की स्थिति स लकर सतानोत्पत्ति तक का वर्णन मिलता है। नामकरण का भी इन्ही गीतो म उल्लेख है। निष्क्रमण सस्कार अब जलाशय पूजा के रूप म मनाया जाता है और उसके गीत भी प्रसव-सबधी गीतो के अन्तर्गत ही गाए जाते हैं। चूडा कर्म, कर्ण वेधन एव उपनयन क केवल राजस्थानी गीत उपलब्ध हो सके हैं। वेदस्वाध्याय एव समावर्तन के सस्कार ही लुप्त हो चुके हैं, अत. इनसे सबधित गीत मिलन का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

जन्म के समय प्रचलित प्रमुख लोकाचार और उनके सबधित गीतो का विवेचन यहा किया जा रहा है। जन्म-सस्कार के अतर्गत ही 'हालरा' (लोरी) गीतो का भी समावेश है, यद्यपि ये सस्कार गीत नही हैं। जन्म सस्कार से लेकर विवाह के पूर्व तक के गीतो का निम्न शीर्षको के अन्तर्गत विवेचन किया जा सकता है—

(क) दोहद अथवा साधपुराई के गीत—सन्तति-जन्म द्वारा मनुष्य पितृ ऋण से उऋण होता है, अत गर्भाधान परिवार के लिए हर्ष का विषय होता है और उसी समय से ही गीत गाए जाने आरम्भ हो जाते हैं। दोहद या साध-पुराई के गीतो म गर्भवती की साध को परिवार के वरिष्ठ सदस्यो द्वारा पूरा किया जाता है। गर्भवती स्त्री को प्राय विभिन्न वस्तुए खाने की इच्छा होती है और ऐसा माना जाता है कि इच्छित वस्तुओ के न खिलाने से भावी बालक पर उसका कुप्रभाव पडता है, अत गर्भवती की प्रत्येक इच्छा यथासभव पूरी की जाती है। गर्भवती स्त्रिया कभी कभी अखाद्य वस्तुए भी खाती देखी जाती हैं जिनका प्रबन्ध वे स्वय कर लेती हैं।

एक राजस्थानी गीत मे गर्भवती स्त्री का गर्भाधान से लेकर बालक के जन्म तक की अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। विभिन्न महीनो मे उसको विभिन्न वस्तुए खाने की इच्छा होती है—

आठमो मास उलरियो ए जच्चा अगरणी मन जाय ए
नमो मास उलरियो ए जच्चा ओवरिये मन जाय।[1]

एक गुजराती गीत मे नायिका को गर्भवती होने पर वि...

1 राजस्थानी लोकगीत-...

होती है और वह अपने पति से आग्रह करती है कि वह सब कुछ बेचकर उसको सिंघाडा लाकर दे, क्योकि उसे सिंघाडे की लगन लगी है—

परण्या इके हीगुडु लई आलो रे
मने एके हीगुडु रड (लग्न) लागी रे।[1]

(ख) सीमन्तोन्नयन के अवसर पर गाये जाने वाले गीत—गर्भाधान के पश्चात् आठवें और कहीं-कहीं सातवें मास म यह सस्कार मनाया जाता है। घर के आगन म चौक पूरा जाता है और गर्भवती स्त्री को बैठाकर पूजा की जाती है। उस समय जो गीत गाए जात हैं उनम भी गर्भवती के खाने-पीने की वस्तुओ का वर्णन रहता है।

राजस्थानी गीत 'अजमो' (अजवाण) म पति कहता है कि मेरे पिता अजवायण लाएगे, माता साफ करेगी, तुम सतान को जन्म तो दो—

थइन ओ मानतण राणी हालरियो जिणजो,
धेनडियो जिणजो ओ अजमोम्हारा भावोसा मोलावें ओ राज।[2]

गुजराती गीत 'भावा-अभावा' गीत म सगर्भा स्त्री की रुचि एव अरुचि की वस्तुओ का उल्लेख है। वहा गर्भवती स्त्री पान सुपारी, लोग-इलायची नही खाती है और सेंकी हुई मिट्टी और ठीकरे खाती है, यथा—

अेने लविंग अेलायची न भावे,
अेने ठीकरा उपर भाव, अे घर केम चाले ?[3]
सगर्भा स्त्री के रुचि एव अरुचि के इस प्रकार अनेक गीत प्रचलित हैं।

(ग) प्रसव सम्बन्धी गीत—प्रसव क उपरान्त गाए जाने वाले गीतो को 'जापे' अथवा 'सोहर' क गीत कहते हैं। इन सोहर गीतो म विविध विषयो का उल्लेख रहता है। 'वधावे' अथवा मागलिक गीत इस अवसर के प्रमुख गीत हैं। पुत्र जन्म का समय अत्यन्त हर्ष एव आनद का होता है, अत प्रसव के इस अवसर पर 'वधावे' गाए जाते हैं।

एक राजस्थानी लोकगीत म आसन्न प्रसवा स्त्री पति से कहती है कि दाई को शीघ्र बुलाइये, जिससे वह आकर बच्चे का जन्म करावे। सासू को वह सोने का थाल बजाने के लिए बुलवाती है। जोशी को वह बच्चे का नाम निकालने के लिए बुलवाती है। वह पति से आग्रह करती है कि ननद बाई को भी शीघ्र बुलवालो ताकि वे चित्रशाला म 'स्वस्तिक' चित्रित करे और इसके लिए ननद बाई को प्रेम से सदा दिए जान वाले नेग से दुगुना नेग दो, यथा—

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 131
2 राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 46
3 गु० लो० सा० मा० (भाग 10), पृ० 3

ढोला, बाईजी ने वेग बुलावो
म्हारी चत्रसाला सथिया दिवावो
बाईजी ने अड-अड नेग चुकावो
ढोला, दूणी रीत बधावो ।[1]

एक गुजराती गीत में पहले मास से लेकर नवें मास तक बराबर बधावा (बधाई) दिया जा रहा है, नवें मास की अन्तिम बधाई देकर कहा जाता है कि दसवें मास में कृष्ण ने जन्म लिया। वहां जन्म के पश्चात् गीत में बालक कृष्ण विभिन्न वस्तुओं की मांग करता है और मां उन मांगों की पूर्ति भी करती है, यथा—

बालक रहीने बोलियु, हरि हालरू रे,
माडी ! मने नावण देव रे, गोविंद हालरू रे।
त्राबा ते कूडी जले भरी हरि हालरू रे,
दूधडे समोवण दइश, गोविंद हालरूं रे ।[2]

इस गुजराती 'बधावे' गीत में राजस्थानी बधावे के समान थाल बजाने, छठी की रात्रि जागरण, ननद द्वारा स्वस्तिक चित्रण आदि लोकाचारों का उल्लेख नहीं किया गया है।

पुत्र जन्म पर प्राय सर्वत्र थाली बजाई जाती है।[3] और पुत्री के जन्म पर सूप बजाय [illegible] है।[4] [illegible] के अतिरिक्त 'घूघरी [illegible]
देती है कि वह पूरे नगर में घूघरी बांटे किन्तु ननद का न द—

नाई थाने बेग बुलाय, म्हारा नगर बटावो घूघरी जी,
म्हारा राज ।
बांटो नाई के उरलै-परलै वास, मत देज्यो ननद घर घूघरी ।[5]

गुजराती गीत में सबको घूघरी बांटने तथा बाद में भाई द्वारा बहिन से जाकर यह कहने का उल्लेख मिलता है कि तुम्हारी भाभी घूघरी वापिस मांगती है—

---

1. राजस्थानी के लोकगीत—सं० ग्रंथ, पृ० 242
2. गु० ला० सा० मा० (भाग 1), पृ० 145
3. म्हारे बीरे जी रे बेटो आयो, सोनै री थाल बजायो ।
—राजस्थान के लोकगीत—सं० ग्रंथ, पृ० 243
4. हे थारे गोपी ओ जिलम्यो आधो रात ओ, हे थारे सूप बज्यो परभात ।
—राजस्थान के लोकगीत—सं० ग्रंथ, पृ० 245
5. संकलित

रामभाई ओ घोड़ीला पलाणीआ,
जई उभा वेनी ने दरबार,
तारी भाभी मागे घूघरी ।[1]

गुजराती गीतो मे जन्म संस्कार के अन्य लोकाचारो से संबंधित गीत उपलब्ध नही हो सके है किन्तु राजस्थानी गीतो मे अन्य प्रथाओं का भी उल्लेख है। पदचिह्न-प्रेषण की प्रथा राजस्थान मे प्रचलित है, जिसको 'पगल्या-भेजना' भी कहा जाता है। नाई अथवा ढोली के साथ नवजात-शिशु के पैर कागज पर हल्दी या कुंकुम से अंकित कर स्वस्तिक चिह्न आदि बनाकर सभी सम्बन्धियो के यहा भेजे जाते हैं। एक गीत मे जच्चा रानी अपने माता-पिता के यहा 'पगल्या' भेजने का अनुरोध करती है—

सुआ राणी जायो ए पूत,
पगल्या लख मेलो म्हारा बाप के ।[2]

जब तक स्त्री पुत्र या पुत्री को जन्म नही देती है, वह पीला ओढना नही ओढती किन्तु जब वह सतान को जन्म देती है तभी उसको पीला ओढ़ना ओढाया जाता है।[3] दाई को बुलाने और प्रसव-पीड़ा आदि का भी राजस्थानी गीतो मे उल्लेख मिलता है।[4] सतानोत्पत्ति सातवे दिन सूर्य पूजा की जाती है, इस अवसर पर सूर्य पूजा सम्बन्धी गीत गाए जाते हैं।[5] प्रसव का अतिम लोकाचार 'जलवा पूजन' है। 'जलवा पूजन' के दिन जल पूजा के लिए जच्चा जलाशय या कुए तक एक कलश लेकर जाती है और साथ मे स्त्रिया गीत गाती हुई चलती हैं।[6]

गुजराती गीतो मे जलवा-पूजन का तो उल्लेख नही है किन्तु वधू का पीहर से घूघरू बधे बैला वाली गाड़ी मे बैठकर आने और मार्ग मे दूध भरे जलाशय मे पुत्र को नहलाने का उल्लेख है। साथ ही थाल भरे चमचमाते मोतियो द्वारा बधाई देकर आने का वर्णन भी एक गीत मे अवश्य मिलता है—

सोलामा खारेक टोपरांचवरावती आवे
थाल भर्या शग मोतीए वधावती आवे ।[7]

---

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 1) पृ० 218
2. सकलित
3 है पीलो तो ओढ़ मे म्हारी जच्चा राणी घमसम जे चालें छै मधरी सी चाल।
—राजस्थान के लोकगीत—स० राम, पृ० 247
4. अलबली कमर म पीस चालै,
दाई भाई ने बेग बुलाय जी ओ राज।
—राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 54
5 देखिए राजस्थान लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 9 व 10
6 कौन विणायो झालरो, कौन लगाई मज नीव,
पूज सुदरसण कब्जा झालरो। —वही, पृ० 10-11
7 रढियाली रात (भाग 2), पृ० 27

गुजराती गीत 'भरथरी' मे बारह वर्ष के पश्चात् पुत्र जन्म होने पर ढोल एव शहनाई बजाने का उल्लेख है—

> बार-बार वरसे रे राणी ने कुवर जनमिया,
> वागे-वागे ढोल ने शरणायु रे,
> जोशीडा तेडावो राज आपणा घी'रना ।

वहा पुत्र जन्म के पश्चात् जोशी को बुलाया गया और उससे पुत्र का भाग्य एव नाम भी पूछा गया —

> जो-जो मारा बालुडाना जोश रे,
> जैवु रे होय तेवु ब्राह्मण कही देजो ।[1]

राजस्थान मे 'छठी' के दिन रात्रि जागरण किया जाता है और यह मान्यता है कि जन्म के छठे दिन बैमाता (विधाता) बच्चे का भाग्य लिखने आती है ।[2] गुजराती गीत मे भी जोशी कहता है कि छठी के लेख फिर नही सक्ते हैं—

> छठ्ठी ना लख्या रे जे तो नही फरे ।

जन्म सस्कार के सम्बन्धित और भी लोकाचार हैं जैस बुआ द्वारा 'दृढ' (वस्त्रा-भूषण) लाने की प्रथा आदि किन्तु इनके गीत उपलब्ध नही होन स उन लोकाचारो का विवेचन नही किया जा रहा है ।

प्रसव-पीडा, दाई एव पीले की प्रथाओ का उल्लेख गुजराती गीतो मे उपलब्ध नही हो सका है ।

(घ) हालरा—जन्मोत्सव पर जो गीत गाए जाते हैं उन्हे हालरा कहा जाता है । गुजरात मे इन हालरो को 'हालरडा' कहा जाना है । बच्चे को पालन मे सुलाते समय या खेलाने के समय ये हालरा गीत गाए जाते हैं । इन गीतो मे कही-कही बध्या स्त्री की वेदना का भी वर्णन होता है । इस सम्बन्ध मे सम्पादक त्रय ने लिखा है—'बाझ नारी की करुणा वेदना के भावपूर्वक चित्र इन गीतो मे अकित हुए हैं ।'[3] श्री झवेर चन्द मेघाणी ने इन लोरी गीतों पर विचार करते हुए लिखा है कि हमारे हालरो मे अमगल की सूचना का अभाव है ।[4] श्री जेठा लाल त्रिवेदी ने लिखा है—'वात्सल्य का झरना सनातन है । स्वरूप बदल सकता है, परन्तु उनका विलीन होना सम्भव नहीं । मातृ शक्ति इनकी चिरगायक और सृजक है ।'[5] अत माता के मुख से हालरे भी चिरकाल से निसृत हो रहे हैं । राजस्थान और गुजरात मे जो हालरे गाए जाते हैं, उनका विवेचन यहा किया जा रहा है ।

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 39
2. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 61
3. राजस्थान के लोकगीत—स० त्रय, पृ० 233
4. लोक साहित्य नु समालोचन, पृ० 5
5. स्त्री जीवन—नवम्बर, 1970, पृ 95

सर्व प्रथम एक राजस्थानी लोरी प्रस्तुत की जा रही है जिसमे गीगे (बालक) को लोरी गीत सुनाती हुई माता कहती है कि तेरी गोरी गाय के बच्चा हुआ है। बालक के दादा को शीघ्र बुलाओ वह बालक के हित मे यत्न करे और दादी को शीघ्र बुलाओ जिससे वह छत पर चढ कर थाल बजावे, यथा—

गीगे री दादी ने वेग बुलावो,
डागलिये चढ सोने थाळ बजावे ।[1]

गुजराती भाई (बालक) भी उगते सूर्य के साथ गाय का दूध पीता है, यथा—

हालो रे भाई हालो, भाई ने हालो रे बहु वालो ।
भाई ने गोरीडा रो गाजो, भाई ने रमवा तेडी जाजो ।
गोरी गायना दूध, भाई पीशे उगमते सूर, हा-हा हालो ।[2]

स्वर्गीय श्रीयुत झवेरचद मेघाणी ने लिखा है कि "इन हालरो मे बालक का सौन्दर्य-वर्णन, बालक की खुशामद और इसका तुतलापन भी गाया जाता है ।"[3] उक्त दोनो उदाहरणो म मा बालक को चुप करने के लिए और उसको सुलाने के लिए उसकी खुशामद करती है ।

इन हालरो मे बालक के पालने का भव्य चित्र भी देखा जा सकता है, एक राजस्थानी लोरी मे मा कहती है कि हे बालक ! झूलो, तुम्हारा पालना सोने का है, उसमे रेशम की डोर है और आते-जाते विभिन्न सबधी झोटा (झूला) देते हैं—

हूल रे नान्या हुल रे, दूध पताशा पीरे ।
थारो सोना रो पालणियो,
रेशम री गज डोर लाल जी । हूल०[4]

गुजराती पालने मे हीर की डोर बधी है—

भाई ने पारणे हीर नी दोरी,
हींचको नाखे मीना बेन गोरी ।[5]

मामा द्वारा बालक का लाड-प्यार एव वस्त्र लाने का उल्लेख भी इन लोकगीतो मे देखा जा सकता है । पहले एक राजस्थानी हालरा देखिए—

नानी मामी लाड लडाय, दही बाटियो खाय आसी ।
नाना मामा लाड लडाय, झुगला-टोपी पैर आसी ।[6]

---

1. साहित्य सदेश—वार्षिक फाइल, सन् 1959, पृ० 51
2. स्त्री जीवन—नवम्बर, 1970, पृ० 91
3. लोक साहित्य नु समालोचन, पृ० 209
4. सकलित
5. स्त्री जीवन—नवम्बर, 1970, पृ० 91
6. सकलित

गुजराती गीत मे मामा वस्त्र (झुगला-टोपी) लाते हैं, परन्तु कहा गया है कि इ बालक के लिए क्या नई बात है, वह तो दिन-रात पहनता ही है—

माता रे मामा आवे, भाई मारे झमला टोपियो लावे।
झमले-टोपिये नवली मात, भाई मारो पहेरे दाडो ने रात।[1]

दोनो प्रान्तो मे गाए जाने वाले हालरा गीतो मे समानभाव-धारा दिखाई देती है। मातृ-हृदय की असख्य उर्मियो की अभिव्यक्ति इन हालरो मे देखी जा सकती है। "माता बालक के अधिक सो जाने पर और न सोने पर भी चितत हो जाती है और 'लूण मिर्च' का टोटका करती है।"[2] इन हालरा गीतों मे इस प्रकार विविध विषय समाविष्ट हैं।

(ड) मुण्डन एव कर्ण-छेदन-सस्कार—मुण्डन (चूडाकर्म या चूडाकरण) सस्कार शास्त्रसम्मत सस्कार हैं, किन्तु राजस्थान मे यह लौकिक विधि से होता है, जिसको 'जडूला' उतारता कहते हैं। बालक के जन्म के समय ही भैरू जी, माता जी, रामदेवजी या जूझार जी के नाम का 'जडूला' बोल दिया जाता है और उसके सिर के बाल तीसरे या पाचवें वर्ष मे उस देवी-देवता के मन्दिर पर जाकर उतारे जाते हैं। इस अवसर पर इन देवी-देवताओ से सम्बन्धित गीत गाए जाते हैं और सामिष या निरामिष भोज भी देवता की पूजा के निमित्त दिया जाता है। इस समय सभी निकट सबधियो को भी आमत्रित किया जाता है, जो बालक के लिए उपहार स्वरूप विभिन्न वस्तुए, वस्त्राभूषण आदि लाते हैं।

मुण्डन के अवसर पर प्राय. वे ही गीत गाए जाते हैं, जो लौकिक देवी-देवनाओ से सबद्ध होते हैं।

कर्ण छेदन सस्कार के सबध मे डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है कि "राजस्थान मे इसका विशेष महत्व नही है। किसी भी शुभ तिथि को मुहूर्त निकालकर बालक के कान छिदवा लिये जाते हैं और छेदने वाले को नेग देकर मिठाई बांटते हैं एव स्त्रिया गीत गाकर हर्ष मनाती हैं।"[3] वास्तव मे कर्ण-छेदन लोक जीवन का कोई विशेष महत्त्वपूर्ण सस्कार नही है। यो डॉ० अग्रवाल ने एक गीत भी उद्धृत किया है।[4] गुजराती गीतो मे इस प्रकार का कोई गीत उपलब्ध नही हो सका है।

(च) यज्ञोपवीत के गीत—यज्ञोपवीत सस्कार द्विजो (ब्राह्मणो, क्षत्रियो और वैश्यो) का सस्कार है किन्तु वह प्राय सर्वत्र ही ब्राह्मण समाज मे मिलता है। क्षत्रिय एव वैश्य समाज मे इसका प्रचलन कम है। यज्ञोपवीत सस्कार को ही उपनयन सस्कार कहा

---

1. स्त्री जीवन—नवम्बर, 1970, पृ० 91
2. वही ग्रथ, पृ० 293, 294
3. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 63
4. मथुरा नगरी जाना बाबा पीला सा सोना लायना
पीला-सा सोना, उजले-से मोती, ये मामा जी के सोहने
रुप धाने की बाली बनवाना, मामा के कान छिदादये।

जाता है। प्राचीन काल में यज्ञोपवीत के पश्चात् बालक को गुरु के आश्रम में भेज दिया जाता था। यज्ञोपवीत सूत्र उसको वेदाध्ययन पूर्ण करने की प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाने के लिए दिया जाता था, अत कालान्तर में यह ब्राह्मणों तक ही सीमित रह गया क्योंकि अन्य लोगों को या तो वेदाध्ययन का अवसर ही नहीं मिलता था या कुछ को दिया नहीं जाता था। यज्ञोपवीत से ही जनेऊ शब्द बना है। राजस्थान में इसके संस्कार को 'जनेऊ' पहनाना कहते हैं। यहां एक गीत उद्धृत किया जा रहा है—

दादे जी नानणवायो, माता बाई कातोनानो सूत जी बना
पैरो म्हारो कवर कन्हैया जनेऊ पूरा ब्राह्मण होज्यो जी बना
पंडित होकर आयोजी बना।[1]

गुजराती का कोई लोकगीत इस अवसर का उपलब्ध नहीं हो सका है। चूंकि यह एक जातीय संस्कार मात्र रह गया है, अत सामान्य जनता में इसके गीत भी प्रचलित नहीं है।

(2) विवाह के गीत

विवाह संस्कार बड़े हर्ष एवं उत्साह का विषय होता है। इस अवसर पर अनेक लोकाचार होते हैं और प्रत्येक से संबंधित अनेक गीत भी प्रचलित है। यहां विवाह से सम्बन्धित प्रमुख लोकाचार एवं उनसे सम्बन्धित गीतों का विवेचन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा रहा है।

(क) विवाहारम्भ के सामान्य गीत

(1) वर-चयन एवं लगन लिखवाने के गीत—वर-वधू के चयन के साथ ही विवाह के गीतों का शुभारम्भ होता है। राजस्थानी गुजराती गीतों में कन्याओं के द्वारा अपने बाबा एवं दादा से योग्य वर चयन की प्रार्थना समान रूप से मिलती है।[2] वर-चयन के पश्चात् वधू पक्ष की ओर से लगन लिखवाई जाती है और विवाह के सात से इक्कीस दिन पूर्व यह लगन पत्रिका वर के घर भेजी जाती है। यह लगन पत्रिका जोशी जी लिखते हैं। विभिन्न सम्बन्धियों को बुलाने के लिए पीले चावल नाई के हाथ भेजे जाते हैं और नाई को उसका नेग दिया जाता है, यह उल्लेख निम्न राजस्थानी गीत में देखिए—

---

1. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 65
2. राजस्थानी गीत—कालो मत हेरो बाबा जी कुल ने लजावै
गोरो मत हेरो बादा जी अग पसीजै
ऐसो वर हेरो कासी रो वासी
बाई रे मन भासी हसतो घड़ आसी

गुजराती गीत—एक कालो ते वर नो जो जो रे दादा
कालो ते कटम्ब लजा मश।
एकवडय र पातलीयो ने मुख शामलीयो
ते भारी मैयर परवाणीयो।

—राजस्थान के लोकगीत—स० सप, पृ० 13

पीळा-चावळ होय रह्या, म्हारे डावडा रो महघो छै व्याव।
जोसी रे पतडो देखिये, छारडी रे लगन लिखाय।[1]

गुजराती लगनगीत मे भी जोशी से पाच पुडे (कुकु के) देकर लगन लिखवाई जाती है और कहा जाता है कि 'वासुदेवनद' का विवाह है, जो पूर्णिमा के चन्द्रमा सा सुन्दर है, यथा—

पाच पडा मे तो जोशी पैर मोकलाया रे।
मैं (भाई) रे जोशीडा। वीरा जोश जोई आल।
पैणे (परणे) छ वासुदेव नद, पूनम केरो चद।[2]

(2) गणेश पूजा— श्री झवेरचद मेघाणी ने गणेश पूजा के गीत से पहले लिखा है—"हिन्दू देवमडल मे गणपति कल्याण के अधिष्ठाता हैं, भोले एव भद्रक हैं। पेट का घेरा बडा, आहार अधिक एव सूडवाला हाथी का सिर होने के कारण पहले कृष्ण जी की जान (बरात) मे इन्हें बदशकल समझ कर साथ नही लिया गया। मार्ग मे अधड और बरसात-तूफान बरात के लिए बाधक हुए, तब गणपति को साथ लेना पडा। तब से हमेशा प्रत्येक शुभ क्रिया का आरभ गणेश की स्थापना से होता है।[3] राजस्थान के लोकगीत के सम्पादकों ने विनायक गीत के पूर्व लिखा है—'प्रत्येक मगल कार्य के आरभ मे विनायक (गणपति) का आह्वान और पूजन किया जाता है।"[4]

एक राजस्थानी लोकगीत मे कहा गया है कि सकल सिद्धि और मगल का देने वाला विनायक रणथभौर गढ़ से आया है। हे विनायक! हमारे इस मगल-कार्य को चिन्ता-रहित कर दो, यथा—

गढ़ रणतभवर सू आवो विनायक,
करोनी अणचीती विडदडी।[5]

गुजराती गीत मे विवाह के मागलिक पर्व पर सर्वप्रथम गणेश जी की स्थापना करने की बात कही जा रही है—

परथम गणेश बेसारो रे
मारा गणेश दुदाळा।

गणेश जी से सबधित ये गीत लम्बे हैं, यही नहीं और भी अनेक लोकगीत हैं जिनमे गणेश जी से निर्विघ्न विवाह सम्पादित करने, रिद्धि-सिद्धि देने की प्रार्थना की गयी है।

1. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 68
2. पू० मो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 256
3. चूदडी (भाग 1), पृ० 1 से 3
4. राजस्थान के लोकगीत—स० त्रय, पृ० 129
5. वही

(3) **बनड़ा बनड़ी के गीत**—जब वर-वधू का विवाह निश्चित हो जाता है और 'हस्ताधान' हो जाता है अथवा उनके हाथ मे काकड-डोरे बाध दिए जाते हैं तब से प्रतिदिन वर के घर बनडा और वधू के घर बनडी गीत गाए जाते हैं। इन गीतो मे वर-वधू के रूप का वर्णन दोनो के हृदय की मिलन उत्कठा[1], प्रतीक्षा आदि विषयो का वर्णन रहता है।

सर्वप्रथम राजस्थानी लोकगीतो मे बनडा (वर) का रूप वर्णन देखिए—

बनडा ने देखो म्हारी सेहया ए।
बनडो तो म्हारो असल उनाळा रो आम्बो ए।
बनो तो म्हारो खारी वालो खरबूजो ए।—सकलित

सहेलियो से वधू कहती है कि बनडा को देखो। यह तो असल ग्रीष्म ऋतु का आम है, यह तो खारी (नदी) का खरबूजा है। एक गुजराती गीत मे वर को अषाढ का मेघ, चम्पा का छोड आदि उपमाए दी गई है।[2]

वधू के रूप की भी प्रशसा की जाती है और इन गीतो को बनडी गीत कहा जाता है। *एक राजस्थानी गीत म कहा गया है कि लडवण (लाडो—वधू) तो छोटी-मोटी* है किन्तु उसके केश लम्बे-लम्बे है, वह अपने पिता के गवाक्ष मे खेलती है और वह इतनी सुन्दर है कि देखने वाले कहते हैं कि क्या तुम्हे सुनार ने गढकर बनाया है अथवा साचे मे से निकाला गया है ? यथा—

छोटी-मोटी लडवण रे लाम्बा-लाम्बा केश
खेले बाबो सा रे गोखडा
काई थाने गढिया ए सुनार
काई थाने साचे ए ढालिया। —सकलित

इसी प्रकार गुजराती गीत मे *कन्या को चचल, चपला, चम्पा की पखुडी कहा गया है—*

कन्या झबूकण बीजळी रे।
× × ×
कन्या चपासर पाखडी रे।[3]

इन बनडा बनडी गीतो का दोनो प्रान्तो मे बाहुल्य है। राजस्थान मे ये 'बनडा-बनडी' कहे जाते हैं जब कि गुजरात मे ये लग्न-गीतो के अन्तर्गत गाए जाते है।

(4) **बनोला के गीत**—'लगन' निकल जाने के बाद वर-वधू के निकट सबधी उनको अपने-अपने घर बुलाकर भोजन कराते हैं और उन्हे नकद-रुपया, मिठाई,

---

1. वर-वधू की दर्शन की तीव्र-उत्कठा शीर्षक देखिए।
2. मामा ! वर जो जो अषाढीलो मेघ रे
वीरा ! वर जो जो काई चापलिया रो छोड। —चूदडी (भाग 1) पृ० 13
3. चूदडी (भाग 1), पृ 13

वस्त्राभूषण आदि देते हैं। इसी प्रथा को बनोला कहते हैं।[1] राजस्थान म ही नहीं गुजरात म भी यह प्रथा प्रचलित है। एक गुजराती गीत म इस अवसर पर वर को चूरमा खिलाने का उल्लेख है।[2]

(5) पीठी (उबटन) सम्बन्धी गीत—तेल चढाने के दूसरे दिन से ही वर-वधू को पीठी' की जाती है। मूग या गेहू आदि के आटे म पीसी हुई हल्दी मिलाई जाती है और तेल व पानी मिलाकर इसको वर वधू के शरीर पर मला जाता है। इससे वर-वधू का शारीरिक सौन्दर्य निखरता है। उबटन के समय राजस्थान म निम्न गीत गाया जाता है—

आओ म्हारी दादा निरखलो ओ म्हारी माय निरखल्यो
निरख्या सुख होय अब लाडो बैठा ऊगठणो।[3]

गेहू चने के आटे मे चमेली का तेल मिलाकर उबटन तैयार किया गया है तब वर उबटन करने बैठा है। मेरी दादियां आओ देख लो तुम्हे देखने स सुख होगा।

गुजराती गीत म उदड एव मूग पीस कर पीठी बनाई गई है। पित्राणी पीठी करेगी और भाभी पैर धोएगी और वर की बहन मुह दखेगी, यथा—

अडद दळन्ती ते मग दलू भगे ते होशे पीठी
पीठी-पीठी करशे रे पित्राई पग धोश रे भोजाई
मुखडा निहाळे रे मानी जाई।[4]

उबटन के लिए हल्दी तेल आदि स सबधित अनको गीत दोना प्रान्तो के लोक गीतो म उपलब्ध हैं।

(6) तेल चढ़ाना—विवाह के दस पन्द्रह दिन पूर्व लगन लिखकर वर के घर भजी जाती है। उसके पश्चात् गणेश स्थापना के साथ वर-वधू को तेल चढ़ाया जाता है। वर या वधू की पाच सौभाग्यवती भाभियां पाच या सात बार सिर स पाव तक तेल से भरे हाथ घुमाती हैं। इस लोकाचार को तेल चढाना' कहा जाता है। तेल चढ़ाते समय निम्न गीत राजस्थानी महिलाए गाती हैं—

सुण सुण रे जोधाणे रा तेली,
ओ घाणी काठो केसर ने किस्तुरी।
ओ माय पालो भरवो न मखतुली हो,
ओ तेल बना रे अग चढ़ सी ओ।[5]

---

1 (क) राजस्थान क लोकगीत—डॉ० स्वणलता अग्रवाल, पृ० 69
(ख) वही (भाग 2), गीत स० 69 एव 71

2 वर पारो लगनीयो जमवा ने आयो रे,
परो उटा तारे कुटा गालो चूरमो रे, भूखो बनोलो रे।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 181

3 राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 59

4 चूदड़ी (भाग 1) पृ० 35

5 राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 58 59

इस गीत मे जोधपुर के तेली को केसर-कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ डालकर तेल निकालकर लाने का आदेश दिया गया है क्योंकि यह तेल 'बन्ना' के अंग पर चढ़ाया जाएगा। इसी प्रकार गुजराती नारी ने भी सुगन्धित वनस्पतियों को तेल में मिलाने का आदेश दिया है। क्योंकि यह तेल वर राजा के सिर पर सुशोभित होगा, यथा—

> माहीं पीलये डमरो ने माही पील्यो मखक्द
> ओह तेल वर राजा ने शिरे सोहे रे।[1]

राजस्थान एव गुजरात मे वर-वधू के सिर पर तेल चढ़ाने की प्रथा प्रचलित है।

(7) रात्रि-जागरण के गीत—बरात के जाने के एक दिन पूर्व की रात्रि को रात्रि-जागरण किया जाता है। रात्रि-जागरण का मुख्य उद्देश्य देवी-देवताओं को गीतों के माध्यम से स्मरण करना होता है, जिससे कि विवाह निर्विघ्न पूर्ण हो। इसके साथ दूसरा उद्देश्य यह भी हो सकता है कि विवाह के अवसर पर इतना उल्लास होता है कि रात्रि-जागरण करके व्यतीत की जाती है। जितने भी लौकिक देवता होते हैं उनके गीत गाए जाते हैं और पौराणिक देवताओं म शिव-पार्वती के विवाह के गीत गाए जाते हैं। दोनों प्रान्तों मे समान रूप से रात्रि जागरण भी होता है और देवी-देवताओं के गीत भी गाए जाते हैं। इन गीतों का विवेचन देवी-देवताओं से सम्बन्धित गीतों शीर्षक के अन्तर्गत किया जा रहा है।[2]

(8) भात या मायेरा---सन्तान के विवाह के अवसर पर माता अपने पीहर वालों को आमन्त्रित करती है। वे 'भात' या मायेरा लेकर बहिन के यहा जाते हैं, जिसमें सामर्थ्यानुसार वस्त्राभूषण बहिन को भेंट किये जाते हैं, डॉ॰ स्वर्णलता अग्रवाल ने इस सम्बन्ध म लिखा—विवाह के पूर्व वधू की माता स्त्रियों को लेकर अपने पीहर वालों को निमन्त्रण देने जाती है, उस समय वह सिर पर कठौती म गेहूँ और गुड की भेली रख कर ले जाती है। वहा उसका भाई अपने हाथ से उसकी आरती उतारता है, उस समय भात न्योतने का गीत अत्यन्त स्नेहपूर्ण शब्दों म गाया जाता है—

---

1. चूंदड़ी (भाग 1), पृ॰ 35
2. देखिए—(क) राजस्थानी लोकगीत (भाग 6), स॰ मोहन लाल व्यास शास्त्री, पृ॰ 1 से 42
   (ख) राजस्थानी लोकगीत—डॉ॰ स्वर्णलता अग्रवाल पृ॰ 90
   (ग) राजस्थानी लोकगीत—डॉ॰ दाधीच, पृ॰ 36 से 42
   (घ) राजस्थान के लोकगीत—स॰ सूर्य, गीत स॰ 2 से 9

   देखिए गुजराती गीत सग्रह—
   (क) रढियाली रात (भाग 2), पृ0 2, 14, 30 और 177
   (ख) रढियाली रात (भाग 3), पृ॰ 14 और 31
   (ग) गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 4), पृ॰ 38-39
   (घ) गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 7), पृ॰ 3 व 5

पान सुपारी पान रो बिडलो मैं तने रे वीरा नूतण आई।
राजन साथीडा वारन भाई नूतण लागी।[1]

इसी प्रकार गुजराती बहिन भी अपने भाई को भात लेकर आने का अनुरोध करती हुई कहती है कि सामने दरिया के किनारे 'साढो' (ऊट) चर रहा है, हे मेरी मा के जाये! तुम माहेरा लेकर आओ। मैं तुमसे कुछ नही मागती हू, यथा—

सामी दरियानी तेडे साढो चरे,
मारा जाय सामेरे आय।
हु ये नथी काई मागती।[2]

यों बहिन भाई से कहती है कि मैं तुमसे कुछ नही मागती हू परन्तु इतना कहने के बाद वह अपने ससुर-सास, जेठ-जेठानी आदि सभी के लिए यथा योग्य वस्त्राभूषण की मांग कर लेती है।

विवाह के दिन बहिन अपने भाई की आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा करती है, वह कभी गवाक्ष पर चढकर और कभी सरोवर की पाल पर उतर-चढकर भाई की प्रतीक्षा करती है। राजस्थानी गीत मे बहिन की आतुरता देखने योग्य है—

ऊभी रे वीरा छाजइये री छाह,
सरवरिया री, वीरा, ऊची-नीची रे पाळ
अेक चढू दूजी ऊतरू जे।

इस प्रतीक्षा का अन्त हुआ, भाई भात लेकर आ गया किन्तु बहिन ने उससे विलब से आने का स्पष्टीकरण मागा। भाई ने कहा कि मैं भात क्रय करने गया वहा पर विलम्ब हो गई, यथा—

था कठे, रे वीरा, लाई छँ वार,
गया छा, ए बाई मारतिये री हाट
था ने भारत बाओ भोलवा जे।[3]

गुजराती बहिन भी अपने प्रिय भाई की इसी तरह प्रतीक्षा कर रही है, उसका भाई आ जाता है और बहिन से कहता है कि मुझे वस्त्राभूपण क्रय करने मे विलम्ब हो गया, भात का समय तो अब होगा।[4]

बहिन के लिए भाई चूनरी अवश्य लाता है, यह परम्परा है। राजस्थानी भाई अपनी बहिन के लिए हीरो से जडी चूनरी लेकर आया। बहिन के लिए अधिक देने वाले भाई (घणदेवा, दातार) की यह चूनडी एक समस्या बन गई, यदि वह इसको ओढे तो

1 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 72
2 गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 256
3 राजस्थान के लोकगीत—स० दाय, पृ० 218
4 वेनडी चूदडी ओ वसावर्ता लागी वार रे।
मामेरा वेना हम थाश। —गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 260

इसके हीरे झड जाए और न ओढने पर उसका हृदय इस अनुपम चूनडी के लिए तरसता है, यथा—

आयो छँ मा को जायो वीर
हीरा जड ल्यायो चूनडी
ओढू तो हीरा, रे वीरा, झड पडै
मेलू तो तरसै बाई रो जीव
ओढायो घणदेवा चूनडी ।[1]

गुजराती भाई अपनी बहिन के लिए धोतळ (शहर) 'चूदडी' लेने जाता है, यथा—

बेनी ! धोतळ ग्यो तो चूदडी ओर वा रे ।[2]

इस प्रकार दोनों प्रान्तों की परम्पराओं एव गीतों में अद्‌भुत साम्य है ।

(9) रोड़ी (घूरा) पूजन—जिस दिन वर-वधू का पाणिग्रहण सस्कार होने वाला होता है, उस दिन वर वधू दोनों अपने-अपने घर रोडी-पूजन करते हैं । बरात के चलने से पूर्व वह अपने घर पर रोडी-पूजन करता है । डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—"यहा विवाह मे रोडी-पूजन भी होता है जिसका आशय है कि जिस प्रकार रोडी मे कूडा-कचरा सब कुछ समाने की शक्ति है उसी प्रकार गृहस्थ मे सब कुछ सहन करने की शक्ति आवे और समृद्धि से परिपूर्ण बने ।"[3] राजस्थान मे ही नही गुजरात मे भी 'उरकडी' (रोडी) पूजन किया जाता है । पहले यहा राजस्थानी रोडी पूजने का गीत प्रस्तुत किया जा रहा है—

अणी रोडी पूजता म्हाने लादो मोतीड़ा रो हार,
अणी रोडी नूतता म्हाने लादो जड़ियो धन्न ग ।
घन सू व्यापार चला दियो मे तो बण गये मालामाल रे ।[4]

श्री झवेरचन्द मेघाणी ने रोडी पूजने से सम्बन्धित निम्न गुजराती गीत दिया है—

हा हा रे पातलिया पग चाप वा आव्या ।
हा हा रे हमली मौतैया लाडु जमवा ने आव्या ।[5]

यद्यपि दोनों गीतों में कोई साम्य नहीं है, किन्तु दोनों ही रोड़ी-पूजन सम्बन्धित हैं । इनमे यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों प्रान्तों मे विवाह के अवसर पर रोडी-पूजन

1. राजस्थान के लोकगीत—स० लय, पृ० 218
2. चूदडी (भाग 1), पृ० 60
3. राजस्थानी लोकगीत—पृ० 74
4. राजस्थानी लोकगीत, पृ० 74
5. चूदडी (भाग 1), पृ० 112

किया जाता है।

(10) बिहाणा (प्रभातियु) एवं साझी—विवाह के घर में प्रातःकाल प्रतिदिन गीत गाए जाते हैं, इन गीतों में प्रभात काल में सभी घर के सदस्यों एवं देवताओं के जगने का उल्लेख रहता है। प्रभात काल में गाये जाने वाले इन गीतों को राजस्थान में 'बिहाणा' और गुजरात में 'प्रभातियु' कहा जाता है।

पहले एक राजस्थानी बिहाणा देखिए जिसमें विनायक-प्रार्थना है कि रिद्धि-सिद्धि दीजिए। गीत इस प्रकार है—

घड़ी ये घड़ी विनायक बाबो बणै बलळावो जी,
रिध-सिध देवो नार, बिहाणा जी राजा राम के।[1]

इसी प्रकार गुजराती गीत में भी प्रभात होने पर श्रीकृष्ण जी को जागने की प्रार्थना की जा रही है—

सूरज उग्यो रे केवडियानी फणशे के वाणला भले वायां रे।
सूता जागो रे वासुदेव ना नन्द के वाणला भले वाया रे।[2]

साझी गीतों को गुजराती में 'साजी' कहा जाता है। पहले एक राजस्थानी 'साझी' प्रस्तुत है, जिसमें सध्या से प्रश्न किया जाता है कि तुम रात में किस के घर रही? वह कहती है कि मैं राम के घर रही, जिनकी सीता स्त्री है। आगे विनायक और महादेव के घर रहने का उल्लेख है। जिनके घर रही उनके यहां सुन्दर बिछौने पर बैठाया गया और उनके यहां की स्त्रियों ने झुक-झुककर मेरे पावों का स्पर्श किया, यथा—

मैं साझ्या बेऊ येक साझली, थू कितर वसे थी रात?
मैं रातवसी थी राम घरां, जाके सीता सरसी नार।
मैं रात वसी विनायक घरा, जाके रिध-सिध सरसी नार।[3]

गुजराती गीत में भाई घोड़ी पर चढ़कर बहिन को लेने जाता है क्योंकि विवाह निकट आ गया। वह बहिन से चलने को तैयार होने को कहता है। बहिन कहती है कि अकेली कैसे जाऊं? मेरे ईश्वर सरीसे पति हैं। भाई कहता कि तुम्हारे ईश्वर के चढ़ने के लिए घोड़े और मेरी बहिन के लिए रथ वाली गाड़ी तैयार है, यथा—

तारा ईश्वर ने चढ़वा घोडला,
मारी बेनडने माफाली वेल्य, वीवा आव्या ढूकडा।[4]

---

1. मरुभारती—जुलाई, 1966, पृ० 45
2 चूंदड़ी (भाग 1), पृ० 43-44
3. मरुभारती—जुलाई 1666, पृ० 45 उद्धृत पंक्तियों के बाद घर के सभी सदस्यों के भी नाम लिए जाते हैं।
4 (क) चूंदड़ी (भाग 1), पृ० 28
(ख) देखिए—वही, पृ० 12

प्रभाती गीतो मे सभी देवी-देवताओ के नाम लेने के पश्चात् परिवार के सदस्य के नाम लिये जाते है।

(ख) वर पक्ष के गीत

(1) **नारियल आने पर गाया जाने वाला गीत**—लग्न पत्रिका जब वधू के घर से वर के घर भेजी जाती है तो उसके साथ नारियल, पान-सुपारी आदि भी भेजे जाते हैं। यह नारियल जब वर के घर पहुचता है तो स्त्रिया नारियल के स्वागतार्थ निम्न गीत गाती हैं—

हसकर झेलू बीडळा, मुलक्त झेलू हरिया नारेल।
थाल्या, म झेलू बीडला, झोल्या झेलू झलता नारेल्या।[1]

हसकर बीडा लेने और मुस्कराकर नारियल लेने के साथ ही थाली मे बीडा और झोली मे नारियल लेने की बात कही जाती है। गुजराती गीत मे भी समान शैली म वही प्रश्न किए गये है जो राजस्थानी गीत मे किए गए थे। उत्तर मे अन्तर केवल इतना ही है कि घोघा शहर मे बीडा आएगा और बादशाही नारियल आएगा। मुस्कराकर नारियल लेन के स्थान पर वहा झुक-झुककर नारियल लेने का उल्लेख है, यथा—

हसी हसी लेणु नाळियेर, वारी जाऊ राज।
जी हो लळी-लळी लेशु, नाळियेर, वारी जाऊ राज।[2]

लग्न पत्रिका के साथ बीडा (पान) व नारियल भेजने की प्रथा दोनो प्रान्तो म प्रचलित है साथ ही गीत म भी अद्भुत भाव साम्य है।

(क) **घुडचढी अथवा वर के घोडी चढ़ने के गीत**—जब वर अपने घर से विवाह के लिए रवाना होता है तो राजस्थान और गुजरात म उसको घोडी पर चढाया जाता है। उस समय वर-घोडी के गीत गाए जाते हैं। राजस्थान मे वर को घोडे पर बैठाना अप-*शकुन माना जाता है क्योकि यह अधविश्वास प्रचलित है कि यदि वर घोडे पर बैठा तो* उसके दो पुत्रिया जन्म लेंगी। अत वर को सदैव घोडी पर ही बैठाया जाता है किन्तु गुजरात म वर के लिए घोडे का ही उपयोग किया जाता है।

राजस्थान का एक घोडी चढ़ने का गीत देखिए—

इदरियो घररायो, ए घोडी, मयरी मधरी चाल।
चौमासो लग गयो, ए मगेजण हळवा हलवा हाल।[3]

इसके अतिरिक्त भी राजस्थान मे घोडी चढन क समय के अन्य गीत भी प्रचलित है।[4] गुजरात का वर घोडा सम्बन्धी गीत भी देखिए जिसम वर को कहा जाता है कि हे

1 सकलित
2 स्त्री जीवन—जनवरी, 1970, पृ० 223 224
3 राजस्थान के लोकगीत—स० त्रय पृ० 152
4. वही—देखिए गीत सख्या 66, 67 व 68

केसरिया ! तुम वर घोड़े पर चढ़ो, यथा—

केसरिया ! चडो वर घोड़े,
चढो वर घोड़े ने लाल अबोडे-केसरीआ० ।[1]

गुजरात में भी वर-घोड़े के अन्य गीत भी उपलब्ध हैं ।[2] घोड़े और घोड़ी का अन्तर अवश्य है अन्यथा प्रथा समान ही है ।

(ख) लूण-उवारना (वारना) के गीत—जब वर आवश्यक शृंगार सजकर घोड़ी घोड़े पर चढ़कर घर से निकलता है तो उसकी बहिन लूण उवारती है । लूण उवारने का प्रयोजन यह है कि वर कुदृष्टि के प्रभाव से प्रभावित न हो सके क्योंकि सजे हुए वर को किसी की नजर लग सकती है । राजस्थान में 'लूण उवारने' के समय यह गीत गाया जाता है—

(अमुक) बहिन राईवर रे लूण उवारे ।
(अमुक) भुवा बाई केसरिया रे लूण उवारे ।[3]

गुजरात में भी यह प्रथा प्रचलित है । श्री झवेरचन्द मेघाणी ने लिखा है—"केसरी रंग का वाघा (चोगा) पहिनकर वर घोड़े पर चढ़ता है, उसकी बहिन 'मीठड़ा' लेती (नमक वारती) है ।"[4] इस बात का उल्लेख इस गीत में देखा जा सकता है—

मीठडां लऊ तारा मायानी मोल्ये—केसरी आ० ।[5]

(ग) वर यात्रा के गीत—जिस समय वर घोड़े पर चढ़कर घर से निकलता है तो उसके साथ जुलूस में उसके भाई-बन्धु व पिता-चाचा आदि रहते हैं, साथ ही माता एवं अन्य स्त्रियां भी रहती हैं । ढोल, बैण्ड आदि जुलूस के आगे-आगे चलते हैं । इस समय स्त्रियां जो गीत गाती हैं, उन गीतों में वर का रूप शृंगार वर्णन रहता है और बरात में जाने वाले लोगों का भी उल्लेख रहता है । पहले एक राजस्थानी लोकगीत में वर की इस शोभा यात्रा का वर्णन देखिए—

केसरियो लुळ-लुळ पाछल मेरे,
जाने म्हारी जानडली बाबोसा पधारे ।[6]

---

1. चूदड़ी (भाग 1), पृ० 65
2. (क) चूदड़ी (भाग 1), देखिए पृ० 49 व पृ० 75
   (ख) गु० लो० सा० मा० (भाग 1), गीत संख्या 191, पृ० 135
3. संकलित
4. चूदड़ी (भाग 1), पृ० 65
5. (क) वही
   (ख) मारो तो माना—अमुक भाई, तारा लूणलां उतारे छे वार ।
   वही, पृ० 70-71

गुजराती गीत मे कहा गया है कि वर घोडे पर चढा है, उसकी शोभा को देखने सारा जग एकत्र हो गया है और मेरी गली मे, बाजार मे दर्शनार्थ लोग समा नही रहे हैं।

कुवर घोडे चड्या ने जोवा जग मल्यु
मारी शेरीमा हाट नो माय कुवर घोडे चड्या ।[1]

(घ) **सेवरा (सेहरा) के गीत**—वर-यात्रा के समय सेवरा के गीत भी गाए जाते हैं। सेवरा (सेहरा) *गीतो मे मालिन को सेवरा बना लाने का आदेश दिया जाता है,* यथा—

गूथलाई मालण स्याम सेवरा।
बिन मोती बिन मोगरी, बागा सू मीठा आम जमीरी ।[2]

राजस्थान मे सेवरा मगवाया जाता है किन्तु गुजरात मे गजरा।[3] सम्भवत. *गुजरात मे सेवरा के स्थान पर वर के लिए गजरे का उपयोग किया जाता है। मालिन* को गुजराती गीत मे वर के लिए गजरा बनाकर लाने का आदेश दिया गया है।

राजस्थान मे जब वर घर से बाहर निकलता है उस समय माता उसे स्तनपान *कराती है, सम्भवत वह वर को अपने दूध की लज्जा रखन की स्मृति दिलाती है।* राजस्थान म स्वयवर करके वधू लाने की प्रथा रही है। कभी-कभी युद्ध करके कन्या का हरण करना पडता था, अत माता अपने पुत्र को स्तनपान करवाकर दूध की लज्जा रखने *का सकेत देती है। राजस्थानी वर हाथ मे तलवार लेकर चलता है, इसका भी उक्त* कारण ही रहा होगा। स्तनपान के पश्चात् सभी स्त्रिया वर के 'उवारणा' लेती हैं, जिससे कि वर पर कोई सकट न आए। 'उवारणा' लेना एक प्रकार की आरती ही है, जो सबसे *पहले मा करती है, और बाद मे बहिन, युवा भाभी आदि स्त्रिया। यह आरती वर की* मगलमय यात्रा के लिए की जाती है। इसी समय भाभी वर के काजल लगाती है।

(क) बधावा

'बधावा' शब्द राजस्थानी का है, जिसका अर्थ बधाई होता है। इन बधावा गीतो का परिचय देते हुए सम्पादक त्रय ने लिखा है—"जब घर मे विवाह, पुत्र-जन्म आदि *कोई मागलिक कार्य या उत्सव होता है तब ये 'बधावे' गाये जाते हैं। गार्हस्थ के बडे ही* सुन्दर चित्र इन गीतो म देखने को मिलते हैं"[4] इन्होने ही अन्यत्र लिखा है—"बधावा

1. चूदडी (भाग 1), पृ० 64
2 (क) राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वणलता अग्रवाल, पृ० 89
(ख) राजस्थानी लोकगीत—स० त्रल गीत स० 59, 60 व 65 मे सेवरे का उल्लेख है।
3 तारा 'गजरा नु' आपीशु मूल रे
माही गूथ जे गुलाब नु फूल रे—चूदडी (भाग 1), पृ० 54
4. राजस्थान के लोकगीत, स० त्रय, पृ० 109

विदाई को कहते हैं। कन्या के विदाई के समय ये गीत गाये जाते हैं।[1] हा, विवाह होने के बाद गाए जाने वाले गीतो मे विदाई का वर्णन अवश्य रहता है, किन्तु इसका अर्थ केवल विदाई गीत नही होता। बधावा गीत तो मागलिक गीत है, जो प्रत्यक सामाजिक उत्सव के पूरे होन पर गाए जाते हैं। विवाह के उपरान्त गाए जाने वाले बधावा गीतो के सम्बन्ध मे डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—"कन्या की विदा के समय बधावे भी गाये जाते हैं, परन्तु इन बधावो के भाव पुत्र-जन्म और वधू आने के बधावो से बिल्कुल भिन्न हैं। इस समय के बधावो मे कन्या की विदा का मर्मस्पर्शी चित्रण और ससुराल पहुचने पर उसके परिवार की मगलकामना एव सौभाग्य-समृद्धि निमित्त आशीष प्रकट होती है।[2] अत विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले बधावो को दो भागो मे बाटना होगा—

(अ) विदाई के बधावे (आळू या स्मृति) एव

(आ) वधू के स्वागतार्थ गाए जाने वाले बधावे।

(अ) विदाई के बधावे (आळूं या स्मृति)—विदाई गीतो की चर्चा की जा चुकी है, उनके वर्ण्य विषय एव 'आळू' या स्मृति गीतो मे अन्तर होता है। इन गीतो मे वर-वधू के सवाद एव वधू के अपने पीहर की स्मृति के भाव के पूर्ण चित्र देखे जा सकते हैं। वधू वर से प्रार्थना करती है कि एक बार तुम अपने ऊंटो को लौटाओ। मुझे मेरे पिता की स्मृति व्यथित कर रही है। इस पर वर कहता है कि अब पिताजी को विस्मृत कर दो। अब पिता की स्मृति तुम्हार ससुर भग कर देंगे।[3] गुजराती गीत मे वधू वर से कहती है कि घोडा रुक जाओ, तो मैं अपने दादाजी से सीख माग लू अथवा विदा ले लू किन्तु वर कहता है कि अब विदा कैसी, और कैसी बातें? विवाह के पश्चात् हे वधू, तुम मेरी प्रिय हो, अपने घर चलो।[4] एक अन्य गुजराती गीत मे वर्णन है कि जब कन्या पिता के आगन का 'घोर-गभीर बड' त्याग कर चलने लगी, तब उसने अपने पिता से कहा कि तुम मुझे क्षमा कर देना, मैं हरे वन की कोयल हू, आज उडकर परदेश चली जा रही हू।[5]

---

1 राजस्थान के लोकगीत, स० त्रय, पृ० 197

2 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 84

3. सुदर गोरी, आलू थारी परो रे निवार
चपरू बरणी, बाबो सारी आनू मुसरो जी भांग सी।
—राजस्थान के लोकगीत—स० त्रय, पृ० 202 203

4 उमा रो' तो माग् मारा दादा जी नी सीख रे।
हवे केघी शीख रे लाडी, हवे केवा बोल रे।
परण्या अटेले थ्यारां लाडी, चालो आपणे घेर रे।
—चूंदडी (भाग 1), पृ० 104

5 दादा आंगण आंबलो, आबलो घोर गभीर जो,
अेक तो पान में चूटियु, दादा गाल नो देजो जो,
अमे रे लीला बननी चरकलडी, ऊडी जाशु परदेश जो।
—चूंदडी (भाग 1), पृ० 102

पुत्री की विदा का दृश्य बडा मार्मिक होता है। माता कोयल से प्रार्थना करती है किन्तु विदा होती हुई बाई को 'पिऊ-पिऊ' शब्द सुना। पर्वत से कहती है कि तू थोडा नीचा झुक जा जिससे मैं अपनी प्रिय पुत्री की सुरगी चूनडी को दूर तक नजर भर कर देख सकू और अपने जवाई की पचरगी पगडी भी देख सकू। गुजराती गीत मे जब घोडे के रथ मे सवार होकर चली तो उसके माता पिता आदि सम्बन्धी छोडने चले, किन्तु कन्या उनको लौट जाने को कहती है, क्योंकि उन्होंने ही उसको दूर दे दिया है।[1]

गुजरात मे मगल भावना से पूर्ण ये गीत तो गाए जाते हैं, किन्तु इन्हें 'बधावा' नहीं कहा जाता। अत गुजराती गीतो मे बधावा शब्द वाले गीत उपलब्ध नही हैं, किन्तु राजस्थानी गीतो मे बधावे शब्द का भी उल्लेख है—

पहले बधावे, ए सखिया मोरी, म्हे गया राज
गया म्हारा बाबो जी री पोळ

(पहले बधावे कन्या अपने बाबा जी के यहां गई। बाबा जी ने उसे सन्तोप दिया और दक्षिणी चीर दिया। जाती हुई कन्या व उसके पति को शकुन अच्छे हुए। इसी प्रकार विदाई की वेला के अवसर पर ये बधावे गाए जाते हैं।

(आ) वधू के स्वागतार्थ गाए जाने वाले बधावे—वर जब नव-विवाहित वधू लेकर बरात के साथ घर लौटता है तो शानदार स्वागत किया जाता है। डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—"वधू को लेकर जान (बरात) के लौटने पर वर वधू के भव्य स्वागत निमित्त द्वार पर चौक पूरा जाता है और घर को आगन मे पावडे तथा अन्य चित्रकारी करके सजाया जाता है। लडके की माता वर-वधू की आरती उतार कर भीतर प्रवेश कराती है।"[2]

वर-वधू की आरती के बाद नापा जाता है। साथ ही वधू के स्वागतार्थ बधावा गीत गाये जाते हैं। एक राजस्थानी लोकगीत मे प्रश्न किया जाता है कि वर को कैसा ससुर मिला है और कैसी सास। उत्तर म कहा जाता है कि अम्बर के समान ससुर है और धरती जैसी सास मिली है।[3] इसी प्रकार एक गुजराती गीत मे लाडा (वर) का दादा उससे प्रश्न करता है कि तुम ससुराल जाकर क्या जीत लाए हो। वर उत्तर देता है कि मैं अपने ससुर की पुत्री जीत लाया हू और दूसरा मैं ससुराल जीत आया हू।[4]

राजस्थानी और गुजराती बधवा गीतो का वर्ण्य विषय समान है और दोनो प्रान्तो मे ये मागलिक गीत इस मगल पर्व के अवसर पर गाए जाते हैं।

---

1. वळो वळो रे मारा समरथ दादा,
   अमने दीधां छमे वेगळां। —चूदडी (भाग 1), पृ० 102
2. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 89
3. अबर सरीसो सुसरो जी मिलिया
   धरणी सरीसी सास— —राजस्थान के लोकगीत—स० सव, पृ० 177
4. जीत्या जीत्या रे मारा ससरा नी बेटी,
   बीजु ते जीत्या सायर सासरूं रे वरलाडडा। —चूदडी (भाग 1), पृ० 108

(ख) सुहागरात के गीत

विवाह के अनेक लोकाचार करने के पश्चात् चिर प्रतीक्षित रात्रि का आगमन होता है। यह रात्रि भी जगकर व्यतीत की जाती है और वर-वधू को यथा स्थान सुलाकर स्त्रिया गीत गाती हैं। इन गीतो मे देवी-देवताओ के और वर-वधू के मधुर वार्तालाप के[1] गीत होते हैं। सर्वप्रथम यहां एक राजस्थानी लोकगीत प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमे वर बडे कौशल के साथ वधू के सम्मुख प्रणय-प्रस्ताव रखता है और कहता है—

> मैं तुमसे कुछ नहीं मागता, केवल झीना घूघट,
> कचुकीबध एव नाडा खोलने की आज्ञा चाहता हू।[2]

गुजराती गीत मे कहा गया है कि दीपक लेकर रमझम करती वधू आई है। उससे प्रश्न किया जाता है कि वह कहा आई है। वधू उत्तर देती है कि वह अच्छी चद्दर ओढने आई है, पति के पैर दबाने आई है और मोती के लड्डू जीमने आई है।[3] इस गीत को श्री मेघाणी ने ध्वनिकाव्य कहा है।[4]

(ग) वधू पक्ष के गीत

(1) बरात के आगमन पर गाए जाने वाले गीत

(अ) सामेला के गीत—वर बरात लेकर जब वधू के गाव-नगर मे पहुचता है तो कन्या पक्ष के लोग बरात की अगवानी करने या स्वागत करने जाते हैं। 'सामेळा' का अर्थ सम्मिलन है। वर-वधू पक्ष के लोग इस सम्मिलन मे एक-दूसरे का परिचय प्राप्त करते हैं, इस समय वधू-पक्ष के पुरुषो के साथ आयी स्त्रियां जो गीत गाती हैं उनमे वर को, वर पक्ष के लोगों को गाली दी जाती है। राजस्थान का एक लोकगीत देखिए जिसमे गजे, लूले-लगडे बरातियो को खेड (खड्डे) मे पटक देने को कहा गया है—

> लूळा लगडा जान्या लाया, खेड मांई पटको। सात०
> आधा-काण्या जान्या लाया, खेड माई पटको। सात०[5]

राजस्थानी लोकगीत मे बरातियो को गजे-मुडे, लूळे-लगडे और अधे-काने कहा गया है तो गुजराती गीत मे बरात की विचित्र रूप-सज्जा का *वर्णन किया गया है।*

---

1. (क) देखिए, राजस्थान के लोकगीत, स० ग्रथ, गीत स० 77, 88 और 89
   (ख) देखिए राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 90
2. वही ग्रथ, पृ० 45-46
3. वही जैसा-जैसा
4. चूंदडी (भाग I), पृ० 113
5. सकलित

बिल्ली के बैल करके लाए हैं, घड़े की गाड़ी बना लाए हैं और कीचड़ के पहिए बना लाए हैं। थूहर की धुरीण बना लाए हैं और कचुकी के जोत (बैलों के गले में जुआ बाधने का वस्त्र) बना लाए हैं। घाघरा (व लोग) ओढ़कर आए है इस बन्दर भाई (समधी) की बरात तो देखिए, कि यथा—

घाघराना ओढ़ा कही लाईवा के लाज केले लीमडे ।
वादल भाई टो जान ऐवी लाईवा मे लाज केले लीमडे ।[1]

सामेळा का उल्लेख श्री झवेरचन्द मेघाणी ने भी किया है, गुजराती म इसे 'सामेयु' कहा जाता है, इसका अर्थ भी अगवानी होता है। उन्होंने लिखा है—'सामैय' (अगवानी करने वाले) सामने जाते हैं, जलते दीपकों के साथ गीत गाए जाते हैं।[2] गीत की पक्तियों म मोतियों द्वारा बरात की वन्दना की बात कही गई है।[3]

(आ) तोरण पर गाए जाने वाले गीत—राजस्थान मे वर के स्वागतार्थ वधू के द्वार पर तोरण बाधा जाता है, यह तोरण बढ़ई जाल, खेजड़ी या बेर की लकड़ी का बनाता है। वर वधू के द्वार पर पहुचकर जब तोरण को सात बार तलवार से छूता है उस समय निम्न गीत गाया जाता है—

झीण पडे झिणकारिया तरवारिया तोरण बांदियों ।
तोरण तारो की छाया, गायडमल होले हाल ।[4]

राजस्थान मे तलवार के साथ तोरण-वन्दना की एक प्रथा प्रचलित है जिसका उल्लेख डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल न किया है—"जब बरात कन्या पक्ष के द्वार पर पहुचती है, वर बौरटी की डाली स तोरण को छूकर अभिवादन करता है तत्पश्चात् कन्या की माता जवाई की आरती उतरती है।[5]

गुजरात मे भी तोरण छूने की प्रथा है किन्तु वहा तोरण अशोकवृक्ष के पत्तो से बनाया जाता है और वर केवल पत्ता तोडता है। इस सम्बन्ध मे श्री झवेरचन्द मेघाणी ने लिखा है—"विवाह करने वाला पुरुष कन्या के पीहर के द्वार तोरण छून जाता है। द्वार पर अशोक वृक्ष के पत्तों का हरा तारण झूलता है। पुरुष 'मैं आया हू' इस सकेत के रूप मे तोरण का पत्ता तोडता है और कन्या की माता उसे परछनी (वर की आरती उतारने की रीति) है।[6] तोरण के अवसर पर गाए जाने वाले गुजराती गीत मे कहा गया है कि सीता के तोरण पर राम आ गये हैं। वर की सास से परछने का पहला पुण्य लेने को कहा जाता है। यथा—

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 1) पृ० 56
2. चूदडी (भाग 1), पृ० 83
3. मोती बधावु तारी जान हा लाल पछेडो फूले भयो । —वही
4. राजस्थानी लोकगीत (भाग 2), स० शिवसिंह चोयल, पृ० 16
5. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 75-76
6. चूदडी (भाग 2), पृ० 87

सीता नै तोरण राम पधार्या
लेने मनौनी पै सू पोखणु ।[1]

यद्यपि राजस्थान मे और गुजरात मे तोरण-वन्दना की रीति मे अन्तर है किन्तु तोरण की योजना और वधू की मा के द्वार तोरण पर वर की आरती उतारना दोनो प्रान्तो मे समान है।

(इ) वर-वधू को दर्शन की उग्र-उत्कंठा के गीत—सामेळा से तोरण तक जाने के बीच के समय मे वर-वधू की हृदयगत भावनाओ का चित्रण किया गया है। पाणि-ग्रहण एव दर्शन के बीच का यह समय वर-वधू के मन में तीव्र उत्कठा उत्पन्न कर देता है। प्रतीक्षा के इन मधुर क्षणो का भावपूर्ण चित्र पहले एक राजस्थानी गीत मे देखिए—

बनडो तो आयो बाकडा
म्हे के विध निरखण जावा जी। सुहागदार बिडलो
सिर पर लेस्या हरी छाबडी
म्हे मालण बण के जास्या जी। सुहागदार बिडलो।[2]

इधर गुजराती वधू ऊचे गढ के कागरो पर चढकर वर राजा के दर्शन करना चाहती है, यथा—

ऊचा-ऊचा मोल मारे घर के बीवाला
अेथी ऊचेरा गढना कागरा रे,
कागरे चडी ने बेनी···(अमुक) बा जोशे
केटलेक आवे वरराजीआ रे।[3]

एक अन्य राजस्थानी गीत मे जब वधू वर को देखने की इच्छा व्यक्त करती है तब उससे कहा जाता है कि तुम उसको क्या देखोगी, वह तो शरद-पूर्णिमा के चन्द्रमा-सा सुन्दर है।[4] गुजराती गीत मे भी वर को पूनम के चन्द्रमा की उपमा दी गई है।[5]

वर के मन मे भी वधू से मिलने की तीव्र उत्कंठा का उल्लेख एक राजस्थानी गीत मे देखा जा सकता है। वर कहता है कि मेरे पिता जी दहेज को, घराती सरस

---

1 चूदडी (भाग 1), पृ० 83
2 राजस्थान के लोकगीत—स० सय, गीत स० 87
3 चूदडी (भाग 1), पृ० 82
4. इये रे बने रो क्या जोवसो रे,
ओ तो सरद पूनम को चाद
—राजस्थान के लोकगीत—स० सय, गीत स० 86
5. आवे-आवे रे वासुदेव नो नद, पूनम केरो चद।
—चूदडी (भाग 1), पृ० 78

जलेबी को, माता जी मिठाइयों को उत्कंठित हैं, किन्तु मैं तो तुम्हारे रूप के लिए उत्कंठित हूं।[1] गुजराती गीत में वर के मन में वधू के नगर को देखने की बहुत उत्सुकता है और वह वधू से मिलने के लिए भी अत्यन्त उत्कंठित है।[2] इस प्रकार वर एवं वधू दोनों के मन में मिलन की तीव्र आकांक्षा है।

(ई) कामण के गीत—विवाह के अवसर पर कामण (काले जादू) के गीत गाए जाते हैं। इनमें वर को वशीभूत करने के लिए वधू काले जादू का उपयोग करती है। राजस्थान के एक लोकगीत में वधू कहती है कि मैं नादान बना (वर) पर कामण करने आई हूं। वह जोशी के पुत्र के पास जाती है और लग्न में ही कामण करवा देना चाहती है, यथा—

> ऐसा रे नादान बना पर कामण करवा आई ओ राज,
> जोशीडा रा बेटा थूइ म्हारो बीरो रे लगन्या में कामण
> लिखज्या वीर।[3]

गुजराती गीत में भी विवाह के अवसर पर तुलसी अपने वर पर कामण करके उसको वशीभूत कर लेती है—

> रूडा तुलसी थे कामण कीधा जी रे।
> मारा वहालाना मन हरी लीधा जी रे।[4]

कामण के सम्बन्ध में श्री मोहनललाल व्यास शास्त्री ने लिखा है—"आधुनिक गीतों में कामण को भी स्थान दिया गया है। पर आजकल का सुधरा समाज ऐसे निकृष्ट साधनों की साधना नहीं करता। केवल कामण गीत में ही गाये जाते हैं और क्रिया रूप में उनका कोई अस्तित्व नहीं देखा जाता।[5] वास्तव में ये कामण गीत केवल परम्परा पालन मात्र के लिए ही गाये जाते हैं।

(उ) कुंवर-कलेवा और कंसार भक्षण के गीत—वर की सासू जब द्वार पर आरती उतार लेती है, तब वर को कुंवर कलेवा करवाया जाता है, ऐसी प्रथा राजस्थान में प्रचलित है और इस अवसर पर जो गीत गाया जाता है, वह विनोदपूर्ण होता है—

> कुंवर कलेवो लाडो जीम न जाणे ए।
> लाडो बावे जी ने जीमज बतावै ए।[6]

---

1 बाबोजी उमायो ए बनी दोवड दात ने,
बनडो उमायो ए बनी ए थारे रूप ने।
—राजस्थान—भारती—भाग 9 अंक 2, पृ० 10

2 कोई अपने———नगर देखाडो, साडण बहुने मेलवो।
—चूंदडी (भाग 1), पृ० 86

3 राजस्थानी लोकगीत (भाग 6), पृ० 50

4 गु० लो० सा० मा० (भाग 4). पृ० 17

5 राजस्थानी लोकगीत (भाग 6), पृ० 50

6 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 76

(वर कुवर कलेवा (नाश्ता) करना नहीं जानता है, बाबा जी को बुलाओ जो इन्हें खाकर बताए ।)

गुजरात मे 'कुवर कलेवा' की प्रथा के स्थान पर 'कसार-भक्षण' (कसार खाना) की प्रथा है । श्री रसिकलाल माणेकलाल पड्या ने लिखा है—"कासे की थाली में माता के द्वारा परोसे कसार को दोनों जन (वर-वधू) मसलते हैं और माता 'वाढो' (घी रखने का बर्तन) मे से घो परोसती है और खाने योग्य कसार तैयार होने पर पहले चार कौर कन्या वर को खिलाती है। जिसमे एकत्व की भावना स्पष्ट होती है।[1] गुजरात मे इस अवसर पर निम्न गीत गाया जाता है—

सीता जमाडे राम ने, ॲ राम जमाडे सीत,
कोलिया पडावे कामिनी, ॲ हाड-हाड करी रीत ।

राम सीता को और सीता राम को कौर देती है। राजस्थान मे यह प्रथा नही है। बल्कि यहा तो वर-वधू का एक थाली मे भोजन करना वर्जित है । अत. राजस्थानी वर को अकेले ही 'कुवर-कलेवा' करना होता है ।

(2) चवरी (लग्न-मंडप) के गीत

वर जब रात्रि के समय वधू-गृह मे प्रवेश करता है तब पहले तो उसको गणेशजी के सम्मुख ले जाकर वधू के साथ बैठकर पूजा की जाती है । गणेश जी के साथ अन्य देवताओं की भी पूजा की जाती है, लग्न के समय घर मे एक स्थान पर गणेश जी की स्थापना की जाती है, कलश आदि भी रखे रहते हैं, इस स्थान को 'मामा' कहा जाता है। जहा पहले ही विवाह वेदी, मागलिक द्रव्यो से पूरित चौक, आसन, ब्राह्मण, या पुरोहित उपस्थित रहते है । राजस्थान मे लग्न-मडप को 'चवरी' कहते हैं । वहा 'चवरी' की शोभा का वर्णन करके भगवान रामचन्द्र-सीता की चवरी का रूप देते हुए गीत गाए जाते हैं, यथा—

इण चवरी इण चवरी रामचन्दरजी ने सीता जी चढया
ज्या थे चढो, हो रग भीना ।[2]

गुजराती लोकगीत मे लग्न-मण्डप की शोभा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि इस लग्न-मण्डप के नीचे राजा एव राजिया बैठते हैं—

माण्डवे लीली आडी ने पीळी थामली
माण्डवे बैसे राजा ने बैसे राजिया ।
माण्डवे बैसे राजुमा ई देहात रे ।
वीरा जी नो मांडवो···।[3]

1. स्त्री जीवन—जनवरी, 1970, पृ० 212
2. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 77
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 4), पृ० 3

दोनों प्रांतों में लग्न-मण्डप के अनेकों गीत प्रचलित हैं जिनमें लग्न-मण्डप की शोभा साथ ही साथ समधी द्वारा वधू के लिए लाए गए आभूषणों आदि का उल्लेख रहता है।

पाणिग्रहण, फेरे (भांवर) एवं कन्यादान के गीत—चवरी पर वर के दाहिनी ओर वधू को लाकर बैठाया जाता है। तब सबसे पहले 'हथलेवे' (राजस्थानी), 'हस्त-मेलाप' (गुजराती) संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के अन्तर्गत दोनों के वस्त्रों का गठबंधन किया जाता है। और ब्राह्मण या पुरोहित उसके हाथों में मेंहदी रख कर पाणि-ग्रहण संस्कार करवाता है। उस समय निम्न गीत राजस्थान में गाया जाता है —

हाथ ज दो म्हारी सदा सहेली, राज कहेली, ज्यूं हथळेवो जुड़े।
हाथ नईं देऊं म्हारा सतगुरु जोसीराज पिरोइत जी,
बाबो सा ओ देखै, ज्यारा री लाडेकर धीया लाजें।[1]

जब वधू से पुरोहित हाथ मांगता है तो वधू कहती है कि मेरे पिता देख रहे हैं, अतः मुझे लज्जा आती है, मैं कैसे हाथ देऊं? गुजराती गीत में 'हस्तमेलाप' के अवसर पर गाये जाने वाले गीत में कहा जाता है कि थाली बजी और वर-वधू के हाथ मिले, ढोल ढमके और वर वधू के हाथ मिले। मानो ईश्वर पार्वती साथ मिले हों।

थाळी उमकी ने वर बहुना हाथ मळ्या
ढोल ढमक्या ने वर बहुना हाथ मळ्या
जोणे ईश्वर पारवती हाथ मळ्या।[2]

हस्तमिलाप के समय ही हवन में आहुति दी जाती है और वर-वधू फेरे (भावर) फिरते हैं। फेरों के समय गीत गाया जाता है—

चौथा फेरो फर ले लाडी बाबा जी री प्यारी,
पाचवो फेरो फर ले लाडी माऊ जी री प्यारी
छट्ठो फेरो फर ले लाडी दादा जी की प्यारी
सातवो फेरो फर ले लाडी, अब हुई पराई।[3]

फेरों के पश्चात् वर के बाईं ओर वधू को बैठाया जाता है और वर उसको कन्या के पिता द्वारा दान में दी गई मान कर अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करता है।

गुजरात में फेरों के समय गाए जाने वाले गीत में प्रत्येक फेरे के साथ वधू वर से प्रश्न करती है और वर वधू को रम्य उत्तर देता है—

1. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 77
2. चूदडी (भाग 1), पृ० 92
3. संकलित

लीला ते पोपट पाजरे, लीला ते नागर वेल,
लीली ते धारी चोगणी, लीला चारोना वन ।[1]

कन्यादान के समय जो गीत गाए जाते हैं उनमे वधू के माता-पिता के अतिरिक्त सभी सम्बन्धी लोगों के द्वारा दान मे दी गई विभिन्न वस्तुओं का वर्णन होता है। उस समय दान देने वालो को प्रोत्साहित करने के लिए ये गीत गाए जाते हैं। एक राजस्थानी गीत मे यहां तक कहा गया है कि जो भी दान देना हो चवरी मे ही देना, बाद मे देना तो झूठा झगडा है।

एक फेरो घर लें लाडी बाबा की ए बेटी,
देणो वे जो चांवरिया मे दीज्यो ?
पछे का झूठा झगडा ।[2]

राजस्थान मे इसको 'सरिया रो धरम' भी कहा जाता है, एक और गीत देखिए—

धरहर धरती धूजे, हुई धरम की वेळा ओ राज।
सरिया रो धरम बाई रो बाबो जी लेसी।
·· (अमुक) जी जावो है लाल ।[3]

कन्यादान का भी उल्लेख देखिए—

कन्या को दान···(अमुक) देसी,
ज्याको गरवो गोती जी ।[4]

इसी प्रकार एक गुजराती गीत मे भी विभिन्न सम्बन्धियों से वधू कहती है कि तुम्हें जो देना है अभी दे दो मुझे परदेशी के साथ जाना है। पिता हाथी देता है भाई घोडे व बैलगाडी देता है तो मा दुधारी भैंस व दूध देने का पात्र देती है और भाभी गाय का दान देती हैं और साथ मे चूडा भी देती है, यथा—

दादा, तमारे आलवु होय ते आलो,
परदेशी साथ मारे चाल वु, मारा राज।

भोजाई आल्या गवाडानां दान,
उपर आल्या चूडोला, मारा राज ।[5]

राजस्थान और गुजरात दोनों के गीतो मे तथा प्रथाओं मे पाणिग्रहण, फेरे एव

---

1 चूडडी (भाग 1), पृ० 93
2 संकलित
3. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 78
4 मरुभारती—वर्ष 12 अंक 3, पृ० 4
5 गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 264

कन्यादान सम्बन्धी गीतों में अद्भुत साम्य है।

(3) जेवनवार और जमणवार के गीत

जिस समय बरात भोजन करती है उस समय गाए जाने वाले गीतों को राजस्थान में जेवनवार और गुजरात में जमणवार कहते हैं। इस अवसर पर वर एवं समधियों को गालियाँ दी जाती हैं। इन गीतों को ही गाली गीत कहते हैं। इन गीतों में अश्लीलता रहती है, प्रतीकात्मकता भी होती है और समधी-समधिनों के बीच अवैध एवं असंगत सम्बन्धों का उल्लेख भी रहता है। पहले एक राजस्थानी गाली गीत में देखिए कि समधिन बाबाजी की ऊँची मढ़ी (मन्दिर) में दौड़कर चढ़ गई। मैं अपनी सौत से पूछती हूँ वह क्यों चढ़ी। उसको हलवा पूड़ी खाने की इच्छा है। मैं अपनी सौत के घाट (दलिया) की डली (टुकड़ा) और ऊपर से मूत।[1] यहाँ समधी की पत्नी को सौत कहकर अपने पति के साथ उसके अवैध सम्बन्धों की ओर संकेत किया गया है। अन्य गीतों में भी इससे भी अधिक अश्लीलता एवं घृणास्पद बातें रहती हैं।

एक गुजराती लोकगीत में जमणवार के गीत में कहा जाता है कि सूरत बाजार की मछली लाई गई उसको कड़ाई में छौंका गया और समधी को परोसा। खाते समय समधी को मछली का काँटा लग गया, उसे खींच कर पट्टी बाँधी तो भी सारी रात रोया इसके माँ-बाप भी नहीं है कौन चुप करे?[2] इस प्रकार बरात जिस समय भोजन करती है दोनों प्रांतों में समधियों एवं समधिनों के साथ हास्य-विनोद के उद्देश्य से इस प्रकार के गीत गाये जाते हैं।

(4) गाली गीत

विवाह के अवसर पर वर-वधू पक्ष की स्त्रियाँ गाली गीत गाती हैं जिनमें समधियों एवं समधिनों को सम्बोधित करते हुए गाली दी जाती है। इन्हीं गाली गीतों को गुजराती में 'फटाणा' कहा जाता है। इस श्रेणी के असंख्य गीत उपलब्ध हैं। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत है।

एक राजस्थानी गाली गीत में समधी की पत्नी के भाग जाने का उल्लेख है। मेरी सौत भागना भी नहीं जानती वह ढेढ़ (निम्न जाति का व्यक्ति) को छोड़कर डोम के

---

1. बाबा जी, बाबाजी, थांरी ऊंची मढी,
   —(अमुक जी) काणी दौड चढ़ी।
   पूछुं म्हारी सोक ने था क्यूं रे चढ़ी ?
   म्हांने खीने हीरा पूडी। घालू म्हारो सोक के घाट की डली
   ऊपर घाले मत की पली। —संकलित
2. सूरते साली लाट बजारी माछली ले।
   नदी माईं ने बाप वजाणी माछली सें।
   कोण टे छानो राखे बजानी माछली में।

   —गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 62

साथ गई। ढेढ और डोम के बीच झगडा हुआ उन्होंने उसको आधी-आधी बाट ली। वह ढेढ के यहा ताना तनवाती है और डोम के यहा ढोल वजाती है—

ढेढ डूमा झगडो होय आधी-आधी बाटली,
वा ढेढ का के ताणा तणाय, डूम का के ढोल बजाय।[1]

गुजराती 'फटाणा' मे समधी की बहन को मसूर की दाळ अच्छी लगती है कह कर आगे कहा गया है कि वह काका की काटी (दात से काटी) हुई है और मेरे भाई के द्वारा मोडी हुई है, यथा—

मारा भाई नी मरडेल, मावे मसूरनी दाल।
रेवाईनी बेनीने, भावे मसूर नी दाळ।[2]

इसी प्रकार के अनेक गीत हैं जिनमे समधी एव समधिनो के मध्य अवैध सबधो का उल्लेख है तथा अश्लीलता है। जिस समय बरात आती है तथा भोजन करती है तब ये गीत गाए जाते हैं। ये गीत यद्यपि अश्लील होते हैं परन्तु उनका उद्देश्य केवल हास्य-विनोद होता है अत. उन्हे बुरा नही माना जाता है।

(5) डोरा खोलना व जुआ खेलने से सबधित गीत

विवाह-सस्कार तो पाणिग्रहण के पश्चात् समाप्त सा ही माना जाता है, किन्तु मनोविनोद के लिए एव नव दम्पति को एक-दूसरे के निकट लाने के लिए कुछ क्रियाए की जाती हैं, उन्ही मे डोरा खोलना व जुआ खेलना भी है। वर और वधू एक-दूसरे के हाथ मे बधे उस डोरे को खोलते हैं जो लग्न के समय बाधा गया था। इसके पश्चात् दोनो को जुआ खेलाया जाता है। दूध से भरी थाली मे एक अगूठी डालते हैं, जो अगूठी पहले निकाल लेता है, वह जीता हुआ माना जाता है। यह क्रिया चार बार की जाती है। जिस समय ये क्रियाए चलती हैं, वर-वधू पक्ष की स्त्रिया गीत गाती हैं, पहले वर पक्ष की स्त्रिया कहती है कि यह नाचण की पुत्री खेल रही है। हे वर! तुमने तो खूब चूरमा खाया है इसलिए तुमसे डोरा जल्दी खुल जाएगा।[3] तब वधू पक्ष की स्त्रिया कहती है कि तुम 'राबडी' (दलिया) खाए हुए हो अत तुमसे डोरा नही खुलेगा।[4] एक गुजराती गीत मे भी वर-वधू के डोरा खोलने का सुन्दर चित्र है।[5] श्री झवेरचद मेघाणी ने लिखा

1. सकलित
2. गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 275
3. तू तो चूरमा को घायो, डोर डा फट खुले।
—मरुभारती—जुलाई, 1966, पृ० 47
4. डोरडो नाहीं खुले ओ बना, डोरडो नाहीं खुले।
तू तो रावडी को घायो रे बनडा, डोरडो नाहीं खुले। —वही
5. ब्रह्मा ने दीधी दश गाठ, छबीला दोरडो क्यम छूटे,
तारो वसुदेव तात तेडाव, छबीला दोरडो क्यम छूटे
—स्त्री जीवन—जनवरी 1970, पृ० 213

है कि इसका एक ही सादा श्रीडामय गीत मिलता है।[1] यद्यपि डोरा खोलने एवं जुआ खेलने सम्बन्धी गीत दोनों प्रांतों में कम हैं, परन्तु प्रथा समान ही है।

राजस्थान मे 'कपास-चुनने' की भी प्रथा है। वर वधू के आंचल पर कपास बिखरा देता है और वधू उसको चुनती है। यह प्रथा भी एक-दूसरे को निकट लाने के लिए ही चलाई गई होगी। इसके लिए कोई अलग से गीत नही गाए जाते। वही जुआ के गीत गाए जाते हैं।

(6) विदाई के गीत

विवाह के पश्चात् पुत्री की घर से विदाई के अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं, वे करुणा से ओत-प्रोत हैं। इन गीतों मे पुत्री को चिड़िया या कोयल कहा गया है। 'प्रसिद्ध है कि कोयल अपने अण्डों को स्वयं नही सेती है। वह जहां कौए (मादा) के अण्डे रखे होते हैं, वहीं अपने अण्डे भी रख आती है। कौवी को यह निश्चय नहीं हो पाता कि इनमे से कौन से अण्डे उसके हैं और कौन से पराये हैं, अत वह सभी अण्डों को सेती है और उनके फूटने पर सभी बच्चों का समान रूप से पालन पोषण भी करती है। जब सभी बच्चे बड़े हो जाते हैं, तब कोयल के बच्चे कौवों के बच्चों से अलग होकर भाग जाते हैं। यही दृष्टिकोण लोक गायक का पुत्री को कोयल कहने मे रहा है। पुत्री का पालन-पोषण माता-पिता करते हैं और जैसे ही बड़ी हो जाती है, ससुराल चली जाती है। इस प्रतीक की योजना के पीछे लोकगायक के मन म कौए द्वारा पोषित कोयल वाला भाव ही काम कर रहा है।[2] जब पुत्री घर से विदा होती है तो माता पिता उसके वियोग म बहुत दुःखी होते हैं।[3] विदाई के इन गीतों म पुत्री के माता पिता एवं भाई आदि स्वजनों की भावनाओं का मार्मिक चित्रण रहता है। साथ ही माता पिता पुत्री को ससुराल की मर्यादा एवं रीति-नीति की शिक्षा देते हैं।[4] मा ससुराल पक्ष की स्त्रियों से भी यह प्रार्थना करती है कि उसकी पुत्री को यत्न से रखा जाए क्योंकि उसने

---

1 कण कण काकणी आली चूडी रे
साहा पाने लाड डी दीसे रूड़ी रे— —चूंदड़ी (भाग 1), पृ० 95

2 परिषद्-पत्रिका, वर्ष 7, अक 2, पृ० 124

3 प्रथम अध्याय में माता पुत्री, पिता-पुत्री एवं भाई बहिन के संबंधों का विवेचन करते हुए गीत उद्धृत किए जा चुके हैं।

4 (क) सजोए सिणगार चतर अलबेली, समक-समक पग धरियो सीता।
देस परायो ने लोग पराया, ससुर परायो ने सासू पराई। —संकलित

(ख) मोटा नी बरोबरी ना करिये, घर मां हलीमली रहिये।
सासू मां चीत बधुवहिये, वेनी सरखी रीत रहिये।

—गुजराती गीतों में बेटी की विदाई—
राष्ट्रभारती, वर्ष 14, अंक 9

उसका अत्यन्त स्नेह-पूर्वक पालन पोषण किया है।[1]

(7) गौना के गीत

विवाह संस्कार से ही जुड़ी हुई एक प्रथा और है—गौना अथवा द्विरागमन। विवाह के पश्चात् वधू कुछ दिनों तक ससुराल में रहती है, फिर उसे पीहर वापस भेज दिया जाता है। इसके बाद वधू को लेने के लिए जब वर दुबारा जाता है, तब उसे 'गौना' या द्विरागमन कहते हैं। इस अवसर पर जब वर वर न रहकर जवाई (दामाद) नणदोई और जीजा जी हो जाता है। अत जवाई के रूप में उसके सास ससुर नणदोई के रूप में उसकी सलहजें और जीजा के रूप में उसकी सालियां उसका स्वागत करती हैं। उसके साथ हास्य-विनोद किया जाता है और उससे अनेक पहेलियां पूछी जाती हैं।

यों जवाई एवं नणदोई का ससुराल में सम्मान होता है, किन्तु हास्य-विनोद करती हुई साली-सहलजें जवाई व नणदोई को गालियां गाती हैं। इन गालियों में मधुर विनोद देखा जा सकता है। एक राजस्थानी लोकगीत में सहलज अपने नणदोई से खेत की रखवाली करने, जेठ की भैंस का दूध निकालने, रेवड चराने, अपने पति की सेज बिछाने, बालक को खेलाने का प्रस्ताव रखती है और बदले में क्रमश. मतीरा, दही, अलगोजा (दो बांसुरी) लड्डू, झुनझुना देने की बात कहती है, यथा—

> म्हारे मारू जी री सेज बिछावो जी,
> लाडूड़ा थानें म्हे देस्यां, आवो जी।
> म्हारे मारूजी रो गीगलो खिलावो जी,
> झुझणियो थानें म्हे देस्यां।[2]

गुजराती गीत में जवाईराज को विभिन्न काम करने भेजा गया और लौट कर आने पर बेनी बा (उसकी पत्नी न) विलम्ब से आने का हिसाब पूछा अत: बापड़ा (बेचारा) स्पष्टीकरण देते हुए कहता है कि तुम्हारे दादा के घर विवाह था, आधी रात को मुझसे पीसना पिसवाया गया। पिछली रात को पानी भरवाया गया जब सूरज उदय हुआ तब दातुन मंगवाया गया। पहर दिन चढ़ने तक बच्चों को नहलवाया गया। मुझे इतना विलम्ब इस प्रकार हुआ—

> सूरज ऊग्यो ने दातणिया नखाव्या रे
> पोर दी चढ्यो ने छोकरा पखलाव्या रे
> लगने आवडली वार त्यां लागी रे।[3]

1. माता-पुत्री के सम्बन्धों में प्रथम अध्याय के अन्तर्गत इन गीतों का उल्लेख किया जा चुका है।
2 मरुभारती—अप्रैल, 1970, पृ० 15
3 चूंदड़ी (भाग 1), पृ० 45

एक अन्य राजस्थानी गीत में जवाई को दरजी का पुत्र कहा गया है। इसके बाद बनिये, जाट, खाती, कुम्हार आदि का पुत्र कह कर अंत में कहा जाता है कि इतने बापों का राम प्रसाद (जवाई) पुत्र है और हमारी बाई इतने ससुरों की कुलबहू है।[1] गुजराती गीत में वर बेचारे को मछली का पुत्र कहा गया है।[2]

इस प्रकार गौना कराने जाने पर वर को विभिन्न गालियाँ गाई जाती हैं।[3] इस हास-परिहास के बीच दो-तीन दिन रखकर उसको विदा किया जाता है और पुनः पुत्री की विदाई का करुण अवसर आ जाता है, जब फिर से विदाई गीत गाए जाते हैं।

मृत्यु-संस्कार से सम्बन्धित गीत

मृत्यु के अवसर पर गीत गाया जाना विचित्र प्रथा है। डॉ० सत्येन्द्र ने लिखा है—'मृत्यु के अवसर पर स्त्रियों के रुदन में भी एक लय मिलती है और अभिप्राय भी होता है। इसमें प्रायः मृत पुरुष का नाम ले लेकर शोक प्रकट किया जाता है।[4] डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है 'वास्तव में गा-गा कर रोने के अन्तर्गत काव्य का सौन्दर्य और भावना का समुद्र है। स्त्रियों का हृदय इतना कोमल और अनुभूति इतनी तीव्र होती है कि सुख में, दुःख में, आशा में, निराशा में, प्रत्येक स्थिति में उनके हृदय से कविता की उत्पत्ति और गीत की स्फुरणा अनायास ही होने लगती है।[5] आनन्दातिरेक के समय में विषादातिरेक के समय मानव की हार्दिक भावना अधिक बलवती होकर प्रकट होती है। शोक-गीत के सम्बन्ध में मेरियालीच ने लिखा है कि ये सारे संसार में गाए जाते हैं।[6] राजस्थान में मृत्यु के अवसर पर शोक गीत गाए जाते हैं। गुजरात में मृत्यु के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को 'राजिया' एवं 'मरसिया' कहा जाता है।[7] श्री वेरियर एल्विन ने 'मैकल टेकरी ना लोक गीतो' नामक गुजराती लोकगीतों के संग्रह में मृत्यु गीतों के सम्बन्ध में लिखा है—"इस प्रसंग का दुःख अधिक गहरा एवं मर्मभेदी होता है, इसलिए दुःख के गायक उत्कृष्ट भाव की प्रबल शक्ति द्वारा भव्य और सुन्दर कल्पनाओं से भरे गीतों की रचना करते हैं। करुण भाव की ऊर्मि को व्यक्त करने के

---

1. इतणं बापां को राम प्रसाद डीकरो ओ राज औ'र रंगीलो—
   इतणं सुसरां की बाई कुल बहू जी राज—औ र रंगीलो—
   —मरुभारती, जनवरी 1970, पृ० 21
2. छालो बेठो ले मल्ली खाजणमां, जाणे माछला दानो बेटो ले।
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 59
3. देखिए—मरुभारती, जनवरी 1970 एवं अप्रैल, 1970
   देखिए—राजस्थान के लोकगीत—स० क्रम, गीत स० 99, 100, एवं 47
   देखिए—गु० लो० मा० मा० (भाग 1), पृ० 58, 59, 60 और 62
   देखिए—वही (भाग 3), पृ० 65, 66 एवं 67 तथा भाग 7, पृ० 18
4. ब्रज लोक साहित्य—पृ० 232
5. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 90
6. स्टैंडर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर, पृ० 755
7. मनोहलको, पृ० 182

लिए इन गायकों ने भिन्न-भिन्न भाव प्रतीकों का (सिम्बोल्स) आश्रय लिया है।"[1]

मृत्यु के अवसर पर शोकगीत गाए हैं। रतन राणा को अंग्रेजों ने सवत् 1923 वि० म फासी दी थी। उनकी दु खद मृत्यु से सम्बन्धित एक शोकगीत (एलेजी) राजस्थान मे गाया जाता है। इस करुणापूर्ण गीत मे सोढा राणा रतनसिंह की पत्नी का विलाप द्रष्टव्य है—

> मटियल ऊभी छाजड़ये री छाह हो जी हो
> आंसू डा ढलकावे कायर मोर ज्यू रे, म्हारा०
> अमराणे म घोर अन्धार हा रे म्हारा सोढा राणा
> × × ×
> बिलखण ने लागे रे मेहल मालिया हो,
> म्हारा रतन राणा एकर तो अमराणे पाछो जाव।[2]

गुजरात मे अभिमन्यु की मृत्यु मे उत्तरा को हुआ शोक, अनेकों मृत्यु गीतों मे गाया जाता है। यहां एक गीत प्रस्तुत है—

> अभिमन चढ्यो रे रणवाट, उत्तरा राणी न आणां मोकल्या,
> अभिमन गयो दोशीडाने हाट, सिरवध बमावे मोघा मूलना।
> ॲ तो वसाव्या वार-ववार, जॅवा पॅहया लेवा ऊतया।[3]

गीत मे अभिमन्यु की मृत्यु पर न केवल रानी उत्तरा रोती है बल्कि दासी, वधु, तोता, घोडे, हाथी, हरे पौधे, बालक, चारण भाट एव बाजार मे बनिये भी रोते हैं। अभिमन्यु की मृत्यु से सम्बन्धित अनेक शोकगीत गुजरात मे प्रचलित हैं।[4]

आत्मा का प्रतीक रूप में चित्रण

मृत्यु गीतो म आत्मा एव परमात्मा का प्रतीकात्मक उल्लेख अधिक हुआ है। एक राजस्थानी लोकगीत म कन्या रूपी आत्मा अपनी मा (काया—शरीर) मे कहती है कि परमात्मा रूपी 'बटाऊ' (पथिक) मुझे लेने आ गया है। मैं नौ दरवाजे वाले घर म (शरीर मे) लुकती छिपती घूम रही हू परन्तु वह मुझे छोड़ता नहीं है। हे मेरी माता! इस बार तुम मुझे बचा लो पथिक लेने आ गया है—

> म्हाने अबके बचाले म्हारी माय, बटाऊड़ो आयो लेवण।
> आठ कोठडी नौ दरवाजा, काया मदर मांय।
> लुकती-छिपती मैं फिरू रे, लुकतो न छोडे वरी नाय।[5]

1 मयोहलको, पृ० 182 183
2 राजस्थानी मारवोड, स० डॉ० राठौड, पृ० 164
3 गु० लो० गा० भा० (भाग 4), पृ० 128
4 देखिए, गु० लो० गा० भा० (भाग 4), पृ० 128 129 एव मयोहलको, पृ० 149 से 151
5 संकलित

यहाँ आत्मा एवं परमात्मा का सुन्दर प्रतीकात्मक प्रयोग द्रष्टव्य है। एक गुजराती मृत्यु-गीत में आत्मा का प्रतीक मुर्गा है। मुर्गे ने अपने कुटुम्ब को जगाया, कुटुम्ब ने अंतिम जवाब दिया। आज उठने के बाद फिर हम तुम्हें नहीं मिलेंगे। मिलेंगे भी तो मिलेंगे मास-छह मास में। भाद्रपद के अंतिम पक्ष में, यथा—

मळशे मळशे मास छ मास रे।
भादरवाना पाछला पखवाडिये।[1]

यहाँ भाद्रपद मास में अन्तिम पक्ष में मिलने का तात्पर्य है कि भाद्रपद में श्राद्ध पक्ष होगा और उस समय ही कुटुम्ब के लोग मृत व्यक्ति का श्राद्ध कर्म करके उसकी स्मृति ताजा करेंगे। उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में आत्मा-परमात्मा का प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है।

मृत्यु गीतों में आत्मा को ईश्वर का नाम लेने की प्रेरणा दी जाती है। मृत्यु अवश्यंभावी है अतः मोह-माया छोड़कर परमात्मा का स्मरण करने का उपदेश दिया जाता है। पहले इस प्रकार का एक राजस्थानी गीत देखा जा सकता है—

इतना मत न गरब इसान एक दिन जाणा पड़ेगा।
मोह-माया ने त्याग क्रोध ने तजना पड़ेगा
राम का नाम ले ले बन्दा तू, तेरा कलक झड़ेगा रे।[2]

गुजराती मृत्यु गीत में कहा गया है कि माया किसलिए जोड़ी है? तुम्हें पहला विश्राम तो घर के आँगन में लेना पड़ेगा, दूसरा घर के बाहर, तीसरा गाँव की सीमा पर और चौथा विश्राम श्मशान में लेना होगा। तेरी माँ जन्म भर रोएगी, बहिन बारह माह, भाई तीर्थ तक और जो पत्नी तुझे घड़ी भर के लिए विस्मृत नहीं करती थी, वही अन्तकाल में अलग हो जाएगी, यथा—

माता तमारी जनम रोशे, बेनीरुअे बारे मास, नर०
तिरथ सुधी बधवो रोशे, खोळी ने बाळे हाड रे, नर०
घरनी नारी तमने घडी न वीसरती, अते अळगी थाशे रे, नर०[3]

इन गीतों में ससार की नश्वरता और झूठे सासारिक सम्बन्धों की ओर सकेत किया गया है।

आत्मा को 'हस' एवं 'बनजारा' भी कहा गया है। एक राजस्थानी गीत में कहा गया है कि हे मेरे हसले (जीव) आधी रात्रि व्यतीत हो गई। अमरलोक से निमन्त्रण आ गया है, लादने वाले उठ चले हैं, 'गुण' (शरीर) पड़ा पश्चात्ताप कर रहा है। वहाँ आत्मा से शरीर कहता है कि आज की रात्रि यहीं पर विश्राम करो, आज का भाड़ा (किराया) हम

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 4), पृ० 130
2. सकलित
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 6), पृ० 254

चुका देंगे, किन्तु आत्मा उत्तर देती है कि अब रहने योग्य नहीं है, यथा—

> आज की रात थाई रेवो म्हारा हंसला,
> आज को भाड़ो म्हे भर दाला।
> नहीं रेवण रो जोग म्हारी सजनी, नहीं रेवण रो जोग।[1]

गुजराती गीत में भी आत्मा को हंस की उपमा से विभूषित किया गया है, यथा—

> चारो। चरतो हंस मारियो,
> हंस ने हंसलीना विजोग, हाय।[2]

इन मृत्यु गीतों में करुण रस तो छलका पड़ता ही है साथ ही प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग भी अनूठा है।

मुसलमानों का मरसिया—श्री कन्हैयालाल जोशी ने गुजराती मरसियों के संकलन में मोहर्रम के अवसर पर गाया जाने वाला एक मरसिया प्रस्तुत किया है। मरसिया इमाम हुसैन की शहीदी के गम में गाया जाता है। आपने लिखा है कि मुसलमानों में मरसिया बहुत गाए जाते हैं। एक मरसिया इस प्रकार है—

> चालीस दिन पड़ा रहा लाशा हुसयन का
> उठा किसी तरह न जनाजा हुसयन का
> रोते हुए मुस्तुफा व अली फातेमा हसन,
> × × ×
> हुए शोर ताब अर्श मो अल्ला हुसयन का
> इस गम पे पाश-पाश हुए 'मुनीस' का जीगर,
> तीरू से छीद गया हुए कलेजा हुसयन का।[3]

हुसैन की मृत्यु पर हुए शोक की अभिव्यक्ति इस गुजराती मरसिया में है। मरसिया की सार्वभौम स्थिति का इससे स्पष्ट आभास होता है कि ये मृत्यु गीत न केवल हिन्दुओं में बल्कि मुसलमानों में भी प्रचलित हैं। श्री जोशी ने ही ईसाइयों में प्रचलित गुजराती मरसिया भी प्रस्तुत किया है।[4] मृत्यु गीतों की सर्वजातीयता इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाती है।

मृत्यु-भोज के राजस्थानी गीत—राजस्थान में मृत व्यक्ति के नाम पर मृत्यु-भोज करने की परम्परा है। इस भोज में ब्राह्मण एवं स्वजाति के लोगों को सामर्थ्यानुसार बुलाया जाता है। मृत्यु के बारहवें दिन यह भोज दिया जाता है, इसको 'मौसर' एवं 'औसर' भी कहा जाता है। 'मौसर' के बाद सन्ध्या समय मृत व्यक्ति के पुत्रों को पगड़ी

---

1. मरुभारती, जनवरी, 1964
2. नर्मोहलरी, पृ० 183
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 4), पृ० 135
4. वही—पृ० 136

बधवाई जाती है। पगड़ी बंधवाने का रहस्य यह है कि पिता के अधिकार अब पुत्रों को प्राप्त हो गए। पुत्रों को पिता का स्थान देने के लिए यह सामाजिक उत्सव किया जाता है।

दाहक्रिया के तीसरे दिन मृतक के पुत्र या भाई मृतक की अस्थियां चिता-स्थान से एकत्र करते हैं, इसे 'फूल चीनना' कहते हैं। फिर उन अस्थियों को तीर्थ स्थानों को ले जाते हैं। इसको गंगोज कहा जाता है। अस्थियों को ले जाने वाले से यह अपेक्षा की जाती है कि वह हरिद्वार ले जाकर अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करेगा।

गंगोज एवं पथवारी गीत—इस अवसर पर गंगोज एवं पथवारी गीत गाने की प्रथा प्रचलित है। सर्वप्रथम एक गंगोज सम्बन्धित गीत प्रस्तुत किया जा रहा है। दक्षिणी राजस्थान से सकलित इस गीत में कहा गया है कि गंगावासी लौट आए हैं, उनके लिए मैं जाजम बिछाऊं। वे जिस-जिस स्थान पर आते हैं, उस-उस स्थान पर उनका स्वागत करने को कहा गया है, यथा—

> काई जाणू गंगा रा वासी आया,
> आमा लोए बेन सामा लोए बेन।

पथवारी माता के गीत, पथवारी को मार्गदेवी मानकर गाये जाते हैं। इन गीतों में मार्गदेवी से यह प्रार्थना की जाती है कि गंगा जी गए लोगों की यात्रा मंगलमय हो। इस सम्बन्ध में डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—"गंगाजी के कुछ 'पथवारी गीत' इस भाव के हैं कि अस्थि सिलाने जाने वाले कुएं कपारा गेहूं, बाजरी या जौ बो जाते हैं जिन्हें बोने वाले की स्त्री पीछे से सींचा करती है और सींचती हुई पथवारी गाती है—

पथवारी गीत

> "बाए गयी बाबै नन्द जी को लाल,
> सीच गयी बांकी राधा प्यारी।
> हर पथवारी सीचो ओ राम, बाओ ओ राम।"[1]

गंगोज एवं पथवारी के गीत गुजराती गीतों में उपलब्ध नहीं हो सके हैं। अतः यहां राजस्थान में गाये जाने वाले गीतों का ही विवेचन किया गया है।

निष्कर्ष

इस अध्याय में विभिन्न संस्कारों से सम्बन्धित राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों का तुलनात्मक विवेचन किया गया जिससे निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं, यथा—

(1) शास्त्र-सम्मत संस्कारों का लोक जीवन में प्रचलन न होकर उनके स्थान पर लौकिक रूप से ही विधि विधान किए जाते हैं, जिनका मूल रूप तो शास्त्र-सम्मत ही है किन्तु यहां स्थानीय लोकाचार प्रमुख रूप से निभाए जाते हैं।

1. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 94

(2) दोहद एवं साधपुराई के गीतों में गर्भवती स्त्री को क्या-क्या वस्तुएं खाने की इच्छा होती है, इसका वर्णन राजस्थानी और गुजराती गीतों में समान रूप से उपलब्ध है। सीमन्तोन्नयन के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों का भी यह विषय रहता है।

(3) प्रसव सम्बन्धी गीतों में दाई को बुलाने का और आसन्न प्रसवा की पीड़ा का उल्लेख केवल राजस्थानी गीतों में हुआ है। 'पगल्या लिखकर' भेजना, गुड़ बांटना और प्रसूता का पीला ओढ़ना आदि लोकाचारों का उल्लेख गुजराती गीतों में नहीं मिलता है। जलाशय पूजा (राजस्थानी में—जलवा पूजन) के गीत दोनों प्रांतों में गाये जाते हैं। पुत्र जन्म पर राजस्थान में थाली और गुजरात में ढोल व शहनाई बजाने का उल्लेख लोकगीतों में हुआ है। बालक के भाग्य एवं नाम के सम्बन्ध में ब्राह्मण से पूछा जाता है, इस प्रथा का गुजराती गीतों में विशेष वर्णन है।

(4) हालरा (लोरी) दोनों प्रांतों में समान रूप से गाये जाते हैं।

(5) मुण्डन एवं कर्ण-छेदन के गीत केवल राजस्थान में गाए जाते हैं। गुजरात में वे नहीं मिले।

(6) विवाहारम्भ के सामान्य गीत दोनों प्रांतों के समान हैं और लोकाचारों में भी पर्याप्त समानता है।

(7) वर पक्ष के गीतों में केवल 'सेवरा' सम्बन्धी गीतों को छोड़कर सर्वत्र साम्य लोकाचारों में भी बहुत समानता है। गुजरात में सेवरा के स्थान पर गजरा के गीत गाए जाते हैं।

(8) वधू-पक्ष के गीत एवं लोकाचार भी समान ही हैं।

(9) पवरी, जेमनवार, गाली, डोरा खोलना व जुआ खेलन तथा विदाई के गीत भी समान रूप से दोनों प्रांतों में गाए जाते हैं।

(10) गौने के अवसर पर जवाई एवं ननदोई के गीतों में हास्य विनोद की प्रधानता दोनों प्रांतों के गीतों में उपलब्ध है।

(11) जहां तक मृत्यु संस्कार से सम्बन्धित गीतों की बात है, दोनों प्रांतों में उनका समान प्रचलन है, इनको दोनों प्रांतों में मरसिया एवं राजिया कहा जाता है। मृत्यु पर शोक प्रकट करना इनका वर्ण्य विषय है।

(12) मृत्यु सम्बन्धी गीतों में आत्मा का प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है।

(13) गुजरात के गीतों में मुसलमानों में गाए जाने वाले मरसिया गीत भी मिलते हैं।

(14) राजस्थान में मृत्यु-भोज सम्बन्धी और पयवारी सम्बन्धी लोकगीतों का बाहुल्य है। गुजरात में इस प्रकार के गीतों का अभाव है।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रांतों के संस्कारों एवं लोकाचारों से सम्बन्धित गीतों में भेद कम और अभेद अधिक है।

तृतीय अध्याय

राजस्थानी एवं गुजराती पर्वोत्सव तथा धर्म सम्बन्धी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन की सुविधा के लिए इस अध्याय को दो भागों में प्रस्तुत किया गया है। प्रथम भाग में पर्वोत्सवों (त्योहारों-मेलों) से सम्बन्धित लोकगीतों का और द्वितीय भाग में धार्मिक लोकगीतों का तुलनात्मक विवेचन किया जा रहा है।

पर्वोत्सवों के आयोजन का कारण मानव-जीवन में उत्पन्न होने वाली एकरसता भंग करना है। व्यस्त एवं संघर्षमय जीवन में श्रम-संचित थकान को मिटाने के उद्देश्य से और आमोद-प्रमोद के लिए मनुष्य ने इन पर्व-त्योहारों का आयोजन किया होगा बाद में इनकी परम्परा पड़ गई। संसार के प्रायः सभी भागों में इस तरह के आयोजन होते आये हैं। राजस्थान और गुजरात की भी अपनी त्योहार परम्परा है। इन कारणों के अतिरिक्त पर्वों की पृष्ठभूमि में एक और बड़ा कारण है—धर्म। धर्म शब्द की व्युत्पत्ति है 'धारणाद् धर्मं' या 'ध्रियते येन स धर्मः' अर्थात् जिससे हम अपने को धारण करें, वही हमारा धर्म है। कालान्तर में अनेक तत्व एक होकर धर्म में सम्मिलित होते चले गए। उस चिरन्तन परम्परा को लक्ष्य करके ही अपने धर्म को 'सनातन धर्म' कहा गया। समय समय पर इसमें अनेक परिवर्तन भी हुए, किन्तु 'सनातन धर्म' ज्यों-का-त्यों सुस्थिर बना रहा। आधुनिक काल में विभिन्न नामों से अनेक सम्प्रदाय अवश्य प्रचलित हैं किन्तु उनका लोकगीतों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है।

अपने इस धर्म की अपनी विशेषताएं हैं। इसमें विचित्र समन्वय है। कहीं यह वेदों से प्रेरित होता है, कहीं पुराणों से, कहीं स्मृतियों से, कहीं संहिताओं से और कहीं लोकाचारों से। कहीं इसमें बहुदेववाद है, कहीं भाग्यवाद है और कहीं विशुद्ध ब्रह्म विश्वास है। शायद इसीलिए कहा गया है—

"वेदाश्च भिन्ना स्मृतयश्च भिन्ना
नैको मुनिर्यस्य मतं प्रमाणम्।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां,
महाजनो येन गतः स पन्था.॥"

वेद भिन्न हैं, स्मृतियां भी भिन्न हैं और किसी भी मुनि का मत प्रमाण नहीं है। धर्म का तत्त्व गुहा में छिपा हुआ है, इसलिए जिस मार्ग पर महाजन (बड़े लोग) चलें, वही मार्ग (अनुकरणीय) है।

इस प्रकार हमारा धर्म अनेक रूपों में यथेच्छ मानव-जीवन को नियन्त्रित करता है और वही धीरे-धीरे अनेक आचार-विचार, प्रथाएं एवं परम्परा भी प्रदान करता है, जिनका चित्रण विभिन्न धार्मिक लोकगीतों में उपलब्ध होता है।

यहां इस प्रथम भाग में पर्व सम्बन्धी लोक-गीतों का विवेचन किया जा रहा है। धार्मिक गीतों का विवेचन अगले भाग में होगा।

प्रथम भाग

(1) राजस्थान एवं गुजरात के पर्व-त्योहार सम्बन्धी लोकगीत

(1) होली

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन होली का त्योहार मनाया जाता है। होली पर होलिका को जलाया जाता है। राजस्थान[1] व गुजरात[2] दोनों प्रांतों में होली का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है। होली पर बालक-बालिकाएं, स्त्री और पुरुष सभी गीत गाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न नृत्यों का भी आयोजन किया जाता है।

होली पर गाये जाने वाले गीतों का निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन किया जा रहा है—

(क) बालिकाओं के होली गीत—बालिकाएं होली पर जो गीत गाती हैं उनमें होली को 'पावणी' (राजस्थानी), 'परुणी' (गुजराती) अर्थात् अतिथि कहा गया है। राजस्थान में होली के स्तम्भ के लिए करील वृक्ष का डांडा काटा जाने का वर्णन है।

---

1. देखिए—राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 1 होली के गीत
2. गुजराती होली गीतों के सम्बन्ध में भगत कांता बहन एवं भगत जयंत कुमार श्रेन० सरवी ने लिखा है—'हिन्दुस्तान में होली प्रकट करने का रिवाज प्रचलित है। लोग फाल्गुन शुक्ल 15 के दिन चौक-चौक एवं गली-गली होली प्रगट करते हैं। स्त्रियां गरबे गाती हैं। पुरुष रास खेलते हैं। बच्चे 'गेंडी दडा' (लाठी से गेंद खेलना) खेलते हैं। इस समय पाल प्रदेश में नायक, कोली और उसी प्रकार की पिछड़ी जाति के लोग निम्न गीत गाते हैं इस देश के अनोखे त्योहार को मारवाड़ी प्रजा एक सप्ताह तक मनाती है। इन दिनों के बीच पिछली जाति के लोग रंग, गुलाल व धूल एक दूसरे पर उड़ाते हैं।'
—गु० लो० सा० मा० (भाग 4), पृ० 61

वहा होली को वर्ष भर के बाद आया हुआ अतिथि कहा गया है।[1] दूसरे राजस्थानी गीत मे होली को चार दिन का अतिथि बतलाया गया है।[2] गुजराती गीत म होली का मानवीकरण देखिए कि होली आई अतिथि बनकर आई है और इमली के नीचे बैठी है—

आळी आय अेनी परुणी ओठी ही आमल्यें धुले।[3]

(ख) स्त्रियों के गीत—स्त्रियो के द्वारा होली पर गाये जान वाले गीतो मे निम्न विषय सम्मिलित हैं—

(अ) गेर नृत्य एव चग सम्बन्धी गीत और

(आ) दाम्पत्य प्रेम सम्बन्धी गीत—
सयोग एव वियोग क गीत

(अ) गेर नृत्य एव चग सम्बन्धी गीत—होली के अवसर पर 'गेर' नृत्य का आयोजन किया जाता है और चग बजात हैं। इस सम्बन्ध म अनक गीत गाये जात हैं। एक राजस्थानी लोकगीत में कहा गया है कि एक स्त्री घर-द्वार बन्द करक गर नृत्य देखने चली, सखिया भी उसक साथ थी। कुछ दूर जाकर (जहा से सम्भवत गर नृत्य दिखाई दे रहा था) उसने बहाना बनाया कि मेरी चाबी एडी के झटके के साथ गिर गई है और वह लौट चली। आगे वह स्वय कहती है कि वास्तव मे उसकी चाबी नही गिरी थी पर उसन सामने अपने प्रियतम को तलवार के साथ गेर नाचते हुए देख लिया था। अत वह लज्जित हो गई।[4] यदि वह आगे चली जाती तो उसको सखिया के विनोद का शिकार होना पडता, अत वह बहाना बनाकर लौट गई। गुजराती गीत म वर्णन है कि मेले म गेर नृत्य हो रहा है, चग और कासी क जोडे की ध्वनि सुनते ही नायिका उतावली होकर भाग चली। वह बेचारी शृगार करना ही भूल गई और चग झीझा की ध्वनि पर मन्त्र-मुग्ध होकर घर से निकल पडी। वह अपने प्रेमी से कहती है कि वह मार्ग म मिले क्योकि गेर नाचने वाले उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[5] यह भाव एक राजस्थानी लोकगीत मे भी है। जिसम नायिका कहती है कि मैंने चग की ध्वनि रोटी बनाते सुनी। मैं रोटी बनाना भूल गयी। चग धीरे बजाओ।[6] फाल्गुन मास म जब बसन्त की मादकता का चारो ओर

---

1 काटयो तो बाटयो डाडो केर को जो, काटयो है होली ताणी थांम,
अोक बरसे बसरवोदण होली पावणा ज।
—राजस्थान के लोकगीत—सं० स्वप, पृ० 92

2 होली आडा है दन च्यार होली पावणी रे लाल।
—राजस्थान के त्योहार, गीत पृ० 2

3 गु० ला० सा० मा० (भाग 3) पृ० 69

4 आगे म्हारो परणियोडो तरवारियां नाचे रे।
मू तो पाछी फरगी रे। लाज्यां मरगी रे। पाछी फरगी रे।
—राजस्थान के त्योहार, गीत स० 6

5 घग ने झीझारी थाग, गरिया खलण लागा रे—मेले हाले तो०
—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 125 135

6 चग रो घमेडो मू तो रोटी पोनो सुणियो रे। मू तो रोटी पोणां भूल गई रे।
चग धीरे ले। चग धीरे ले।।
—सकलित

साम्राज्य होता है तो ऐसे वातावरण मे चग की ध्वनि के कारण नारी मन यदि अपनी सुध-बुध भूल जाए तो आश्चर्य क्या ? चग के सम्बन्ध मे एक राजस्थानी गीत और है जिसमे नायिका कहती है कि चग मेरे भाई ने मढवाया है, चग रेगर मढ लाया। यह रगीला चग बजने वाला है जिसे मेरा भाई बजा रहा है और उनके मित्र घमाल गा रहे हैं। यह चग बड़ा बजने वाला है। चग अगुलियो स बजता है, चग अगूठी से बजता है और चग कलाई के बल बजता है। चग बीकानेर, जोधपुर व अजमेर में बज रहा है।[1]

एक गुजराती नायिका 'गेर' में देवर, जेठ, ससुर आदि को सामने देखकर लज्जित हो जाती है और प्रिय से कहती है कि वह नाच म घूघट कैसे तान पायेगी अत. वह उसके साथ नाचने से इन्कार कर देती है। किन्तु मेले वाली गेर मे साथ नाचकर प्रिय की इच्छा पूरी करने का आश्वासन देती है। यथा—

सामा बैठा देवर-जेठ, मु घूघट कीकर ताणु रे, मारग मेळा रो०
मु तो मेळावाळा गेर मे, थारी सग मे नाचु रे, मारग मेळा रो०।[2]

एक राजस्थानी लोकगीत मे कहा गया है कि होली के कारण ही अमुक भाई गेर नाच रहे हैं और सभी लाग उसके साथ नाच रहे हैं—

अण गेरियां मे हगला हो नाचे।
(अमुक) वीरो छोगा राळे।
ए होळी थारे कारणे।[3]

गुजरात म होली के अतिरिक्त दीवाली पर भी गेर नृत्य का आयोजन होता है, श्री वसन्त जोधाणी के कथन से यह प्रगट होता है—"क्षत्रपति एव कोळी लोग दीवाली पर गेर (घेर) निकालते हैं। इस घरैया के नायक शक्ति के पुजारी होते हैं (जिनको कवि या कवियो कहा जाता है।) वह (नायक) टुकडी को आदेश देता है—सुना ? इसके उत्तर मे घेरेया कहने है—'मोरचा'।" इसके पश्चात् आपने निम्न दोहा उद्धृत किया है—

"रजपूतना दशेरा, न वदारीनी दीवाळी
दुबळा नो दिवासो, ने कोळी भाई नी होली।"[4]

श्रीयुत निरजन सरकार ने फाग के गीत शीर्षक के अन्तर्गत जो गीत उद्धृत किए हैं उनमे भी गेर नृत्य का उल्लेख है। एक गीत ऊपर उद्धृत भी किया गया है। दूसरे गीत मे भी गेर नृत्य का उल्लेख है जिसमें प्रिय को प्रेमिका मेले से शीघ्र आने को कहती है और कहती है कि तुम्हारे 'घेरेया' (गेर नाचने वाले) सवाए लग रहे हैं—

---

1. म्हारे वीरे जी मढायो चग बाजणो। रगीलो चग बाजणो।
—परम्परा—लोकगीत विशेषांक, परिशिष्ट, पृ० 191
2. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 138
3 राजस्थान के त्योहार गीत—गीत स० 4
4 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 191

थारा घेरमा सवाया लागे, हेतु मोडो मा पडजे, मेले हाल परो ।[1]

उक्त दोनो उदाहरण से यह स्पष्ट हो गया है कि गेर नृत्य का प्रचलन गुजरात मे होली एव दीवाली दोनो ही अवसरो पर है । एक गीत मे गेर मे नाचने वाले गेरैया के मदिरा एव ताडी पीकर नाचने का भी उल्लेख है—

दारू ना पीधेला गेरीआ काई ना नाचे रे
ताडीना पीधेला गेरीआ थै थै मै नाचे रे ।[2]

डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल का कथन भी दर्शनीय है—पुरुष खुलकर फाग खेलते हैं, डाडियो की ताल पर गेर रमते है, सामूहिक रूप से पैरो मे घूघरे बाधकर नाचते है, शरीर की सुध-बुध भुलाकर इस त्योहार पर सब एक हो जाते हैं । स्त्रियां आभूषणो और वस्त्रों से सुसज्जित होकर सामूहिक रूप से घूमर खेलती हैं, निशक होकर नाचती हैं, गाती है और तालिया बजाकर ताल देती हैं ।[3] अन्यत्र भी इसका उल्लेख है ।[4]

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 133
2. वही, पृ० 197
3 राजस्थानी लोकगीत, पृ० 124
4 मैंने राजस्थान के त्योहार गीत पुस्तक में गेर नृत्य के सबध मे लिखा है—
'राजस्थान का गेर नृत्य जो कि पुरुष नृत्य है बहुत ही प्रसिद्ध है । होली के अवसर पर गाव के सभी पुरुष गाव के चौहटे (गांव का वह मैदान जिसमे सामूहिक नृत्य होता है) मे गेर नाचने के लिए एकत्र हो जाते हैं । गेर नृत्य म जो लोग सम्मिलित होते हैं उन्हे गेरिये कहते हैं । ये अपने-अपने डडिये या कणिये लेकर चौहटे म पहुचते हैं । चौहटे को गेर भी कहा जाता है । नृत्य आरम होने के पूव ये सब गेरिये गेर मे एक वृत्त की परिधि म खडे हो जाते हैं । इस वृत्त के केन्द्र मे ढोल या नगाडा रखा जाता है जिसको ढोली बजाता है । जब नृत्य आरम होता है तो ढोल की ताल के साथ गेरिये अपने डडिये लडाते लडाते हुए उस वृत्त की परिधि पर घूमते हैं । घूमने मे एक विशषता यह होती है कि एक व्यक्ति जब वृत्त क भीतरी भाग मे होता है तो एक बाहरी भाग म वे आपस म डडिये लडाकर भीतर वाला बाहर और बाहर वाला भीतर चला जाता है । इस प्रकार गेर नृत्य का क्रम चलता रहता है । ढोल की ताल के साथ सैकडो डडियों के लडने की ध्वनि होती है ।

—राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 2

आगे स्त्रियों के नृत्यों के बारे में लिखा है—
'होली के अवसर पर बालिकाए वस्त्राभूषणों से सजधजकर, मिल-जुल कर गाती बजाती, खेलती-कूदती और नाचती हैं । लूर या लूमर या घूमर एक नाच का नाम है जिसमें स्त्रियां हाथ बांधकर चक्राधार नाचती हैं कहीं-कहीं पर डडों की ताल पर भी नाच होता है । गुजरात में इस प्रकार के नृत्य का अधिक प्रचार है जिसे 'गरबा' नृत्य के नाम से अभिहित किया जाता है ।
श्री बसन्त जोधाणी ने गेर नृत्य क सबध म लिखा है—
'यह गेर पूरे गांव म घूमती है, चौहटे, गलियों मे, बाजार में खेलती है और प्रत्येक घर पर

गुजराती के गेर गीतो से यह स्पष्ट हो जाता है कि मेले मे स्त्री-पुरुष 'गेर' मे साथ-साथ नाचते हैं जबकि राजस्थान मे यह परम्परा नहीं है। गुजरात मे गेर गली-गली एव घर-घर घूमती है किन्तु राजस्थान मे यह गेर गोहटे तक ही सीमित रहती है।

(आ) दांपत्य प्रेम सम्बन्धी गीत—सयोग—होली के गीतो मे दापत्य प्रेम का भी चित्रण हुआ है। ऊपर राजस्थान एव गुजरात के जिन गीतो को उद्धृत किया गया है उसमे सयोग शृगार झलकता है। इनके अतिरिक्त भी पति-पत्नी के रग खेलने से सम्बन्धित उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। एक राजस्थानी लोक गीत प्रस्तुत है—

भर पिचकारी मारी मारे गोरे-गोरे गाल पे,
सारी भी भीगी म्हारी भीग गई चोली रे।[1]

गुजराती गीत मे भी राधा का कृष्ण से समान भावपूर्ण आग्रह देखिए—

तमे जशोदानाना कुवर कनैया, हु छु राधा भमर भोली रे लोल।
तमे रग पीचकारी मारो न बोला, भीजे मारी चूदडी ने चोळी रे लोल।[2]

होली मे भाभी देवर के साथ रग खेलती है। एक राजस्थानी भाभी देवर के रेशम के डोरे (धागे) की प्रशसा करती है। वह देवर पर डालने के लिए मुट्ठी मे गुलाल (अबीर) लेकर निकली किन्तु सहेलियो के कारण शरमा गई—

देवरिया ने सोवै डोरो रेशम रो।
गुलाल मुट्ठी मे कुण पर रालू ओ।
म्हारी सहेल्या मे लाज्या मरगी ओ।[3]

गुजराती गीत मे भाभी कहती है कि मेरा देवर मुझे होली खेलाता है।[4]

दांपत्य प्रेम का उत्कृष्ट रूप भी होली पर गाये जाने वाले इन गीतो मे अभिव्यक्त हुआ है। राजस्थानी पत्नी होली के अवसर पर सोनी से कहती है कि तू मेरा तेवटिय (गले का आभूषण) दो दिन बाद म बनाना किन्तु (होली के इस पुनीत पर्व पर वह अपने

खेलकर फिर सध्या समय विदा होती है अन्त म गेर की पूजा होती है। बधान वाली बहिन कुकुम से टीका लगाती है, चावल चढ़ाती है, और वदना करती है—
पहेली वधाव चांदा सूरज ने रे वंनी, पछी बधाव मारो गेर रे।
घेर बधावती मारी बेनडी, तारो सुखी रहे भरथार रे।
रमनी घेर बधावनारी, बंनी काशी गोपाना पून रे।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 2), पृ० 198

1. सकलित
2. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 223-24
3. सकलित
4. मारो दियर सुवारो हो रगनो चूडो,
मने होली रमाडे हो रग नी चूडो
—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 114

पति का शृंगार चाहती है, अतः) मेरे भवर जी की अगूठी जल्दी से बना देना। यथा—

> म्हारो तो तेवटियो सोनी दोय दन मोडो घडज्ये रे।
> भवर जी की मूदडी जल्दी घडज्ये रे।
> बैठू रेल मे होली है।[1]

गुजराती पत्नी भी सोनी से राजस्थानी गीत की नायिका-सा ही अनुरोध करती है—कहती है कि मेरा तेवटिया तो जैसा-तैसा बना देना किन्तु भवर जी की 'बेडी' (पाव का आभूषण) पर मोर बनाना मत भूलना—

> मारो तो तेवटियो सोनी, जेडो तेडो घडजे रे,
> भमर जी री बेडी माथे मोर माडेरो, वळती आधु तो।[2]

वियोग शृंगार—सयोग शृंगार के उदाहरणों के पश्चात् होली के अवसर पर वियोगिनी नायिका के हृदयोद्‌गार भी देखिये। होली तो सयोग की स्थिति मे ही सुखप्रद हो सकती है। वियोगिनी नायिका के लिए होली कैसी?

> फागण फीको ए सहेल्या, एक स्याम बिना फागण फीको अे।
> स्याम बिना फागण इसडो फीको लागे अे।[3]

प्रियतम के अभाव म फाल्गुन वियोगिनी के लिए फीका है। नायिका ने कितने सरल, सहज एव स्वाभाविक उपमान चुने है। गुजराती गीतों मे नायिका अपने प्रियतम को सदेश देते हुए कहती है—हे प्रियतम! फाल्गुन मास म मेरे हृदय मे होली जलती है किन्तु दीनादाय खोजने से भी नही मिलते हैं।[4] फाल्गुन मास मे पूर्णिमा के दिन लोग जलती हुई होली के आस पास फेरे फिर रहे हैं और हे प्रियतम! यह मोहल्ले की पडौसिन रग मे सराबोर है।[5] फाल्गुन मास पुष्पो से पुष्पित हो गया है और केसर के पौधे भी पुष्पित हो गये हैं। गोपिया एव ग्वाले सब अबीर-गुलाल से होली खेल रहे हैं।[6] फाल्गुन मे होली धगधगाती है। मैं अपनी झोली अबीर गुलाल से भरा लू। किन्तु मेरे प्रियतम

---

1. सकलित
2. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 137
3. राजस्थानी भारती (भाग 1 अक 1), अप्रैल 1946, पृ० 103-104
4. वाला! फागण होली हैये बळे रे
   दीनानाथ गोत्या वयाय नव मळे रे।
   —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 75
5. फागण महिने फेर फरे छे होली रे वाला जी।
   आ फलाणानी पडोसण रग मा रोळी मारा वाला जी।
   —रढियाली रात (भाग 3), पृ० 77
6. फागण फूल्यो फूलडे ने फूल्यां केसर झाड,
   अबील गलाल ने छाटणे रमे गोपी ने गोवाल, के आणा कावल ने मोरार—वही, पृ० 79

के बिना होली कौन खेले ? हे प्रिय ! होली खेलने आओ ।[1] इन गुजराती गीतों में नायिका अपने प्रवासी प्रियतम को इस मादक ऋतु में घर आने को आमन्त्रित करती है। राजस्थानी नायिका का कथन भी देखिये—हे प्रियतम ! तुम्हारी स्मृति व्यथित कर रही है, फाल्गुन मास है, झूटणिया (कान का आभूषण) तो तुम्हारी इच्छा हो तो बनवा लाना किन्तु होली के दो दिन पूर्व घर अवश्य आ जाना ।[2] कितना मधुर आग्रह इन गीतों में प्रवासी प्रियतम से किया गया है।

(ग) पुरुषों के गीत—होली पर गाये जाने वाले पुरुष गीतों का निम्न शीर्षकों में विभक्त करके विवेचन किया जा रहा है—

होली और अश्लील गीत की परम्परा—होली पर अश्लील गीत गाने की परम्परा है। घोर अश्लील गीतों का विवेचन करना यहां सम्भव नहीं होगा परन्तु जिन गीतों में नारी-पुरुष के अवैध-सम्बन्धों का उल्लेख है, उनका कुछ विवेचन किया जा सकता है। एक राजस्थानी लोकगीत में परकीया से मिलने नायक उसके घर पहुंचता है। नायिका प्रश्न करती है कि हाथ में दीपक की ज्योति लिये मेढी में कौन घुसा है ? उत्तर—काठिया-खापण (कफन) तैयार रखकर मायेठा (प्रिय) घुसा है। नायिका अपने प्रेमी पर आये इस आसन्न संकट को समझ गई। उसने कल्पना कर ली कि दीपक की ज्योति लिये इसने प्रवेश किया है, अतः उसको लोगों ने देख लिया होगा और अब उसकी कुशल नहीं। अतः वह उसकी सुरक्षा के लिए धूप की सामग्री और धूपेडा (धूप करने का मिट्टी का पात्र) लेकर देवताओं की पूजा आरम्भ कर देती है। यथा—

> हाथ में दीवला की जोत, मेडी में कुण वडियो रे ?
> काठिया खापण मेल ने मायेलो वडियो रे।
> धूप न धूपेडो ने धूप खेऊ धणिया ने ।[3]

एक गुजराती गीत में भी कहा गया है कि नायक मरने का निश्चय लेकर अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए उसके महल में दीपक के साथ आ गया—

> हाथों मे दीवला री जो त्यारे।
> मेलो में कुण वळियो ?
> मरणों आदरियो, पाछो जा परो।
> घने खापण मेलने रे।
> हेतु हो वळियो रे, मरणो।
> माने भेंटी म्हारो सासूडो देश।

---

1. का'ना विना कोण खेले होळी,
   रमवा आवो ने रे—आवो। —वही पृ० 83
2. होळी रे दोय दिन पैला आवो रोजवे रे।
   मीनो फागण यो। —सकलित
3. सकलित

बोल रे मरणो आदरियो ।
मरणो आदरियो, पाछो जा परो ।[1]

उक्त दोनो प्रातो के गीतो मे प्रेमी का, रात्रि को प्रेमिका के घर जाने का मतव्य स्पष्ट ही है । प्रेम अन्धा होना है, वह परिणाम नही देखता। वासनारूपी दीपक की जलती ज्योति पर इन गीतो का नायक प्राणो की बाजी लगा रहा है ।

इसी अवसर पर परकीया का एक चित्र और देखिए । उसका प्रियतम रूठ गया है। उसको मनाते हुए नायिका कहती है कि पन जी ! तुम मुह से बोलो । तुम्हारे बोले बिना मेरा काम नही चलेगा । यदि तुम्हारी आखें दुखती हो तो मैं काजल लगाऊ और यदि मेरे पति की आँखें दुखती हो तो मैं लाल मिर्चे पीसकर लगाऊ। दोना प्रातो के ही गीत समान हैं ।[2] इनम प्रेमी के प्रति परकीया के प्रेम का तो उत्कृष्ट रूप मिलता है, किंतु पति के प्रति उसका कितना कटु भाव है । एक अन्य राजस्थानी गीत मे किसी रसिक (छैला) को सलाह दी जा रही है—

मायेडो करे छैला कलाली ने करज्ये रे ।
रात मे (रमावे)· दन मे दारू पावे रे ।—सकलित

कि तुम यदि प्रेमिका बनाओ तो कलाली को बनाना, वह दिन मे दारू पिलाएगी और रात्रि मे तुम्हारे साथ रतिक्रीडा मे सम्मिलित होगी। इससे भी अधिक अश्लील गीत उपलब्ध हैं, जिनमे यौन-अगो एव क्रीडाओ का विशद उल्लेख किया गया है। इस गुजराती गीत म अश्लीलता देखिए । जहा बहिन मर्यादा, सकोच एव लज्जा आदि के सब बधन तोडकर अपने भाई से कहती है कि होली के डाडे के गिरन से पूर्व मेरा विवाह कर दो । मैं बहती नदी का जल तो हथेली मे रख सकती हू किन्तु उठती हुई छाती का यौवन मैं किस प्रकार रख सकती हू ?[3] अश्लील स पूर्ण अन्य गीतो म भी प्राय परकीया

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 134

2 (क) बोन बोल म्हारा हिवडे रा जीवडा, बोल्यां सरसी रे, पन जो मूडे बोल
पन जो थारी आंख्यां दुख काजल घालू रे, पन जी मूडे बोल ।
म्हारा परणिया री आख्या दुखे राती मिरच्या बाटू रे,
पन जी मूडे बोन ।—सकलित

(ख) परिणयानी आख्यो दु खे, तो लीलुडां मरचा वाटू रे,
हेतुडारी आंख्या दु खे, तो कालो सूरमो आजु रे ।
वेरिडा मुसे बोल जरा, मु तो थारी गोली रे ।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 136

3 बोले रे माया परणावो, होली रो डो'डो पडियां पेला रे,
वे' तोडी नदियारां नीर, हथाली में राख्यूं रे,
उडती छाती रो जोबन, माया । कीकर राखा रे ? माया परणावो०
—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 133

प्रेम के उदाहरण ही मिलते हैं।

होली और वीर गीतों की परम्परा—वीर रसमे सरोवर होली के अवसर पर वीर रस के गीत भी गाए जाते हैं। राजस्थान म चग पर गाए जाने वाले अनेक गीत हैं—हल्ले आऊ ओ, गोरा हट जा, आऊ आळो अनड़ो ठाकर, अंग्रेजो का विरोध, राजू रावत आदि। राजस्थान अपनी शूरवीरता के लिए प्रसिद्ध है। होली के अवसर पर भी राजस्थानी वीर अपनी परम्परा को नही भूलते। इस शृगारमय त्योहार पर भी उनकी वीर भावनाए गीतो मे अभिव्यक्त हुई हैं। गुजरात मे होली पर गाये जाने वाले गीतों मे वीरता का अभाव लगता है। श्री निरन्जन सरकार ने 'फागना गीतो' मे अवश्य एक गीत उद्धृत किया है जिसमे 'युद्ध मे जाना है' यह बात गीत का नायक मण्डल कहता है। वह अपनी घोडी की प्रशसा करता है और वह युद्ध मे जाने से पूर्व ढाल, तलवार बख्तरबन्द मागता है, साथ ही अपने काका जी के हाथ की कटारी लेना भी नही भूलता है—

> ढाल ने तलवारा मारी बक्तरवारा देजो रे,
> काका जी रा हाथ री कटारी दीजो रे, जाणु लडवा ने।

युद्धभूमि मे पहुचकर मडल कहता है कि पहले भाले का वार मेरी घोडी ने सहा, दूसरा वार मैंने अपने दातो के बीच मे सहा और तीसरा वार मैंने हथेली से रोका। अत मे चौथे वार मे मण्डल मारा गया। महलो के गवाक्षों (झरोखों) मे बैठी उसकी राणिया रोती हैं कि मण्डल के मारे जाने से धरती का एक कोना खाली हो गया।

> मेलो बैठी रोणियां झरूखे बैठी रोवे रे
> धरती रो खूणो खाली केग्यो रे, मडलो मारियो।[1]

किन्तु यह गीत गुजराती समाज द्वारा नहीं गाया जाता है। यह गाडिये लोहारों का गीत है, जो गुजरात मे बस गए होंगे। यह गीत गुजराती नही राजस्थानी ही है, इसकी भाषा पर गुजराती प्रभाव पड गया है। सम्पादक ने स्वय आगे लिखा है—'पेट गुजारे के लिए भले ही माल सामान की लारी खीचनी पडती हो, अथवा कठोर काले लोहे को घडना पडे, परन्तु राणा प्रताप के वशजो का राजपूत रक्त इनकी नसो मे प्रवाहित हो रहा है। शूरवीर मडला की यशोगाथा का गीत, कलोल को अपना वतन बना देने वाली लुहारिया बहिनो के पास से मिला।[2] राजस्थान मे होली पर वीरगीत बहुत गाए जाते हैं। यहां केवल दो उदाहरण दिए जा रहे हैं अन्य गीतो का विवेचन, 'वीर-पूजा की भावना एव राजनैतिक जीवन' शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है। डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—' उनके (पुरुषों के) गीतो के विषय प्राकृतिक दृश्यों, वीर पुरुषों की जीवनियो और प्रेम-कथाओ से सम्बन्धित होते हैं। इन गीतो मे 'धूमा' सबसे अधिक प्रचलित है, जैसे—

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 135
2. वही, पृ० 134

जठी रे जाव जठी फतह कर आवै आकी है फानेंज राठोड सरकाळ।
लाख लाख वारे तोप रहकडा अगणित ऊट रसाला काळ।[1]

मारवाड के महाराजा की वीरता का सेना आदि का भव्य चित्रण इस धूस म किया गया है। एक दूसरे गीत मे राजस्थानी वीर का आदश देखिए—उसको सभी लोग युद्ध मे न जान का आग्रह करते हैं कि तु वह मा के दूध की लज्जा रखने के लिए जाने का हठ किए बठा है। वह यह भी कहता है कि पुरुष मरने को ही बन हैं—

झगडा म न कीकर जाऊ जरणी दूध थारो लाजे ओ।

माटिडा मरवाना गडिआओ जाणो झगडा म।[2]

(2) घुडला

घुडला राजस्थान का प्रादेशिक एव विशिष्ट त्योहार है। इस त्योहार के अवसर पर बालिकाए अपन सिर पर विभिन्न रगो की चित्रकारी वाली छिद्रयुक्त मटकी लेकर और उसम दीप जलाकर घर घर घूमती हैं और घुडला सम्बधी गीत गाती हैं। घुडले का प्रचलन सवत 1548 म हुआ था उसके प्रचलन के सम्बध म एक घटना भी प्रसिद्ध है।[3] घुडला होली के बाद और गणगौर क पूव प द्रह दिन तक घुमाया जाता है।

घुडले का अथ मटका होता है। घुडला नाम प्रसिद्ध कथा के खलनायक घुडला खा क कारण प्रचलित हुआ है। घुडले म टिमटिमाते दीप के सौंदय का वणन एक गीत म देखा जा सकता है[4] जिसम कहा गया है कि आकाश म तारों स हुई रात अत्यत सुदर है धरती पर बालिकाओ के सिर पर रखा हुआ घुडला सुदर है और (घर म) पुत्रो से घिरी हुई बडी भाभी सुदर है। लोक जीवन के यथाथ सामाजिक धरातल से सचित य उपमाए कितनी सु दर है।

---

1 राजस्थानी लोकगीत—प० 124 125

2 राजस्थान के योहार गीत—होली के गीत स० 29

3 बैसाणा ग्राम (जोधपुर) की स्त्रिया एक दिन गौरी पूजा के लिए जा रही थीं मार्ग मे अजमेर के सिपहसालार घुडले खा ने उन्हें घर लिया। वह उनमे से किसी सुदर स्त्री को ले जाना चाहता था। इस बात पर राव सातल जी और उसके बीच युद्ध हुआ। सातल जी घुडले खां का सिर काटने में सफल हो गए उन्होने वह सिर औरतों को दिया। उन स्त्रियों ने घुडले खा का सिर अपने सिर पर रख लिया और गांव के घर घर में घमी और अपनी मर्यादा की रक्षा करने वाले वीर के सम्मान में गीत गाए। तभी से घुडले त्योहार का आरभ हुआ और प्रतिवष गणगौर से पूव यह घुडला त्योहार मनाया जाता है।
—परम्परा—लोकगीत विशषाक चैत्र सवत् 2013 प० 133

4 घडलो ए सुपारिया छायो तारां छाई रात।
भावज जो म्हारी पूतां छाई बडोड वीरे अर नार।
—राजस्थान के लोकगीत—स० प्रथ पृ० 53

एक गीत म वर्णन है कि मगल सूत्र बधा हुआ घुडला घूम रहा है। घूमते घूमते वह किसी सुहागिन के घर पहुचा, जिसम पुत्र उत्पन्न हुआ है। इस गीत म आगे कहा गया है कि घुडले मे तेल जल रहा है, तुम घी लेकर आओ और 'जापे' मे बनाए गए लड्डू भी गाने वाली बालिकाओं को बाटो, यथा—

तेल बळे घी लाव, मोल्या रा आखा लाव।
जापा रा लाडू लाव, घुडलो घूमे छे जी घूमे छे।[1]

बालिकाओ ने घुडले के गीतों म भाभी के साथ मधुर विनोद भी किया है। एक गीत मे भाभी का यह मधुर शब्द चित्र देखा जा सकता है, यथा—

बडा घरा की बेटी आई वा माथे डूलो लाई जी।
धावल खोल मडासो मारियो मामू लडवा आई जी।
कांचली म कोथली वा चणा चबाती आई जी।[2]

(बडे घर की बेटी आ रही है, सिर पर चूल्हा लिये। उसने अपना घाघरा कस लिया है वह हमसे लडने आ रही है। उसकी कचुली म कोथली (झोली) है (जिसमे से) वह चने चबाते आ रही है।)

एक अन्य गीत मे भाभी के आमत्रण पर ननद कहती है कि भाभी मोर बनकर नाचे तब मैं जाऊ। भाभी ने ननद से मीठा व्यग किया कि मैं तो मोर बनकर एक-आध घडी नाचूगी किन्तु मेरे ननदोई तो आपके आगे सारी रात नाचते हैं—

हूँ मोर ज नाचे अध घडी, लूदारियो ले।
नणदोई नाचे सारी रात, आओ मओ ले।[3]

घुडला प्रमुख रूप से बालिकाओ का त्योहार है। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि जो भी रही हो, आज भी इस त्योहार को राजस्थानी बालिकाए बडे चाव से मनाती हैं।

(3) आखातीज (अक्षय-तृतीय)

वैशाख शुक्ला तृतीया को 'अक्षय-तृतीया' का त्योहार मनाया जाता है। राजस्थान मे इस त्योहार पर विशेष धूमधाम नहीं होती और न ही गीत गाए जाते हैं।[4] गुजरात मे यह त्योहार बहुत धूमधाम के साथ मनाया जाता है और गीत भी गाए जाते हैं। एक गुजराती गीत म बहू सास से कहती है कि आज तीज को आखातीज है अत नही कातूगी।[5] त्योहारो के दिन सामान्य दिनो म किए जाने वाले काम नही किए जाते हैं, अत वहू आखातीज के दिन कातने को तैयार नही है। श्रीयुत निरजन सरकार ने आखा-

---

1 राजस्थान के त्योहार गीत—पृ० 39
2 वही—पृ० 40
3 राजस्थान के लोकगीत, म० त्रय, पृ० 56
4 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 138
5 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 12

तीज के सम्बन्ध मे लिखा है—"जीवन की पोषण दात्री धरती माता का पूजन आखा-तीज को किया जाता है, उस दिन बहिन नए वस्त्र पहनकर अपने भाई को 'कसार' जिमाने खेत पर जाती है, और भाई से आग्रह करती है कि मुझे दक्षिणी साडी व कापडा (कचुकी सिलान का वस्त्र) चाहिए। यथा—

नाथी बाई ने जोहे रे, रूडा दखणीना चीर,
माथे गुजराती कापडु, चीयो भई लावशे ?

बहिन के इस मधुर आग्रह को भाई कैसे टालता, वह घोडे पर बैठकर पाटणनगर जाता है और बहिन के लिए दक्षिणी चीर लाया—

मूळ जी भी वीरले रे, घोडलो पलाण माडिया,
वेगळे पाटणपुर जइ नेरे, दखणीना चीर लवी आ ।[1]

(4) शील सप्तमी

चैत्र कृष्णा सप्तमी के दिन शीतला माता की पूजा की जाती है। होली के सातवें दिन यह त्योहार के रूप म मनाया जाता है। शील सप्तमी के दिन ठडा (बास्योडा) भोजन किया जाता है। शीतला का सम्बन्ध चेचक रोग स माना जाता है, उसके गीत 'चेचक से सबधित गीत' शीर्षक म इसी अध्याय म देखे जा सकते हैं। अत यहा शीतला (चेचक) सबधी गीतों का विवेचन न करके शीतला माता (देवी) का एक गीत प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमे शीतला या सेडल माता अडसठ गधो पर होकर निकली है, यथा—

एडल सेडल निकली ए मा, अडसठ गधा पिलाण मेरी माय।
घोके न ए म्हारे नाम की ए मा, तने ए नुवा वाम्हारी सेडल माय।[2]

शीतला का वाहन गधा माना गया है। बिहार प्रात मे भी इस प्रकार की मान्यता है।[3] श्री ए० सी० राय चौधरी ने लिखा है—'शीतला की सवारी गधा होता है इसलिए गधो को उसके प्रकोप क समय अनाज खिलाया जाता है। रोगी को गधी का दूध भी पिलाया जाता है जिससे कि रोगी को आराम मिले तथा रोग आगे न बढे। शीतला माता की पूजा प्राय समस्त भारत मे प्रचलित है।

राजस्थान मे इस अवसर पर अनेक गीत गाए जाते हैं और अजमेर, जोधपुर, जयपुर आदि स्थानों पर शीतला के मेले भी भरते हैं।[4] गुजरात मे केवल शीतला-पूजा

---

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 274-275
2 मरुभारती—अप्रेल 1959, राजस्थान मे शीतला, रिछपाल सिंह, पृ० 42
3 द इलुस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इडिया—मई 25, 1958
4 देखिए—राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 44

का प्रचार है, किन्तु मेलों का आयोजन नहीं होता है।

(5) गणगौर (गौरी-पूजन)

गौरी या पार्वती की पूजा भारत मे अत्यन्त प्राचीनकाल से प्रचलित है। सीता जी ने मनोनुकूल वर प्राप्त करने के लिए गौरी-पूजन किया था। गौरी-पूजन गुजरात की स्त्रिया मे भी प्रचलित है, किन्तु जिस धूमधाम से एव सामन्ती वैभव से 'गणगौर' के नाम से यह त्योहार राजस्थान म मनाया जाता है वैसा अन्यत्र नही। गौरी पूजन के दो उद्देश्य हैं पहला कुमारी कन्याए इसलिए पूजन करती हैं कि जिस प्रकार पार्वती जी को तपस्या करने के कारण मनोवांछित फल मिला था उसी प्रकार उन्ह भी मनोवाछित एव योग्य वर प्राप्त हो और दूसरा विवाहित स्त्रियां इसलिए पूजन करती हैं कि उन्ह अखण्ड सुहाग प्राप्त हो। विधवा स्त्रियो के द्वारा गौरी पूजा नही की जाती है।

राजस्थान मे यह त्योहार होली जलाने के दूसरे दिन से आरम्भ हो जाता है। यह पूजन चैत्र शुक्ल चतुर्थी तक चलता है। चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी को मेले लगते हैं। इन्हीं मेलो क साथ-साथ गौरी-पूजन समाप्त होता है।

होली के दूसरे दिन बड़े सवेरे ही स्त्रिया गीत गाती हुई जाकर होली की राख एकत्र करके लाती हैं। इसी राख में मिट्टी मिलाकर उससे सोलह पिंडिया (प्रतिमाए) बनाती हैं। शकर-पार्वती की मूर्ति भी बनाई जाती है और उनकी पूजा आरम्भ की जाती है। सोलह दिन तक बराबर इनकी पूजा की जाती है। कुमारिया निरन्तर सोलह दिन तक यह पूजन करती है। वे दस बीस का समूह बनाकर पूजा के लिए फूल और दूब लेने के लिए जगल अथवा बाग मे जाती हैं। इन बालिकाओ के सिर पर एक के ऊपर एक करके कई लोटो का स्तम्भ जैसा सजा हुआ रहता है। कुछ के सिर पर कलात्मक पीतल के पात्र रहते हैं। कम से कम सात पात्र या लोटे एक एक के सिर पर होते हैं और यह शृखला कलात्मक होती है, नीचे बडा पात्र अथवा लोटा रहता है फिर ज्यों-ज्यो ऊपर बढिए पात्र अथवा लोटे का आकार क्रमश छोटा होता चला जाता है। जोधपुर एव अजमेर के लोटिय बहुत प्रसिद्ध हैं। सिर पर लोटो की मीनार लिये, रग-बिरगे वस्त्र-भूषण से सुसज्जित होकर जब मधुर स्वर से गाती हुई ये स्त्रिया, बालिकाए निकलती हैं तो बडा मनोहर दृश्य होता है। प्रतिदिन मिट्टी के पिंडियो की पूजा की जाती है। गौरी की प्रतिमा के नीचे रोली, काजल और मेहदी की सोलह बिंदिया लगाई जाती हैं। हाथ मे दूब लेकर पानी के छींटे देते हुए पूजा के गीत गाए जाते हैं। दूब के अतिरिक्त जुहारे (यवाकुर) भी दूब के साथ ही नैवेद्य के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं। पूजा की समाप्ति के दिन इन यवाकुरो को सब लोग मस्तक पर धारण करते हैं।

राजस्थान मे 'गणगौर' यात्रोत्सव के रूप मे मनाया जाता है। यह यात्रा किसी जलाशय अथवा नगर के किसी प्रमुख स्थान तक जाती है। इस प्रकार की यात्रा को राजस्थान म 'गणगौर की सवारी' कहा जाता है। यह सवारी कही-कही पन्द्रह दिन के लिए और कहीं अन्तिम दो या तीन दिन के लिए निकाली जाती है। प्राय राजे महाराजे तथा सामन्त-सरदार भी इन सवारियो मे सम्मिलित होते हैं। [illegible]

और ऊटो की दौड भी होती है। इस सम्बन्ध मे एक कहावत भी प्रचलित है—

गणगोरिया इ घोडा न दौड़ेला तो दौडेला कद।

गणगौर त्योहारो की शृखला की अन्तिम कडी है अत इस सम्बन्ध मे भी कहावत है—

तीज त्युहारा बावडी, ले डूबी गणगौर।[1]

डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—"शीतलाष्टमी के दूसरे दिन से सायकाल को बनौरी निकलती है। प्रत्यक टोली या झुण्ड मे कितनी लडकिया सम्मिलित रहती हैं, वे सभी बारी-बारी से अपन घर गणगौर ले जाकर बनौरी' (शोभायात्रा) निकालती हैं। बनौरी मे गेहू या जौ की गूगरी बनाकर, घी-खाण्ड डालकर 'गवर' को जिमाते है और मिठाई व बताशो से गवर का खोला (गोद) भरके सब लडकियो को बाटा जाता है।[2]

श्री झावर मल्ल शर्मा ने लिखा है— सामाजिक जीवन के प्रतीक इस त्योहार का सारे राजस्थान मे समान रूप से प्रचार है। भूतपूर्व राज्यो की राजधानियो मे केवल बूदी ही ऐसी राजधानी रही है जहा राव बुधसिंह जी के भाई राव जोधसिंह गणगौर त्योहार के दिन नौका सहित तालाब म डूब गए थे, तब वहा यह उत्सव मनाया जाना बन्द हो गया।[3] 'हाडो के डूब्यो गणगौर' राजस्थानी कहावत उसी दुर्घटना की सूचक है।[4]

कर्नल जेम्स टोड ने गौर-मेले का बडा सुन्दर वर्णन किया है। उन्होंने यूनान की 'डियाना' और प्राचीन मिस्र की 'इसिस' से गणगौर की तुलना की है।[5]

गौरी पूजा के गीतो को दो भागो म विभाजित किया जा सकता है—एक, कुमारी कन्याओ के गीत और दूसरे, विवाहित स्त्रिया के गीत।

(क) कुमारी कन्याओ के गीत—गौरी पूजा के अवसर पर स्त्रिया एव बालिकाए फूल लेने जाते समय गीत गाती हुई जाती है। रात्रि को भी गौरी एव शिवजी की मूर्तियो के सम्मुख गीत गाती हैं। कन्याए 'घूमर' नृत्य का भी आयोजन करती हैं। एक राजस्थानी गीत देखिए, जिसके पहले भाग मे कन्याए वर के गुण बताती हुई कहती है कि ऐसा वर देना—

मेडी बैठो मद पीवे ए, लीली केरो असवार
सागी बाघे पागडी ए, मयरी चाले चाल

दूसरे भाग मे कहती हैं कि—

ऐसे वर से तो बचना—
चूल्हे केरो चादणो ए, हाडी को हमीर

---

1 राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 53
2. राजस्थानी लोकगीत, पृ० 130
3 मरुभारती अक्टूबर, 1956, पृ० 54
4 कल्याण विशाक (स० 1990) म झाबर मल्ल शर्मा जी का लेख "राजस्थान का गणगौर—पूजन'
5 एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, पृ० 665

नौ थाळा पीवै रावडी ए, सोला रोटी खाय
बो वर टालो माता गौरल ए, म्हे थाने पूजण आय ।[1]

एक गुजराती गीत मे बालिका अपने काल्पनिक विवाह का उल्लेख करती हुई देवताओं से प्रार्थना करती है कि हे गौरी मा, मैं तुम्हारे और गणेश जी के पांव लगती हू और सरस्वती का स्मरण करती हू। हे गौरी मा ! मेरे पिता ने धन देखा, मा ने आभूषण देखा। मेरी अवस्था सोलह वर्ष की है और बूढे (वर) की अस्सी वर्ष की। मेरे अभी दूधिया दात हैं और बूढे के दात सब गिर चुके हैं। मेरे केश अभी काले है किन्तु बूढे के सब सफेद हो गए हैं। हे गौरी मा, मुझे आशीर्वाद दीजिए मेरा जीवन तो जहर हो गया है। इस पर गौरी मा उसको आशीर्वाद भी देती है जिससे उसकी जोडी शोभायुक्त हो गई।[2]

एक अन्य गीत मे राजस्थानी कुमारियो की भाति ही गुजराती कुमारियो के भी गौरी पूजन के लिए जान का वर्णन है, यथा—

पहले ते पोळमा पेसता सामी मळी कुवारिका चार रे।
चारे ना हाथ मा कचावटी, जाणे गोर्यो पूजवा जायरे।[3]

एक राजस्थानी लोकगीत मे गौरी का नख शिख वर्णन किया गया है, नारी के विभिन्न अगो के लिए लोकगायक न जो उपमान यहा चुने है, वे उसके अपने परिवेश से लिये गए हैं, गौरी की नाक तोते की चोच जैसी है, उसका पेट पीपल के पत्ते जैसा है और उसकी अगुलिया मूगफली जैसी है, उसकी बाह चम्पे की डाल जैसी है, यथा—

हो जी थोरा पेट पीपल केरो पान
मूगफली सी गवरल आगली,
हो जी थोरी बाह चपा केरी डाल।[4]

एक अन्य गीत मे लोक गायक ने हाथ की अगुलिया को चोलामूग की फलिया की नाक को दीपशिखा की और पेट को पूर्णिमा के चन्द्रमा की उपमा दी है—

तारा नाको डानी दाडी रे,
जाणे दीवे सेजू (शिखा) माडी रे।
तारा पेट तो फादो रे,
जाणे ऊग्यो पोनेम नो चादो रे।[5]

---

1 राजस्थान के लोकगीत—स० सय, पृ० 45

2 गोरमा, अम ने दयो आशिष, जीवतर झर थया रे लोल।
गोरमाये दीधां छे वरदान, जोड बनी शोभती रे लोल।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 173

3 गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 10

4 राजस्थान के लोकगीत—स० सय, पृ० 39

5 गु० लो० सा० मा० (भाग 6), पृ० 206

और ऊटों की दौड भी होती है। इस सम्बन्ध मे एक कहावत भी प्रचलित है—

गणगोरियां इ घोड़ा न दौड़ेला तो दौड़ेला कद।

गणगौर त्योहारों की शृंखला की अन्तिम कड़ी है अत इस सम्बन्ध मे भी कहावत है—

तीज त्युहारा बावड़ी, ले डूबी गणगौर।[1]

डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल ने लिखा है—' शीतलाष्टमी के दूसरे दिन से सायकाल को बनौरी निकलती है। प्रत्येक टोली या झुण्ड मे कितनी लड़कियां सम्मिलित रहती है, वे सभी बारी-बारी से अपने घर गणगौर ले जाकर बनौरी' (शोभायात्रा) निकालती है। बनौरी मे गेहू या जौ की गूगरी बनाकर, घी-खाण्ड डालकर गवर' को जिमाते है और मिठाई व बताशों से गवर का खोला (गोद) भरके सब लडकियों को बाटा जाता है।[2]

श्री झाबर मल्ल शर्मा ने लिखा है— सामाजिक जीवन के प्रतीक इस त्योहार का सारे राजस्थान मे समान रूप से प्रचार है। भूतपूर्व राज्यो की राजधानियों म केवल बूदी ही ऐसी राजधानी रही है जहा राव बुधसिंह जी के भाई राव जोधसिंह गणगौर त्योहार के दिन नौका सहित तालाब म डूब गए थे, तब वहा यह उत्सव मानाया जाना बन्द हो गया।[3] 'हाडो के डूब्यो गणगौर' राजस्थानी कहावत उसी दुर्घटना की सूचक है।[4]

कर्नल जेम्स टोड ने गौर-मेले का बडा सुन्दर वर्णन किया है। उन्होंने यूनान की 'डियाना' और प्राचीन मिस्र की 'इसिस' से गणगौर की तुलना की है।[5]

गौरी पूजा के गीतो को दो भागो म विभाजित किया जा सकता है—एक, कुमारी कन्याओ के गीत और दूसरे विवाहित स्त्रिया के गीत।

(क) कुमारी कन्याओं के गीत—गौरी पूजा के अवसर पर स्त्रिया एव बालिकाए फूल लेने जाते समय गीत गाती हुई जाती है। रात्रि को भी गौरी एव शिवजी की मूर्तियो के सम्मुख गीत गाती है। कन्याए 'घूमर' नृत्य का भी आयोजन करती है। एक राजस्थानी गीत देखिए, जिसके पहले भाग म कन्याए वर के गुण बताती हुई कहती है कि ऐसा वर देना—

मेडी बैठो मद पीवे ए, लीली केरो असवार
सांगी बाधे पागडी ए, मघरी चाले चाल

दूसरे भाग मे कहती है कि—

ऐसे वर से तो बचना—
चुल्हे केरो चादणो ए, हाडी को हमीर

---

1 राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 53
2 राजस्थानी लोकगीत, पृ० 130
3 मरुभारती अक्टूबर, 1956, पृ० 54
4 कल्याण तिथांक (स० 1990) में झाबर मल्ल शर्मा जी का लेख 'राजस्थान का गणगौर—पूजन'
5 एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, पृ० 665

नौ थाळा पीवे रावडी ए, सोला रोटी खाय
वो वर टालो माता गौरल ए, म्हे थाने पूजण आय।[1]

एक गुजराती गीत मे बालिका अपने काल्पनिक विवाह का उल्लेख करती हुई देवताओ से प्रार्थना करती है कि हे गौरी मा, मैं तुम्हारे और गणेश जी के पाव [illegible] हू और सरस्वती का स्मरण करती हू। हे गौरी मा ! मेरे पिता ने धन देखा, मा ने [illegible] देखा। मेरी अवस्था सोलह वर्ष की है और बूढे (वर) की अस्सी वर्ष की। मेरे [illegible] दूधिया दांत हैं और बूढे के दात सब गिर चुके हैं। मेरे केश अभी [illegible] हैं किन्तु बूढे के सब सफेद हो गए हैं। हे गौरी मां, मुझे आशीर्वाद दीजिए, मेरा जीवन तो [illegible] है। इस पर गौरी मा उसको आशीर्वाद भी देती है जिससे उसकी जोडी [illegible] हो गई।[2]

एक अन्य गीत मे राजस्थानी कुमारियो की भाति ही गुजराती कुमारियों के [illegible] गौरी पूजन के लिए जाने का वर्णन है, यथा—

पहले ते पोळमा पेसता, सामी भळी कुवारिका चार रे।
चारे ना हाथ मा कचावटी, जाणे गोर्यो पूजवा जायरे।[3]

एक राजस्थानी लोकगीत मे गौरी का नख शिख वर्णन किया गया है [illegible] के विभिन्न अगो के लिए लोकगायक ने जो उपमान यहा चुने हैं, वे [illegible] से लिये गए हैं, गौरी की नाक तोते की चोच जैसी है, उसका पेट पीपल के पत्ते [illegible] है [illegible] उसकी अगुलियां मूगफली जैसी है, उसकी बाह चम्पे की डाल जैसी है, यथा—

हो जी वीरा पेट पीपल केरो पान
मूगफली सी गवरल आगली,
हो जी वीरी बाह चपा केरी डाल।[4]

एक अन्य गीत मे लोक गायक ने हाथ की अगुलियो को [illegible] की [illegible] की नाक को दीपशिखा की और पेट को पूर्णिमा के चन्द्रमा की [illegible] है—

तारा नाको दानो दाडो रे,
जाणे दीवे सेजू (शिखा) माडी रे।
तारा पेट तो फाटो रे,
जाणे ऊग्यो पोनेम नो चादो रे।[5]

---

1 राजस्थान के लोकगीत—स० वेद, पृ० 45
2 गोरमा, अम ने दयो आशिष, जीवतर [illegible] रे [illegible]।
गोरमाये दीधां छे वरदान, जोड बनी [illegible] रे [illegible]।
—गु० लो० सा० मा० (मणु 5), पृ० 173
3 गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 10
4 राजस्थान के लोकगीत—स० वेद, पृ० 33
5 गु० लो० सा० मा० (भाग 6) पृ० 206

(ख) विवाहित स्त्रियों के गीत—विवाहित स्त्रियां भी सुहाग रक्षार्थ गौरी पूजा करती हैं। राजस्थानी महिलाओं को गौरी पूजा का विशेष चाव होता है। एक राजस्थानी गीत में एक स्त्री अपने पति को गणगौर पूजने देने का मधुर आग्रह करती है—

> खेलण द्यो गणगौर भवर म्हाने पूजण द्यो गणगौर ।
> जो म्हारी नणद रा वीर, म्हाने रमणे द्यो गणगौर ।[1]

एक दूसरे गीत मे प्रवास जाने वाले पति से पत्नी अनुरोध करती है कि आप गणगौर के अवसर पर यहा ही रहिए, आपके बिना मुझे गणगौर कौन खेलाएगा? यथा—

> म्हारी लाल नणद रा वीर ।
> म्हाने कुण खेला वे गणगौर ?[2]

प्रवासी पति से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह गणगौर के त्योहार पर घर लौट आए। जब पति गणगौर के बाद घर जाता है तो नायिका खीझ करके अपनी सास से कहती है कि गणगौर निकल गई तब तुम्हारा पुत्र आया, अरे यह मोल्या (स्त्रैण-पुरुष) गणगौर निकलने के बाद आया है—

> निकल गई गणगौर, सासू थारो जायो मोडो आयो ए।
> निकल गई गणगौर, मोल्यो मोडो आयो ए ।[3]

एक गुजराती गीत में तुलसी से उसकी सहेलियां जब यह पूछती है कि तुम्हे मनोनुकूल वर कैसे मिला तब वह उत्तर देती है कि मैंने चैत्र मास मे गौरी-पूजन किया, बैशाख मास मे वट वृक्ष सीचा, और बहुत जप किया, अत मुझे 'सालिगराम' वर मिले, यथा—

> सहेल्या, पूछे, हे म्हारी तुळछा, इसो जप कद कीनो हो राम ?
> चैत महीन गवरल पूजी, वैसाखा वड सीच्यो हो राम ।
> इतरा जप तुळछा जपिया जद, साळगराम जी वर पायो हो राम ।[4]

एक गुजराती गीत मे शिव-पार्वती के द्वारा मदिर मे खेलने का उल्लेख है, यथा—

> रमे पारवतीनो कथ, राय जादवा,
> शिवना मदिरियामां कौण रमे रे ?[5]

---

1 राजस्थानी लोकगीत—सम्पादक गया प्रसाद कमठान, पृ० 13
2 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ० 36
3 संकलित
4 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 56
5. वही (भाग 6), पृ० 49

गौरी पूजा के गुजराती गीतों में प्राय: शिव-पार्वती के वैवाहिक जीवन का विशद चित्रण देखने को मिलता है।[1]

उपर्युक्त गीतों के विवेचन से यह स्पष्ट है कि राजस्थान एवं गुजरात में गौरी-पूजन की प्रथा है। हां, राजस्थान में गणगौर का त्योहार जिस धूमधाम से मनाया जाता है, वैसा गुजरात में नहीं, किन्तु पूजन एवं शिव-पार्वती के प्रति श्रद्धा दोनों प्रान्तों के गीतों में व्यक्त की गई है।

(6) सावन की तीज

राजस्थान का यह 'तीज' त्योहार प्रादेशिक त्योहार है। ताप तप्त पृथ्वी जब पावस ऋतु में शस्य श्यामला हो जाती है, तब मानव-मन मयूर की तरह नृत्य करने लगता है। श्रावण एवं भाद्रपद के महीनों में क्रमश छोटी व बड़ी तीज के त्योहार मनाए जाते हैं। विवाह के उपरान्त नव-विवाहिताएं प्राय प्रथम फाल्गुन एवं प्रथम श्रावण मास पीहर में ही बिताती हैं। पीहर में एकत्र वे सभी नव-विवाहिताएं एवं नव-यौवनाएं श्रावण मास में झूले झूलती है, गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं।

एक गीत में नायिका अपनी मा से हींदा (झूला) डलवा देने का आग्रह करती है—

> ए मां, चम्पा बाग में हीदो घला दे, तीज नवेली आई।
> ए मा, और सहेल्या रे घर हीदो, म्हारे हीदो नाई।[2]

नायिका की प्रार्थना पर झूला डलवा दिया गया। उस पर सभी देवी-देवता झूला झूलते हैं। यह झूला रेशम की डोर से बधा हुआ है। सूरज जी की पत्नी रानी रेणादे झूला झूलने बैठी है, पृथ्वी उनके भार को झेल नहीं पा रही है। तभी सूरज ने हिलोरा दिया और झूला गिरनार जा पहुचा—

> बन खड में, हिंदो बदायो, रेशम की डोर जी।
> राणी रेणा दे हीदण बैठ्या, धरती न झेले भार जी
> सूरज ले ललकारो दीधो, ओ हिंदो गयो गिरनार जी।[3]

गीत में इसी प्रकार सभी देवताओं की पत्नियों के झूला झूलने और देवताओं के हिलोरा देने का वर्णन किया गया है।

इस तीज के अवसर पर जिस नव-वधू को पीहर वाले नहीं ले जा पाये, वह एक गीत से ससुराल के कष्टों का वर्णन कर रही है। 'सावन मास' में मा ने उसको ससुराल में रहने दिया। जब सास उसको कष्ट देती है, जब अन्य सखियां खेलने जाती उसको सास ने पीसना पीसने को दिया है, यथा—

आयो-आयो मा सावणियो रो मास।
मैंने मेले मा सासरेजी ।
और सहेली, मां, खिलण-मिलण न जाय।
मैंने दीनो मा पीसणो जी ।[1]

उसकी वेदना उस समय और अधिक बढ जाती है जब उसकी सखिया उससे आकर यह पूछती हैं कि सावन आ गया तुम कब पीहर जाओगी? वह बेचारी परतंत्र नारी क्या उत्तर दे? उसकी आखें भर आती हैं और हृदय उमड जाता है, यथा—

क्या-क्या देवू मैं बाने जवाब,
नेण भरे हिवडो उलसे जी राज ।[2]

प्रवासी-पति इस तीज त्यौहार पर अवश्य घर लौट आते है किन्तु जो नही आ सके उनकी विरहणी पत्निया उन्हे उपालम्भ देती हैं—

होली न गणगोरियो, न आयो तीज्यां ।
मिले न म्हारो सायबो, थोसबो दीज्यो।

यो राजस्थानी नायिका प्रवास के लिए तत्पर अपने पति से तीज-त्यौहार पर वापस लौट आने के लिए अपनी शपथ खिलाकर उसे वचनबद्ध करके ही जाने देती है, यथा—

थें म्हारे आज्यो सायबा, म्हारी सो तीजा री रात ।

और वचनबद्ध प्रवासी पति जब सावन की तीज पर घर नही आता है, तो प्रतीक्षारत नारी की व्यथा बहुत बढ जाती है—

सावण आवण कह गया, कर गया कोल अनेक।
गिणता-गिणता घिस गई, म्हारी आंगलियां री रेख ।[3]

वह वियोगिनी कोयल के माध्यम से पहली तीज पर अपने प्रवासी पति को घर आने का आमत्रण प्रेषित करती है—

जो डाल बैठी कोयलडी, यू बयू न टेऊको मारे।
जाय ढोला जी ने यू कहिजे, पहली तीज पधारे।

वह कहती है कि सावन मास मे बेलें वृक्षो से लिपट जाती हैं और सहेलिया तीज खेलती हैं तो वह अकेली कैसे रहे? वह अपनी सखियों से पूछती है कि उसके प्रियतम कब आयेंगे? यथा—

1. राजस्थान के लोकगीत—म० तय, पृ० 68
2. वही पृ० 71
3. राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 87

वन मे लिपटी तरु बेली, सावण रमे है तीज सहेली।
अब रह्यो वयू जाय अकेली, म्हारो कंत आसी कद हेली ?

इतना ही नही, वह आगे कहती है कि यदि सावन की पहली तीज पर उसका प्रियतम नहीं आया तो वह बिजली की चमक के साथ-साथ खीझ कर मर जाएगी—

जो तू सायबा न आवसी, सावण पेली तीज।
बीजल तई झबूरडी, धण मर जावे खीज।

वह अपने प्रियम के स्नेह को भी चुनौती देती हुई आगे कहती है कि यदि मूसलाधार वर्षा मे भीगी पगडी से आओगे तो तुम्हारे स्नेह को समझूगी यथा—

आज धरा दिस उमग्यो, मोटी छाटा मेह।
भीगो पागा पधारज्यो, जद जाणूली नेह।

अत मे वह कहती है कि तीज पर घर-घर मे सुन्दर युवतिया मगलगीत गाती हैं। हे कत ! इस त्योहार पर चूकना मत। यथा—

घर-घर घणी गोरडी, गावें मगलाचार।
कता मतना चुकज्यो तीज्या तणो तिंवार।[1]

इस प्रकार तीज त्योहार के इन गीतो मे नारी हृदय की विभिन्न कोमल अनुभूतिया अभिव्यक्त हुई हैं।

(7) रक्षा बन्धन

सावन मास मे ही रक्षा-बन्धन का त्योहार आता है और बहिन भाई के हाथ मे राखी (रक्षा सूत्र) बाधकर उसको अपनी रक्षा करने के लिए वचनबद्ध करती है। श्रावण मास के आते ही बहिन अपन भाई की ससुराल मे प्रतीक्षा करती है और कल्पना करती है कि उसका भाई रथ जोतकर उसे लेने आएगा, यथा—

आवेलो बीरो बाई रे पावणो
लावेलो भाई ने रथ जुताय, म्हारा मोरिया०[2]

भाई की प्रतीक्षा म बहिन 'काले काग' उडाकर शकुन मनाती है—

उड रे म्हारा काला कागा, जे म्हारो बीरो जी आवे राज।[3]

जब भाई लेन आ पहुचा तो बहिन भाई से मिलने के लिए इतनी तेजी से उठी कि उसका हार टूट गया। वह कहती है कि हार तो फिर पिरोया जाएगा, किन्तु भाई

1 राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 92
2 राजस्थान के लोकगीत—सं० सर, पृ० 62
3 वही, पृ० 72

से मिलन का यह शुभ अवसर फिर कब आएगा—

> उठी थी बीर मिलण न, टूट्यो बाई रो हार राज।
> हार तो फिर पोवास्या, बीरा सू कद मिलस्या राज॥

जब बहिन को उसके पति ने पीहर जाने की आज्ञा नहीं दी तब भाई निराश होकर लौटने लगा। उस समय जाते हुए भाई से बहिन कहती है कि भाई तुम अपना घोड़ा घड़ी भर के लिए रोक लो और मन की बातें तो कर लो—

> घड़ी एक थाम वीरा घोड़लो, करलो ना मनड़े री बात।[1]

भाई के अतिरिक्त वह मन की बात करे भी तो किससे?

(8) दीपावली

राजस्थान गुजरात में दीपावली का त्योहार समान रूप से मनाया जाता है। इस अवसर पर अनेक गीत भी गाए जाते हैं। दीपावली के दिन घरों की सफाई कर आगन को रंगोली से चित्रित करके संध्या समय दीप सजोए जाते हैं जिनकी, ज्योति से ग्राम-नगर जगमगाने लगते हैं।

संध्या समय लक्ष्मी पूजा के उपरान्त स्त्रियां आंगन में बैठकर गीत गाती हैं। पुरुष एवं बालक हीड अथवा लोकडी या हरणी गान निकल पड़ते हैं। दीपावली के अवसर पर गाए जाने वाले इन गीतों को सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—एक स्त्रियों के गीत और दूसरे बालकों व पुरुषों के हीड गीत।

(क) स्त्रियों के गीत—दीपावली के अवसर पर ससुराल में आए जवाई व नणदोई को सम्बोधित करके स्त्रियां गीत गाती हैं। एक राजस्थानी गीत में नणदोई जी से सहलजें कहती हैं कि मेरी नणदल सुरगी है और नणदोई जी की बातें भी सुरगी हैं प्रियतम का प्रेम रूपी तेल उस दीपक में सारी रात जलता है यथा—

> सुरग म्हारी नणदल, नणदोई री बाता।
> पिया जी रो हेत जळे जी सारी राता।

ऐसे दीपक सारी रात जलने की कामना भी वे करती हैं—

> बळजे म्हारा दीवला रे सारी रात, थारी मजल बाट,
> बळजे म्हारा दीवला रे सारी रात।[2]

एक ऐसा ही गुजराती गीत प्रस्तुत है, जिसमें जमाई से कहा गया है कि हे जवाई! जीमते जाओ। काल में कौर डालता जा। कांख में साप है, वह तो बड़ी भाभी का बाप है, यथा—

---

1 राजस्थान के लोकगीत पृ० 81

2 राजस्थान के त्योहार गीत—परिशिष्ट गीत सं० 7

छोकरी छोकरी दीवाळी, दीवाळी, सोनानी घाघरी सीवाडी सीवाडी
लेरे जमादडा जमतो जा, जमतो जा, कारखमा कोळीमो घालतो जा,
घालतो जा।
काख मां तो छाप छे, माप छे बडी भाभी नो वा छे, बाप छे, ।[1]

गीत में केवल हास्य-विनोद मात्र है, अर्थगांभीर्य का अभाव है। दीवाली पर यदि प्रवासी लौटकर घर न आए तो फिर दीवाली कैसी,

अतः राजस्थानी वियोगिनी नायिका अपने प्रियतम को दीवाली घर पर ही मनाने का आग्रह करती है—

काई देश रावा री मुजरो,
दीवाल्या घर री करज्यो जी ढोला।[2]

गुजराती विरहणी नायिका भी दीपावली के अवसर पर प्रियतम को महलों में पधारने का अनुरोध करती है—

आसो मासे आवी दीवाली रे।
प्रभु जी महोले पधारो रे।[3]

दीपावली के दिन विदेश गमन करने वाले पति से एक गुजराती नायिका रुकने का भी आग्रह करती है—

के अमोवसे गाम न चाली अे रे।
अमावसे रे राजा दिवाली नो दी डो,
के घेर-घेर दीवा परगटिया।[4]

संयोगिनी नायिकाओं की स्थिति इस अवसर पर दूसरी है। वे सुन्दर दीपक जलाकर और उन्हें थाल में सजाकर अपने रंग महल में जा रही हैं—

चांदी रा थाल मेल म्हारो दीवलो, रंग मे'ल में जास्या जी।[5]

(ख) बालकों व पुरुषों के होड़ गीत—राजस्थानी हीड, हरणी या लोवडी गीतों के विभिन्न रूप उपलब्ध होते हैं। इन गीतों में बालबुद्धि का सहज रूप प्रकट हुआ—

अम्बो निपज्यो भाई मालवे रे, डाल लगी गुजरात।
फल लागा भाई दुवारका रे, धाग्यो बदरीनाथ।
सल्हा सामजादी लोडी।[6]

---

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 54
2 राजस्थानी लोकगीत—सं० रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 249
4 वही, पृ० 250
5 राजस्थानी लोकगीत—सं० जगदीश सिंह गहलोत, पृ० ।
6 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 48

(2) हीड ले रे हिडोल्या पाले-पाले घूमेल्या ।
बीकानेर की चुडकलीकाते नाच्यो हूत ।
सूत लेरे लावोरिया, नरखे मा जन लोग ।[1]
(अजमेर जिले का हीड गीत)

(3) दुश्मन हो तो मार धू रे तूली की तरवार ।
आओ हिडिया रे ! हिडिया रे ! हिडिया गाव की गौर ।[2]
(नागौर जिले मे गाया जाने वाला हीड गीत)

उक्त हीड गीतो मे अर्थ खोजना व्यर्थ है । दिपावली के अवसर पर बच्चे लकडी के एक डण्डे के छोर पर एक बडे दीपक को बाध करके उसे तेल व बिनौली द्वारा प्रज्वलित करके प्रत्येक घर के सामने उक्त गीत गाते हुए जब पहुचते हैं, तब उन्हे अन्न-मिठाई आदि देकर विदा किया जाता है । इन हीड गीतो का उल्लख गुजराती गीतो मे देखने को नही मिला । राजस्थान मे भी ये गीत सर्वत्र नही गाये जाते हैं ।

राजस्थान मे दीपावली पर गाए जाने वाले पुरुष गीतो को भी हीड या हिंडोले[3] कहा जाता है । एक उदाहरण देखिए—

हे हिंडोळ दीयाळी रो,
जे पूजसा हे अमाबस री हो हा रे रात,
कुण तो सपूती दीवलो सीचियो,
औ तो जगियो सारी रात ।
थाळो तो भैंसो म्हे भारसा, अमावस री हो रे रात ।[4]

मेवाड अर्थात् दक्षिणी राजस्थान मे 'बगडावत' नामक लोक-गाथा के अश हीड के रूप मे गाए जाते हैं ।[5]

(9) तुलसी पूजा

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष मे तुलसी पूजा की जाती है । बालिकाए एव स्त्रिया तीन दिन तक तुलसी-पूजन करती है और व्रत रखती हैं । व्रत की समाप्ति पर तुलसी और शालिगराम का विवाह करवाया जाता है और श्रद्धानुसार दान पुण्य भी किया जाता है ।[6] 'तुलसी पूजा' राजस्थान अथवा गुजरात तक ही सीमित नही है, किन्तु प्राय. समस्त भारत मे समान रूप से मनाई जाती है । श्री वसन्त जोधाणी ने लिखा है—

1 राजस्थान के त्योहार गीत—दीवाली के गीत, स० 4
2 स्वय द्वारा सकलित
3. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 120
4. वही, पृ० 120
5 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 105 से 119
6. राजस्थान के त्योहार गीत, पृ० 104

'तुलसी का पौधा भारत मे पवित्र माना जाता है। कितनी ही पौराणिक कथाओ से इसका सम्बन्ध है। शालिगराम और तुलसी को पति-पत्नी के रूप में पूजनीय माना जाता है।[1]

राजस्थान और गुजरात मे तुलसी पूजन का त्योहार समान रूप से मनाया जाता है। तुलसी के विवाह से सबधित गीतों में भी अद्भुत साम्य है। एक राजस्थानी गीत के अनुसार तुलसी सात सखियो के साथ यमुना नदी पानी भरने गई उस समय सखियो ने ध्यान किया कि तुलसी तो अभी कुवारी है। इसी बात पर तुलसी के पिता ने तुलसी के विवाह की तैयारी की और कृष्ण के साथ उसका विवाह निश्चित किया, यथा—

सात सहेली पाणीढे ने नीकळी,
सातू अक उणिहारे हो राम,
भरण गई जल जमना को पाणी।[2]

ठीक यही बात गुजराती गीत मे भी मिलती है, यथा—

काशीनी वाटे करशन जी कंवारा,
त्यां अेना सगपण करजो हो राम,
पाणीडा ज्या ता रामनी वाडीये।[3]

तुलसी का यह त्योहार प्रमुख रूप से स्त्रियो का त्योहार है। इस अवसर पर तुलसी-विवाह के विभिन्न गीतो के साथ विवाह के अन्य गीत भी गाए जाते हैं।

(10) नवरात्रि

चैत्र और आसोज मे शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी तक नवरात्रि पूजन होता है। कही-कही देवी को बलि दी जाती है। प्रत्येक गांव नगर में अष्टमी के दिन देवी के मंदिरो मे मेले लगते हैं। राजस्थान मे इस अवसर पर वही गीत गाए जाते हैं जिनका माता शीर्षक के अन्तर्गत विवेचन किया जा चुका है। गुजरात मे इस समय न केवल देवी के गीत गाए जाते हैं किन्तु 'गरबा' नृत्य का आयोजन भी किया जाता है। वहा एक छिद्रयुक्त घडे मे दीप जला दिया जाता है और उस घडे के चारो ओर वृत्त मे घूमती हुई स्त्रिया ताली बजाती हुई गीत गाती है, इसी को गरबा नृत्य कहते हैं। गीतो के माध्यम से माता गरबा खेलने के लिए शीघ्र आने का अनुराध किया जाता है, यथा—

अरे! माता! गरबे रमवा वेला आव रे,
जोगमा नागर वेलमा रे लोल।[4]

---

1. स्त्री जीवन—नवम्बर, 1970, पृ० 41-42
2. राजस्थान के लोकगीत, स० सय, गीत सख्या 11
3. तुलसी विवाहना लोकगीतो, पृ० 97
4. गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 100

इसके अतिरिक्त सखी सहेलियों को भी 'गरबा' के लिए बुलाया जाता है—

वया भाईनी गोरी,
समे गरबे रमवा आवो, हा नद लाल जो ।[1]

एक गीत मे पूनम की रात्रि मे 'गरबा' नाचती स्त्री से कहा जा रहा है कि हे गोरी, तुम ताली धीरे देना, तुम्हारे हाथों की हथेली में दर्द होगा। हे गोरी ! तुम धीरे-धीरे चक्कर लगाना, तुम्हारे हीर का चीर फट जाएगा—

गोरी रे मोरी ! हळवी ताळी पाड जो,
हाथोनी हथेळी रे गोरी तारी दु खशे रे लोल।
गोरी रे मोरी । हळवा फेरा फर जो,
हीरना चीर रे गोरी ! तार ! फाटशे र लोल।[2]

(11) देदा कूटना

कुछ त्योहार पर्व तो सार्वदेशिक होते हैं जो लगभग सभी प्रान्तों मे मनाए जाते हैं, किन्तु कुछ त्योहार स्थानीय होते हैं जो किसी प्रान्त विशेष अथवा जाति विशेष तक ही सीमित रहते हैं। गुजरात का देदा कूटना पर्व भी स्थानीय पर्व कहा जा सकता है। जो विशेषकर बालिकाओ का त्योहार है। प्रो० पुष्कर चन्दरवाकर ने देदा का परिचय इस प्रकार दिया है।

देदा-कूटने का रिवाज ग्राम-सस्कृति का एक महत्वपूर्ण अग है। ज्येष्ठ मास के चारों इतवार छोटी बालिकाए नदी के तीर पर अथवा तालाब क किनारे सध्या वेला म देदा-कूटने जाती हैं। गाव के रहावन म जो किसी वीर पुरुष का स्मृति स्तम्भ (खाभी) पर जाकर के बालिकाए देदा कूटती हैं।

इस रिवाज के पीछे ससार के एक व्यवहार की शिक्षा देने की दृष्टि है। गावो मे अभी भी मृत्यु के उपरान्त रोने कूटने का रिवाज टिका हुआ है। वहा स्त्रियो को रोने-कूटने की आवश्यकता पडती है, और इसकी शिक्षा स्त्रियो को गावो मे ठीक बाल्यकाल मे देदा-कूटने के रिवाज मे मिलती है।

यह देदा कौन है ? इस देदा का मूल सौराष्ट्र के इतिहास मे मिलता है। भरूच मे भी ददवण राजकर्त्ताओं का वश होन का श्री के० का० शास्त्री ने उल्लेख करते हुए लिखा है—सौराष्ट्र के इतिहास मे दो युवक देदाओ के कत्ल किए जाने का उल्लेख मिलता है। एक मारा गया झालाओ के हाथ मे जावु मे और दूसरा मारा गया गोहेल के हाथो लाठी मे, इसी पर देदाओ के गीतो म यह पक्ति मिलती है—

देदो मरायो लाठी ना चोकमा।[3]

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 150
2. वही, पृ० 191 192
3. वही, पृ० 290

संक्षेप में देदा का यही परिचय है कि ये दो वीर मारे गये थे जिनके मरने के कारण बालिकाएं रोती हैं और रोने के साथ-साथ छाती भी कूटती हैं। इसी को देदा कहा जाता है।

मीढळवध वाली लड़ाई में 'लाठी चौक' में देदा मारा गया था। उसको स्मरण कर-करके ये बालिकाएं छाती कूटती हैं अथवा कूटना सीखती हैं।[1] आजकल लाठी में उनके नाम की एक गली भी है। गुजरात में मृत्यु गीत अक्सर स्त्रियों द्वारा गाए जाते हैं। इन गीतों को 'देदा' के माध्यम से वे बाल्यकाल में ही सीख लेती हैं। इन देदाओं का कत्ल धोखे से हुआ था, अतः इनकी स्मृति को ताजा रखने के लिए यह पर्व मनाया जाता है।

श्री चंदरवाकर जी ने देदा से सम्बन्धित दस गीतों को उद्धृत किया है। एक गीत में देदा से कहा जाता है कि देदा! प्रतिपदा या पड़वा का तो हाली हागी तुम एक घड़ी के लिए पालकी रोक लो।

देदा, पडवे ते होळी पडवो होय रे, देदमल
घडीक राखो ने पालखी, हाय देदा ने हाय।[2]

इस गीत में प्रत्येक तिथि को कोई न कोई त्योहार होने के कारण देदा से पालकी (जीवन की प्रतीक) रोकने का आग्रह किया जाता है।

देदा के इन गीतों में देदा से सम्बन्धित लोरियां भी हैं। एक गीत के अनुसार मकवाणा के खेत में सुन्दर झूला है जिसमें झालर लगी है और झूलाने के लिए हीर की डोरी है। चवा (बालक देदा) पालने में सोया हुआ है। कौन लोरी गाएगा चिड़िया लोरी गाएगी।[3]

लोरी के अतिरिक्त देदा के विवाह की कल्पना करके उसको गालियां भी गाई जाती हैं। एक गीत में कहा गया है कि राजा राम की तलावड़ी में मछली लौट रही है। जिस प्रकार मछली जल में लौटती है, उसी प्रकार पूड़ी (देदा की पत्नी) भी लौटती है। जैसा मछली का रूप है वैसा ही पूड़ी का रूप है और जैसी मछली की गन्ध है वैसी ही पूड़ी की भी गंध है।[4]

इस प्रकार देदा से सबंधित गीतों में जो केवल मृत्यु ही नहीं, देदा के जन्म एवं विवाह आदि का भी वर्णन होता है। ऐसा कोई त्योहार राजस्थान में नहीं मनाया जाता।

---

1 सोराष्ट्र नो इतिहास, पृ० 191
2 गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 290
3. चकलो हालो हाय, दोरी हीर नो रे।
   चोंट मारा दीट्या, दोरी हीर नो रे।

   —गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 295
4. जेवो माछली गंधाय, तेवी, पू डी गंधाय।
   राजा राम नी तलावडी मां माछली रोलाय।

   —गु० लो० सा० मा० (भाग 1) पृ० 295

(12) गोधी बावो

'देदा-कूटना' पर्व के समान ही 'गोधी बावो' भी गुजरात का प्रान्तीय पर्व है। यह राठवाकोळी नामक आदिवासी जाति का उत्सव है। आमरोली एवं गढबोरियाद नामक जिले(गुजरात)में निवास करने वाली राठवाकोळियों का यह मुख्य सामूहिक त्योहार है। इसका परिचय देते हुए सुश्री रेवा बहन तडवी एवं श्री शकर भाई तडवी ने लिखा है—'बैठने वर्ष के दिन (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को) घर-घर से छाणे (कण्डे) लाकर गली के सिरे पर एकत्र किये जाते हैं। एक स्थान पर चावलों का स्वस्तिक चिन्हित करके उस पर छाणे डाले जाते हैं। इन छाणा का गोलाकार किन्तु ऊपर से चौरस ढेर बनाते हैं। इस ढेर पर गेरू से पश्चिमाभिमुख बाघ बनाया जाता है। आसपास में छाणा के पडा (ढेर पुजारी के रूप में) बनाए जाते हैं। पश्चिम की ओर मुह बनाया जाता है। इस बाघ के आस-पास घास के ऊपर ही ग्वाल एवं ग्वालिन बनाकर खड़े कर देते हैं। ग्वाले के सिर पर सफेद कपडा एवं ग्वालिनी के सिर पर लाल कपड़े की ओढ़नी ओढ़ा देते हैं। गोधी बावा के इर्द-गिर्द छाणा के चबूतरे पर दीवाली के दिवस पर जलाए मेराया रोप देते हैं। दीवाली के दिवस पर मेरायां फेंक नहीं देते हैं घर पर ले आते हैं। देव उठी एकादशी तक प्रतिदिन दीपक जलाते हैं। और प्रतिदिन एक-एक दातुन खोंस देते हैं।

ग्यारस की रात्रि को घर-घर से टोकरी एवं बधाई लेकर आते हैं। दीपक नीचे रख देते हैं। गोधी बाबा को उठाते हैं। जो छाणा का ढेर किया होता है उसको बिखेर देते हैं इसे गोधी बावा का उठा हुआ माना जाता है। बिखेरते-बिखेरते गोधी बाबा के गीत गाते हैं। गाते-गाते छाणा का पुतला बनाते हैं। जैसे कि बिल्ली, कुत्ता, चूहा, ऊट, हाड़ी, गोळी (मटकी) मथानी, लड्डू देवरां (खाने की चीज), सघौटा (गोली) आदि-आदि बनाते हुए सारे छाणे पूरे करते हैं। सुख गए छाणे गली के नुक्कड़ पर बिखेर देते हैं बाड़े में भी डालते हैं। पुतलों (प्रतिमाओं) आदि को अपने-अपने छप्पर ऊपर सुखाने के लिए रखते हैं और इन्हें होली पर होली में डाल देते हैं।

"बाद में जिस जगह गोधी बावो बनाया होता है उस जगह कडा के गोले जिनमें छेद किया हुआ रहता है, उनमें दूध डालते हैं। डालते समय जो दूध बचता है उस दूध को लेकर लड़के 'गोधा' (साड या बछड़ा) बन, ऊवा-ऊवा बोलते भागते हैं। दो स्त्रियां कडो के छूटे गोले मारती हैं। गोधा बनें हुए लडके द्वार पर जाकर दूध पी जाते हैं। उसके बाद गोधी बावा का लग्न हो इस प्रकार मानकर गीत गाते हैं। और धोरी-धोरण (ग्वाला-ग्वालिन) को द्वार तक छोड़ आते हैं।"[1]

सपादकों ने गोधी बावो के सग्रह गीत उद्धृत किए हैं। कुछ गीतों का यहा विवेचन किया जा रहा है। पहला गीत प्रश्नोत्तर शैली में है इसमें गोधी बावा से गोध-राणी पूछती है कि तुम कलियुग (ससार) में गए क्या लेकर आए? गोधी बाबा उत्तर

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 109

देते है चावल लाए और आधी कलशी भरदाल लाए ?[1] इसमें आगे भी अनेक प्रश्न पूछे जाते हैं और गोधी बाबा उनके उत्तर देते हैं।

यहां गोधी बाबा के विवाह की भी कल्पना की जाती है। उनसे पूछा जाता है कि तुम विवाह करने जा रहे हो, किस रीति से विवाह करोगे ? तुम छोटे से बालक हो तुम विवाह कैसे करोगे ? तुम अपने भाइयों एव काकाओ को साथ ले जाओ जिससे विवाह भली रीति से हो जाये।[2]

बारस के दिन प्रात उस जगह को लीप देते हैं जहा गोधी बाबा को बिठाया जाता है, वहा चावलो से स्वस्तिक चित्रित किया जाता है। घर-घर से खाने की सामग्री व दीपक लाकर वहा रखा जाता है। गोधी बाबा का मुह धुलवाया जाता है, दातुन करवाया जाता है। तत्पश्चात् विविध खाद्य सामग्री को लेकर उनके मुह के पास रखा जाता है। इस प्रकार गोधी बाबा को भोजन कराया जाता है। पूजा के बाद बालक लोग शेष खाद्य सामग्री को लेकर किसी कुए अथवा नदी के पास चले जाते हैं और वहा पर आपस मे वितरण करके खाते हैं। लौटते समय वे थालिया बजाते हुए और निम्न गीत गाते हुए आते हैं—

आज अमे थया गोधी ना आखला रे
आज अमे थया गोधी ना आखला रे।[3]

देवपोढ एकादशी से लेकर देव उठी एकादशी के बीच राठवा कोलियो मे गोबर को पाथते नही है, पापड-पापडी नही बनाते हैं और विवाह-बाजन (गाना-बजाना) आदि की बातें भी नही की जाती हैं।

'गोधी बावो' का यह त्योहार 'गोवर्धन पूजा' के त्योहार के समकक्ष माना जा सकता है, जो उत्तर प्रदेश मे विशेषकर ब्रजभूमि मे बड़े उत्साह से मनाया जाता है।

द्वितीय भाग

(2) राजस्थानी एवं गुजराती धर्म संबंधी लोकगीत

धर्म का प्रारंभिक व्यवस्थित स्वरूप, जो भी रहा हो, आज लोक जीवन मे धर्म का रूप बहुत ही अस्पष्ट हो गया है। वह अपने मूल से इतना दूर चला गया है कि आज

1. गोधी बावानी गोधराणी पूछे, कलजुग मे जथा तारे गोधो बाबा शु लाईवा।
   लाईवा रे लाईवा कलशी चोकलिया, अरधो कलशी दालसी रे।
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 110
2. सांघ रे तमारा भायो ने ले जो, के भली रीते पैंण जो।
   सांघ रे तमारा काको ने लई जो, के भली रीते पैंण जो।
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 113
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 114

उसका वास्तविक रूप पहचानने में बडी कठिनाई है। लोक-जीवन में आज धर्म की सत्ता बहु-देववाद के रूप में दिखाई देती है इसके अतिरिक्त अलौकिक-शक्तियों की उपासना, पूजा द्वारा रोगों का निवारण एवं अभीष्ट सिद्धि तथा व्रत-उपवास, भाग्यवाद, अन्धविश्वास आदि के रूप में ही धर्म रह गया है।

अत. धर्म सबधी लोकगीतों का विवेचन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है।

(क) देवी-देवताओं से सबधित लोकगीत

लोक-जीवन में देवता दो श्रेणी के हैं। एक तो पौराणिक देवता और दूसरे लोक देवता। पौराणिक देवताओं म गणेश, शिव-पार्वती, राम-सीता, कृष्ण-राधा, हनुमान, सरस्वती, दुर्गा, आदि हैं। लोक-देवता क्षेत्रीय हैं तथा इनका सम्बन्ध लोक-जीवन से ही है। अब यहा प्रमुख पौराणिक देवताओं से सबधित गीतों का विवेचन किया जा रहा है।

(1) गणेश

लोक-जीवन में किसी भी शुभ कार्य के आरभ में गणेश जी की स्तुति की जाती है, जिससे कार्य बिना विघ्न-बाधा के शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो। गणेश जी को रिद्धि-सिद्धि का दायक भी माना जाता है। एक राजस्थानी गीत में विवाह के अवसर पर गणेश जी को आमन्त्रित किया जा रहा है और उनसे प्रार्थना की जा रही है कि हे रिद्धि-सिद्धि के दाता, आप गढ़ रणथभोर से आइये और इस मगल कार्य को चिन्ता-रहित कीजिए—

गण रणत भवर सू आवो विनायक, करो नी अणचीती बिड़दड़ी।
बिड़द-विनाक दोनू जी आया, आय तो उतरिया हरियैबाग में।

गणेश जी भक्त की प्रार्थना सुनते ही उसके हरे बाग में आकर उतरे। फिर विवाह मडप में पहुच कर उन्होंने वर-वधू को आशीर्वाद दिया कि वधू पीपल की तरह बढ़े और नारगी की तरह फले, वधू की सुहाग-चुनरी और वर राजा का मगल-वानक (वेश) अक्षय रहे। यथा—

वधज्ये, ए लाडो बढ पीपल ज्यू, फलज्ये नीम-जमीर ज्यू।
लाडली रो चीर वधज्यो, रायवर रो वागो-मोलियो।[1]

गुजराती गीत में भी कहा गया है कि सर्वप्रथम गणेश जी की स्थापना करो। गणेश जी तोंद वाले है। इनके पेट का फादा (घेरा) बडा है। गणेश जी आप यह वरदान देना—

परथम गणेश बेसारो, रे, मारा गणेस दुदाळा।
गणेश दुदळा ने मोटी फांदाळा,
गणेश जी ! वरदान देजो रे मारा०

1. राजस्थान के लोकगीत—स० सम, पृ० 130

गीत मे अत मे कहा जाता है कि विवाह, सीमतोनयन एव यज्ञ मे भी सर्वप्रथम गणेश की स्थापना की जाती है—

वीणा, अघरणी ने जगन (यज्ञ) थनोई,
परथम गणेश बेसारू रे, मारा गणेश दुदाळा ।[1]

(2) सरस्वती

गणेश जी के साथ-साथ मा सरस्वती का भी पूजन किया जाता है। एक राजस्थानी गीत में सरस्वती से प्रार्थना की गई है कि वह भूले-चूके अक्षरों को हृदय मे रखे, यथा—

सवरू देवी सारदा, गुणेश थांन धाऊ ओ।
भूले-चूके आखर मारे हरदे राखी ओ।
देवी सारदा। न ओ देवी सारदा।
दाता रे माथे बैठी ओ! देवी सारदा।[2]

गुजराती गीत मे भी यही प्रार्थना की गई है—

समरू देवी शारदा, भवानी तन घ्यावु,
भूल्या चुक्या अगसर (अक्षर) अडघे (हृदय) राखू, देवी शारदा।
शारदा, पालीना वाह क्हू, देवी शारदा।[3]

स्वतिवचन और मगलाचरण के रूप मे, गणेश, सरस्वती, और भवानी की स्तुति वदना के गीत, सर्वप्रथम प्रस्तुत किए जाते हैं।

(3) शिव-पार्वती

शिव-पार्वती से सबधित कुछ गीतों का विवेचन इसी अध्याय मे 'गणगौर' त्योहार के अन्तर्गत किया जा चुका है। यहा दूसरे उदाहरण दिए जा रहे हैं। एक राजस्थानी गीत मे कैलाशवासी एकलिंग अवतार शिव जी की कैलाश पुरी की प्रशसा की जा रही है।

म्हारा एकलिंग अवतार, आछी थारी कैलाशपुरी
वे वाजेहे हिन्दुवाण, आछी थारी कैलाशपुरी
म्हारा पारवती भरतार, आछी थारी कैलाशपुरी।[4]

शिवजी के साथ पार्वती का उल्लेख लोक गीतो मे अवश्य होता है। एक गुजराती

---

1. चूदडी (भाग 1), पृ० 1 से 3
2. राजस्थान के त्योहार गीत—परिशिष्ट, पृ० 11, गीत स० 23
3. नवोढ़लको, पृ० 86
4 मरुभारती—जनवरी 1965, पृ० 12

गीत के अनुसार किसी स्त्री ने उतावली मे शिवजी के ऊपर हार चढा दिया। इससे पार्वती जी प्रसन्न हो गई और उन्होंने उसको हृदय का हार अर्थात् पुत्र दे दिया—

मा देव जाऊ उतावळी ने जई चडावु हार
पारवती परसन थया त्यारे आप्या हैया ना हार।[1]

शिव-पार्वती, लोकगीतों की धरती पर अपना देवत्व त्याग कर सामान्य-मानव का-सा व्यवहार करते है, एक राजस्थानी गीत मे पार्वती जी शिवजी को छप्पर वाला योगी कहती हैं, तो शिवजी कहते हैं कि मुझे सदा 'शिव' कहकर सम्बोधित किया करो—

छप्पर वालो महादेव जी जोगीडो।
गौरी ए जोगीडो-जोगीडो ना करिये।
सदा शिव कह वतलाया।[2]

इसी प्रकार एक गुजराती गीत मे भी शिव-पार्वती विवाद मे उलझे हुए हैं। पार्वती जी कहती हैं कि चलो शिवजी मेरे पीहर चलें जहा जहा सोने के घर हैं जिनके चांदी के किवाड हैं किन्तु महादेव जी कहते हैं कि पार्वती जी! पागलपन की बात मत करो ज्यादा से ज्यादा होगा तो ईंट के घर होंगे और चदन के किवाड होंगे—

घेला पारवती जी घेलू ना बोलो, झाझू रशे तो ईंट ना ओरडा,
ईंटोना ओरडा, ने सुखडाना कपाड, ईश्वर पार्वती०[3]

एक राजस्थानी गीत मे पार्वती जी शिवजी से हल चलाने का अनुरोध करती हैं—

हल हांको महादेव हाल हांको।[4]

इस प्रकार सामान्य दाम्पत्य जीवन के प्राणियो के रूप मे भी शिव-पार्वती का चित्रण लोकगीतो मे हुआ है।

(4) सूरज

लोकगीतो मे सूर्य की पूजा का उल्लेख मिलता है। एक राजस्थानी गीत मे एक स्त्री, जिसका पति प्रात काल विदेश जाने वाला है सूर्य से प्रार्थना करती हुई कहती है कि मैंने मोतियों के थाल भर-भरकर तुम्हारी पूजा की है, अत आज तुम देर से उदित होना क्योकि मेरा पति विदेश जाने वाला है—

---

1 रढियाली रात (भाग 2), पृ० 2
2 मरुभारती—अक्टूबर 1965, पृ० 17 18
3 गु० लो० सा० मा० (भाग 8), पृ० 220
4 सकलित—परिशिष्ट में पूरा गीत देखिए

सूरज थाने पूजती, भर-भर मोत्यां थाल।
छन्योक मोडो तो उगज्ये,
म्हारा भवर चढे दरबार।[1]

गुजराती नायिका भी यही प्रार्थना सूर्य से करती है और आगे कहती है कि आज के विछुड़े पता नही मेरे पति कब मिलें—

सूरज मोडेरो ऊगज रे, परभु जाय परदेश।
आजना चूक्या के, दी आवशो रे, के'दो जोऊ तमारी वाट ?[2]

(5) चन्द्रमा

राजस्थानी गीतो मे चन्द्रमा का वियोग की स्थिति में बहुत कष्टप्रद कहकर निन्दित किया गया है—

चदा थारे चादणे मे सूती पलग विछाय।
जद जागू जद अेकली, मरू कटारी खाय।—संकलित

एक गीत मे नायिका चन्द्रमा को बदली मे छिप जाने के लिए कहती है और उसको राम की दुहाई देकर अधिक न सताने की प्रार्थना करती है—

चदा छिप ज्या रे बदली माही,
जे थू म्हाने ओजू दावेगो, लो थने राम दुहाई।[3]

इन गीतो मे चन्द्रमा का देवता के रूप मे वर्णन नही हुआ है, किन्तु गुजराती गीतो मे है। यथा—

चन्द्र देव ने व्हाला फूलडा सावित्री देवी न व्हालो हार।
फूलडा बहु रुया।[4]

एक गीत मे घेर नृत्य से पूर्व चन्द्रमा एव सूरज का अभिनन्दन करने के लिए कहा गया है—

पहेली बधाव चादा सूरज ने वेनी,
पछी बधाव मारी घेर रे।[5]

(6) इन्द्र

इन्द्र की पूजा वर्षा के लिए की जाती है। एक राजस्थानी लोकगीत म इस इन्द्र

---

1 संकलित
2. गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 8), पृ॰ 50 व देखिए भाग 10, पृ॰ 273
3 राजस्थानी लोकगीत—स॰ श्री देवडा, पृ॰ 29
4 गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 3) पृ॰ 101
5 वही पृ॰ 198

पूजा का उल्लेख मिलता है—

अन्दर राजा वेगा आव
थोरी मक्की रा कोठा-भराव
खाडा नाडा पूर भराव ।[1]

गुजराती गीतो मे इन्द्र-पूजा का किसी गीत मे उल्लेख नही मिला ।

(7) जल-देवता

लोक-जीवन म जल को देवता माना गया है । एक राजस्थानी गीत मे जल देवता स्वय कहते हैं कि मैं तो सकल जल-देवता हू, और लूलो को पैर, बाझो को पुत्र, निर्धनो को धन तथा अधो को आखें देता हू, पूजा करने वाला भी जल देवता से प्रार्थना करता है कि हे भवानी, हे आदि भवानी, हे सकल भवानी, तुम लूलो को पैर, बाझो को पुत्र, निर्धनो को धन और अधो को आखें दे दो। चारो दिशाओ और चारो देशो मे तुम्हारा बखान हो रहा है । मैं तुम्हे स्मरण करता हू ।[2] गुजरात म जलाशय म पानी न आने पर जल-देवता को बलिदान (नरबलि) दी जाती है—श्री मेघाणी ने लिखा है—जलाशय मे पानी नही आता, जल-देवता भोग (बलि) मागता है गाव का ठाकुर अपने पुत्र एव पुत्र-वधू को बलिदान करता है ।[3] मेघाणी जी ने इस सबध मे एक गीत भी उद्धृत किया है ।[4]

(8) राम-सीता

राम कथा के विभिन्न अश लोकगीतो म प्राप्य हैं किन्तु पौराणिक आधार छोड कर कही-कहीं स्वतन्त्र कथा का आयोजन भी लोक गायक ने किया है ।

सर्वप्रथम एक राजस्थानी गीत मे राम एव तुलसी का चित्रण देखिये । प्रश्न—तुलसी व भोले राम कहा जा रहे हैं ? उत्तर—तुलसी शहर चली राम जी बाजार चले । प्रश्न—राम-तुलसी क्या पीते हैं ? उत्तर—राम जी दूध और तुलसी छाछ पीती है । इस प्रकार राम व तुलसी के खाने-पीने की वस्तुओ का वर्णन इस गीत म हुआ है ।[5] यही

---

1. राजस्थान साहित्य कुछ प्रवृत्तिया—डा० नरेन्द्र मनावत, पृ० 108
2. हू ता सकल जल देवता ए, पागलिया पग देय
   पागलिया, पग देय, भवानी, आद भवानी, सकल भवानी ।
   —राजस्थान के लोकगीत—स० त्रय, गीत स० 6
3. रढियाली रात (भाग 3), पृ० 19
4. बार-बार बरसे नवाण गलाव्या,
   नवाणे नीर नो आव्या जी रे ।
   दीकरो ने वहु पधरावो जी रे ! ।
   —वही, पृ० 19
5. काई पीए राम जी, काई पीए तुलछा,
   काई पीए ओ म्हारा भोला भगवान ।
   दूध पीए राम जी, छाछ पीए तुलछा ।
   —सकलित

समान भाव प्रश्नोत्तर शैली मे ही एक गुजराती गीत मे भी मिलता है। वहा दूध राम नहीं तुलसी पीती है और राम शक्कर खाते हैं।[1] दोनो मे अद्भुत साम्य है।

'दांतण' शीर्षक से एक 'हरजस' श्री गोविन्द अग्रवाल ने मरुभारती मे प्रकाशित करवाया है। आपने इसके संबध मे लिखा है—"इन हरजसों की एक विशेषता और है और वह यह कि शास्त्रकार भले ही इस बात को मानते रहे हो कि राम त्रेता मे हुए थे और कृष्ण द्वापर मे लेकिन इन हरजसो मे रुक्मणी जी को वन मे छोड़ने के लिए भी लक्ष्मण ही जाते हैं। पौराणिक कथाओं से इनका मेल नहीं खाता।"[2] इस 'हरजस' का पूरा प्रसग ही काल्पनिक है। राम की माता का नाम इसमे यशोदा और राम की पत्नी का नाम राधा है। साथ ही मा को दातुन न देने के अपराध मे राधा को बनवास दिया जाता है। यही नहीं राधा को नद की पुत्री भी कहा गया है—

> लाला रे बडे ये घरा की जी धीय (पुत्री),
> बाबे नद जी के घर को दिवळो।[3]

कथा की स्वतंत्र योजना के साथ ही पात्रो के नाम-धाम की भी विचित्र कल्पना यहा की गई है।

राजस्थानी लोकगीतों मे राम-कथा का विस्तार नहीं है। किन्तु गुजराती गीतों मे पर्याप्त विस्तार है। वहा कहीं-कहीं कथा की स्वतंत्र योजना भी है। राम-कथा मे सीता ने राम का वरण धनुष-भग के कारण किया था किन्तु एक गुजराती गीत मे कहा गया है कि सीता ने अयोध्या का राज्य देखा और राम से विवाह कर लिया। वही आगे कहा गया है कि सीता के कर्म मे वनवास लिखा था अतः उसे राम जैसा पुरुष मिला, यथा—

> अयोध्यानु राज्य जोई-जोई परणवा आव्या।
> करमे मा डेला वनवास सीता जी पुरुष राम जेवा माग्या।[4]

किन्तु एक अन्य गीत मे धनुष-भग का वर्णन परम्परानुसार और सविस्तार हुआ है। गीत के अंतिम भाग मे विश्वामित्र जी की आज्ञा से राम ने धनुष तोड दिया और सीता ने उन्हे वरमाला पहनाई। यथा—

> त्यारे विश्वामित्र कहे ऊठो राम,
> धनुष भागी वरो रे सीता, धनुष भागो राजवि बळवता।[5]

---

1. दूध पीए तुलसी, साकर जमे राम,
   कसार जमे मारा श्री भगवान। —गु० लो० सा० मा० (भाग 14), पृ० 15
2. मरुभारती—अक्टूबर 1966, पृ० 63-64
3. वही, पृ० 63
4. गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 20
5. वही (भाग 8), पृ० 225

श्री जोरावर सिंह डी० जादव ने 'लोकगीतो मा रामायण' शीर्षक के अन्तर्गत गुजराती लोक साहित्य माला (भाग-3) मे दस गीत दिए हैं जिनमे राम-कथा के विविध प्रसग सम्मिलित है।

(9) हनुमान जी

राम-कथा मे प्रसगवश हनुमान जी का भी चित्रण लोकगीतो मे हुआ है। सीता को रावण से मुक्त कराने एव लका को तोडने का श्रेय राजस्थानी लोक गायक ने हनुमान जी को ही दिया है। यथा—

सीता लायो हनुमान बडद बका,
बडद बका छन मे तोडी लका।—सकलित

गुजराती गीत मे हनुमान जी द्वारा पूछ से लका मे आग लगान तथा सीता की सूचना लाने का वर्णन मिलता है, यथा—

बाल्या चौरासी चोवटा, बाल्या रावणना राज।
बाळी रावण ना राज हनुमान जई पडिया दरिया मोजार
शाबाश हनुमान भगवता लाव्या सीतानी सूध।[1]

(10) कृष्ण-राधा

राधा-कृष्ण का चित्रण लोकगीतो मे साधारण नायक-नायिका के रूप मे किया गया है। साथ ही कही वस्त्र-हरण तो कही कालिय-मर्दन आदि विभिन्न प्रसगो का भी उल्लेख मिलता है। राजस्थानी गीत मे नाग-दमन का चित्रण देखिये—

नाग नाथ हर बाहर आया, ग्वाल बाल हरखाय जी।[2]

गुजराती गीत मे भी नाग दमन का उल्लेख है—

पाताळे पेसी ने, शेषनाग हण्यो।[3]

राधा का रूठना व कृष्ण का मनाना भी लोकगीतो का प्रमुख विषय है। राजस्थानी लोकगीत मे राधा के शृगार को देखकर कृष्ण ने हसी की कि तुमने यह शृगार किसके लिए किया। मैं तो साधारण ग्वाल हू, इसी बात पर राधा रूठ गई यथा—

म्हे तो म्हारी राधा हसी ओ करता
तो क्याकर रीस उतारी जी ?[4]

कृष्ण ने गुजराती गीत मे सबको फूल दिए किन्तु वे राधा को भूल गये बस राधा

---

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 24
2 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 51
3 गु० लो० सा० मा० (भाग 2), पृ० 41
4 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 53

रूठ गई। बाद में जब कृष्ण ने सबको छोड़कर केवल राधा को ही फूल दिये तब राधा प्रसन्न हुई और उसने कहा कि मैं अब तुमसे हंस कर बोलूंगी—

वा'ले थाळ भरी ने फूल उतारया,
वा'ले सहु न मेल्या बिसारी,
राणी राधा जी ने आल्या सभारी।
काळा करसन जी ने साथे हसी बोलू।[1]

इस प्रकार राधा और कृष्ण साधारण दम्पति के समान एक दूसरे को रूठते-मनाते भी हैं।

लौकिक देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत

लौकिक देवी देवताओ के अन्तर्गत उन देवी-देवताओं के गीतो का विवेचन किया जा रहा है जो पौराणिक नही हैं अथवा पौराणिक होते हुए भी जिनका स्थानीयकरण कर लिया गया है। जो देवता पौराणिक नही हैं उन्हें देवता अथवा देवी मानने का कारण यह है कि इन वीरो ने मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग किए। वीर पूजा की भावना इन देवी-देवताओ की पूजा की पृष्ठभूमि मे कार्य करती है।

श्रद्धा मानव मन की चिरन्तन भावना है। जो लोग महान कार्य करते हैं उनके प्रति मानव मन में स्वाभाविक रूप से श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। लोक मानस सदैव शौर्य का पुजारी रहा है। श्री मजुलाल र० मजमूदार ने लिखा है—'धर्म, प्रेम एव शौर्य—ये तीनो प्रजा के चरित्र के तेजस्वी अग रहे हैं। इनमे से प्रजा के पुरुषार्थ की आकृति एव पुरुषार्थ की कथाओ की रचना होती है। इनमें से भी रोमाचक प्रेम-कथाए और शौर्य-कथाए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। अपने अनेक जोश भरे पुत्र-पुत्रियों की शौर्य एव प्रेमपूर्ण कथाए लोक कवि की वाणी मे मुखरित होती हैं।[2]

राजस्थान और गुजरात के लौकिक देवताओ के गीतों का निम्न शीर्षकों म विवेचन किया जा सकता है—

(क) क्रांतिकारी वीरो की पूजा से सम्बन्धित लोकगीत

इतिहास साक्षी है कि राजस्थान की भूमि सदैव वीर भूमि रही है, राजस्थानी अभिजात साहित्य भी वीर भावनाओं से ओत-प्रोत रहा है। यहां के साहित्य और जीवन मे श्रृंगार एव वीर रस का अद्भुत सम्मिश्रण इसीलिए देखने को मिलता है। यदि राजस्थानी पुरुष का चित्र बनाया जाए तो उसका एक पांव सुन्दर शैया पर और दूसरा पाव रण-भूमि मे रखना होगा। एक हाथ कामिनी के कन्धे पर तो दूसरा हाथ अवश्य ही तलवार की मूठ पर। यहा के साहित्य में भी सर्वत्र यही रूप देखने को मिलता है।

1. रढियाली रात (भाग 2), पृ० 65-66
2 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), प्रस्तावना, पृ० 7

क्या नारी क्या पुरुष सबके जीवन मे एक ओर जहा शृंगार की उद्दाम वेगवती धारा प्रवाहित है वहीं वे वीरता के प्रति भी दृढ़ है।

एक राजस्थानी 'लोरी' गीत के अनुसार राजस्थानी माता के हृदय मे बालक को महान् वीर बनाने की उत्कृष्ट अभिलाषा रही है जन्म के समय से ही वह उसको कहती है कि बालक! तू यदि मेरी गोद को ठंडी करे तो मैं तुझे अच्छी जन्मघुट्टी दू। स्तनों से बालक को दुग्ध-पान कराते समय वह यों कहने लगी—तू मेरा श्वेत दुग्ध पान कर रहा है इस पर कायरता का कलक मत लगा देना। बालक को रंग खटोले मे सुलाते समय लोरी गाते हुए वह कहती है कि मैं तुझे सुला रही हू किन्तु इस शर्त पर कि तू रणक्षेत्र मे चतुरंगिणी सेना को इसी तरह प्रगाढ़ निद्रा मे सुलाएगा। झूले मे झोटे देती हुई प्रत्येक झोटे के साथ वह वीरमाता इस तरह कहती है कि मैं तुझे जितनी बार झोटे दे रही हू उतनी ही बार तुझे पृथ्वी को हिलाना होगा।[1]

राजस्थानी माता बालक को वात्सल्य एव ममता सेंतमेंत मे देने को तैयार नही। वह तो बालक से सौदा करती है। उसकी ममता, वात्सल्य, जन्मघुट्टी, दूध यहा तक कि झोटों का भी मूल्य बालक को चुकाना होगा।

राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतो मे वीरो को सदैव यथोचित सम्मान दिया जाता रहा है। लोक-गायक युग-बोध के प्रति निरन्तर सजग एव ईमानदार रहा है। उसने युग-बोध के आग्रह की कभी उपेक्षा नही की। तत्कालीन परिवेश का यथातथ्य-चित्रण ही उसका उद्देश्य रहा है। देश-प्रेम के प्रसग मे उसने वीरो की प्रशसा की है। देश की मर्यादा की रक्षा के लिए, अथवा मानवीय मूल्यो की रक्षा के लिए जिन वीरो ने प्राणोत्सर्ग किया उनको लोक-गायक ने सदैव देवता के रूप मे पूजा है और उनकी वीरता की प्रशसा करते समय वह अघाया नही है। युगो के अन्तराल के पश्चात् आज भी वीरो की स्मृति को लोक-गायक ने अपने स्वरो मे सजो रखा है।

आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह जी ने 1857 ई० मे अंग्रेजो के विरुद्ध क्रांति मे भाग लिया था। उनके किलेदार एव कामदार ने उन्हें धोखा दे दिया जिससे उन्हे आउवा छोडकर मेवाड की ओर जाना पडा। कोठारया नामक मेवाड के एक ग्राम मे उनका भव्य स्वागत किया गया था। उनकी स्मृति मे एक लोकगीत आज भी चग की थाप पर होली के अवसर पर राजस्थान म गूजता हैं।[2]

इसी प्रकार राजस्थान के दूसरे प्रसिद्ध क्रांतिकारी सूरजमल चोहान (जिसको

---

1 बालो पांखा बाहर आयो, माता बैण सुणावै यू।
म्हारी गोद सिलाय रे बाला, मैं तोय सखरी घूटी दू यू।
सोवन झूले कालो, झोटे-झोटे बोलो यू।
उतणी बार हिलाये धिरपकी, मैं तोय जितणा झाटा द्यू।

—*राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 51-52*

2 अगरेजो रा दुसमण ने मेवाड बदायो रे, के झगडो झेलियो।
हां रे, झगडो झेलियो, झगडा मांये वाद मड्यो रे, के।
अगरेजो सू आघड ने, राठोड आयो ओ मोत्यां बदाओ। —सकलित

अंग्रेजी मूजा डाकू कहते थे) के संबंध में भी लोक कवि मौन नहीं रह सका। राजू रावत, डूगजी—जवार जी, राणा रतन सिंह आदि अनेक वीर इसी शृंखला की कड़ियां हैं जिनके स्मरण में अनंत लोकगीत प्रचलित हैं।[1]

राजस्थान से गुजरात भी इस मामले में पीछे नहीं रहा है। गुजराती लोकगीतों में भी स्वतन्त्रता के दीवाने वीरों को बहुत सम्मान दिया गया है। बड़ौदा के महाराज मल्हारराव अंग्रेजों के विरोधी थे। उनको 22 अप्रैल, 1957 ई० को पदच्युत करके बंदी बना लिया गया था। उस वीर क्रांतिकारी को जनमानस ने लोकगीतों के माध्यम से अमर बना दिया।[2]

इसी प्रकार उमरकोट के राणा रतन सिंह के संबंध में भी राजस्थान में एक लोकगीत गाया जाता है। अंग्रेजों की हत्या के अपराध में रतन सिंह को फांसी की सजा दी गई थी। राणा के वियोग में क्षुब्ध जनता राणा से प्रार्थना करती है कि हे राणा! एक ··र तो आप पुनः उमरकोट (अमराणे) की ओर अपना घोड़ा मोड़िए। आपके क्रांतिकारी ·थियों के लिए घर-घर में घट्टी (चक्की) चलाकर आटा पीसा जा रहा है। आप एक ·र पुनः आइये।[3]

वालुमा देदा भुज प्रदेश के वीर पुरुष थे। बारह वर्ष तक उनका सरकार से झगड़ा चलता रहा, किन्तु उन्होंने आत्म-समर्पण नहीं किया। बाद में उन्हें छल करके मार डाला गया। गुजराती लोक-गायक ने उस वीर पुरुष को गीतों के माध्यम से अमर कर दिया।[4]

इस प्रसंग में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जनमानस ने इन क्रांतिकारी वीरों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है। इतिहास ने चाहे इन्हें कोई महत्त्व नहीं दिया हो, परन्तु लोक-गायक ने उनके गीत बराबर गाए हैं।

---

1. स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी शीर्षक में इसकी विस्तार से चर्चा की गई है।
2. दातण करता जाय रे, मल्लार राव। शहर ना सूबो तो क्यारे आवशे ?
   दातण करणु काढ़िये रे : फरती फौरगीनी फौज रे . मल्लार राव। शहर नो।
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 3), पृ० 7
3. म्हारा रतन राणा एकर अमराणे घोड़ो फेर।
   घर घरिये में घरट मडाय हो जी हो।
   मेहूंडा पीसी जे हो जी हो आटो पीसी जे राणा राव रो।
   —राजस्थानी लोकगीत—डॉ० दाधीच, पृ० 164
4. बार-बार वरस सुधी वेर चाल्यो,
   ने सोंपणा सरकार ने हाथ, भुजना भायात
   छेतरी ने भायात ने न होतो मारवो,
   छेतरी आ छेल ने न होतो मारवो।
   —गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 20

(ख) मानवीय मूल्यो के रक्षार्थ लडने वाले वीरो की पूजा से सबधित लोकगीत

जो वीर पुरुष युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं तथा जो मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करते हैं, उन्हें राजस्थान एव गुजरात म पूजा जाता है। राजस्थान मे एसे लोगो को 'झूझार' (जुझारू) दवता के नाम पूजा जाता है। इस सम्बन्ध मे श्रीमती रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत ने लिखा है—' राजस्थान मे वीर पूजा ने ही देव-पूजा का स्थान ले लिया है। जिन महापुरुषो ने महान कार्य किए हैं उनमे से कितने ही देवताओं की भाति पूजे जाते हैं।[1] वास्तविकता यही है कि कितने ही नही राजस्थान के घर-घर म झूझार हुए हैं और उन्हे आज भी, उनकी वीरता के सम्मान मे, पूजनीय माना जाता है। झूझार जी की 'पुतली' (मूर्ति) बिठाई जाती है। उनके नाम का एक नामा या फूल (गले मे पहनने का एक वृत्ताकार चादी—सोने का आभूषण जिस पर 'झूझार' जी का ऐसा चित्र बना होता है कि वे बागा पहने और हाथ म भाला एव तलवार लिये हुए घोडे पर बैठे हैं) बनाकर लोग गले मे पहनते हैं।

(1) झूझार जी

एक गीत के अनुसार वह वीर व्यक्ति जब युद्ध म जाने लगा तो हथाई (पचायत स्थान का चबूतरा) पर बैठे दादा जी ने उसको रोकते हुए कहा कि तुम्हारी अभी बाल्या-वस्था है तुम कैसे युद्ध करोगे? वीर ने उत्तर दिया कि मैं यदि लौटता हू तो मेरा कुल कलकित होगा और मेरी मा का दूध लज्जित होगा। अन्त म उसने युद्ध म जाकर शत्रु से लोहा लिया। उस वीर ने रेतीली भूमि मे बढ बढ कर भालो के प्रहार किए और बर्छियो से घमासान युद्ध किया। उस वीर ने घायल होते हुए भी घुटनो के बल बैठकर बालू मिट्टी मे झुक-झुक कर तलवार चलाई। उसने झाडी झाडी मे शत्रुओ की समाधिया बना दी। अत मे उस वीर का सिर कट गया फिर भी धड लडता रहा और रक्त के नाले बह निकले।[2]

इसी प्रकार वीर पूजा का उल्लेख एक गुजराती गीत मे भी किया गया है। उसके अनुसार नामोरी नर बाका है जिसका देश मे डका बजता है। उसकी कमर मे कटार और तलवार शोभित है। शैजी घोडी उसकी राग म है और वह हीरे मोतियों से जडे बाघा (चोगा) पहने हैं। उसने निश्चय किया कि मरना तो एक ही बार है,

---

1 राजस्थानी लोकगीत—स० रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत, भूमिका

2 शूरा ओ रण मे झूझिया।
हथाया बैठा ओ दादा जी बरज रह्या, बेटा मति जावे रे राड। शूरा—
दादा जीपाछा फरा तो म्हारो कुल लाजै, लाजै मारी माता बाई रो थान।
शूरा सीस पडिया ओ धडतडफ्यो शूरा रगतारा मच्या खोगाल। शूरा—
—राजस्थानी लोकगीत—स० रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत, भूमिका

फिर भागने से तो मेरी मा लज्जित होती है।[1] अत वह वीर व्यक्ति युद्ध मे जूझ कर वीर गति को प्राप्त हो गया।

राजस्थान मे झूझार जी के गीत गाकर रतजगा किया जाता है। उनको नगर-रक्षक माना जाता है और उन्हें नारियल तथा चूरमा, पूजा सामग्री के रूप मे चढाए जाते हैं।[2]

राजस्थान तथा गुजरात मे अधिकतर वे ही लोक देवता मान जाते हैं जिन्होंने निस्वार्थ भाव से जाति एव देश की मर्यादा के लिए अपन प्राणो का बलिदान कर दिया। वीर वर श्री तेजा जी, पाबू जी, गोगा जी, रामदेव जी, देवजी आदि अनेक वीर इसी शृखला की कडिया हैं। लोक-नायक ने उनको सदा सर्वदा के लिए अमर कर दिया।

राजस्थान मे पच पीरो की मान्यता है। पाबू जी, रामदेव जी, हरबू जी, मेहा जी एव गोगा जी। ये पाचो ऐतिहासिक पुरुष हैं जिन्होंने परोपकार की भावना से अपने प्राणों का बलिदान किया। श्री तेजा जी महाराज एव देव जी भी इसी शृखला म आते हैं। यहा एक लोक देवता का परिचय देते हुए उनसे सबधित गीतो का विवेचन किया जा रहा है।

(2) पाबू जी

ये राठौड राजपूत थे। अपन विवाह के समय से एक चारणी की घोडी माग कर ले गए थे और उसको उन्होंने यह वचन दिया था कि मैं तुम्हारी गायों की रक्षा करूगा। जब वे विवाह-वेदी के सम्मुख बैठे थे तभी उन्हें यह सूचना प्राप्त हुई कि चारणी की गायों को जींदराव खीची ले जा रहे हैं। पाबू जी तुरन्त वेदी पर से उठ गए और उन्होंने जाकर जींदराव खीची से युद्ध किया जिसमे वे वीरगति को प्राप्त हुए। मारवाड मे इनके जन्म स्थान केन्द्र ग्राम मे सर्प-दशित व्यक्ति को ले जाया जाता है और कहा जाता है कि वह विष मुक्त हो जाता है। मार्गशीर्ष कृष्ण नवमी सवत् 1381 विक्रमी को (ता० 19-11-1326 ई०) को उन्होंने वीरगति प्राप्त की थी अत उस दिन मारवाड ही नहीं, सम्पूर्ण राजस्थान मे उनकी पूजा की जाती है। अब एक गीत देखिए, जिसमे वीर पाबू जी का गुणगान किया गया है। पाबू जी के मित्रो को ऊट व ऊटनिया सुन्दर लगती हैं, परन्तु

---

1 हुन्नो भागी ने कार मा थयो, मनु बेढ व बार,
मासुं तो मारी मोमला लाजे, भगारी रोय दे पाय। नामोरी—
—मू० सो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 16

2. झूझार जी रहेमा पन्नूया राखी ओसवा, झालणा नगरी रा रुखाल।
झूझार जी चढ़ै चढ़ावैं आर रे चूरमो, चढ़ै चोटियालो नालेर।
झूझार की बाग पकड़ घोड़े चढ़िया।
—राजस्थानी लोकगीत—ब० चूडावत, पृ० 15

पाबू जी को तो केसर कालका ही अधिक रुचती है ।[1]

एक अन्य गीत के अनुसार पाबू जी तीन फेरे फिरने के बाद, देवल चारणी की गायो के खीची द्वारा ले जाने की सूचना पाते हैं 'हथलेवा' छोडकर गायो की रक्षार्थ चल पडे । उनकी पत्नी राणी सोढी ने उनका पल्ला पकड लिया और उनसे पूछा कि किस अपराध के कारण आप मुझे इस स्थिति मे छोडकर जा रहे है तो पाबू जी ने उत्तर दिया कि अपराध तुम्हारा नही, अपराध मेरा है क्योकि मैं तुम्हे वचनो से बाधकर तीसरे फेर मे ही छोडकर जा रहा हू ।[2]

पाबू जी के सम्बन्ध मे इस प्रकार अनेको लोकगीत प्रचलित हैं।

(3) गोगा जी

डॉ० सत्येन्द्र के अनुसार गोगा जी या गूगा जी का जन्म ददरेवा नामक ग्राम म हुआ था । इनके पिता का नाम सूरजपाल था । इनका विवाह धाधल जी राठौड के बूडा जी की पुत्री केलण बाई के साथ हुआ था । पाबू जी बूडा जी के छोटे भाई थे । ऐतिहासिक तथ्यो के अनुसार इनके जन्म एव जीवन काल के सम्बन्ध मे अनेक मत प्रचलित हैं ।[3]

एक गीत मे इनकी पत्नी का नाम सूर्यल भी मिलता है ।[4] इनके मौसेरे भाई अर्जन सर्जन से इनकी लडाई थी । उन्होने सूर्यल के वस्त्राभूषण और गाया को लूट लिया था । जब गोगा जी को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने इनका पीछा किया और इनको युद्ध मे मारकर गायो को छुडा लिया । बाद मे इनकी माता बाछल ने इनको मौसेरे भाइयों को मारने के कारण प्रताडित किया । गोगा जी अपमानित होकर घर छोडकर चल दिये । वे रात्रि के समय अपनी पत्नी सूर्यल से आकर मिलते रहते थे । अत उनकी पत्नी बराबर सधवा वेश म रहती थी । सासू के विवश करने पर उसे गोगा जी का नित्य रात्रि मे आने वाला भेद बताना पडा और गोगा जी को दिखाना भी पडा । गोगा की माता ने नाराज होकर उनसे कहा कि अब तक तुम्हे मौत नही आई ? इतना सुनकर गोगा जी धरती में समा गए और बाद म मेडी मे पीर जी बनकर प्रकट हुए ।

---

1. ऊची नीची सरवरिया री पाल, जठै नै उजियालो रूपो नीपजै ।
   रूपो सोहे पाबू धणी रे पांव, रुशीला पीडी में रूपो अध सोहे ॥
   ऊची नीची सरवरिया री पाल, जठे ने मिले टोडी टोडड़ा ।
   सायीडा रे चढ़ण टोड, पाबू धणी रे चढण केसर कालका ॥
   —राजस्थानी लोकगीत—स० श्री शिवसिंह चोयल, पृ० 4
2. जीवांगा तो फेर मिलांगा, सोढी थां सू आय ।
   कोई मर ज्यावा तो क्या देगो, ओठी म्हारा मेहमद मोलिया
   —राजस्थानी लोकगीत—डॉ० पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, पृ० 102 103
3. देखिए जहारपीर गुरु गोगा—डॉ० सत्येन्द्र
4. बागा से सूर्यल चलकर आई महला माय
   —राजस्थान के लोकगीतों मे गुगोजी—राजस्थान भारती (भाग 6) पृ० 31

गोगा जी को सर्पों के देवता के रूप मे पूजा जाने लगा। इस सम्बन्ध मे एक गीत भी प्रचलित है।[1]

भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगा नवमी का त्योहार राजस्थान मे मनाया जाता है। गोगा जी की मिट्टी की प्रतिमाओं की पूजा की जाती है। उन पर चावल चढाए जाते हैं। रक्षा बधन पर बाधी गई राखिया भी इसी दिन गोगा जी पर चढा दी जाती हैं।

गोगा जी की पूजा पजाब, हरियाणा, ब्रज प्रदेश, गुजरात आदि स्थानो पर भी होती है।[2] इस सबध मे विस्तृत विवरण के लिए डॉ० सत्येन्द्र की पुस्तक 'जहार पीर गुरु गुग्गा' देखी जा सकती है।

गुजरात लोकगीत सग्राहक श्री शकर भाई सोमाभाई तडवी के अनुसार सम्पूर्ण गुजरात मे गोगा जी की पूजा का उल्लेख मिलता है—"भाथी जी, भायु जी, भायु देव अथवा भाथी धनी नाम से जाने वाले देवता का यह गीत है। पचम हाल जिला के पागवेल स्थान पर इनका मुख्य स्थानक है। पच-महाल मे कहाच, दलेल म भी आपके प्रसिद्ध स्थानक हैं। बडौदा जिले के तिलक वाडा ताल्लुका मे भादरवा देव के नाम से आपकी प्रसिद्धि है। भादरवा की डूगरी (पर्वत) पर आपका बडा स्थानक है। ठेठ दक्षिण गुजरात तक इनके स्थानक गाव गाव हैं। अहमदाबाद की ओर घोघा देव के नाम से और सौराष्ट्र मे 'घोघ चौहाण' के नाम से जाने जाते हैं।' स्पष्ट ही सम्पूर्ण गुजरात मे आपकी पूजा की जाती है। सर्प के देवता के रूप मे ये पूजे जाते हैं इस सबध मे कहा गया है—'दूध देने वाली गाय का सर्प का विष आपने हरण किया, तब से आप सर्प के विष के हरने वाले देवता के रूप मे पूजे जाते हैं। भायुदेव के नाम का डोरा बाध देने से सर्प का विष उतर जाता है ऐसी मान्यता लोक-प्रचलित है।'[3]

डॉ० सत्येन्द्र ने एच० ए० रोज के कथन को उद्धृत किया है—'इमस यह स्पष्ट हो जाता है कि गुरु गुग्गा, राजस्थान, पजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में विशेष मान्य रहा है। गुजरात मे भी इसकी प्रतिष्ठा है, पूर्व मे इसका नाम प्राय नहीं मिलता।[4]

पडित झाबर मल्ल जी शर्मा ने शोध पत्रिका मे प्रकाशित अपने लेख मे गोगा जी की कथा के विविध रूप दिये हैं। उनमे से 'गुर्जर प्रोत्सम्म' नामक श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुशी का लेख जो कि 'भारतीय विद्या' मे जनवरी 1946 मे प्रकाशित

---

1 गुगा बाफ बम अब डाडिया मो बम बाथोराण
गुगा बाबा गुगा की मेडी झिलमिल बान्दणो
गुगा करणो लो घमती माणम बू कमो
गुगा बाबा बडिजो मे दूध दिगाय, गुगा बाबा गुगा की मेडी झिलमिल बान्दणो
—राजस्थान के लोकगीतों में गुगोजी—राजस्थान भारती (खण्ड 6), पृ० 32

2 देखिए—यू० पी० डा० डा० (भाग 8), पृ० 252 व (खण्ड 9), पृ० 211

3 आज मर्हिम मासा, मकरो 5, पृ० 225

4 जाहर पीर : गुरु गुग्गा, पृ० 3

हुआ था का साराश दिया है।[1]

---

1 सारांश इस प्रकार है—
गोगा चौहान को गूजर अपना एक पूर्व पुरुष मानते हैं। गुजरात में प्रतिवर्ष गोगा राव का जुलूस निकाला जाता था जो पिछले 30 वर्षों से बन्द हो गया है। वहां गोगाराम की एक मिट्टी की बड़ी मूर्ति बनाकर जुलूस के साथ गांव के तालाब या नदी में पधरायी जाती थी। गोगा चौहान की कहानी एक बूढ़े मुसलमान के अनुसार यह है कि 'गोगा चौहान एक राजा का पुत्र था। माता के गर्भ से उसका जन्म होने के साथ ही एक सांप का जन्म भी हुआ था, जिसका पालन उसकी माता ने किया। गोगा बड़ा होने पर अपने सहजात भाई सांप को बहुत चाहता था। जब वह सांप गोगा को छोड़कर जाने लगा, तब कह गया कि जब कभी आवश्यकता आ पड़े, तब मुझे बुला भेजना, मैं आऊंगा और तुम्हें बचाऊंगा। जब गूजर लोग मुसलमान बन गए, तब गोगा जी को जाहिर पीर कह कर स्वीकार कर लिया गया। अंत में उस बूढ़े मुसलमान द्वारा सांप निकलने पर गुजरात में गाया जाने वाला गीत भी उद्धृत किया गया है—

1. दम मुदम गुगों मोहली
   दम माना मुलतान
   गुगें हेंदु डेरे सेंदु
   खोलन भीये नाग
2. एरे मुवड भारती
   नागे हाथ न पा
   त्रिकु-परिया ए सखला
   मत सावन कायजा
3. ग्यारस बावन ग्यारवतो
   लेणा गुगें का नाम
   जिम दम गुगा जामिया
   ओ सुलखाणी धाम—

—गूजर प्रोब्लम्स—के० एम० मुंशी, जनवरी, 1946

भाणु जी संबंधी गुजराती लोकगीत में कथा का दूसरा रूप प्राप्त होता है। यहाँ भाणु जी की किसी धर्म की बहिन को बादशाह लेकर भाग रहा था। भाणु जी विवाह के तीन भाँवरे पूरे कर चुके थे कि उन्हें बहिन की रक्षा का निमंत्रण मिला। वे वरमाला तोड़कर बहिन की रक्षार्थ दौड़ पड़े। बादशाह से लड़ते हुए उनका सिर कट गया फिर भी उनका धड़ लड़ता रहा और अंत में उन्होंने बहिन की रक्षा कर ली।

धरम नी तारी बे'न भाणु भाई, धरमनी तारी बेन रे
बेनी ने भीड़ो पड़ीओ भाणु भाई, बे'नी ने भीड़ाँ पड़ी ओ रे
पवने वागलियों मोकलो भाणु भाई, पवने वागलियों मोकलो रे
वा'रे वे'ला तमे आवो भाणु भाई, वा'रे वे'ला तमे आवो रे
चोथो मंगल चाइला भाणु भाई, चोथो मंगल चाइला रे
वर माला तोडी नाठा, भाणु भाई, वर माला तोडी नाठा रे
रण में पड़े रण घाव भाणु भाई, रण में पड़े रण घाव रे।

(क्रमश.)

यद्यपि राजस्थानी व गुजराती गीत की कथा मे थोडा अन्तर है फिर भी गोगा जी की सर्प के देवता के रूप म दोनो प्रान्तो मे मान्यता है।

(4) वीरवर तेजा जी महाराज

वीरवर श्री तेजा जी महाराज जी सर्पों के देवता के रूप म राजस्थान मे पूजे जाते हैं। गुजरात मे आपकी पूजा नही की जाती । हा मालवा मे आपकी पूजा होती है। सर्प दशित व्यक्ति को तेजा जी महाराज के स्थान पर ले जाया जाता है और वहा तेजा जी महाराज भोपे (पुजारी) के सिर पर आकर दशित स्थान को चूस लेते हैं जिससे दशित व्यक्ति का विष उतर जाता है।

तेजा जी के सम्बन्ध मे राजस्थान मे एक लोक-कथा प्रचलित है।

श्री तेजा जी का विवाह बाल्यावस्था मे हो गया था, किन्तु यह बात उन्हे ज्ञात नही थी, बडे होने पर जब वे गौना कराने के लिए जा रहे थे, तब उन्होने देखा कि मार्ग में आग लगी हुई है और उसमे एक सर्प जल रहा था। तेजा जी ने सर्प को आग से बाहर निकाल कर उसकी जीवन रक्षा की। इस पर सर्प क्रोधित होकर कहने लगा—

म्हारी गत मिलतोडी देही रे दाग लगायो।

अर्थात् तुमने मेरी गति (मोक्ष) प्राप्त करती हुई काया को कलंकित किया है अत: मैं तुम्हें डसूगा। इस पर तेजा जी ने कहा—

गुण करता ओगण मान्यो रे बासग काठा।

अर्थात् गुण करने पर तुमने अवगुण माना है काले बासुकी। इसके उपरान्त तेजा जी ने सर्प को यह वचन दिया कि मैं अभी गौना लाने के लिए ससुराल जा रहा हू, लौटते समय मे तुम्हारी बाबी पर उपस्थित होऊगा। उस समय तुम मुझे काट लेना। तब तेजा जी समुराल पहुचे। तब वहा उनकी सासू से झगडा हो गया और वे लौट जाने को

बाख्या ने केद कह रो भायु भाई, बाख्या ने केद कह रो।
फोजो पाछी वाली भायु भाई, फोजो पाछी वली रे।
बे'नी ने घोडले लीधी भायु भाई, बे'नी ने घोडले लीधी रे।
शीर पडेने घड लडे भायु भाई नु, शीर पडे ने धड लडे रे :

आगे उसी गीत में कहा गया है कि हे भायु जी। वन में चरने वाली तुम्हारी गायो को काले नाग ने डस लिया है, तुम इनका विष हरण करने के लिए आ जाओ। यथा—

लींबना नीचे ताडू पान भायु जी लींबना नीचे ताडू पान रे।
वन विचरे तारी गायो भायु जी, वन में चरे तारी गायो रे।
दूध पीवानी तारी गावडी भायु जी, दूध पीवानी गावडी रे।
डसियो तबोली कालो नाग भायु जी डसियो तबोली कालो नाग रे।
वा'रे वे'ला आवो भायु जी, वा'रे वेलेरा आवो रे।
गावडीनो वरद तारो भायु जी, गावडीना वरद तारो रो।

—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 228

उद्यत हुए तभी हीरा गूजरी नामक स्त्री ने उन्हे अपने यहां आश्रय दिया और उनका अतिथि सत्कार करती है। वहा रात्रि मे तेजा जी की पत्नी उनसे मिलने के लिए आई परन्तु तेजा जी क्रोधवश उससे नही मिले। उसी समय हीरा गूजरी की गायों को मीणे लोग चुराकर ले जाते हैं और वह तेजा जी से गायों की रक्षा करने की प्रार्थना करती है। तेजा जी गायों की रक्षार्थ तुरन्त जाते हैं और मीणे बिना युद्ध के ही उन्हें गायो को लौटा देते हैं, परन्तु एक काना बछडा रख लेते हैं। जब तेजा जी गाए लाकर हीरा को समलवाते हैं। तब वह एक बछडे को छोड जाने की बात पर अप्रसन्न हो जाती है। इस पर तेजा जी पुन. जाते है और मीणो से घमासान युद्ध करने के बाद वे मीणो को पराजित करके बछडा लौटा लाते हैं, परन्तु वे बहुत घायल हो जाते हैं यहा तक कि उनका अग-अग कट जाता है। इसके बाद वे तुरन्त नाग देवता की बाम्बी पर जा पहुचते हैं और उन्हें डसने को बुलाते हैं। नाग उनकी इस अवस्था को देखकर कहता है कि तुम्हारा अग भी तो साबित बचा हुआ नही है, मैं कहा काटू ? तब तेजा जी ने अपनी जीभ निकाल दी और नाग ने उसी को डस लिया। तेजा जी का वही देहान्त हो गया और उनकी पत्नी भी उन्ही के साथ *सती हो गई। नाग देवता ने उनको यह वरदान दिया कि कलियुग मे तुम्हारी* पूजा होगी और काल सर्प का दशित व्यक्ति ववाळे का रोगी तुम्हारे यहा त्राण पायेगा और गाव-गांव मे तुम्हारे मन्दिर बनेंगे तथा पूजा होगी। वास्तव मे हुआ भी यही। राजस्थान के अनेक गावो मे तेजा जी के स्थान है। भाद्रपद शुक्ला दशमी को इन स्थानो (मन्दिरों) पर मेले लगते हैं।

यही तेजा जी का सक्षिप्त जीवन चरित्र है।

तेजा जी महाराज के स्थान पर जो मूर्ति होती हो उसमे वीर वेश मे तेजा जी घोडे पर सवार होते हैं, हाथों म भाला व तलवार तथा उनकी जीभ मे काटता हुआ साप चित्रित होता है। उनक स्थान पर जो झण्डा लहराता है उसमे विविध रग होते हैं और उस पर भी सर्प की आकृति बनी होती है।

एक लोकगीत मे तेजा जी के सपूर्ण जीवन की आदि से अन्त तक की घटनाओ का उल्लेख किया गया है।[1] इसके अतिरिक्त भी तेजा जी से सम्बन्धित अनेक लोकगीत राजस्थान मे प्रचलित हैं।

एक लोकगीत म *नायिका तेजा जी से कहती है कि आपकी आज्ञा से ही यहा* मेला भर रहा है, अब गन्ने की फसल कहा पर बुवाऊ।[2]

---

1 देखिए राजस्थान के लोक देवता

2. कटहं बुवाऊ थारी गूदगरी ?
मलो तो भरियो ओ तेजा जी थारा हुकमां सू ! कटडे बुवाऊ थारी '
धोरां तो बुवाऊ थारी गूदगरी ओ तेजा जी ! मेलो तो भरियो' '। —सकलित

तेजा जी के जीवन की झाकी से सम्बन्धित यहा एक गीत दिया जा रहा है।[1]

(5) बाबा श्री रामदेव जी महाराज

बाबा श्री रामदेव जी महाराज की पूजा सम्पूर्ण राजस्थान, मालवा एव गुजरात मे होती है। आपको रामा पीर के नाम से भी जाना जाता है। रामदेव जी ऐतिहासिक पुरुष हैं। मारवाड के रूणेजा ग्राम मे राजा अजमल जी (तवर वश) के यहा आपका जन्म हुआ। आपकी माता का नाम मेलादे था। कहते है अजमल जी नि सतान थे। अत उन्होने द्वारका जाकर भगवान से प्रार्थना की और सतान के अभाव मे निराश होकर आत्म हत्या करने के उद्देश्य से समुद्र मे कूद पडे। भगवान ने अजमल जी को दर्शन दिए उनकी जीवन रक्षा की और स्वयं अवतार बनकर उनके यहां जन्म लेने का आश्वासन दिया। साथ ही यह भी कहा कि जन्म से पूर्व तुम्हारे आंगन म मेरे पद-चिह्न (कुमकुम के) बन जाएगे। वास्तव मे ऐसा ही हुआ। इसीलिए रामदेव जी के मन्दिरो मे कहीं तो केवल 'पद चिह्न' (पगलिया) की पूजा की जाती है तो कही उनकी वीर-वेष वाली प्रतिमा की। आपको भगवान का अवतार माना जाता है। आपने जीवन मे अनेक चमत्कारिक कार्य किए और जब आपका उद्देश्य पूरा हो गया तब आपने पृथ्वी से फट जाने की प्रार्थना की जिसमे वे समा गए।

रामदेव जी का सम्बन्ध, कुछ लोग पृथ्वीराज चौहान के समय गायो की रक्षार्थ धर्म-युद्ध करने से भी जोडते हैं।[2]

राजस्थान मे पाच पीर माने जाते हैं इनमे से रामदेव जी भी एक हैं, इस सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

> पाबू, हरभू, राम दे, मागलिया मेहा।
> पांच्यू पीर पधारज्यो, गोगा जी जेहा।

रामदेव जी को सब मनोकामनाए पूरी करने वाला देवता माना जाता है।

---

1 आयो-आयो बासक नाग, कवर तेजा रे आयो बासक नाग।
आय नैं लागै रे तेजा बासग कादियो,
बासग तो बोलै छै तेजा तनै खायसां।
आई-आई चोरा री धार, कंवर तेजा रे।
सासू री तो गाया तेजा चोरज ले गया।
रे सासूडी बोली आयो घर जवाई रे।
कालोने क्यों नी लायो रे तेजा घर मांहीं आय जो।
सूली सूं हू बोल्यो रे तेजा कठै खावसूं,
दीनो जीभ तो काढ रे।
रे कवर तेजा दीनो जीभ तो काढ,
जीभ नें तो दीनो रे कालो नाग खावियो।

—राजस्थान भारती—भाग 5, अक 2, पृ० 73-74

2 मालवी लोकगीत एक वि० अ०—डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय, पृ० 309

एक राजस्थानी गीत मे रामदेव जी पूजार्थ आने वाली एक स्त्री उनसे भरा-पूरा परिवार तथा गायें-भैंसे मागती है।[1] उनको कोढी लोगो की कोढ दूर करने वाला, अधो को आखें देने वाला और लूलो-लगडो को हाथ-पाव देने वाला भी कहा गया है।

> कोढिया रो कोढ झाडे, आधा ने आख देवै।
> लूला-लगडा ने हाथ पाव देवै।[2]

एक गुजराती गीत मे रामदेव जी से तारने की प्रार्थना करते हुए उनके मन्दिर की प्रशसा की जा रही है, यथा—

> नीचे लोढु ने उपर लाकडु रे लोल।
> रे चदरिया मा ऊडया वार रे ऊडती देरी।
> रामा दे तार जोरे।[3]

एक अन्य गीत मे रामदेव जी को मधुर अनुरोध भरा निमन्त्रण दिया जा रहा है—

> आवजो-आवजो रामा पीर बेला आवजो।
> ऊतारा देशु और डा देशु मेडी केरा मोल।—वेला आवजो।[4]

रामदेव जी के 'व्यावले'[5] मे उनके जीवन की प्रमुख घटनाओ एव चमत्कारो का उल्लेख मिलता है। एक बनिये को पुनर्जीवित करने का वर्णन, एक गुजराती गीत मे भी देखा जा सकता है।

> 'राम' कई ने वाणियो बैठो थाय
> वाणियो ने वाणियार लागे छैं पाय।[6]

रामदेव की पूजा, राजस्थान और गुजरात के सभी लोग, क्या हिन्दू क्या मुसलमान, बडी श्रद्धा से करते है। हिन्दू उन्हें अवतार मानते हैं और मुसलमान 'रामा पीर'।

(ग) अन्य लोक देवताओ के लोकगीत

(1) माता जी—दुर्गा पूजा का रूप माता जी की पूजा के रूप मे लोक जीवन ं

---

1. रामापीर ऊबी रूणेचा रे मांहि,
   मांगू माय ने बाप, समद सरीखो पीवर-सासरो।
   मांगू गायों भैंसी री जोड, कुल में आभो धमस विलावणो।
   —राजस्थानी लोकगीत—स० शिवसिंह चोयल, पृ० 3
2. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 147
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 4), पृ० 38
4. वही, पृ० 39
5. देखिए—राजस्थान के लोक देवता
6. गु० लो० सा० मा० (भाग 10), पृ० 64

प्रचलित है। दुर्गा देवी के स्थान पर भिन्न-भिन्न नाम प्रचलित हैं। मानो दुर्गा के अनक लोक सस्करण हो—राजस्थान मे जीण माता, सकराय माता[1], पीपलाज, काली (चित्तौड) आदि असख्य नामों से गाव-गाव एव नगर-नगर मे दुर्गा पूजा प्रचलित है। अम्बा माता (आबू) तो राजस्थान एव गुजरात की जनता के लिए महान् तीर्थस्थल है। माता जी सम्बन्धी एक राजस्थानी गीत मे देवी के मन्दिर की शोभा का वर्णन किया गया है, जहा नगाडे-नौबत बज रहे हैं। वहा बलि के लिए लाये गए बकरे का भी उल्लेख है और अन्त मे देवी से भक्तों की सुरक्षा की प्रार्थना की गई है, यथा—

म्हारा रे मदर मे बूटिया कानो रो बकरियो रीके ए।
थारे तो शरणे आयोडा ने होरा राखी ए,
घोला तो महला री धराणी।[2]

अम्बा माता का एक गुजराती अष्टक भी देखिए जिसकी भाषा हिन्दी के अत्यन्त निकट है—

अहो अबिके जयबिके विश्वमूल, शमन-सस्तृति दु ख रोगादि सूल।
मगल दायक लायक रम्य रूप, सगुण निरगुण आदि माया अनूप।
प्रणत जन-अभयवर प्रदानी भवानी, भुवन चऊद राजेश्वरी राज्यमानी।
स्तबे सुरसखा इन्द्र आदि विधाता, नमो अबिका सर्वदा सुख दाता।[3]

(2) पितर-पितराणी—राजस्थान और गुजरात मे पितर और पितराणी की भी लोक देवता के रूप मे पूजा होती है। ऐसा लोक विश्वास प्रचलित है कि ये पितर एव पितराणी कुल की रक्षा करते हैं और बालिका या बालक के रूप में ये लोग उसी कुल में पुन जन्म लेते हैं। एक गीत में कहा गया है कि मदिर के द्वार पर स्थित पीपल पर विराजमान पूर्वज विचार करते हैं कि किसके यहा अतिथि बनकर चले और किसकी कोख से जन्म लें। यथा—

धरमद्वारे ओ रूडी पीपली जी,
जठे पूरवज करे रे विचार।[4]

गुजराती मे पूर्वज को 'गोत्रज' कहा जाता है। श्री मेघाणी ने लिखा है—"गोत्र के आदिपुरुष की प्रतिष्ठा देव के समान होती है और सद्य-जन्मे बालक के यत्न (रक्षा के) ये गोत्रज ही करते हैं।"[5]

---

1. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 103
2. सकलित
3. (क) गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 47
   (ख) देखिए—वही—पृ० 44 से 52
4. राजस्थानी लोकगीत—(भाग 6), सं० श्री मोहनलाल व्यास शास्त्री, पृ० 23,
5. चूदडी (भाग 1), पृ० 68

राजस्थान मे रात्रि जागरण के अवसर पर पितरो के गीत अवश्य गाए जाते है।[1] उनका आशीर्वाद ही परिवार की वृद्धि एव समृद्धि के लिए आवश्यक माना जाता है। एक राजस्थानी गीत म कहा गया है कि पितरो के लिए बाग लगाओ वे तुम्हे सवाया करेंगे। सास-बहू पितरो के सम्मान मे 'रतजगा' करें वे सवाया करेंगे। कोरे कलश मे ठडा पानी लेकर खेजडी वाले (शमी वृक्ष मे निवास करने वाले) पितरो को ठडा करो—

कोरो कळसो ठण्डो पाणी,
केजडी वाला का पितर सतोव्या।[2]

पितराणी गीत मे वर्णन है कि पितराणी के सिर पर मैंमद (सिर का आभूषण) सुशोभित हो रहा है, उनके आशीर्वाद से तुम्हारे सिर की रखडी (केवल सौभाग्यवती स्त्रिया द्वारा सिर पर बाधा जाने वाला आभूषण) का सुहाग बना रहेगा। पितराणी गीत गाओ शिवकुमार जी की दादी (पितरणी) का वरद हस्त तुम पर है—

थारै माथै ने मैंमद ये पितराणी हद बणी,
थारी रखडी रो सरव सुहाग,
गावो ना, गावो ना, शिवकुमार जी की दादी थारी छावली जी।[3]

गुजराती गीत मे वर 'गोत्रज' से कहता है कि जिसन (गोत्रज ने) छोटे से बडा किया उसका कर (आभार) मैं कैसे भूल सकता हू ?

जैणे नानां थकी मोटा रे कीधा, तेना ते कर केम भूल शू।[4]

इसी प्रकार परिवार की सुख समृद्धि हेतु पितर एव पितराणियो के गीत सर्वत्र गाए जाते हैं।

(3) सती माता—सतीत्व रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाली स्त्रियो को माता अर्थात् देवी के रूप मे पूजने की परम्परा लोक जीवन मे प्रचलित है। सती-माता सम्बन्धी गीत रात्रि-जागरण के अवसर पर गाए जाते है।

एक राजस्थानी लोकगीत मे सती को पीहर एव ससुराल दोनो को तार देने वाली बतलाया गया है और कहा गया है कि उसने सारे परिवार को तार दिया, अपने पति को तार दिया और बहुत दूर जाकर निवास किया।

तारयो पीहर-सासरो, राणी,
तारयो सो परवारो जी

---

1. देखिए, राजस्थान के लोकगीत—स० श्रम, गीत स० 9 और देखिए, राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वणलता अग्रवाल, पृ० 107
2. मरुभारती—जुलाई, 1966, पृ० 42
3 वही
4 चूंदडी (भाग 1), पृ० 68

परणयो तारयो आपको, राणी,
करयो अे दूरा दूर वासो जी ।[1]

गुजराती गीत 'रूदा सती' के अनुसार जब रूदा की बडी बहन ने उसको बताया कि तुम सौत बनकर आई हो तब इतना सुनते ही उसके हृदय मे ज्वाला उत्पन्न हो गई और उसके दाहिने पाव के अगूठे से अग्नि प्रज्वलित हुई। फिर बहन ने रूदा को चिता मे जलते हुए देखा—

अे वु साभळो रे अदु साभळो रे।
रूदाने हैये झाळ लागी, रूदाने हैये झाळ लागी।
जमणे पगने अगूठे अगनी उठी रे।
बैने जोयु रे बैने जोयु रे,
हड-हड चेयु बळती दीठी,
हड-हड चेयु बळती दीठी।[2]

इन उदाहरणो मे सती स्त्रियो के प्रति नारी हृदय की स्वाभाविक श्रद्धा अभिव्यक्त हुई है।

(4) भैरव जी—राजस्थान मे भैरव जी की भी पूजा होती है। वे भूत-पिशाचो का नियन्त्रण करते हैं, अत प्रत्येक रात्रि जागरण मे एव प्रत्येक मगल कार्य के गीतो के साथ मे भैरव सम्बन्धी गीत गाए जाते हैं। भैरव जी बध्या को पुत्र भी प्रदान करते हैं। एक गीत देखिए—

भैरू एक झड्ल्या रे कारणे,
म्हारा सायब जी लावे लोटी सौक।[3]

भैरव सम्बन्धी अनेक गीत राजस्थान मे प्रचलित हैं।[4]

एक गुजराती गीत मे भी भैरव का रूप चित्रण हुआ है, जिसमे कहा गया है कि वे नीले पीले लाल और काले वस्त्र पहने हुए नाथ बनकर बैठे हैं,

अेव लीलु पीलु ने रातु कालु सोगठु रे लोल,
भैरूं बनी ने नाथ बैठा बाजी अे रे लोल।

भैरव की भी, दोनो प्रान्तों मे समान रूप से पूजा की जाती है, यह बात इन उदाहरणो से स्पष्ट है।

---

1. राजस्थान के लोकगीत—स० लेख, गीत स० 11
2. रढियाली रात (भाग 3), पृ० 33 से 35
3. मरुभारती—जनवरी, 1965
4. (क) देखिए—मरुभारती—जनवरी, 1965 में श्री केसर सिंह दावा का भैरव सबधी लेख।
   (ख) देखिए—मरुभारती—वर्ष 12 अक 4 में श्री गोविन्द अग्रवाल का लेख।

—'राजस्थान के जनजीवन [illegible]'

(5) शामलिया जी – शामलिया जी या शामला जी गुजरात के प्रसिद्ध देवता हैं। पुत्र प्राप्ति के लिए लोग इनकी मनौती मानते हैं। एक गुजराती गीत 'विलु वाणियाणी रे' में बध्या कहती है कि मैंने प्रख्यात देव शामलिया जी की मनौती मानी जिससे मेरी मनोकामना सिद्ध हुई और नौ महीने पूरे होने पर आज पुत्र जन्म हुआ, यथा—

ध्यां सोक्ळा (प्रख्यात) माय हामळाजी,
तेने रे बोलमांय नार थो, हूं ने वचन रेज्यु।
× × ×
अेने नवमो महिनानो ओधान, अेने कुंवरियु जन्मावो।

शामलिया जी को ही केसरिया जी भी कहा जाता है, इसी गीत के अन्त में कहा गया है कि पर्वत में केसरिया जी देव हैं। इन्हें मनौती मनाइये और दो नारियल की जोड़ बोलिए जिससे बालक स्वस्थ हो जाएगा—

डूगरीवाजी रेजो, त्यां केशरियो देव रे।
अेने बोलमाय राखो, वे नाळियेर जोड रे।
हासे हाजुरमु थाय रे।[1]

शामलियो जी के मेले भी गुजरात में लगते हैं। एक गीत के अनुसार कोई पुरुष कटोडी नामक स्त्री को मेले में चलने का निमन्त्रण देता है और कहता है कि शामलिया जी के मेले में रणझणियु और पेंजणिया बजती हैं। चलो हम मेले में मौज करेंगे, यथा—

शामळा जी नो मेळो, रणझणियु ने पेंझणियु वागे,
हा हां रणझणियु ने पेंझणियु वागे।
हाळ कटोडी हाले ने मेळे,
मेळे मौजु मो लहु।[2]

शामलिया जी गुजरात के विशिष्ट देव हैं। राजस्थान में इनकी पूजा-संबंधी गीत उपलब्ध नहीं है।

(6) पीर जी—लोकगीतों के देवता धर्म-निरपेक्ष हैं। धर्म के बंधन लोकगीतों के क्षेत्र में शलथ हो जाते हैं। लोक देवता किसी जाति या धर्म विशेष के न होकर समस्त लोक के लिए समादरणीय होते हैं। पीरों की परम्परा एवं मान्यता मुसलमानी धर्म से सम्बन्धित है। उनकी कब्र या मजार को पीर जी का स्थान कहते है। जहां श्रद्धालु लोग पूजा पाठ करते हैं। मृत आत्मा की पूजा का मुस्लिम धर्म में कहीं कोई स्थान नहीं है और मूर्तिपूजा का तो मुस्लिम धर्म घोर विरोधी है, किन्तु मुस्लिम धर्म का भारत में आकर भारतीयकरण हुआ है, इसी का परिणाम स्वरूप मृतपूजा अथवा पीर पूजा है। यह

---

1 नवोहलको, पृ० 13 से 15
2 (क) गु० लो० सा० भा० (भाग 10) पृ० 93
(ख) वही (भाग 9) में पृ० 4 पर भी समान भावयुक्त गीत दिया गया है।

पीर पूजा केवल मुसलमान ही नही करते हैं किन्तु अन्य धर्मावलम्बी भी करते हैं।

लेखक के गाव (राजियावास, जिला—अजमेर) मे पचास वर्ष (लगभग) पूर्व एक सिद्ध पुरुष आए थे जो जाति से मुसलमान थे और उनका नाम था—ख्वाजा हुसैन बसरी। इनके चमत्कारो की अनेको आखो देखी घटनाए प्रसिद्ध हैं। मृत्युपरान्त जहा वे दफनाये गए, उस स्थान को लोग पीर बाबा की दरगाह कहते हैं। इस दरगाह पर प्रत्येक गुरुवार को बिना जाति एव धर्म की बाधा के, सभी लोग जाते हैं, मनौती बोलते हैं, मनौती चढाते हैं, दीप जलाते हैं तथा पुष्प आदि भी समर्पित करते है। मनोकामना पूरी होने के उपलक्ष्य मे हरे रग की चद्दर चढाई जाती है, अगरबत्ती जलाई जाती है और बोली गई सामग्री चढाई जाती है। इसी प्रकार के दो स्थान लेखक ने चित्तौडगढ़ मे भी देखे। अजमेर की ख्वाजा मुइद्दीन चिश्ती की दरगाह तो विश्वविख्यात ही है। नसीराबाद की ख्वाजा सैयद बादशाह की दरगाह नाम से प्रसिद्ध है।

गुजरात म मीरा दातार की दरगाह (पालनपुर के निकट), इगारशा पीर और जमियलशा पीर प्रसिद्ध है। अब यहा दोनों प्रान्तो मे पीर जी से सबधित गीतों का विवेचन किया जा रहा है। पीर जी के यहा पूजा करने या मनौती चढ़ाने जाते समय स्त्रिया गीत गाती हुई जाती हैं। एक राजस्थानी गीत मे कहा गया है कि कोई श्रद्धालु स्त्री पीर जी के यहा चद्दर चढाने जा रही है वह पीर जी से दरगाह के किवाड खोलने तथा उसकी मुराद (मनोकामना) पूरी करन की प्रार्थना करती है—

> मू तो चदरा लेकर आई ओ पीरां, खोलो न किंवाड ?
> खोलो न किंवाड, भर दो न मुराद ?
> मू तो मसा पूरण करले आई ओ पीरा, खोलो न किंवाड ?[1]

बध्या स्त्री भी पीर जी से पुत्र देने की प्रार्थना करती है, यथा—

> पीरा गोरी ने बधावो पालणो।
> पीरा मती कुवाजो कुल मे बाझडी।

एक गीत मे कहा गया है कि पीर जी से बन्ध्या तो बेटा मागती है और पुत्रवती अन्न एव धन मागती है, चद्दर चढ़ाती है और पुत्रवती चूरमा चढाती है—

> काई चढावे न रोडी बाझडी, काई बाळूडा की माय ?
> चदर चढावे रोडी बाझडी, चुरमो बाळूडा की माय ?[2]

गुजरात के लोकगीतो मे पीर पूजा का उल्लेख देखिए। इगारशा पीर को एक गीत म शत्रुजय कहा है। पीर की दरगाह पर श्वेत ध्वजा एव नेजा फहराता है। उनको लोबान का धूप दिया जाता है। बाझ स्त्रिया उनकी यात्रा के लिए जाती हैं और पुत्र लेकर जाती हैं, यथा—

---

1 संकलित

2 सकलित

पीर छे, पीर छे, पीर छे रे, शेत्रुजे इगारशा पीर छे,
धोली धजा ने माथे नेजो फरके, फरतो लोबान नो धूप छे रे।
—शेत्रु जे०
वांझियां आवे रे पीर तारी जावा अे पुतरलइ ने घेरे जाव छे रे।
—शेत्रु जे०[1]

जमियलाशा पीर गुजरात के प्रसिद्ध पीर हैं। एक गीत के अनुसार उनकी कृपा से किसी ब्राह्मण को पुत्र प्राप्ति हुई। इसने पीर जी को गाय की बलि देने की मनौती मानी थी अत पुत्र-प्राप्ति होने पर जब वह गाय लेकर पहुचा तब पीर जी ने उसको गाय सहित वापस जाने की आज्ञा दी, जिसमे उनकी प्रसिद्धि नौ खण्ड मे हो गई, यथा—

पीर बामण ने मानतापु अतघणी रे,
दोरी आलो रे गोरली गाय रे बामणिया
अनु नवतह राखेल नाम रे जमियल शा,
जे घाट घड्या अे घाट पाळजो रे।[2]

इस प्रकार गुजराती गीतो के पीर जी भी पुत्र देन वाले हैं और ब्राह्मण भी उनकी पूजा करते हैं।

गुजराती गीत 'हेलामणी' (पतवार चलाते समय गाया जाने वाला गीत) म जुमसा पीर का उल्लेख है। वहा राम-अल्ला एव राम देव पीर का एक साथ उल्लेख लोक जीवन मे धर्मनिरपेक्षता की पराकाष्ठा सिद्ध करता है—

अला जाणे जुमसा ! अला नु पास जुमसा !
सलामत जासु जुमसा ! सलमा रामा जुमसा।
साचो धणी जुमसा ! रामो पीर जुमसा।
सवाई पीर जुमसा ! तारी मदत जुमसा।[3]

बाबा प्यारा की दरगाह का उल्लेख भी एक रेवा जी के गरबे म हुआ है, यथा—
मालसर मा पाणी असपतु रे, पाणी चार्फेर चाल्यु,
परचो जाणी पीर नो, माअे सामु माल्यु।[4]
गुजरात म ही एक जैसल पीर भी अजार नगर के प्रसिद्ध पीर हुए हैं।[5]
इस प्रकार इन दोनो प्रान्तो म धर्म-निरपेक्ष भाव से पीर-पूजा सम्बन्धी अनेक लोकगीत प्रचलित हैं।

1 रढियाली रात (भाग 3) पृ० 69 70
2 रढियाली रात (भाग 2) पृ० 124-125
3 गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 267
4 वही, पृ० 85
5 अे कच्छ अजार मोटु गाम जी रे!
त्या वसे जेसलपीर राज।—वही, (भाग 4), पृ०39

(ख) व्रत-उपवास सम्बन्धी लोकगीत

बालिकाएं एवं स्त्रियां विविध वारों एवं तिथियों को व्रत-उपवास करती हैं, जिनका लौकिक महत्त्व यह है कि उनको मनोनुकूल वर मिलेगा अथवा उनका सुहाग बना रहेगा और परिवार में सुख समृद्धि रहेगी और पारलौकिक महत्त्व यह है कि धर्म-कर्म करने से उनका परलोक या आगामी जीवन सफल होगा। इन्हीं लौकिक एवं पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्रत एवं उपवास किए जाते हैं।

व्रत उपवासों से सम्बन्धित कुछ गीतों का उल्लेख पर्व-त्यौहारों के अन्तर्गत तुलसी, गणगौर और सावन की तीज शीर्षकों के साथ किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त भी कुछ ऐसी तिथियां हैं जिन पर व्रत-उपवास किया जाता है और दान-पुण्य तथा धार्मिक विधान करके व्रत पूर्ण किया जाता है।

कुमारी श्रद्धादेवी मजमुदार ने लिखा है—गुजरात का सांस्कृतिक जीवन का, उसकी जात-पात का, उसके रीति रिवाजों का, उसके लग्नगीतों का और उसके दूसरे लोकगीतों का मारवाड़ राजस्थान के साथ सगा सम्बन्ध है।[1] अतः व्रत-उपवास भी दोनों प्रान्तों के समान ही हैं। व्रत-उपवास के दिन स्त्रियां व्रत रखती हैं और उपवास करती हैं तथा परस्पर व्रत-कथाएं कहती सुनती हैं।

एकादशी व्रत पर राजस्थान में स्त्रियां निम्न गीत गाती हैं—

> बरत करो एकादशी अथवा करो भाई एकादशी
> राम नाम बिन नहीं निस्तारा।[2]

इस अवसर पर और भी अनेक गीत गाए जाते हैं।[3]

गुजराती गीत में भी एकादशी व्रत का उल्लेख हुआ है और यमुना में स्नान करने की इच्छा व्यक्त की गई है—

> आज मारो उत्तम एकादशी साहेली रे
> आज मारे छे उपवास, मोहनलाल रे,
> जावु श्री जमना जी मा झीलवा।[4]

इसके अतिरिक्त भी गुजरात में एकादशी व्रत संबंधी कई गीत प्रचलित हैं।[5] एकादशी के अलावा प्रदोष और पूर्णमासी तथा सोम, मंगल आदि सातों दिन

---

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 55

2 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 153

3 वही (भाग 2) गीत सं० 76 एवं 77

4 गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 174

5 (क) देखिए—गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 174 से 177
(भाग 7), पृ० 170, 171 व 249 250
(भाग 8) पृ० 191 व 296, और
(भाग 9), पृ० 32, 172, 192 193 व 195

कोई न कोई व्रत मनाया जाता है जिसके अनेक गीत दोनो प्रान्तो मे प्रचलित हैं। विस्तारमय से उनका वर्णन नही किया जा रहा है।

कुमारी श्रद्धा मजमुदार के कथन से तो राजस्थान, गुजरात की सस्कृति का पीहर सिद्ध हो जाता है, तब फिर इसके गीतो अथवा परम्पराओ प्रथाओ मे समानता क्यो न हो।

(ग) अधविश्वासो से सम्बन्धित लोकगीत

राजस्थानी एव गुजराती लोक-जीवन मे ही नही वरन् ससार के प्रत्येक भाग मे विविध अधविश्वास प्रचलित हैं। तर्क के आधार पर तो मनुष्य इनको न्यायोचित नही ठहरा सकता किन्तु परम्परा से, विरासत मे मिले इन विश्वासो की अवहेलना करने मे वह समर्थ नही है। ऐसा लगता है कि इन अधविश्वासो मे स्थायी समझौता हो चुका है। यही जीवन की विडम्बना है। वस्तुत मानव का विवेक जहा कुण्ठित हो जाता है, वही वह अलौकिक-शक्ति की कल्पना कर लेता है और आखें बन्द करके उसमे विश्वास करता है।

डॉ० सत्येन्द्र ने लिखा है —'लोकधर्म और लोक विश्वास परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।[1] लोक-जीवन के ये विश्वास धर्म पर आधारित हैं। आज भी बहुत से लोग डॉक्टर या वैद्य की दवा की अपेक्षा अलौकिक शक्तियो मे अधिक विश्वास रखते है। ये विश्वास परम्परागत है। शकुन-विचार, झाड-फूक, गण्डे-ताबीज, टोने-टोटके आदि विरासत मे प्राप्त अमोघ अस्त्र हैं। इनसे सम्बन्धित गीतो को निम्न भागो मे वर्गीकृत किया जा सकता है—

1 **शकुन-अपशकुन से सम्बन्धित लोकगीत**—किसी विशेष कार्य-व्यापार से, मानव-मन अपने कार्य की सिद्धि अथवा असिद्धि का सम्बन्ध जोडता है। ये ही सम्बन्ध शकुन एव अपशकुन (क्रमश) के रूप मे माने जाते हैं। मनुष्य ने न जाने कितने अनुभवो एव परीक्षणो के आधार पर इन्हें मान्यता प्रदान की होगी, इसका अनुमान भी नही लगाया जा सकता। इनमे तथ्य का होना न होना विवादास्पद ही है। इसकी परिभाषा देते हुए डॉ० सत्येन्द्र ने लिखा है—"शकुन शुभ परिणाम के द्योतक होते हैं। अपशकुन अशुभ परिणाम के द्योतक। ये वस्तु व्यापारो से मिलने वाली भविष्यवाणिया हैं।"[2] अब राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो मे उल्लेखित 'शकुन एव उपशकुन' पर विचार करेंगे।

शकुन—शकुन, से तात्पर्य है, *भविष्य मे होने वाले मनोनुकूल कार्य का सकेत* प्राप्त होना। ये सकेत आख फडकने या किसी विशेष अग के फडकने से लेकर पशु-पक्षियो के व्यापार तक निर्भर है। कुछ राजस्थानी लोकगीतों मे कौआ को शकुन बताने वाला

---

1 लोक साहित्य विज्ञान—डॉ० सत्येन्द्र, पृ० 535

2. लोक साहित्य विज्ञान—डॉ० सत्येन्द्र, पृ० 537

कहा गया है।[1] पहले उदाहरण में नायिका कौए को कहती है कि यदि मेरे प्रियतम घर आने वाले हो तो तू उड़कर शकुन बता। वह उसको प्रलोभन भी देती है कि यदि उसने उड़कर शकुन बताए और उसके प्रियतम आ गए तो वह उसे खीर खांड का भोजन देगी और उसकी चोंच सोने से मढ़ा देगी। दूसरे उदाहरण में नायिका अपने प्रवासी प्रियतम को सावन की बदली के हाथ संदेश भेजती हुई कहती है कि मैं काग उड़ाते-उड़ाते रुग्ण हो गई हूं। तात्पर्य यह कि वह कौओं को उड़ा-उड़ा कर प्रियतम के आने का शकुन मनाती रही है। तीसरे उदाहरण में भी प्रवासी प्रियतम को बुलाने के लिए शकुन मनाती हुई वियोगिनी नायिका द्वारा नित्य-प्रति उठकर काग उड़ाने का उल्लेख है। चौथे उदाहरण में भी कहा गया है कि एक बहिन कौए को उड़ाकर भाई के आगमन के लिए शकुन मनाती है। लोकगीतों के इन उक्त उदाहरणों में यह सिद्ध हो जाता है कि कौए उड़ने को लोक-जीवन माना जाता रहा है। तुलसीदास जी ने भी इस विश्वास का उल्लेख किया है, यथा—

> बैठी सगुन मनावती माता।
> कब ऐहैं मेरे बाल कुसल घर कहहु, काग फुरि बाता।
>
> —गीतावली

अंग फड़कने से भी शकुन माना जाता है। नारी का बायां अंग फड़कना शुभ संकेत माना जाता है। एक गुजराती गीत में बहिन का बायां पांव फड़कता है, तो वह स्वयं से प्रश्न करती है कि मेरे घर कौन आयेगा। मेरा कौन भाई घर आने वाला है और कौन भाई आएगा? मैं तो अमुक भाई की प्रतीक्षा कर रही हूं। उस भाई के आने पर रंग रहेगा।[2]

राजस्थान के प्रसिद्ध लोकगीत 'आखड़ली' में आंख फड़कने और काग के बोलने पर पत्नी अपने पति के आगमन की कल्पना करती है। दोनों शकुन होने पर वह सोचती

---

1 (क) उड़-उड़ जा रे म्हारा काला रे कागला रे, जद म्हारा पीवजी घर आवे।
खीर खांड को जीमण जीमाऊं, सोने में चोंच मढ़ाऊं रे कागा—

—संकलित

(ख) मेड़ी को काग उड़ाती, आंसूड़ा ढलकाती मोरड़ी रे।
बेगो आव ढोला रे 'बन की मोरड़ी रे। —संकलित

(ग) नित उठ काग उड़ावती, परदेशी सान थें जा बैठ्या चाकरी। —संकलित

(घ) म्हारे घर रे ए भीतर बेल पसरी, आंगण आमलियो मोड़ियो।
उड़ उड़ रे कागा बैठ डाली, बीरो कद घर आवसी।

—राजस्थानी लोकगीत—सं० रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत

2 मारो फरके छै डाबा पग नो लाक रे
घेरे कोण साजनिया आवशे रे —चूंदड़ी, (भाग 1), पृ० [illegible]

है कि कोई आकर, उसके प्रियतम के आने की सूचना क्या नहीं देता।[1]

अपशकुन—अपशकुन से तात्पर्य है, भविष्य में मनोवांछित कार्य का असफल होना और उसका सम्बन्ध विविध विशेष कार्य व्यापारों से जोड़ा जाता है, जैसे बिल्ली के रास्ता काटने से, छींक हो जाने, आदि से। किसी कार्य के आरम्भ में यदि छींक हो जाए तो अपशकुन माना जाता है। कार्य की सफलता संदिग्ध मानी जाती है। यहां एक राजस्थानी लोकगीत में एक युद्ध में जाते हुए वीर को युद्ध में जाने से रोकने का असफल प्रयास किया जा रहा है। जैसे ही उसने पागड़े में पांव दिया कि छींक हो गई है।[2] इस प्रकार छींक को स्पष्टतया अपशकुन माना गया है।

किसी शुभ कार्य के लिए प्रस्थान करते समय पक्षियों के दाहिनी और बाईं ओर बोलने से शकुन-अपशकुन माने जाते हैं। प्रस्थान के समय बाईं ओर तीतर और दायीं ओर उल्लू बोलना शकुन और यदि इसके विपरीत हो तो अपशकुन माना जाता है। सास जवाई से कहती है कि चलते समय तुम्हारे दाहिनी ओर तीतर बोला है अर्थात् अपशकुन हुआ है अतः मेरी लाडली नहीं चलेगी। उत्तर में जवाई कहता है कि हे सासू! बायीं ओर तीतर बोला है और दाहिनी ओर उल्लू अर्थात् शकुन हुए हैं।[3] एक गुजराती लोकगीत में चीवड़ी (उल्लू की जाति का पक्षी) के बोलने पर अपशकुन माने जा रहे हैं। कोई पथिक जा रहा था कि रोड नदी के काठे पर चीवड़ी बोलती है तो उसको रुकने को कहा जाता है क्योंकि अपशकुन हो रहे हैं अतः वह रुककर अपनी जोड़ी में सम्मिलित हो जाए।[4]

यदि सामने लकड़ी मिल जाए तो भी अपशकुन माना जाता है। एक गुजराती गीत में किसी ऊंट के सवार से कहा जा रहा है कि तुम ऊंट को लौटा लो क्योंकि लकड़ी के दर्शन से आज बड़ा अपशकुन हुआ है।[5]

(2) नजर लगना तथा राई नोंन करने से संबंधित लोकगीत—लोक जीवन में

---

1 अम्बा म्हारी आंबड़ली फरके ए !
म्हारो वाग फरूके कोटड़यां ए !
—मरुभारती—1112 आंबड़ली लोकगीत के निर्माण की प्रक्रिया, डॉ० मनोहर शर्मा

2 ए मत जा झगड़ा में, झगड़ा में काको का जाया रे।
पागड़ियो पग देतां छड़के छींक हेगी ओ। मत जा झगड़ा में। —सकलित

3 जवाईडा, तने थाणू तीतर बोल्यो रेक मेरी लाडा ना चले।
सासूड़ी, मने बांवो तीतर बोल्यो, श्रेक थाणो बोली कोवरी।
—राजस्थान के लोकगीत—स० स्य, पृ० 104

4 रोड़ना कांठे चीवरी बोली, अवलां शकुन थाय, उभो रे।
उभो रे' वादला आनार ! जोड़लु मेलु थाय !
—नवोद्दलको, पृ० 42

5 ओतरा तो सांढड़ी श्रे असवार, सामां मल्यां काठी लाकडां।
ओतरा, तु पाछेरी वल आजनां शकुन माठां गणाय।
—मवोद्दलको पृ० 202

जाती है और हनुमान जी की मळी (मूर्ति पर लगा मैल) मगाया जाता है।[1]

(1) डायन के विचार से सम्बन्धित लोकगीत—किसी ऐसी जीवत स्त्री को 'डायन' कहा जाता है, जिसकी कुदृष्टि यदि किसी सुन्दर पुरुष, स्त्री अथवा बालक पर पड जाय तो उसकी मृत्यु हो जाय। एक राजस्थानी गीत मे कोई स्त्री अपने पति को 'गैर' नाच म विशेष रूप स सजधज कर जाने को और विशेष त्वरापूर्वक नाचने के लिए मना करती है, क्योकि उसको भय है कि कही उसके प्रियतम को कोई डायन न डकार जाए।[2] यही विचार 'पन्ना-मारू' नामक प्रसिद्ध राजस्थानी वियोग-गीत मे भी मिलता है। इसमे भी प्रियतमा के पापशकी हृदय को यही भय है कि कही उसके प्रियतम को विदेश मे डायन निगल जाए। अत वह उससे विदेश न जाने का अनुरोध करती है।[3]

(4) गण्डे-ताबीज सम्बन्धी लोकगीत—रोग पीडा आदि विभिन्न मानवीय दु खों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए गण्डे-ताबीज अथवा मादलिया चौकी अभिमन्त्रित करवाए जाते हैं। टोना टोटका करने के अन्तर्गत भी इसे रखा जा सकता है। जन-जीवन मे इसका वडा प्रचलन है। राजस्थान के प्रसिद्ध गीत 'पन्ना-मारू' मे जब नायिका कहती है कि तुम सिंध देश मत जाओ क्योकि वहा तुम्हारे प्राणो को डायनें निगल जाएगी, तो पन्ना कहते हैं कि तुम सोनी की दुकान पर जाओ और वहा से मादलिया लेकर अभिमन्त्रित करवा दो। ताकि डायनो का भय नि शेष हो जाए और उसके पश्चात् हमे विदा करो।[4] मादलिया सोने, चादी अथवा ताबे का बना होता है। इसका आकार लम्बा और गोल होता है, जब कि ताबीज का चौकोर। इसमे अभिमन्त्रण करने वाला व्यक्ति कोई मत्र आदि लिखकर विभिन्न वस्तुओ के साथ बन्द कर देता है। फिर इसको पूजा के धुए मे निकाल करके जिस व्यक्ति को भी कोई पीडा हो या होने की सभावना हो उसके गले, कमर अथवा भुजा पर बाध दिया जाता है। इसके साथ यह विश्वास रहता है कि अब उस पर डायन की नजर, भूत-प्रेत और रोगबाधा आदि का कोई प्रभाव नही पडेगा।

---

1 चमरवडो पहेरी ने वउ तो पाणीडया ग्या' ता,
वउ ने नजरू लागो, माणाराज। मारू जी—
सात धवकानी धूल मगावो,
मला हनुमान नी लई आवो, माणा राज। मारू जी—
—लो० सा० मा० मणकी 10—पृ० 253-254

2 दोय दोय कणिया ले'र भवर जी गैर नाचआ चाल्या
थरा थारी परणियोडी ओलम्बिया झाडे रे धीरे नाच
डाकणिया डकराय राले रे धीरे नाच।
—सकलित

3. पन्ना थेंई चाल्या परदेश पर धरती रो पाणी लागणो
पन्ना सिंधी गहरो डाकणियों रो देस,
गटको कर जासी (म्हारा) पन्ना रे जीव रो।
—राजस्थानी लोकगीत—स० शिवसिंह चोयल, पृ० 67

4. गोरी ए जाओ जाओ सोनीडे री हाट,
मादलियो मनरावो सेण प ना' रा जीव रो
गोरी म्हारी ए हम हस दोनी म्हाने सीख।
—वही, पृ० 67

रोगो आदि को ही नही मादलिया के द्वारा ओलू को भी अभिमन्त्रित कराने का उल्लेख मिलता है। एक नव-विवाहिता पत्नी अपने पति से कहती है कि उसको पीहर की ओलू (याद) बहुत आती है, अत उसे पीहर भेज दो, किन्तु रसिक प्रियतम इसके लिए तैयार नहीं। अत वह ओलू को मादलिया मे कीलित कराने की बात रखता है।[1]

(5) कामण या जादू टोना सबधी लोकगीत—जादू या टोना राजस्थान एव गुजरात मे 'कामण की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। ऐसा विश्वास है कि टोने-टोटके की(जादू की)जानकारी रखने वाले लोग इसके प्रभाव से किसी भी व्यक्ति को बीमार कर सकते हैं अथवा वश मे कर सकते हैं। टोना क्या है ? इस सबध मे प्रसिद्ध नृ-विज्ञानी श्री जेम्स फ्रेजर का कथन है—'टोना क्या है ? टोना मस्तिष्क की अत्यन्त सीधी-सादी और अत्यन्त प्रारम्भिक प्रक्रियाओ का भ्रामक उपयोग ही ता है। दूसरे शब्दो मे सादृश्य और सम्बद्धता के सहारे विचारो की सगति विषयक मानसिक प्रक्रिया का भ्रामक उपयोग टोने मे दिखाई पडता है। दूसरी ओर धर्म मानता है उन चेतन और वैयक्तिक कर्त्ताओ को जो प्रकृति के दृश्य आवरण के पीछे रहते हैं और जो मनुष्य से ऊचे होते हैं।"[2]

डॉ० सत्येन्द्र ने टोने के सबध मे लिखा है—"मैजिक या टोने के दो भेद और किए जाते हैं—ब्लैक मैजिक(काले-टोने)जो अहितकर व्यक्तियो का आह्वान कर दुष्कृत्य कराने के उपयोग म आते हैं—मूठ चलाना आदि। ह्वाइट (श्वेत) मैजिक भले कार्यों के लिए।[3]

राजस्थानी एव गुजराती 'कामण' शब्द वास्तव मे काले जादू अथवा ब्लैक-मैजिक का पर्याप्त है। कामण का जिन गीतों मे उल्लेख है, उनम कामण किसी को वश मे करने के लिए किए जाते हैं। मारण, उच्चाटन एव वशीकरण के लिए भी कामण किए जाते हैं। लोकगीतों म कही तो वधू स्वय कामण करवाकर वर को वश मे करवाती है और कही स्वय कामण उतरवाने के लिए सचेष्ट दिखाई देती है। एक राजस्थानी गीत मे वधू कहती है कि मेरा नवलवर क्यो मुरझाया हुआ है ? इस पर किसी ने कामण कर दिया ? मेरा फूल जैसा सुन्दर वर मुरझाया हुआ लग रहा है, इस पर किसने कामण कर दिया ? कामण करने वाली जग विदित सोनी की बेटी ही हो सकती है। अत उसे नेग चुका करके कामण ढीले छुड़वाओ। उसको रुपए देकर कामण ढीले छुड़वाओ।[4] एक गुजराती गीत मे कहा गया है कि सुन्दर तुलसी ने वर पर कामण कर दिया और बेचारी

---

1 सुदर गोरी ए आलूड़ी थारी मादलिये मतराय,
सानों री ए बैनड़। —वही, पृ० 52 53

2 गोल्डन बा—सर जेम्स फ्रेजर, पृ० 54

3 लोक साहित्य—विज्ञान—डॉ० सत्येन्द्र पृ० 474

4 म्हारो नवल बनो कुमलावैजी कामण कुण कीदा ?
म्हारो फूल बनो कुमलावैजी कामण कुण कीदा ? —सकलित

वधू के दिल का मन हर लिया।[1]

उक्त दोनों उदाहरणों में वर पर 'कामण' के कारण वधू चिंतित दिखाई देती है। अब इसके ठीक विपरीत स्थिति का अवलोकन कीजिए जहाँ वधू, वर को वश में करने के लिए कामण करवाती है। हे नादान ! (वर को संबोधन) मैं आज कामण करूंगी, मत मान करो। थोड़े आज करूंगी, थोड़े कल करूंगी। कामण करके मैं तुम्हें अपने काका जी की पोठ (मुख्य द्वार) पर द्वारपाल रखूंगी।[2] एक गुजराती गीत में वधू पाटन के पुजारी से आकर प्रार्थना करती है कि हे भाई ! मुझे कामण कर दो। पुजारी उसको कहता है कि बैठो बहिन, सुख-दुख की बात करो। इस पर वह कहती है कि मेरी सासू घर में झाड़ू से मुझ से झाड़ू लगवाती है और मेरा प्रियतम मुझे पास की ईंढाणी पर पानी भरवाता है। तुम अढ़ाई रुपया लो और कामण करो। तुम एक सौ साठ रुपया लो और मोरे को साठ में कामण कर दो।[3] लोकगीतों में इस प्रकार के गीतों का प्रचलन यह स्पष्ट करता है कि किसी समय इस काले जादू के प्रति जन मानस बहुत आस्थावान रहा होगा। आज के विज्ञान के युग में ऐसी बातों पर लोग विश्वास भी नहीं करते।

(6) देवता एवं रोगों का सम्बन्ध : चेचक से संबंधित लोकगीत — एक धार्मिक अंधविश्वास यह है कि रोग या महामारी दैवी प्रकोप के कारण फैलते हैं। इस सम्बन्ध में ई० ओ० मार्टिन का कथन द्रष्टव्य है— 'भारत की यह एक सामान्य ग्रामीण धारणा है कि रोग और अस्वास्थ्य आदि प्राकृतिक कारणों के परिणाम न होकर मात्र देवियों, जादू-टोनों और नजर आदि के फलस्वरूप होते हैं। इसका बड़ा सीधा सा कारण है। जैसे कि विशूचिका जो इतना आकस्मिक और उग्र रूप में फैलता है और चेचक जो कि इतना भयानक और विरूपकारक है, किसी देवी या देवता के ही नियमित माना जाता है।[4] वास्तव में लोगों में यही लोक विश्वास दृढ़ हो गया है। आज भी गांवों में लोग, रोग की दवा करने की अपेक्षा देवता के यहाँ जाकर सिर झुकाना या देवता के नाम का धागा रोगी के हाथ में बांधना ही पर्याप्त समझते हैं। तात्पर्य यह है कि रोग का कारण एवं निवारण दोनों ही देवताओं से अथवा ऐसे ही अन्य विश्वास से सम्बन्धित माना जाता है। राजस्थान व गुजरात में सांप के काटे व्यक्ति को अस्पताल नहीं ले जाते बल्कि गोर के देवता श्री तेजा जी महाराज (राजस्थान में) तथा श्री गोगा जी महाराज (राजस्थान

---

1 [illegible]
[illegible]
—[illegible] (भाग 4), पृ० 16

2 [illegible]
[illegible]
—[illegible] (भाग 4), [illegible], पृ० 57

3 [illegible]
[illegible]
—[illegible] (भाग 6) पृ० 123

4 [illegible] —[illegible] 25, 1933 [illegible]

व गुजरात दोनों मे) वे यहा ले जाते हैं । आगे देवी-देवता विषयक विश्वास के अन्तर्गत इस सदर्भ मे लोकगीतो के उदाहरण दिए जा रहे हैं ।

शीतला या सेडलमाता चेचक की देवी मानी जाती है । इस देवी के प्रकोप के कारण ही चेचक फैलता है—ऐसा विश्वास है । शीतला को पूजार्थ चैत्र कृष्णा सप्तमी को शील सप्तमी का त्यौहार मनाया जाता है, ताकि माता प्रसन्न रहे और रोग नही फैले। जब शीतला का प्रकोप होता है तो बालक की मां शीतला माता से अनुनय करती है कि मा मेरे बच्चो की रक्षा करना । एक लोकगीत के अनुसार जब मा को बालक के ऊपर शीतला के प्रकोप के आसार दिखाई दिये तब वह तुरन्त शीतला माता की शरण मे जा पहुची । शीतला मा ने तुरन्त आशीर्वाद दिया मैं छत्र की छाया करूगी ।[1]

इसी प्रकार एक गुजराती भील स्त्री भी शामला जी (केसरिया) पर विश्वास करती है कि उनकी कृपा से उसका बच्चा स्वस्थ रहेगा । वह केसरिया जी को नारियल की जोडी भी चढ़ाती है ।[2]

इन उदाहरणो मे स्पष्ट है कि अन्य विश्वासो से जनता अनेक रोगों का सबध विभिन्न देवताओ से जोड लेती है और उन्ही से रक्षा की प्रार्थना करती है ।

(7) देवी देवता विषयक लोक विश्वास एव लोकगीत—'देवता और रोगो का सम्बन्ध' म उदाहरणो द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि देवी-देवताओ को रोगो का जनक भी माना जाता है और साथ ही उपचार के लिए भी उनकी पूजा की जाती है। यहा यह बतलाया जा रहा है कि कुछ देवताओ को विषहर्ता पुत्रदाता और इष्टदाता भी माना जाता है और तदनुसार उनसे प्रार्थना भी की जाती है । राजस्थान म ही तेजा जी महाराज को सापो का नियन्त्रक माना जाता है और एक गीत के माध्यम से उनसे सर्प के विष को उतारने की प्रार्थना की जा रही है ।[3]

देवताओं को पुत्रदाता भी माना जाता है । भैरू जी के एक गीत मे कोई बध्या उनसे पुत्र देने की प्रार्थना करती है ।[4] इसी प्रकार से पीर जी से सम्बन्धित एक गीत मे भी पुत्र की याचना की गई है ।[5] गुजरात के एक प्रसिद्ध देवता शामलिया जो

---

1. थें मयू डरपो जोगण्या ए करूगी छतर की छाय ।
   जद म्हारी माता टूठण लागी, मथके को मो बीच ॥
   —राजस्थानी लोकगीत—स० ठाकुर रामसिंह आदि, पृ० 18
2. हासे फोरू मादू याय रे, हक्ते वोलमाय राखो,
   हामलाजी-हामलाजो, दे नालियेर जोड रे । —नवोहुलको—पृ० 14
3. बोम्रा रदाऊ रज रे ऊजला, हरिया मूगा री दाल ।
   लहर उतारो काला नाग री ।
   —राजस्थानी लोकगीत (भाग 2), स० शिवसिंह चोयल । पृ० 26
4. पाटी का रे भेरूं लाडला गोद भरावेलो काई रे ?
   मूं तो थारे शरणें आई रे म्हारा भेरू गोद भरावेलो काई रे ? —सकलित
5. बेटा तो मांगे रूडी बामणी,
   अन्न धन बारखा री माग ।

से सम्बन्धित एक गीत में कहा गया है कि उनकी कृपा से किसी वणिक को पुत्र प्राप्ति हुई।[1]

पुत्रदान के अतिरिक्त ये देवता अन्य मनोवांछित फल भी देते हैं। पीर जी के एक दूसरे गीत में एक स्त्री पीर जी से रोजगार देने की प्रार्थना करती है।[2] एक गुजराती गीत के अनुसार कोई अलबेली पानी भरने गई तो उसका बिछिया (आभूषण) पानी में डूब गया। उसने हनुमान जी को बिछिया मिलने पर लड्डू चढ़ाने की मनौती मानी। हनुमान जी के साथ अन्य अनेक देवताओं की भी मनौती मानी गई। जब बिछिया मिल गए तब वह कहती है कि हनुमान जी को किस बात के लड्डू, मेरा बिछिया खोया था और मुझे मिल गया।[3] जमिलशा, पीर से संबंधित वह गुजराती गीत भी प्रसिद्ध है जिस में पीर के आशीर्वाद से किसी निःसंतान ब्राह्मण को पुत्र प्राप्ति हुई थी।[4]

उपर्युक्त गीतों के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये देवी-देवता रोगों के जनक और निवारण भी हैं, साथ ही पुत्र-प्राप्ति, इष्ट-प्राप्ति आदि में भी ये पर्याप्त सहायक हैं और इनका सम्मान हिन्दू और मुसलमान समान रूप से करते हैं।

(8) **बलि संबंधी लोकगीत**—अभीष्ट सिद्धि के लिए देवी-देवताओं को बलि देने की परम्परा भी लोकजीवन में प्रचलित है। पशुबलि तो सामान्य बात है, किन्तु नर-बलि तक दी जाती है। लोकगीतों में पशुबलि एवं नरबलि के उदाहरण उपलब्ध हैं। एक राजस्थानी लोकगीत में जेल में बैठा राजू रावत पीपलाज की माता (दुर्गा) को स्मरण करके उनसे प्रार्थना करता है कि हे पहाड़ों की देवी, मेरी रक्षा करो तो मैं तुम्हें दो बलि दूंगा नहीं तो मैं आकर तुम्हारे आगे अपना सिर काट कर रख दूंगा। मैं नाथ जी को नारियल चढ़ाऊंगा और माता जी को बकरा, यथा—

---

1. ब्या सोकलों माय रामया जी, बिलु—
   तेने रे बोलमाय नार बो, बिलु—
   हवने वचन रेज्यु बिलु—

   —नवोहलको—पृ० 13

2. पांचू पीरों का हाथ में गुलाब की छड़ी।
   दो'न पीरो रुजगार बन्दी काल की घड़ी।

   —संकलित

3. वींछीयो जलमां डूब्यो रे, अलबेली नो वींछीयो,
   हनुमान ने लाडु मान्या रे, अलबेली—
   हनुमान ने लाडु शाना रे, अलबेली—
   मारो हतो ने मने जडयो रे, अलबेली—

   —गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 139

4. पीरहाक मारी ने जमियल आगिया रे,
   पाछी सइ जाने गोरली गाय रे, बामणिया,
   मारी मानता खावी अलपणी रे।

   —रढियाली रात (भाग 2), पृ० 124-125

बैठो-बैठो राजू पिपलाज ने सवरे ओ।

× × ×

म्हारा ऊपर आवै देवी दोवड चाड चाढुओ।
नितर थारा मूडा आगे आय माथा मेलू ओ।
नाथ ने नारेल चाहू, माता जी ने बकरियो।[1]

एक गुजराती गीत मे पुरुष एव स्त्री का बलिदान, जल-देवता को प्रसन्न करने के लिए किया गया है।

झाझ पताज ने जतर वागे,
दीकरो ने वहु पधरावे जी री।[2]

स्पष्ट है कि अभीष्ट सिद्धि के लिए पशु एव नरबलि देने का अन्ध-विश्वास दोनो प्रातो म प्रचलित है।

(9) भाग्यवाद सबधी लोकगीत—जीवन के सुख-दुख, अभाव आदि सब भाग्य के कारण होते हैं, ऐसा लोक विश्वास है। इस विश्वास का लोकगीतो मे भी पर्याप्त उल्लेख हुआ है। एक राजस्थानी गीत मे पत्नी पति से कहती है कि रोटी को मत बाधिए, रोटी कौन देगा? पति उत्तर देता है कि आओ पगली मैं भाग्य मे विश्वास रखता हू, रोटी राम देंगे।[3] भाग्य की रेखाए वक्र एव अज्ञात भी मानी जाती हैं जिन को पढना असभव है।[4] एक गुजराती गीत म किसी स्त्री के द्वारा किसी मुसलमान के घर का पानी पी लेने को भी भाग्य माना गया है।[5] बेमेल विवाह भी भाग्य के कारण होते हैं। अत एक गुजराती स्त्री अपनी सखी से कहती है कि मेरे हृदय मे ज्वाला उठती है, परन्तु किससे कहू? मेरे भाग्य मे ही कुजोडा लिखा गया था।[6] इन उदाहरणो से भाग्य मे लोक जीवन का अटूट विश्वास स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा है।

निष्कर्ष

इस प्रकार राजस्थानी एव गुजराती त्योहार-पर्वों से सम्बन्धित लोकगीतो के विवेचन से निम्न तथ्य उपलब्ध होते हैं, यथा—

---

1 राजस्थान के त्योहार गीत—परिशिष्ट, पृ० 12

2 वही (भाग 3), पृ० 21

3 ढोला कवर जी रोटी ने मत बांधो रोटी कुण देला?
जा जा गेली भाग भरोसे रोटी राम दे ला!
—सकलित

4 कागद हो तो बांच लू, करम न बांच्यो जाय।
—राजस्थान लोकगीत—डॉ० दाधीच, पृ० 127

5 लख्या मारा ललाटना लेख रे, विधातानालेख र, पाणी पीधा में मुसलमानना र लोल।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 8), पृ० 175

6 मारे करमे कजोडु बहेन। बात कोने करू?
—वही (भाग 7), पृ० 124

(1) त्योहारी-पर्वों के आयोजन का कारण, मानव जीवन की एकरसात्मकता भग करना, हार्दिक आनन्द-उमग को व्यक्त करना, देवी-देवताओं की पूजा एव प्राकृतिक परिवर्तनो का स्वागत है।

(2) होली का त्योहार दोनो प्रान्तों मे समान रूप से मनाया जाता है और अबीर गुलाल व रग खेलना, गैर नृत्य का आयोजन करना आदि समान प्रथाए भी दोनो प्रातो के लोकगीतो मे उपलब्ध हैं।

(3) घुडला और श्रावण तृतीय राजस्थान के विशिष्ट प्रादेशिक त्योहार हैं और आखातीज, देदा कूटना, और गोधी बाबा गुजरात के। वे अन्य प्रात मे नही मनाए जाते।

(4) शील सप्तमी शीतला देवी की पूजा पर आधारित है।

(5) गणगौर गौरी पूजा पर आधारित त्योहार है। बालिकाए इसे मनोवाछित वर प्राप्ति के लिए, तो विवाहिताए सुहाग की रक्षा के लिए मनाती हैं। गौरी पूजन दोनो प्रांतो मे समान प्रचलित है, परन्तु राजस्थान मे गणगौर के मेले लगत है। और यह त्योहार वहा अधिक धूमधाम स मनाया जाता है।

(6) दीवाली लक्ष्मी पूजा का त्योहार है और यह दोनो प्रातो मे विशेष धूमधाम के साथ मनाया जाता है। तुलसी पूजा और नवरात्रि का त्योहार भी दोनो प्रातो मे समानतया मनाया जाता है। इन त्योहारो में होली और दीवाली तो राष्ट्रव्यापी त्योहार हैं और शेष कुछ प्रातो में ही सीमित है।

राजस्थानी एव गुजराती धार्मिक लोकगीतों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि—

(1) पौराणिक देवी-देवताओ मे इन्द्र को छोडकर शेष सभी देवी-देवताओ के गीत दोनो प्रातों मे गाए जाते है।

(2) लौकिक देवी-देवताओ मे झूमार जी, पाबू जी और तेजा जी राजस्थान के अपने लोक देवता हैं तो शामळिया जी गुजरात के। क्रातिकारियों की पूजा से सम्बन्धित गीत दोनों प्रातो मे गाए जाते हैं। मानवीय मूल्यो की रक्षार्थ लडने वाले पीर भी देवता के रूप मे अन्यत्र पूजे जाते है। दोनो प्रातो मे पीर जी की पूजा से सम्बन्धित अनेक गीत मिलते हैं जिससे लोक जीवन का धर्म-निरपेक्षता पूर्ण दृष्टिकोण स्पष्ट परिलक्षित होता है।

(3) व्रत-उपवासो के गीत भी दोनो प्रातो मे समान रूप से गाए जाते हैं।

(4) अन्ध विश्वासो से सम्बन्धित गीतो के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि लोक जीवन मे अनेक अन्ध-विश्वास प्रचलित हैं और उनके प्रति लोक मानस मे गहरी आस्था है।

चतुर्थ अध्याय

राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों में चित्रित आर्थिक एवं राजनैतिक पक्ष

लोकगीतों मे जीवन का प्रत्येक पक्ष चित्रित हुआ है। आर्थिक पक्ष, जीवन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष है, जिसकी विशेष झांकी इन गीतो मे मिलती है।

व्यवस्थित विचार के लिए इन गीतों को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है —

(1) विभिन्न व्यवसाय—जीवन-यापन के लिए मानव को विभिन्न व्यवसायो का आश्रय लेना पडता है। इन व्यवसायो का लोकगीतो मे यथाअवसर उल्लेख हुआ है। ये लोकगीत वस्तुत ग्रामीण समाज की सम्पत्ति हैं, अतः इनमे ग्रामीण समाज का ही विशेष चित्रण मिलता है। ग्रामीणो का प्रमुख व्यवसाय है कृषि, फिर कुछ लोग व्यापार भी करते हैं और कुछ लोग नौकरी पर निर्भर करते हैं, यहा इन्ही व्यवसायो की चर्चा की जा रही है।

(क) कृषि

ग्रामीण-समाज के अधिकतर लोग कृषि व्यवसाय पर निर्भर करते हैं। कृषि ही ग्रामीण-जीवन का मुख्य व्यवसाय है। दोनों प्रान्तो के लोकगीतो मे कृषक-जीवन के विभिन्न कार्य-व्यापारो का उल्लेख उपलब्ध होता है।

भारतवर्ष मे कृषि प्रायः वर्षा पर निर्भर है। अत. कृषि कार्यों मे व्यस्त कृषक वर्षा के आगमन की आतुरता से प्रतीक्षा करता है। इस गीत मे एक कृषक-बाला वर्षा को आमन्त्रित करती है—

नित बरसो मेरा बागड मे
बागड निपजै मोठ बाजरी, गेहू निपजै तालर मे ।[1]

जहा राजस्थानी कृषक-बाला मेह से नित्य बागड प्रदेश मे बरसने का आग्रह करती है, वहा गुजराती कृषक-बाला 'मेउला' को अपने दादा के देश म बरसने को आमन्त्रित करती है क्योकि वहा उसका भाई हल चला रहा है—

बरसजे-बरसजे रे मेउला दादाजी के देश,
जिया रे माडी नो आयो हल खेडे ।[2]

वर्षा के साथ ही कृषक जीवन व्यस्त हो जाता है। कृषक बाला का प्रिय भाई ईसर (शिवजी) बाजरा बो रहा है, भाई कान्हू (कृष्ण) मेवा-मिश्री से मीठे बो रहा है। ऐसी सुन्दर सुरगी ऋतु पर वह राजस्थानी कृषक-बाला बलिहारी जाती है—

ईसर बीजै बाजरो ए बदळी, बाजरो ए बदळी ।
कानू बीजै मोठ मेवा मिसरी
सुरगी रुत आई म्हारे देस, भली रुत आई म्हारे देस ।[3]

वर्षा होते ही गुजराती बहन भी अपने प्रिय भाई से डोडाळी ज्वार बोने का आग्रह करती है। पानी के ढलाव वाली भूमि मे वह छोटे कणवाली बाजरी बोने को कहती है। वह भाई से कहती है कि डोडाळी ज्वार खूब उत्पन्न होगी और तुम्हारे बोने से इस धरती मे सच्चे मोती निपजेंगे, यथा--

वावजो-वावजो रे बाधव मारा, डोडाळी जुवार,
घोरिये वाये रे, नाना कण नी बाजरी ।
नीपजै-नीपजै रे बाधव मारा, डोडाळी जुवार,
तारा ते बायेला साचा मोती नीपजै ।[4]

कृषक जीवन के आर्थिक-पक्ष का सत्य यही है उसके लिए मोठ ही मेवा एव मिश्री है। ज्वार-बाजरे के दाने ही उसके सच्चे मोती है।

एक राजस्थानी लोकगीत मे, एक कृषक ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे मेरे राम रघुनाथ! मुझे इतना वर देना कि मैं नित्य उठते ही तुम्हे हाथ जोड़ू मुझे पश्चिम दिशा मे एक खेत देना जिसके बीच मे एक नाडी (पानी रोकने के लिए मेड) हो—

1 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 228
2 गु० लो० सा० मा० (भाग 10), पृ० 139
3 राजस्थान के लोकगीत—स० सय, पृ० 61
4. गु० लो० सा० मा० (भाग 10), पृ० 139

म्हारा राम रघुनाथ
इतणा वर तो म्हाने दीज्यो नित उठ जोडू हाथ।
आयूणो तो खेत दीज्यो बिच मे दीज्यो नाडी ॥[1]

वर्षा के अभाव म प्राय अकाल हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप जीवन यापन दुष्कर हो जाता है। एक राजस्थानी लोकगीत मे नायिका कहती है कि अकाल के कारण मैं तुम्हारी क्या खातिर करू ? गेहू अब परमिट से मिलते हैं और मक्की का भाव चढ गया है। बच्चे-बच्ची रोटी मागते है बताओ मैं तुम्हारी क्या मनुहार करू, यथा—

आछ्यो आयो रे जमाना थारी काई करू मनवार ?
गोवा को तो परमट कटग्यो, मक्की रो चढग्यो भाव।
छोरा छोरी रोटी मागे, काई करू थारी मनवार ?[2]

गुजराती गीत मे स० 1956 के अकाल से सम्बन्धित एक गीत मे नायिका कहती है कि दाने के बिना हम दु खी हो गए और कोदरा-बटी नामक घास खा गए और अब तो खाने को कुछ भी नही बचा है, यथा—

दाणा बनाना द खी थया, पाडवा माडी रोड,
कोदरा-बटी खाली थया ने खावा ना रही छोंक।[3]

कृषि व्यवसाय मे व्यस्त ग्रामीण समाज अकाल की स्थिति मे किस दयनीय दशा तक पहुच जाता है, यह उन उदाहरणो से स्पष्ट हो जाता है।

कृषि के लिए बैलो की आवश्यकता तो सर्वविदित ही है। एक गुजराती गीत मे बैल के मरन पर किसान को विवश होकर नौकरी करनी पडती है, इस घटना का करुण चित्र देखिए—

कावरिया वरदियानी जोड, माळविया थी लाई रे।
हेणीवाळा मारवियो, कादा म कळियेयो रे।
हाथ मे कडियाली डाग, खडियो बाधण टेटी,
पराई चाकरी ओ लागे, करडी छाती ओ।[4]

उस किसान को पराई चाकरी बहुत कष्टप्रद लगती है, किन्तु विवशता है, क्या किया जाए।

(ख) व्यापार

लोकगीतो मे व्यापार का भी व्यवसाय के रूप मे चित्रण मिलता है। इस

1. सकलित
2. संकलित
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 6), पृ० 209
4. नवोहमको, पृ० 95

अन्तर्गत विभिन्न व्यवसायो का उल्लेख लोकगीतो मे उपलब्ध है। बजाज, बनजारा, मणिहारा, सुधार, दरजी, पीजारा, मोची, सुनार, कदोई आदि मे व्यवसायो का चित्रण अनेक लोकगीतो मे प्राप्त होता है।

बजाजी—वस्त्र का व्यापार करने वाले को दोनों प्रान्तों में बजाजी कहकर सम्बोधित किया जाता है। यहा एक राजस्थानी नायिका कल्पना करती है कि उसका 'हरियाला वर' बजाजी की हाट पर जब पडला (वस्त्र आदि) क्रय करेगा तब वह भी वहा उपस्थित रहेगी—

> अब हरियाळो बनों बजाजी री हाटिया,
> पडलो मोलावत हाजर रेऊवो बोद राजा,

गुजराती नायिका ओतरा का भाई, बजाजी की हाट पर पहुच कर उसे जगाता है और कहता है "भाई बजाजी तुम अपनी दुकान खोलो और भारी मोल की साडिया दिखाओ"। यथा—

> ओतरा नो वीरो बजाजी सूतो तो बजाजी जगाडियो।
> भाई बजाजी अब उघाड, साडीओ लावे भारे मूल नी।[1]

गुजराती गीतो में बजाज के पर्याय रूप म 'दोशी' का उल्लेख किया गया है। यथा—

> लाडली तारा देश मा दोशीडे माड्या हाट।
> लाडो बसावजे चूदडी रे, अने लाडडी ने पैरवा जोग[2]। एव
> बेनी! दोशीडा न हाटे घोडो छलकियो रे,
> बेनी घरचोळां बसावता लागी वार रे।[3]

एक अन्य गीत मे बजाज को 'भारतिया' कहा गया है जिसकी दुकान मे 'भारत'[4] (बहन के लिए किसी विवाह आदि के अवसर पर भाई की ओर से दिये जाने वाले वस्त्राभूषण) की बिक्री होती है। भाई अपनी बहन के यहा भात भरने जाता है तो 'भारतिये' की दुकान से 'भारत' क्रय करता है—

> गया छा, ए बाई, भारतिये री हाट
> थाने भारत काई मोलवा जँ।[5]

---

1 मवोहलको, पृ० 201
2 चूदडी (भाग 1) 110
3 वही, पृ० 60
4 भात' शब्द का प्रयोग आजकल इसी अथ मे होता है, जो मध्यमाक्षर लोप' की प्रक्रिया की देन जान पडता है।
5 राजस्थानी लोकगीत—स० क्षय, पृ० 212

बणिक की हाट से भी चूंदडी खरीदने का उल्लेख एक गुजराती गीत मे देखा जा सकता है—

> सामी बाजारे वाणिडानां हाट छे,
> चूंदडी मोरें 'वा साचरियो जी ।[1]

बजारे—प्राचीन काल मे जब यातायात के साधनो का अभाव था तब पशुओ पर बिक्री की विभिन्न वस्तुए लादकर देश-देशान्तर मे व्यापार करने वालो को बजारा कहते थे। अभी भी ये लोग दूरस्थ गावो मे यदा-कदा दिखाई देते हैं। राजस्थान एव गुजरात के लोकगीतों मे इन बजारो के व्यापार का बहुत उल्लेख मिलता है।

एक राजस्थानी लोकगीत मे कोई बजारिन जब अपने बजारे को विदेश व्यापार करने के लिए जाने को कहती है, तब वह कहता है कि हे लोभी बजारिन ! दूसरों के पल्ले दाम हैं किन्तु मेरे पास तो खोपरे (नारियल) हैं, यथा—

> विणजारा ओ लोभी और दिसावर जाय ।
> तन्ने बैठ्या ना सरे, बिणजारा ओ ।
> बिणजारी ए लोभण औरा रे पल्ले दाम,
> म्हाने तो पल्ले खोपरा, बिणजारी ए ।[2]

एक गुजराती गीत मे जब बजारा टाडा (विक्रय के लिए सामग्री) लादकर एक ग्राम मे पहुचता है, तब एक स्त्री उससे पूछती है कि भाई बजारे, तेरे टाडे मे क्या-क्या है ? बजारा उत्तर देता है कि मेरा नौलाख का टाडा है, यथा—

> भाई रे विणजारा तारी शीशी रे पोठ्यु ?
> भाई रे भाई अमारी नवलखी पोठ्यु ।[3]

बिणजारा अथवा बनजारा (बजारा) शब्द आरम्भ से ही व्यापारी के लिए प्रयुक्त होता था। यातायात के साधनो के विकास के बाद भी जो लोग गाव-गाव सामान लेकर घूमते रहे होंगे उनके लिए बनजारा शब्द फिर रूढ़ हो गया।

सुनार—राजस्थानी के एक 'बन्ना' गीत मे विवाह के अवसर पर नायिका सोचती है कि जब वर आभूषण क्रय करने के लिए सुनार या सोनी की हाट पर जाएगा तब वह भी उपस्थित रहेगी—

> अब हरियाळो बनो सोनीडा री हाटियां
> गेणलो मोलावत हाजर रेऊ वो ।[4]

---

1. रंढियाळी रात (भाग 3), पृ० 104
2. राजस्थानी लोक लहरी (भाग 1), पृ० 19
3. चूंदडी (भाग 1), पृ० 56
4. सकलित

राजस्थानी वर की भांति गुजराती वर भी सोनी की हाट से अपनी पत्नी के योग्य झूमणा (कान का आभूषण) खरीदता है—

> लाडडी तारा देश मा सोनीडे माड्या हाट
> लाडडो बसावे झूमणा रे, अेनी लाडडी ने पैरवा जोग रे ।[1]

दोनो प्रान्तो के विवाह गीतो मे सोनी की दुकान पर वर के द्वारा बहू के लिए विभिन्न आभूषण क्रय करने का उल्लेख मिलता है।

भात भरने के लिए भाई जब बहन के यहा जाता है तब वह सोनी से बहन के लिए विविध आभूषण क्रय करके ले जाता है। एक गीत मे बहन स्वय कहती है कि हे भाई, तुम मेरे लिए कानो मे पहनने के लिए पत्ते लाना और कुण्डल स्वय बैठकर बनवाना—

> वीरा, म्हारे रे काना ने पत्ता लाज्यो
> म्हारा रे कुण्डल बैठ घडाज्यो ।[2]

कही कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि वह बाई जी (ननद) के लिए हार लेकर चलेगी—

> लेस्या जी, पना मारू म्हें बाई जी खातर हार ।[3]

एक गीत मे गुजराती भाई बहन के यहा देर से भात लेकर पहुचता है तो बहन को स्पष्टीकरण देता हुआ कहता है कि सोनी की दुकान पर 'झूमणे' क्रय करते हुए उसे देर हो गई—

> बैनी ! सोनीडा ने हाटे घोडो हलकियो रे
> बैनी ! झूमलणां वसावतां लागी वार रे,
> भामेरा वेळा हवे थाशे रे ।[4]

सुथार—सुथार या खाती या बढई के यहा से विभिन्न अवसरो पर लकडी से बनी वस्तुओ के क्रय करने का उल्लेख लोकगीतो मे उपलब्ध है। एक राजस्थानी गीत मे विवाह के अवसर पर वर एव वधू के बैठने के लिए बाजोट (चौकी या पट्टा) बना लान का आदेश किसी सुथार को दिया जा रहा है—

> घडल्या रे खाती रा बेटा बाजोठ्यो
> *जा बैठला ए ज कुवार, करो भूवा बाई आरत्यो ।*[5]

---

1. चूदडी (भाग 1), पृ॰ 110
2. राजस्थानी लोकगीत—सं॰ वय, पृ॰ 215
3. वही, पृ॰ 226
4. चूदडी (भाग 1), पृ॰ 60
5. राजस्थानी लोकगीत—डॉ॰ दाधीच, पृ॰ 56

गुजराती गीत मे भी ऐसा ही वर्णन है—

सुतारी ना वेटडा वीर तने बीनवु रे
रुडो बाजोठियो घडी लाव
परणे सीता ने श्री राम ।[1]

एक राजस्थानी माता अपने बालक के लिए गाडुला (गाडी बच्चों के खेलने की) बना लाने का आदेश किसी खाती को दे रही है—

सुण-सुण रे खाती रा बेटा
गाडूलो घड लाय, गाडूलो घड लाय ।
म्हारे गीगा रे मन भाय ।[2]

एक राजस्थानी गीत मे वियोगिनी नायिका का अत्यन्त भावपूर्ण चित्रण मिलता है । जब सध्या होने पर सुथारिन उस वियोगिनी नायिका के पास खाट लेकर आती है तब वह उससे कहती है कि मैं खाट का क्या करूगी ? मेरे प्रियतम के बिना ठाठ कैसा, यथा—

साझ समें दिन आथवें रे छैला, खातण लावे खाट
काई करू थारी खाट ने, म्हारे मारुडे विना किसो ठाठ ।[3]

एक गुजराती गीत मे भी सुथारी के द्वारा राजा के लिए ढोलिया (पलग) और राणी जी के लिए खाट बनाने का चित्रण मिलता है—

घडे घडे राजा जी ना ढोलिया रे,
घडे घडे राणी जी नी खाट्य राज ।[4]

तेली—राजस्थानी विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत मे जोधपुर के तेली से कहा गया है कि वह केसर, किस्तूरी और मरवो व मखतुल (सुगन्धित पदार्थ) डाल कर तेल निकाले, क्योंकि यह तेल वर को चढाया जाएगा—

सुण सुण रे जोधाणा रा तेली ।
ओ घाणी काठी केसर ने किस्तुरी
ओ मांय घालो परवो ने मखतुलो हो
ओ तेल बना रे अग चढसी ओ ।[5]

1. रढियाली रात (भाग 3), पृ॰ 47
2. राजस्थानी लोकगीत—डॉ॰ दाधीच, पृ॰ 53
3. राजस्थानी लोकगीत—डॉ॰ मेनारिया, पृ॰ 47
4. रढियाली रात (भाग 2), पृ॰ 34
5. राजस्थान भारती—अप्रेल, 1946 पृ॰ 73

गुजराती गीत मे तेली को 'घाची' कहा गया है। यहा 'गरबा' खेलते खेलते कुछ लोग घाची (तेली) के द्वार पर पहुच कर उसकी स्त्री से कहते हैं घाचीडे की स्त्री, तुम सोती हो तो उठो और हमारे गरबे के दीपक को तेल से भर दो—

अली घाचीडा नी नार। तू तो सूती होय तो जाग
माये गरबे रे रूडा दिवेल पुराव।[1]

कदोई (हलवाई)—एक राजस्थानी गीत मे प्रसूता स्त्री कदोई को सदेश भेजती है कि वह लड्डू व पेडे ले आए। लड्डू तो बच्चा खाएगा और पेडे बच्चे की मा—

जाय कदोई ने यू कहजो म्हारे लाडु पेडा लई आवँजो।
लाडु म्हारो हालर जीमसी काई पेडा जीमे हालरिया री मायजो।[2]

गुजराती नायिका के लिए भूख लगने पर उसका देवर उसके लिए कदोई को बुलाता है जिससे भाभी लड्डू खा सके—

नाना दिवरिये कदोई अणाव्यो
लाडू अमजे रे भाभलडी।[3]

दरजी—एक राजस्थानी गीत मे प्रसूता नायिका दरजी को यह सदेश प्रेषित करती है कि वह पर्दे व पट्टी लेकर आए—

जाय दरजी ने यू कईजो म्हारे जाय दरजी सा ने यू कहजो।
पडदा ने पाटी लई आय जो, म्हारे पाटी ने पडदो ले आवजो।[4]

गुजराती गीत मे भी कोई नायक दरजी से अपने अधे माता-पिता के लिए वस्त्र बना देने की बात कहता है—

भाई रे दरजी मारा वचन सुणो
आघला मा बाप ना लूगडा सीवो।[5]

कुम्हार—कुम्हार की पत्नी प्राय पुत्रजन्म के अवसर पर कलश लेकर 'प्रसूता' के यहा जाती है, यहा उसको उसका 'नेग' मिलता है। एक राजस्थानी गीत म ऐसा ही वर्णन किया गया है।

डूगर चढती बेलडी, कुमारण यू कठै जाय ?
जणी घर सूरज पूजती, कलस बदाबा ने जाय।[6]

---

1 रढियाली रात (भाग 3), पृ० 67
2 राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 49
3 नवोढ़लको—पृ० 56
4 राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 49
5 रढियाली रात (भाग 3), पृ० 10
6 राजस्थानी लोकगीत—स० डॉ० दाधीच, पृ० 49

गुजराती नायिका तो कुम्हार बस्ती मे स्वय ही जाकर वहां से मिट्टी के बर्तन क्रय कर लाती है—

> हु तो कुमार वाडे हाली
> हू तो कोडिय ने कूरडी लामी ।[1]

लुहार—राजस्थानी गीत मे कोई अभिसारिका नायिका लुहार से दीपक बनाकर लाने का आग्रह करती है—

> घडल्या म्हारा अजब लवार्‌या (लुहार) दीवलो[2]

तो गुजराती गीत मे कोई नायिका विवाह के अवसर पर लुहारी के बेटे से सुन्दर दीपक बना लाने का आग्रह करती है, क्योंकि उसके यहां श्रीराम और सीता का विवाह है—

> लुहारी ना बेटा वीर तने वीनवु रे,
> रूडो दीवलडो घडी लाव, परणे सीता ने श्री राम[3]

मनिहारा—राजस्थानी 'बन्ना' गीत मे वर के द्वारा वधू के लिए चूडा क्रय करने के लिए मनिहारे की हाट पर जाने का वर्णन मिलता है—

> बनो बजारां निकल्यो जी मणियारा री हाट,
> घुडलो मोलावे राणी ही रो जी ।[4]

गुजराती गीत में भी समान वर्णन मिलता है—

> सामी वजारे मणियाराना हाट छे,
> चुडलो हटावी ने हाल्या ।[5]

मोची—राजस्थानी 'बन्ना' गीत मे वर के द्वारा वधू के लिए मोची की दुकान से मोचडिया (जूतिया) क्रय करने का उल्लेख मिलता है—

---

1 रढियाली रात (भाग 2), पृ० 162
2 मरुभारती—जुलाई 1966, पृ० 44
3 रढियाली रात (भाग 3), पृ० 47
4 सकलित
5. रढियाली रात (भाग 2), पृ० 108

मोचड़िया मोलावे राणी रीझ रो

गुजराती गीत में भी ऐसा ही समान निरूपण है—

सामी बजारे जोडानां हाट छे,
लगन हटाका ने हाल्या ।[1]

(ग) नौकरी (चाकरी)

एक लोक प्रचलित कहावत है—'उत्तम खेती मध्यम बान, अधम चाकरी भीख निदान।' चाकरी को अधम व्यवसाय माना जाता है, किन्तु विवशतावश चाकरी करनी ही पड़ती है। एक गुजराती गीत में नायिका विदेश में दरबार की चाकरी करने के लिए जाने वाले अपने प्रियतम से कहती है कि मैं तुम्हें चाकरी करने नहीं जाने दूंगी। तुम्हें दरबार की चाकरी प्रिय है, किन्तु मुझे प्राणप्रिय हैं, यथा—

तुमने वा ली दरबारी चाकरी रे,
के अमने वा लो तमारो जीव,
गुलाबी [1] ने जावा देऊं चाकरी रे ।[2]

एक राजस्थानी लोकगीत में नायिका कहती है कि आज मेरे साजन चाकरी के लिए जा रहे हैं और उन्होंने घोड़े पर जीन कस दी है, आज मेरा भरतार उठ गया—

आज म्हारा राजन चाकरी ने चाल्या,
तो कस लियो घोडा पर जीन ।[3]

एक गीत में पति का सैनिक बनकर जर्मन व काबुल की लड़ाई में जाने का भी उल्लेख है—

थाको जायो पधारियो, जरमन (जर्मन) की लड़ाई में ।
थाको जायो पधारियो, काबल की लड़ाई में ।[4]

एक गुजराती गीत में नायिका इसलिए दुःखी है कि उसका प्रियतम बारह वर्ष की लम्बी अवधि के लिए नौकरी करने जा रहा है। वह कहती है कि मैं यह दीर्घ अवधि कैसे काटूंगी, यथा—

परण्या बारे-बारे वरहांनी नौकरी रे,
ढोला काळेगडु ।[5]

---

1 मोती संबंधी गीतों के उदाहरण भी उक्त मनिहार से संबंधित गीतों से ही उद्धृत हैं।
2 रढियाळी रात (भाग 3), पृ० 92
3 राजस्थानी लोकगीत—सं० डॉ० दाधीच, पृ० 109
4. सकलित
5. गु० लो० सा० मा० (भाग 1), पृ० 132

एक राजस्थानी लोकगीत मे नायिका कहती है कि माया का लोभी प्रियतम रेल मे बैठकर चला गया। आसपास लड्डू लुढक रहे हैं, नीद कैसे आए—

> अठवाडी पछवाडी लाडूडा घुडेला, नीद कुणी ने आवै ?
> माया रो लोभी बैठ गयो रेल्या मे, छोड गया सूती नै।[1]

(2) जीवन का अभाव

साधारणत· लोक-जीवन विभिन्न आर्थिक साधनों के अभाव से ग्रस्त है। भारतीय कृषक के लिए तो यह प्रसिद्ध है कि उसका जन्म ऋण मे होता है, ऋण मे ही वह जीवन-यापन करता है और ऋण मे ही वह मरता है। भारत की अधिकतर जनसख्या कृषि व्यवसाय पर ही अवलम्बित है। अत लोकगीतो मे कृषक जीवन के आर्थिक अभाव का चित्रण बडे ही करुणाजनक शब्दो मे किया गया है। यह अभाव जन्य निर्धनता, प्राय अकाल एव ऋण आदि के कारण होती है।

(क) अकाल के कारण निर्धनता

अकाल की स्थिति मे लोकजीवन आर्थिक सकटो से ग्रस्त हो जाता है। अन्न वस्त्र जल एव घास का अभाव होने के कारण सम्पन्न से सम्पन्न व्यक्ति भी चिन्ता-ग्रस्त हो जाते हैं। एक गुजराती गीत मे 'छप्पनिया अकाल' (सवत् 1956) के कारण पटेल जाति के कृषक की दयनीय स्थिति का मार्मिक वर्णन किया गया है। गीत मे कहा गया है कि पहले तो पटेल श्वेत रग के बैल हाका करता था किन्तु अकाल के पश्चात उसको साड ने ही सहारा दिया। उसकी पत्नी जो अब तक सोने के आभूषण पहनती थी, अकाल मे उन्हीं आभूषणों ने ही (बिक कर) सहारा दिया, यथा—

> पटेल ने हांकतो धोलिया ठाढा (बैल)
> खूटिये (साड) दीधो टेको (सहारा)
> छप्पनियो धूवक्यो (आया) भोधो तो भ्राटक्यो (टूट बडा)।[2]

एक राजस्थानी गीत मे कहा गया है कि अकाल के कारण राशन-कार्ड का प्रचलन हुआ। वहा राशन-कार्ड अकाल का पर्याय बन गया। अत नायिका कहती है—

> फेर मती आज्यो म्हारा राशनकार्ड अण भोली दुनिया मे।
> मोटी-मोटी लुगाइया का रूसग्या (सूख गया) पेट।
> फेर मती०—सकलित

(2) ऋण एव ब्याज के कारण निर्धनता

ऋण एव ऋण पर दिया जाने वाला ब्याज भी गरीब किसान की निर्धनता का

---

1 सकलित

2 गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 145

प्रमुख कारण है। ऋण लेने वाला व्यक्ति अपने आभूषण या खेत आदि गिरवी रखता है। मूल धन पर ब्याज बढ़ता चला जाता है और एक दिन गिरवी रखी हुई वस्तु डूब जाती है। अत एक राजस्थानी स्त्री ऋण को बुरा बतलाकर अपने पति को ऋण लेने से मना करती है—

ये करजो सिर मत करियो, ओ मन भरिया,
ये करजा भोत बुरा छे ओ मन भरिया।[1]

एक गुजराती गीत मे नायिका के हास (गले का आभूषण) के ब्याज मे डूब जाने का उल्लेख है—

हासडी भारी ब्याज मा डूबी।[2]

प्राय ऋण जिन कारणो से होता है उनमे मादक वस्तुओ का सेवन प्रमुख है। यह उल्लेख कई गीतो म उपलब्ध है। एक राजस्थानी गीत मे नायिका अपने पति को दिन मे सौ-सौ बार मदिरा पीने का आग्रह करती है और कहती है कि आपके मदिरा-पान का व्यय मैं अपने गले का हार गिरवी रखकर सहूगी, यथा—

दारू पीयो ये सायबा दिन म सौ-सौ बार,
थारो पीयो मे हीलसा, मैंल गले को हार,
—पीओनी दारुडी।[3]

सामन्ती परम्परा के कारण राजस्थान मे मद्यपान को अच्छा समझा जाता था इसीलिए इस उदाहरण म नायिका अपने पति के मदिरा पान के लिए आभूषण गिरवी रखने को तैयार हो जाती है किन्तु गुजराती नायिका अपने पति से मदिरा त्याग देने का अनुरोध करती है, क्योकि उसी के कारण उसका सत्यानाश हो गया है।[4] एक गीत मे बनजारे की पत्नी अपने पति के मदिरा पान के दुष्परिणाम का वर्णन करती है कि उसकी बनजारी (व्यापार) दारू मे डूब गई और साथ म सोने की अगूठी भी।[5]

एक राजस्थानी गीत म नायक अपनी पत्नी के धूम्रपान से परेशान है क्योकि वह नित्य प्रति पचास बीडी पीती है, वह उसे अदालत के द्वारा भेजी गई कच्ची कुडकी (डिग्री) बतलाता है।[6] इसी प्रकार एक गुजराती नायिका, जिसकी हसली ब्याज म ही डूब गई

1 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० स्वणलता अग्रवाल पृ० 231
2 नवोहलको, पृ० 71
3 राजस्थानी लोकगीत—डॉ० दाधीच, पृ० 177
4 दारू छोडा, दारू छोडा रा।
ओ राम, सत्यानाश थैया। —नवोहलको, पृ० 80
5 मारो बांको मेवासी वणजारो वणजारो रे।
तारी लाख टकानी वणजारी दारूडा मां डूबी रे।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 2), पृ० 47-48
6 पचास बीडी पीये रोज की, बोल बोंदणी लाऊ कटासे
भा तो काची कुडकी आगी रे। —सकलित

है अपने पति से 'गाजा' न पीने का आग्रह करती है।[1] हुक्के के कारण भी बनिये का कर्ज हो जाने का उल्लेख एक गुजराती गीत मे देखा जा सकता है।[2] मादक वस्तुओ के अतिरिक्त जुए मे भी स्त्री के आभूषणो के चले जाने का उल्लेख मिलता है।[3]

(ग) निर्धनता से उत्पन्न स्थिति का चित्रण

निर्धनता के कारण अभाव की विभिन्न स्थितिया उत्पन्न हो जाती है, कही भोजन का अभाव है, कहीं वस्त्रो का अभाव है, तो कही वस्त्राभूषण के लिए विविध कृषि-उत्पादनो का विक्रय किया जा रहा है। जीवन के लिए तीन प्रमुख अनिवार्य आवश्यकताए मानी जाती हैं—भोजन, वस्त्र एव आवास। इन तीनो से सम्बन्धित गीतो का यहा विवेचन किया जा रहा है।

(क) खाने-पीने की वस्तुओ का अभाव

आर्थिक सकट के कारण ही खाने-पीने की वस्तुओ का अभाव होता है। उन्हें पाने के लिए कभी-कभी विविध वस्तुओ को बेचना भी पडता है। जीवन के उन अभावो का चित्रण लोकगीतों मे विशेष रूप से दिखलाई पडता है। एक राजस्थानी गीत मे एक नायिका, जिसका विवाह एक बालक के साथ हो गया है, कहती है कि मैं छोटे से पति के पल्ले पड गई, अत मुझे तो नमक-मिर्च का भी अभाव है—

छोटा-सा के पानी पडगी, लूण मरच का फोडा।[4]

किसी गुजराती नायिका का जीवन भी अभावग्रस्त है। उसके घर मे खाने के लिए अन्न नही है और न ही अन्न खरीदने के लिए रुपए ही हैं, यथा—

शैना रे क्षणा लेशु, नै रुपैया शैना देशु ?
बाजरा न घेरा पावा, ते माथी क्षणा खावा।[5]

एक राजस्थानी गीत मे एक नायिका अपने निकम्मे पति को कोसती है। वह कहता है कि उससे गेहू भी मगवाये, जौ भी मगवाये किन्तु वह बाजरा खान को लाया और चने चबाने को लाया।

---

1. हांसडी वेची ने वावे गांजो मगाव्यो,
   हांसडी मारी व्याजडा मां डूबी,
   गांजो मारे न हुतो पीवो रे। —नवोहनको, पृ॰ 71
2. काको ने भतिजो, होको अकडियो में भरियो,
   वाणिये सेणमां लीधो, सोला दे पर। —वही, पृ॰ 93
3. लाल जुगारी, छेल जुगारी, पगतां तो कडलां लई गया जुगारो।
   —वही, पृ॰ 110
4. राजस्थान स्वर लहरी (भाग 1), पृ॰ 102
5. गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 7), पृ॰ 177

कस्या कसम के पाने पड़गी, रोऊ रे थारा गोढ़ां ने ।
गोऊ भी मगाया, जो बी मगाया, बाजरी लायो थाया ने ।
पण लायो चणा चबावा ने, कस्या कसम०[1]

(ग) चटोरी नायिकाएं

कुछ लोकगीतों में चटोरी नायिकाओं का भी वर्णन मिलता है।

एक गुजराती गीत देखिए जिसमें रतिलाल सेठ की हाट से सतोष (नाम) बहू गुड़ व घी लेने जाती है । वह चाटणी (चाट की आदत वाली) है। उसको गेमल भाई ने मारा। उसने जाकर अपनी सासु से शिकायत की कि उसको पीटा गया है। सासु ने यह कहा कि अरे धूर्त तुझे लकड़ी से क्यों नहीं पीटा—

अमारा गाममा, रतिलाल शेठ नी हाटडी रे,
घी गोल लेवा जाय रे सतोक वउ चाटणी रे ।[2]

एक राजस्थानी गीत में नायिका अपने पति से कहती है कि मेरी जीभ को चाट पड़ गई है, अतः मेरे लिए जलेबी लेते आइए। पति कहता है कि तुम्हारी इस जलेबी के लिए जाली-झरोखे बेच दिए, अब क्या बेचूं। तो पत्नी कहती है कि अब पोल को नीलाम करो किन्तु मेरे लिए जलेबी लाना—

म्हारी चट्टा हो गई जीभ जलेबी लेता आज्यो जी
जाली बेच झरोका बेच्या अब कई बेचोलो ?
अजी थें पोली करो नीलाम, जलेबी लेता आज्यो जी ।[3]

यहां जलेबी के लिए सब कुछ बिक गया। तो दूसरी ओर निर्धनता की चरम सीमा देखिए, नायिका कहती है कि हे पिता ! मेरे हाल बुरे हो रहे हैं, सिर पर ओढ़ना नहीं है। बच्चे-बच्ची भूखे मर गये, पेट में भूख लग रही है।

बाबलिया ! हाल बुरा है सिर पर नहीं है लूगड़ी
छोरा टाबर भूखा मरग्या, पेट में लगी भूखड़ी ।[4]

एक राजस्थानी प्रसूता अपने पति से कहती है कि मैं तुम्हारे पिता का विश्वास नहीं करती, वह पता नहीं एक का या दो रुपये का ही (अजवायण) लाए—

थारो भावो जी एक रो ई लावे, दोय रो ई लावे
म्हारो मन नहीं पतीजे हो राज, थेईज ओ केसरिया साहिब ।[5]

---

1. संकलित
2. गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 177
3. संकलित
4. संकलित
5. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० दाधीच, पृ० 46

किसी नायिका ने खाने-पीने के सुख के लिए पाच पच्चीस रुपए मे भैंस मगवाई किन्तु उसका पति अभाव की स्थिति मे उस भैंस को ही बेच आया और बेचारी के मन की रह गई—

> पाच रे पच्चीस मे भैंस मो मगाई,
> हा रे म्हारे रंगी रे मन की मन मे ।—सकलित

यही नही कानूडा को सेना मे भरती हो जाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। उससे कहा गया है कि यहा तुझे खाने को ठडी रोटी के टुकडे मिलते हैं किन्तु वहा तुम्हें बिस्कुट खाने को मिलेंगे। वहा तेरा नाम रगरूट (रिक्रूट) रहेगा। यहा तुझे फटा कुर्ता पहनना पडता है किन्तु वहा तुझे सूट मिलेंगे। यहा तेरे जूते फटे हुए हैं वहा तुझे बूट मिलेंगे, यथा—

> भरती हो जा रे कानूडा
> अठे मिलै थने हैला टुकडा, वठै मिलै बिस्कुट
> भरती हो जा रे कानूडा। थारो नाम धरियो रगरूठ।
> अठै मिलै थने फटा कुरता, वठै मिलै थन सूट।
> अठै मिलै थने फाटी पेजारा, वठै मिलेला थन बूट।—सकलित

सेना मे भरती हो जाने स तात्पर्य यह है कि उसको आर्थिक सकट के कारण यहा जो अभाव है, वे सब दूर हो जाएगे।

(क) वस्त्राभाव

निर्धनता के कारण वस्त्र क्रय नही किए जा सकते हैं। अत नायिका अपने प्रिय भाई को अपनी दीनदशा का वर्णन करती हुई कहती है कि मैं जूते के अभाव मे नगे पैरो घूमती हू और आक के पत्ते पैरो मे बाधती हू। नगे सिर घूमती हू, पीपल वृक्ष के पत्ते बाधकर—

> पगा तो वळती वीरा मू फरू, बाध्या तो आकडले रा पान।
> माथे लो मोडी वीरा मू फरू, बाध्या पीपलिये रा पान।[1]

एक गीत मे गुजराती पुत्री माता को सदेश भेजती हुई कहती है कि मेरे पीहर से प्राप्त सभी वस्त्र फट गए हैं और मेरे पीहर की मर्यादा लुप्त हो रही है अतः मेरे भाई को कहना कि वह लेने आए—

> साडला फाट्या छँ माडी, मारे घूघरे जाय छँ,
> मारा पियरियानी पडी जाय लाज रे,
> मारा वीरा ने कै जो आणा मोकळे।[2]

---

1. राजस्थानी लोकगीत—स० त्रय, पृ० 79
2. नवोहलको, पृ० 99

पीहर की चुनरी फट जाने पर राजस्थानी बेटी भी अपनी मा को सदेश भेजती है—

> चूनड फाटी ए मा पीवर की, कोई फाटी घूघट माय।
> मायड मे कइयो कोई आवे लेवण ने।[1]

घाघरा फटा होने पर भी कई गीतो मे उल्लेख है। एक गीत मे राजस्थानी नायिका अपने पति से कहती है कि मलजी! मेरी ननद बाई का विवाह है किन्तु मैं फटे हुए घाघरे से कैसे नाचू?

> हा रे मल जी नणदल बाई को व्याज मडियो,
> फाटोडे घाघरियो कीकर नाचू ओ मल जी ?[2]

गुजराती नायिका भी अपनी बहिन से घाघरा मागती है, क्योकि गूदी के (निवासी) गरासिया का विवाह है—

> बें'न, मने रे माग्यो घाघरो आल्य,
> परणे गूदी नो गरासियो रे।[3]

वस्त्र क्रय करना भी नारी के सम्मुख एक बहुत बडी समस्या है। पाली का पीला (वस्त्र) उसके देश मे बिकने के लिए आया है, किन्तु पिता के अभाव मे उसे कौन क्रय करके दे। व्यापारी घूम-घूम कर लौट जाता है, यथा—

> पाली को पीलो वापरियो कोई आयो आपणे देस, गजरो लुम्बोरो
> कोई बावल वे तो मोल करे, बोपारी ओ फर-फर जाय।[4]

(ख) उत्तम वस्त्रों का अभाव

मनुष्य महत्वाकाक्षी होता है। लोकगीतो मे कही-कही रेशमी एव नकली रेशम से (जिसको राजस्थान मे 'सणिया' कहा जाता है।) बने वस्त्रो के प्रति भी लालसा व्यक्त की गई है। एक गुजराती गीत म नायिका रेशमी वस्त्रो के लिए मकान बेचने को तैयार है।

> उगमणी धरती नो वोपारी आयो, रेशमियो रोमाल लायो।
> ओरडा रे बेच्या, ओसरी रे बेंची, बेंची ने मारे रेशमियो रोमाल लेवो।[5]

एक राजस्थानी गीत मे स्त्री अपने पति को 'सणिया' (नकली रेशम) का साफा

---

1 मरुभारती—जुलाई 1965, पृ॰ 46-47
2. सकलित
3. नबोहलको, पृ॰ 85
4 सकलित
5 नबोहलको, पृ॰ 130

बाधने को कहती है परन्तु पति कहता है कि मैं सणिया साफा कहा से लाऊ ? मेरे पास तो शहरो का रोजगार नही है। इस पर पत्नी कहती है कि यह मेरा हार ले जाइए, इसको गिरवी रखकर सणिया साफा ले आइये—

> नही म्हारे शहरो को रुजगार वटासू लाऊ सू सणिया साफा ?
> ओलो भवर जी म्हारा गला री हार,
> हार ने मेल सणियो साफो लाओ ।[1]

इन उदाहरणो से स्पष्ट है कि सामान्य जीवन मे वस्त्रो का अभाव रहता है। वस्त्राभाव के कारण ही फटे वस्त्र पहनने पडते है अथवा पीपल के पत्तो से शरीर को ढूंकना पडता है। रेशमी वस्त्र तो विभिन्न वस्तुए बेचने पर ही उपलब्ध हो सकते है :

(ग) आवास सबंधी कठिनाई

जीवन के लिए तीसरी अनिवार्य आवश्यकता है—आवास। सामान्यतः लोक-जीवन मे जिसे जो आवास उपलब्ध होता है वह उसी से सन्तुष्ट दिखलाई पडता है। फिर भी आवास संबधी कठिनाई का उल्लेख कई गीतो मे उपलब्ध है। एक राजस्थानी लोक-गीत मे प्रवासी प्रियतम को लौट आने की प्रार्थना करते हुए नायिका कहती है कि घर पर छप्पर पुराना हो गया है। अब इसकी छत टपकने लगी है, तुम्हारी आशा लग रही है लौट आओ—

> छप्पर पुराणों भंवर जी पड़ गयो जी
> कोई टपकण लाग्या ए जी जूण
> अब घर आवो आसा थारी लग रही जी ।[2]

एक गुजराती नायिका भी अपने प्रियतम से कहती है कि मार्ग मे ईंटें पडी हैं, एक महल बनवा दो। उस महल मे हे रसिया ! बारह सौ बारी (खिड़की) एवं तेरह सो जालियां, लगवा दो, यथा—

> रसिया ईंट पडी मारगडे, मोल पणावजो रे लोल
> रसिया बारसें बारीउं ने तेरसें जालिया रे लोल ।[3]

पहले उदाहरण मे प्रियतम के अभाव मे घर की छत के टपकने का उल्लेख है तो दूसरे मे महल की अभिलाषा व्यक्त हुई है। किसी के महल व दोमजिले-भवन हैं तो किसी की टूटी-टपरी, परन्तु इस टूटी-टपरी में ही नायिका सन्तुष्ट है।[4]

---

1. सकलित
2. राजस्थानी लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 130
3. रढियाली रात (भाग 2), पृ० 172
4. ए महल मालिया थारे
   थारी बराबरी म्हें करां से कोई टूटी टपरी म्हारे ।
   —राजस्थानी लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 68

(घ) आभूषणों का अभाव

नारी हृदय मे आभूषणो के प्रति स्वाभाविक प्रेम होता है । किन्तु निर्धनता के कारण आभूषण बनाना सभव नहीं, अत नारी की इस हार्दिक इच्छा की अभिव्यक्ति भी लोकगीतो मे हुई है ।

एक राजस्थानी लोकगीत मे नायिका कहती है कि (हे प्रियतम) अपने वन मे डूखलिया (घास) बहुत है, डूखलिया को बेचकर तुम मेरे लिए बाजूबद (बाह का गहना) बनवा दो । पति कहता है कि यदि डूखलिया बेच दूगा तो भैंसो को क्या डालूगा ? यथा—

> आपणा काकड डूखलिया घणा,
> डूखलिया बेच बाजूबद घडा दे ।
> डूखलिया ने बेचूला तो भैंस्या के काई रालू ला ?[1]

अन्यत्र, नायिका कहती है कि मैं रखडी तो अपने बाप के यहा से ले आई किन्तु झूठणो (कान का गहना) की मेरे मन मे तीव्र इच्छा है ।[2] एक नायिका के मन मे लालर (आभूषण) की इतनी इच्छा है कि वह कहती है कि हे मेरे प्रियतम ! मैं उसके लिए बिलख-बिलख कर मर जाऊगी ।[3] गुजराती नायिका कहती है कि पैसे लाकर झाझरी घडाना तब मैं धम-धम करती भात लेकर आऊगी । कलना-कणबी (पाव के आभूषण) तो मेरे पास हैं, तुम खेत मे चलो ।[4] किसी गुजराती नायिका को एक पावली (चवन्नी) मजदूरी की मिली उसमे से उसने कडिया घडाई और काबियु (पैरो का आभूषण) का भी ढेर का ढेर हो गया ।[5] यहा उसे चवन्नी पगार (मजदूरी) दी गई है, अत. वह व्यग करती है ।

(3) जीवन की उपलब्धिया

लोकजीवन की आवश्यकताए अत्यन्त सीमित होती है । अत -छोटी उपलब्धिया भी वहा महत्त्वपूर्ण घटना समझी जाती है । इस रूप मे आर्थिक सम्पन्नता का चित्रण कुछ गीतो मे द्रष्टव्य है । इन गीतों मे कल्पना के अतिरेक का सहारा लिया गया है ।

एक गीत मे नायिका कमर मे बाधा जाने वाला कन्दोर बेचकर अपने नायक से

---

1 सकलित

2 रखडी तो म्हारा बाप का सू ल्याई, पीवरिया सू ल्याई ।
मैंने झूठणा री गहरी मन आवे म्हारा मारू जी । —सकलित

3 लालर ले दे रे नणदी रा वीरा मन मे लालर की ।
बिलखतड़ी मर जाऊ रे ढोला, मन में लालर की । —सकलित

4 पैसा लावो झाझरी घडाव जो, धमधम आ वीरा भात ।
कलना कणबी रे मारे छँ, तम खेतर में भाग । —नवोहलको, पृ॰ 159

5 जमादार फौजदार मुके ढेरे पगार जी रे पावली
पगार भी जा मु कडियु घडाई यु, काबियुते थई पूटा मूट ।
—गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 9), पृ॰ 86

मार्ग व्यय एकत्र करने का आग्रह करती है। पति कहता है कि हे बनड़ी ! तुम खरची-उरची क्या करती हो खरची मेरे पास बहुत है, आओ तुम तो मोटर में बैठ जाओ—

> बन्ना थारी कड़िया रो कंदोरो धरो बेच दो।
> खरची करलो अपने पास, बैठ जाओ मोटर में
> खरची-खरची काई करे ए बनड़ी, खरची घणी म्हारे पास।[1]

इसी प्रकार एक गीत में सास अपनी पुत्र-वधू से कहती है कि तुम्हारे लिए दो-दो टणके (पाव का गहना) पड़े हैं, तुम पहनती क्यों नहीं हो ? सारी दुनिया पहनती है, तुम्हारे क्या मन में है ?

> दो-दो टणका पड़िया बन्नी पेरे क्यूं नी ए ?
> सारी दुनिया पेरे बन्नी थारे काई मन में ?[2]

एक अन्य गीत में ननद के द्वारा अपनी भाभी को घूघरी लौटाने का वर्णन है। वह कहती है कि यदि वह निर्धन घर की होती तो तुम्हारी घूघरी कहां से लौटाती—

> जे म्हे होता निरधन्या घर नार थारी किस विध लाता घूघरी।[3]

गुजराती गीतों में सम्पन्न परिवार का भी उल्लेख किया गया है। एक गीत में नायिका अपने पति से कहती है कि नई हवेली अकेली खड़ी है, इसमें मन नहीं लगता है। अतः प्रिय ! हम विदेश चलें, मुझसे घर का धंधा नहीं होता—

> नई हवेली खडी अकेली जीसमें मनडा नही लगता।
> चलो पिया परदेश चलें घर का धंधा नहीं होता ?[4]

एक राजस्थानी गीत में किसी गर्भवती स्त्री का मन पहले महीने में नारंगी खाने को होता है, उसका पति नारंगी के हजार रुपये व कलियों के पूरे डेढ़ सौ रुपए देकर भी उसकी इच्छापूर्ति करता है, यथा—

> म्हारी धण नें पेलो जी मास, नारगी में मन गयोजी।
> नारगी रा लागे है हजार, कलियां रा पूरा डोढ़ से जी।
> नारगी रा दाला हजार, कलिया रा पूरा डोढ़ से जी।।[5]

(4) विविध आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण :

आर्थिक संकट के कारण विवश होकर नौकरी के लिए पुरुष को विदेश जाना पड़ता है। विदेश जाते हुए रुपयों या धन के लोभी प्रियतम को रोकने का नारी कितना

1. संकलित
2. वही
3. वही
4. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 180
5. राजस्थान लोकगीत—डॉ० मेनारिया, पृ० 6

असफल प्रयास करती है, इसका चित्रण लोकगीतो म अत्यन्त विस्तारपूर्वक हुआ है। एक गीत म नायिका कहती है कि मैं स्वय रोकड रुपया बन जाऊ। मैं पीली मोहर बन जाऊ, जब भी आपको आवश्यकता हो, आप काम म लीजिए किन्तु मुझे साथ ले चलिए—

रोक रुपैयो भवर जी म्हे बनूगी,
हाजी ढोला बण जाऊ पील पीली म्होर।
भीड पडे जद मारू जी वरत ल्योजी,
ए जी म्हारा बादीला भरतार।
पिया जी प्यारी ने सागे ल चालो जी।[1]

प्रवासी प्रियतम का आमन्त्रित करती हुई एक नायिका कहती है कि मैं मोहर-मोहर की कूकडी (सूत का धागा) कातूगी और रोकड रुपय का तार आप तो बैठकर व्यापार कीजिए—

ए जी म्हारी सास सपूती की पूत
अब घर आवो उडावँ धण कामला जी।[2]

किन्तु पति का स्वाभिमान पत्नी की कमाई को कैसे स्वीकार कर ले, अत वह कह देता है कि स्त्री की कमाई से काम नही चलता—

ए जी म्हारी घणी ए प्यारी नार
गोरी की कुमाई सू पुरो नी पडेगी।[3]

पत्नी इस पर पति से कहती है कि तुम्हारी नौकरी अस्सी टके की है, किन्तु तुम्हारी यह पत्नी तो लाख मोहर की है अत घर लौट आओ—

अस्सी टका की पिया चाकरी जी, लाख मोहर री घर की नार
लाख मोहर की घर की नार ओजी पिया नार।[4]

गुजराती नायिका जीवु जी से कहती है कि तुम्हे तो केवल रुपया ही प्रिय है—

बकराणा बच्चे तारो बगलो,
जीवु जी रुपिया थो लो लागे।[5]

एक ओर जहा पत्नी अपने पति को रोकने का आग्रह, यह कहकर करती है कि वह उसके आर्थिक सकट को अपने प्रयत्नो द्वारा दूर कर देगी, वही एक गीत में बनजारी *अपने पति बनजारे से स्वय ही विदेश जाने का आग्रह करती है—*

---

1 राजस्थान स्वर लहरी (भाग 1), पृ० 1
2 राजस्थान स्वर लहरी (भाग 1), पृ० 3
3 वही, पृ० 4
4 वही, पृ० 22
5 नवोहलको, पृ० 44

बिणजारा जो लोभी दिसावर जाय
तन्ने बैठ्या ना सरै, बिणजारा ओ ।[1]

एक गीत में नायिका अपने प्रवासी प्रियतम को बुला लाने वाले व्यक्ति को चार टके अपने गाठ से देने को प्रस्तुत है—

चार टका मू गाठ का,
जे कोई ईडरगढ जाय रे पपैया रे लाल ।[2]

एक गुजराती आदिम जाति की नारी जीवन यापन के लिए दिन भर जगल से लकड़ी बटोर कर भारा (गट्ठर) बनाती है और दूसरे दिन उसको बाजार म बेचती है। उसका यह जीवन सघर्ष ही निम्न पक्तियो म मुखरित हुआ है—

सीदरी अे बाधवानो वारो । अे तम्मर नो भारो ।
थाकी पाकी ने उघी जईय, दीजे दि वेचवानो आरो ।।[3]

अकाल पड़ने पर युवक (आदिवासी) को चोरी करने को भी विवश होना पड़ता है—

दुकाल पडिया, ला मोटियारा
मोटियारा सोरवा (चोरने) जावु, ला मोटियारा ।[4]

स्त्री का क्रय-विक्रय :

कई जातियो मे माता-पिता को रुपए देकर उनसे पुत्री खरीद ली जाती है। एक राजस्थानी गीत मे ऐसा पति अपनी पत्नी को कहता है कि तुम कहा जा रही हो मैंने तुम्हारे सौ कल्दार रुपए दिए हैं—

यॅ हो झासी री नार, कै रुपय्या लागे सौ कल्दार ।
कटी ने चाली रे ?[5]

एक गुजराती गीत मे, राजा रेवारी की स्त्री क सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है और रेवारी से कहता है कि तुम रुपए ले लो और अपनी रेवारिन मुझे दे दो, यथा—

लो रे लो रे रवारी तारा रुपैया,
तारी रवारण मुज ने आले ।[6]

---

1 राजस्थानी लोक लहरी (भाग 1), पृ० 19
2 वही पृ० 13
3 मवोहलको, पृ० 137
4 वही, पृ० 9
5 सकलित
6. गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 228

किसी मा ने पुत्री के बदले म रुपए लेकर उसको दूर देश म विवाह करके भेज दिया है तो वह पुत्री अपनी मा से कहती है कि मुझे रुपए ने दूर कर दिया है—

> माडी रे, मनै पैसे अलगी कीधी रे मा,
> रुपए अलगी कीदी रे मा।
> डेरोयो (देश) घणो दूर।[1]

इन तीनो उदाहरणों से रुपए लेकर पुत्री का विवाह करना अथवा स्त्री का बेचा जाना स्पष्ट होता है।

अन्य परिस्थितियों का चित्रण :

विवाह करने मे काफी रुपया खर्च करना पडता है। अत जिस वर्ष ओले गिर गए, खेत पडत रह गए, उस वर्ष आय न हो सकी और परिणाम स्वरूप देवर का विवाह सभव नही हुआ, अत राजस्थानी भाभी बहुत दुखी है—

> *अडोडी कैवे छै म्हारे गडा पडग्या,*
> डोल्या रा खेत पडत रेइग्या।[2]
> म्हारे अबरके तो देवर जी कुवारा रेईग्या।

एक अन्य गीत के अनुसार चरखे की कमाई से भाभी अपनी ननद का विवाह कर देती है। उसका पति बारह वर्ष के बाद घर आया तो भी एक रुपया कमाकर लाया और वह भी खोटा निकल गया। यहा नायिका व्यग कर रही है—

> चरखे री कमाई मे नणदल ने परणाई, म्हारे हिवडे हार गडाई
> बारे बरसा स खावद आयो एक रूप्यो लायो
> नणद भोजाईया परखण बैठी खोटो निकल्यो।[3]

एक गीत म बहिन अपने भाई को खेत बेचकर भात भरने का अनुरोध करती है—

> बीरा जी नागर पाटिया ने बेच भायरो लेकर आज्यो रे।[4]

स्पष्ट है कि भाई इतना निर्धन है कि वह भात नही भर सकता अत बहिन खेत को बेचकर भी भात भरने का आग्रह करती है।

अपने रूठे हुए प्रेमी को मनाती हुई एक परकीया नायिका कहती है कि मैं *अपनी नथ बेचकर तुम्हारे लिए भरकी (पुरुष के कान का गहना)* बनवा दूगी और भैंस को बेचकर तुम्हारे लिए घोडी खरीद दूगी, तुम बैठे आनन्द करो, किन्तु मरी बालकपन

---

1 गु० लो० सा० मा० (भाग 9), पृ० 84
2 राजस्थान स्वर लहरी (भाग 1), पृ० 26
3 वही, (भाग 3), पृ० 9
4 सकलित

से चली आ रही जोड़ी को मत तोडो। हे मेरे दिल के मालिक! तुम्हारे बोलने से ही काम चलेगा।

> नथली बेच थाने मुरकी घडा दू,
> भैंस बेच ल्यादू घोडी जी।
> बैठ्यां मोजा माण तोड मत बालत जोडी जी।
> बोल-बोल म्हारे दिल का मालिक, बोल्या सरसी रे।[1]

इस प्रकार लोकगीतो म जीवन की विविध आर्थिक परिस्थितियो का चित्रण किया गया है। इनम सघर्षमय जीवन के विभिन्न पहलुओ का एव आर्थिक असामजस्य का उल्लेख भी मिलता है।

राजनैतिक पक्ष

लोक मानस राजनैतिक स्थिति के प्रति सदा जागरूक रहा है। अपने जीवन मे होने वाले विभिन्न परिवर्तनो की वह उपेक्षा भी तो नही कर सकता है, किन्तु राजनैतिक परिवर्तनो आदि का वह अपने ही दृष्टिकोण से मूल्याकन करता है। राजनैतिक घटनाओं को लोक गायक जन-मन के वास्तविक प्रतिनिधि के रूप म ही चित्रित करता है। राजनैतिक परिस्थितियो का यथातथ्य चित्रण करने म जहा साहित्यकार मौन होता है, विवशता का अनुभव करता है, वहा लोक गायक प्रगल्भ एव स्वच्छन्द। वह कभी भी राज्य के प्रभाव के कारण अपना धर्म नहीं भूलता। लोकगीत राजनैतिक परिस्थितियो का वास्तविक ज्ञान भी प्रदान करते हैं।

राजनैतिक पक्ष का लोकगीतो मे जिस रूप म चित्रण हुआ है उसे जानने के लिए *निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो का विवेचन* किया जा सकता है—

(1) राजनैतिक जागृति

लोकगीतों का रचयिता सदैव बदलते राजनैतिक सन्दर्भों के प्रति सजग एव जागरूक रहा है। ठकुरसुहाती कहने का कार्य उसने कभी नही किया। वस्तुत जनमत ही लोकगीतों के स्वरा के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। निम्न उपशीर्षको के अन्तर्गत राजनैतिक जागृति का विवचन किया जा रहा है।

(क) अग्रेजों के प्रति घृणा की भावना

विदेशी शासन को लोक जीवन कभी सम्मान की दृष्टि मे नही देख सका। भारत के इन गोरे शासकों की लोकगीतो म अनेको स्थान पर हसी उडाई गई है। एक ओर जब

1 राजस्थानी लोकगीत—डा० मेनारिया, पृ० 175

हमारे देश के महान् कवि, ब्रिटेन के शासक की दीर्घायु के लिए निम्न शब्दों मे कामना कर रहे थे—

चिरायु हो, चिरायु हो, जार्जपचम हमारे ।

उस समय लोक-कवि इन शासकों की भर्त्सना से युक्त गीत गाए जा रहा था। एक राजस्थानी गीत मे अग्रेजो को भूरे मुह वाला और काली टोपीवाला कहकर लोक गायक ने उनके प्रति अपनी घृणा एव आक्रोश का प्रदर्शन किया है—

देश मे अगरेज आयो काई-काई चीजो लोयो रे ।
नारे ओ भूरिया मुहालो, काली टोपी रो ।[1]

एक अन्य गीत मे किसी अग्रेज आफिसर का चित्रण निम्न शब्दों मे किया गया है—

बाडी घोडी चढ़्यो फरगी गुरजन कुत्ती लार ।[2]

अर्थात् फिरगी बिना पूछ की घोडी पर चढ़ा हुआ है और उसके साथ 'गुरजन' (विदेशी) कुत्ती है । किसी परिनिष्ठित साहित्यकार का यह साहस नही हो सकता कि वह साहब के प्रति ऐसे अशिष्ट शब्दों का प्रयोग कर दे ।

एक गुजराती गीत मे अग्रेजों को यहा से दूर निकाल भगाने की बात कही गई है—

काढो अगरेज ने, आई थी आघो रे ।[3]

एक दूसरे गुजराती गीत मे भी अग्रेज पापी को निकालने की बात कही गई है—

सूरत प्रगणे थी, आव्या तापी रे,
तेने काढयो छे, अगरेज पापी रे ।[4]

डूग जी जवार जी वाले राजस्थानी लोकगीत मे कहा गया है कि ऐसा वीर एक ही है, यदि दो-चार होते, तो फिरगियो को मार-मार कर कलकत्ते से बाहर निकाल देते—

इसड़ो रावड एक है, रे । जै होवें दो-च्यार
मार मार फिरगिया ने कर दै कलकता के पार ।[5]

अग्रेजो ने डूगजी को कपटपूर्वक कैद कर लिया था । तब डूग जी ने उनको इस प्रकार धिक्कारा, लोक गायक के शब्दो मे—

1. राजस्थान के त्योहार गीत—परिशिष्ट, पृ० 15
2. डूग जी जवार जी का गीत
   राजस्थानी (पत्रिका) (भाग 1) राजस्थान साहित्य परिषद, कलकत्ता, पृ० 21
3. गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 82
4. वही, पृ० 82
5. राजस्थानी भाग 1

जद यू बोल्यो डूगसिंघ, थे सुणल्यो फिरगी बात,
फिटफिट थारी जामणवाली, फिटमिट थारो बाप ।
आठ गादडा मिल थे आया, कर्‌यो सिंघ सू घात ।[1]

अग्रेजो के दरबार को दुष्ट का दरबार कहा गया है और अग्रेजो को टोपीवाल कहकर लोक-कवि ने अपनी घृणा व्यक्त की है—

दुष्ट का दरबार तोडो आरे, टोपीवालो ज माठो ।[2]

अग्रेजों ने अनायास ही भारत को द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका मे झोक दि था । जहा साहित्यकार उस समय मौन बैठा हुआ, उन परिस्थितियो का द्रष्टा मात्र रह वहा लोक काव्यकार की आत्मा मौन भग कर प्रगल्भ हो उठी । उन दिनों एक गी प्रचलित हुआ था जिसकी प्रथम दो पक्तिया इस प्रकार है—

अगरेज मत कर कागद काळा रे
राज करैला जरमन वाळा रे ।[3]

कहते हैं कि यह गीत लम्बा था, किन्तु आज इसकी ये दो पक्तिया ही शेष र गई हैं । इस गीत को गाने की निषेधाज्ञा अग्रेजो ने जारी की थी और गाने वाली स्त्रि को दण्डित मुण्डित भी किया गया था ।

एक गुजराती गीत मे अग्रेजो के द्वारा सूरत के नवाब से कपटपूर्वक सूरत क राज्य छीन लेने का उल्लेख है—

नवाबे आबी ने सउ ने अपनी कीधी, तेणे दगाथी सुरत शहर लीधी,
बधी बसती लोकनी उजर कीधी शहेर सुरतमा ।[4]

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि अग्रेजों की कपटपूर्ण नीति के कारण उनके प्रा लोकमानस मे गहरे आक्रोश एव घृणा की भावना थी ।

(ख) अग्रेजों के राज्य की दुर्दशा का वर्णन

लोक-गायक ने निर्भयतापूर्वक स्पष्ट शब्दो मे अग्रेजों के शासन काल की यथा तथ्य परिस्थिति का चित्रण किया है। वह शासन के भय से चुप नही रह सका। व प्रश्नोत्तर शैली मे कहता है कि देश म अग्रेज आया, क्या-क्या वस्तुए लाया ? और उत्त देता है कि अग्रेजो ने भाई-भाई मे फूट डाल दी, यह भूरे मुह वाला बेगार साथ लाया है घोडे घास के लिए रोते हैं और बच्चे दाने को। महलो मे बैठी ठकुरानिया (क्षत्राणियां

1 राजस्थानी—प्रथम भाग
2 गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 87

अपने भाइयो को रो रहो हैं।[1] अंग्रेजो की फूट डालकर शासन करने की नीति के प्रति और बेगार के प्रति जनमानस का आक्रोश इन पक्तियो मे स्पष्ट व्यक्त हुआ है। अंग्रेजी राज्य मे देश की दुर्दशा का इससे स्पष्ट शब्दों मे और क्या चित्रण हो सकता है।

एक गुजराती गीत मे नायिका अपने पति से कहती है कि हे छैल ! अंग्रेजों ने चादी के रुपये का चलन बन्द करके, कागज की मुद्रा का प्रचलन किया। यह टोपीवाला हमारे देश मे कहा से आया है। इसने पाघ (पगडी) व फेंटा (साफा) को एकदम हटा दिया और उनके स्थान पर इसने टोपी और टोपे का प्रचलन कर दिया।[2]

अंग्रेजो के शासन काल मे कृषि उत्पादन पर कर वसूल किया जाता था और वह भी मनमाना। राजस्थान के एक लोकगीत मे उल्लेख है कि राजू रावत के खेत का 'कूता' (उत्पादन का अदाज) करने के लिए एक बनिया आया। उसन पाच मन अन्न जहा उत्पन्न होने वाला था वहा पच्चीस मन अन्न उत्पन्न होने की सम्भावना बताई। राजू ने उसको समझाया कि हे बनिये ! इतना उत्पादन नही होगा, इतना मत कूतो। परन्तु वह कहा सुनने वाला था। परिणामस्वरूप राजू ने उसको मारा। बनिये ने राजू की 'रपोट' (रिपोर्ट) टाटगढ मे जाकर बोली। चार चपरासी व सोलह फिरगी लेकर राजू को कैद करने के लिए वह बनिया आया। राजू को बन्दी बना लिया गया और ओवरी (कोठरी) मे बन्द करके मजबूत ताले लगा दिए, किन्तु राजू उन सबको मारकर कैद से निकल गए।[3]

इस गीत से यह स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी राज्य म कृषको से कृषि उत्पादनो पर मनमाना कर वसूल किया जाता था।

अंग्रेजो का राज्य आते ही प्रजा को अनेक प्रकार से दण्डित किया गया और लोगो को अपने व्यवसाय के विविध साधन बेचकर कर चुकाना पडा। गुजराती लोकगीतों मे *इस नय शासन से उत्पन्न करुण स्थितियो का चित्रण किया गया है कि अंग्रेजो ने माली को* दण्डित किया तो उसने अपनी टोकरी बेच दी और सुथार को दण्डित किया तो उसने अपना वसूला बेच दिया और कर चुकाया।[4]

एक अन्य गीत के अनुसार अंग्रेजो के किसी राज्य कर्मचारी मौजडीदार मेहता ने

---

1 देश में अगरेज आयो काई आई लायो रे ?
फूट नाखी भायां मे बगार लायो रे।
काली टोपी री, हो-हो काली टोपी री।
—राजस्थान के त्योहार गीत—परिशिष्ट, पृ० 17

2 पाघडो फेंटा लहुम्यो चतुर टोपी टोपा नु चलण कर्यू।
—गु० लो० सा० मा० (भाग 7), पृ० 148-149

3 ओवरियां मे उतार ताला जाट दीदा जी।
बगला उपर आय राजू च्यार तो चपरासी मारिया
सो'ला मारिया फरगीना, ओ सोला मारिया फरगी।
—राजस्थान के त्योहार गीत, अप्रकाशित ले० ग्रामीण गीत, स० 18

4 आंवला ने सुथारने दडयो, सुनारे कहलो बेची वेरो भरीयो।
छनुगर तु शाने आव्यो ?
—गु० लो० सा० मा० (भाग 7) पृ० 147-148

घर-घर से गेहूं वसूल कर लिये थे जिससे किसान के बच्चे भूख से रोते हैं। लोक-गायक कहता है कि मोजडीदार मेहता! इतना दुःख लोक को मत दो, यथा —

> घेर-घेर थी घेउ उघराव्या रोटला बना छोकरा रोई-रोई जाय रे
> मोजडीदार महेता आवडा दुःख नो दईअे लोक ने।[1]

अंग्रेजों के शासन-काल में होने वाले राजनैतिक अत्याचारों और करों के परिणाम-स्वरूप जनता को जो कष्ट हुआ लोकगायक ने उसका स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया है।

(2) इतिहास के द्वारा उपेक्षित वीरों से सम्बन्धित गीत

लोक-गायक सामाजिक परिवेश की प्रत्येक घटना के प्रति जागरूक रहता है। अतः वह सर्वदा इतिहास के समानांतर चलता है। प्रत्येक छोटी-बडी घटना के द्वारा सामाजिक जीवन पर पडने वाले प्रभाव को वह अपनी क्षमतानुसार समझता है, आत्मसात् करता है और फिर लोकगीतों के स्वरों के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति करता है। जिन घटनाओं को इतिहासकार तुच्छ मानकर छोड देता है अथवा शासन के प्रतिकूल होने पर भय के कारण इतिहास में सम्मिलित न करने के लिए विवश होता है, उन घटनाओं का यथा-तथ्य चित्रण लोकगायक ही करता है, क्योंकि वह शासन के प्रभाव से मुक्त होता है। लोकगीतों को यदि अलिखित इतिहास भी कहा जाए तो उचित है। इतिहासकार द्वारा उपेक्षित अथवा तोडे-मरोडे गए तथ्यों का सच्चा चित्रण यदि कहीं मिल सकता है, तो वह लोकगीतों में ही मिल सकता है।

अब यहां राजस्थानी और गुजराती वीरों एवं क्रांतिकारियों से सम्बन्धित गीतों का विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

वीरों और क्रांतिकारियों से सम्बन्धित लोकगीत

लोक-गायक ने वीरों और क्रांतिकारियों को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं। इतिहासकार जिन्हें गद्दार या डाकू कहकर मौन हो गया है, उन वीरों का वास्तविक स्वरूप, लोक-गीतकार ने लोकगीतों के माध्यम से हमारे सम्मुख रखा है, जो वास्तविक स्थिति का संकेत देने वाला है।

अंग्रेजों के शासन काल में राजस्थान एवं गुजरात ही में नहीं, देश के अन्य भागों में भी ऐसे वीर हुए, जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए, विदेशी शासन के उन्मूलन की प्राणप्रण से चेष्टा की। उन भारतीय वीरों के जीवन से सम्बन्धित गीत आज भी लोक-कण्ठ के माध्यम से अलिखित इतिहास सुना रहे हैं और आगामी स्रोत पीढियों के लिए वे प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं। राजस्थान एवं गुजरात के इन वीरों एवं क्रांतिकारियों के जीवन-दर्शन से सम्बन्धित गीतों का निरूपण यहां किया जा रहा है।

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 4), पृ० 48

(क) राजस्थान के क्रांतिकारी वीर पुरुष

विदेशी शासन-काल के दौरान राजस्थान म ऐसे अनेक वीर हुए, जिन्होने विदेशी सत्ता को चुनौती दी। राजस्थान अपनी वीर परम्परा के लिए यो भी इतिहास प्रसिद्ध रहा है। कुछ ऐसे प्रमुख वीरो का सक्षिप्त परिचय, जो लोकगीतों में अभिव्यक्त हुआ है, यहा प्रस्तुत किया जा रहा है।

(1) आउवा नरेश ठाकुर कुशालसिहजी

सन् 1857 के स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लेने वाले वीरों मे राजस्थान के आउवा नरेश ठाकुर कुशालसिहजी का नाम अग्रगण्य है। ये उस सग्राम' के नायक थे। न केवल राजस्थान बल्कि समस्त देश इस वीर पुरुष पर गौरव कर सकता है। आपके नेतृत्व मे इस सग्राम मे भाग लेने वाले मारवाड, आसोप, गूलर, आलणियावास, लाबिया, रूपनगर, लसाणी, आसिन्द आदि स्थानो के वीर क्रातिकारी राजा भी थे। इन वीरो ने सकल्प किया था कि वे अग्रेजो को देश से बाहर निकाल देंगे। अपने सकल्प की पूर्ति के लिए इन्होंने अपने प्राणो का उत्सर्ग किया। इतिहास इन्हें यथोचित सम्मान न दे सका, किन्तु लोक मानस इनकी उपेक्षा कैसे करता। आज भी होली के अवसर पर चग के स्वरो मे स्वर मिलाकर इन वीरों को जनमानस भाव-सुमन अर्पित करता है। आउवा ठाकुर के भव्य रूप का चित्रण एक लोकगीत मे देखिए—

> ए आउवाळो अनडो रे ठाकर
> बैठो-बैठो मूछया मे बल गाले रे।[1]

आउवा ठाकुर कुशालसिहजी युद्ध की व्यवस्था कर रहे हैं। वे अपने भाइयो को इस मरण त्योहार पर आमन्त्रित कर रहे हैं—

> एक तो नगारो म्हारो भाईया मे बाजे ओ
> दूजो नगारो ठेठ बाजे ओ। झगडो आदरियो।
> भाईयो भावे तो भाया वेगा आज्यो रे। मरणो हालरियो।
> केसर न कुसुम्बो रग कडावा मे घोळो रे।
> राठोडो रा रूमाल्या रगाई लिज्यो रे। मरणो हालरियो।[2]

उन्हान सबको सन्देश भेजा कि मरण त्योहार पर यदि आप लोगो को बन्धुत्व प्रिय हो तो शीघ्र आना। यह सन्देश उन्होंने अपन भाई-बन्धुओ को भिजवाया और साथ ही केसर व कसुम्बा रग घोलने को दे दिया। केसरिया रग की पोशाक तो राजस्थानी

---

1 राजस्थानी लोकगीतो के विविध रूप, पृ० 13
2 वही, पृ० 14

वीर मरण-त्योहार पर ही पहनते हैं ।[1]

आउवा ठाकुर के युद्ध का चित्रण निम्न गीत मे देखिए—

ढोल वाजे, थाली बाजे, भेळो बाजे वाकियो ।
झूझे आउवो । न ओ झूझे आउवो ।
आउवो मुलकां मे थावो, के झूझे आउवो ।[2]

आउवा ठाकुर की अग्रेज विरोधी विचारधारा के साथ समस्त जनमानस था । सैन्य सगठन के लिए जब वे एक बार मेवाड की ओर गए थे, तब कोठरया गाव मे उनका भव्य स्वागत किया गया था और मोतियो के थाल भरकर उनका अभिनन्दन किया गया था, यथा—

वाकडली मूछो को ठाकर कोठूरया मे आयो रे ।
अगरेजो रा दुसमण ने मेवाड बदायो रे, क झगडो झेलियो ।[3]

तदुपरात आपने अंग्रेजों के साथ जमकर युद्ध किया । यद्यपि वे विजयी नहीं हो सके, परन्तु उनका यह बलिदान आगामी स्वाधीनता-सग्राम की नींव का पत्थर हुआ, जिस पर अंकित उनकी कीर्तिगाथा युगो-युगो तक न केवल राजस्थान के निवासियों को, बल्कि सम्पूर्ण भारतवासियों को, देश प्रेम एव स्वाधीनता के महत्त्व का पाठ पढाती रहेगी और वीरों को सदा-सर्वदा मातृभूमि की रक्षार्थ मर-मिटने की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी ।

(2) डूग जी जवार जी

डूग जी जवार जी भी राजस्थान के स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानी थे । आपका पूरा नाम डूगरसिंहजी था, बठोठ राज्य के आप जागीरदार थे । जिस समय राजस्थान के महान राजा-राजाओं ने अग्रेजों से सधि कर ली उस समय मे स्वाभिमानी वीर क्रांतिकारी बन बैठे । आपके जीवन से सम्बन्धित एक पूरा लोक खण्ड-काव्य है, जिसको रावण-हत्थे पर पेशेवर गायक भोपे घर-घर गाते हैं । यह लोक-काव्य स्वाधीनता-सग्राम का एक अलिखित अध्याय है । जो भोपो की सारगी के स्वरों म स्वर मिलाकर आज भी डूग जी जवार जी की आत्मकथा सुना रहा है । आपने अग्रेजो की छावनी नसीराबाद मे अग्रेजो के खजाने को लूटा था, यथा—

---

1. देखिए—(क) शोध-पत्रिका, जनवरी, 65 होली के लोकगीतों में जन क्रान्ति सबधी गीत—लेखक स्वय
   (ख) समिति वाणी—सितम्बर, 64, लोकगीतो म क्रान्ति के स्वर—लेखक स्वय
   (ग) मधुमती—(1) सूरजमल चोहान, दिसम्बर, 1965, लेखक ग्रामीण ।
   (2) डा० कुलासिंह, सितम्बर, 1966, लेखक स्वय ।
2. वही, पृ० 15
3. वही, पृ० 16

लूटा खजाना अगरेज रा आवे मुफ्त का माल
बाजण दो तलवार भरोसा राम का ।

डूग जी का दृष्टिकोण समाजवादी था। अत लूट के माल को जनता मे बटवाने के लिए उन्होंने लोटिया जाट को आदेश दिया था कि पहले इस माया को प्रजा मे बाट दो, क्योंकि इस काया के तो कोयले होने वाले हैं और यह माया अन्त मे धूल बनने वाली है, यथा—

पैला तो माया लोटिया दे प्रजा मे बाट ।
काया का होमी कोयला, माया की होसी धूल ।।

यदि डूग जी को समय पर आर्थिक, नैतिक एवं सैनिक सहायता मिल जाती तो वह अवश्य ही अपने सकल्प को पूर्ण कर पाते, किन्तु अंग्रेजो की कूटनीति के कारण डूगजी, अपने साले की सहायता से बन्दी बना लिये गए और अंग्रेजो को देश से बाहर निकालने के अपने सकल्प को हृदय मे लिये हुए ही वे स्वर्ग सिधार गए। डूग जी का सकल्प था—

मार फिरगी ने काढू कलकत्ता के बार ।[1]

(3) अन्य क्रांतिकारी वीर

सूरजमल चौहान अंग्रेजी राज्य के आरम्भिक दिनो मे उनके विरुद्ध लडने वाले वीर, योद्धा एव क्रातिकारी थे। उन्होंने अंग्रेजो की अधीनता कभी स्वीकार नही की। बात यह थी कि ईडर (जोधपुर) के राजा की पाच राणिया मृत राजा के साथ सती होना चाहती थी। अंग्रेज रेजीडेंट ने उनको सती न होने का आदेश दिया। चाहते तो सभी यही थे कि उनको रोका न जाए, किन्तु साहस किसी मे नही था। सूरजमल ने आगे बढकर सतियो को सती होने मे सहायता दी और वे सती हो गईं। इसी बात को लेकर सूरजमल का अंग्रेजो से युद्ध हुआ। सूरजमल की प्रशस्ति में अनेक दोहे व गीत राजस्थान मे गाए जाते हैं। यहा केवल दो दोहे उद्धृत किये जा रहे हैं—

मगर पचीसा माय रूक बजाई रागडे ।
सतिया करन साथ, अगरेजों सु जा अडे ।।

(पच्चीस वर्ष की अवस्था मे वीर सूरजमल ने सतियो की सहायतार्थ अंग्रेजों से युद्ध किया।)

एक दूसरे दोहे मे कहा गया है कि सूरजमल ने अंग्रेजो की धाणी ही करके रख दी—

गोरा सिर घमसाण, आया जद अगरेज रा।
गोरा हुदा धाण, सखरो काढियो सूजडा ।[2]

1. राजस्थानी (भाग 1)
राजस्थानी साहित्य परिषद, कलकत्ता, पृ॰ 21 से 44
2 राजस्थानी लोकगीतों के विविध रूप—पृ॰ 17

एक अन्य वीर रतनसिंह मोढा उमरकोट या अमराणे के राणा के छोटे भाई थे। सन् 1857 ई० मे आपने भी अग्रेजो के विरुद्ध युद्ध किया था। अग्रेजो ने आपको धोखे से पकड लिया और मृत्यु-दण्ड दिया। आपके साथ भी लोक-मानस था अतः जनता ने निम्न गीत द्वारा उनको अमर कर दिया—

अमराणे म हो घोर अधार हो जी हो।
बिलखता न लागे के मेहल माळिया रे।[1]

अग्रेजो की प्रभुता स्थापित होने पर उन्होंने खिराज (खिरणी) अथवा कर वसूल करना आरम्भ कर दिया। नाथूसिंह देवडा (भटाणे के जागीरदार) ने अग्रेजो को कर (खिरणी) देना अस्वीकार कर दिया। इस पर युद्ध हुआ और वे अनेक गोरो को मारकर अन्त मे वीरगति को प्राप्त हुए। एक लोक-गीत मे देवडा जी के इस सकल्प और इसी घटना का वर्णन मिलता है।

खिरणी भरू तो जरणी परी लाजे रे, नाथूसिंह देवडा
पाच ने पच्चीस ये तो गोरा भरा मार्‌या।[2]

भरतपुर के राजा रणजीत सिंहजी ने जसवन्तराव होल्कर को शरण दी थी, इसीलिए उनको अग्रेजो से युद्ध करना पडा। लोकगायक ने इनके इस युद्ध की कथा को निम्न गीत द्वारा अमर कर दिया है—

आछो गोरा हटजा राज भरतपुर कोरे
भरतपुर गढ बाको किलो रे बाको, गोरा हट जा।[3]

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि इन क्रातिकारियो के साथ जनमानस था, इसलिए जनगायको ने इन वीरो को लोकगीतो मे अपेक्षित सम्मान दिया।

(ख) गुजरात के क्रातिकारी वीर पुरुष

गुजरात मे भी अनेक क्रातिकारी वीर पुरुष हुए। गुजराती लोकमानस ने भी राजस्थानी जनता की भाति ही इन वीरों की स्मृति मे गरबा या रासडा गीतो का निर्माण किया, जिनको वहां अब तक गाया जाता है। यहा गुजरात के प्रमुख क्रातिकारी वीरो से सम्बन्धित कुछ गीतो का सक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है—

मल्हारराव गायकवाड

श्री मजुलाल मजुमदार ने आपका परिचय देते हुए लिखा है—

---

1. राजस्थानी लोकगीतों के विविध रूप, पृ० 29
2 राजस्थानी लोकगीत—सं० रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत, पृ० 203
3. वही, पृ० 187

वडोदा के महाराजा मल्हारराव गायकवाड को 22 अप्रैल, 1875 के दिन पदच्युत किया गया। वडोदा की प्रजा म इस घटना से असन्तोष फैल गया। इस क्रातिकारी तथा करुण प्रसग न इस गरबे को जन्म दिया है।[1]

श्री मजुमदार ने मल्हारराव गायकवाड से सम्बन्धित जो गीत दिया है, उसमे लोकगायक कहता है—हे मल्हारराव ! तुम दातुन करते जाओ ? किन्तु मल्हारराव उत्तर देता है कि मैं दातुन वाडी मे करूगा। फिरगी की सेना घूम रही है, यथा—

दातण करता जाव रे, मल्लारराव। शहेर नो॰
दातण करशु वाडिये रे फरती फारगी नी फोज रे
मल्लारराव। शहेर नो॰[2]

दूसरे गीत मे मल्हारराव को अग्रेजो ने बन्दी बना लिया, उसका चित्रण किया गया है—

कैंदी बन्यो रे भूपाल, मलारराव कैदी बन्यो रे
लागी पकडता न धार, मलार राव कैदी बन्यो र।

वन्दी बनाने के पश्चात् नगर मे अग्रेजो की दुहाई फेर दी गई, सारी प्रजा थरथर धूजती है कि अब राव का क्या होगा, इसी से सभी लोग दु खमग्न हैं—

दुवाई फरी अगरेजनी, थरथर धू्जे लोक
थशे हवे शु रायनु, सउ माम्या अतीशे शोक-मलारराव।[3]

मल्हारराव गायकवाड की शृखला म अनेक क्रातिकारी वीर हुए जिन्होंने अग्रेजो के शासन मे होने वाले अत्याचारो के विरुद्ध युद्ध ठान लिया। पकडे जाने तक या मारे जाने तक, ये बराबर युद्ध करते रहे। इस शृखला के प्रमुख क्रातिकारियो से सम्बन्धित गीतो का विवेचन यहा किया जा रहा है।

गुजरात म इन वीरो को बहारवटिया या बहाणवटी कहा जाता है। श्री जोरावर सिंह जादव ने गुजराती लोक साहित्य माला भाग पाच म 'बहारवटियाना रासडा' शीर्षक से क्रातिकारियो के जीवन से सम्बन्धित कई गीत प्रस्तुत किए हैं।

वालो नामोरी नामक क्रातिकारी से सम्बन्धित गीत म पहले नामोरी के वीर वेश का चित्रण किया गया है उसके पश्चात् उनके सकल्प का उल्लेख किया गया है—वह कहता है कि जो होना हो वह हो, परन्तु मैं भी मानूगा नही, भागने से मेरी मा लज्जित होगी—

---

1. गु॰ लो॰ सा॰ मा॰ (भाग 3), पृ॰ 7
2 वही, पृ॰ 7
3 वही, पृ॰ 8

शेजी धोळी थारी रागभा वाला, हीर मोती न बाधा।
हालो चालो ने काप मा गयो, मरवु एक जवार।
भागु तो मारी भोमक्ा लाजे, थनारी होय ते थाय।[1]

श्री जोरावरसिंह ने 'हयात खा बलूच' से सम्बन्धित दूसरा गीत दिया है। उसने शासन व्यवस्था को चुनौती दी थी। तीन-तीन राज्यों की भूमि उसके भय से कांपती थी। ननीमाल मे जाकर उसने कजी आखो वाले पाल (अंग्रेज) को मारा। बालुकड में जाकर उसने सोने-चादी की लूट की उसकी ललकार से पुलिस भाग गई और उसने चार पुलिस वालों को मार दिया—

हालो चालो ने नानीमाळ आवियो, मरायोत्या माजरियो पाल।
धरती ध्रूजावी तणक राज नी।
हालो चालो वालुकड आवियो, चलावी कई सोना रूपानी लूट रे।
पकडारो करता तो पोलिस भागिया, चार पोलीस ने कमा छे ठार।

किन्तु गोविन्दा पटेल ने हयातखा को धोखा दिया और उसको भोजन के लिए आमन्त्रित करके पालितणे पुलिस को टेलीफोन कर दिया—

रोजो मा पटेल महेमानी आदरी,
जमाड्या पूरी केरी ना रस रे,
खूटले (झूठे) पटेले खूटण आदर्यु
भगवान नावणिये तने छेतर्यो,
जई कीधो रे पालितणा टेलीफोन।[2]

जेठीभाई नामक बहारवटिया से सम्बन्धित गीत मे जेठीभाई द्वारा शासन के विरुद्ध लूटपाट करने का वर्णन है, अन्त मे कहा गया है कि जेठी भाई को लीमडी के ठाकुर ने कसुबा (मदिरा) पीने के लिए आमन्त्रित किया और उसकी दुनाली बन्दूक धोखे से लेकर छल द्वारा उसको मार डाला।

पहले रे भडाके जेठीभाई ने मारिया, रही गई छे कई हैया मा हाम रे
जेठी भाई बहादुर, आवडा ते बहार वटा न होता खेडवा।[3]

बालुभा देदा भी सरकार से बारह वर्ष तक लड़ते रहे किन्तु उन्होंने सरकार को समर्पण नहीं किया। अन्त मे उनके साथ भी छल हुआ और उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया गया। इससे सम्बन्धित गीत की पंक्तियां देखिए—

---

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 16
2. गु० लो० सा० मा० (भाग 5), पृ० 16 से 18
3. वही पृ० 19

बार बार बरस सुधी वेर वाल्यां,
न सोंपाण सरकारू ने हाथ, जाडेजा मुजना भायात।
छेतरी न (छल से) भायात ने न हो तो मार वो।[1]

इन गीतों को देखने के बाद यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इन क्रांतिकारियों की विचारधारा से लोक-जीवन सहानुभूति रखता था, इसलिए इन वीरों की कीर्ति-गाथा को, वह आज भी शत-शत कण्ठों से गाए चला जा रहा है।

ये वीर इतिहास द्वारा उपेक्षित अवश्य हैं, किन्तु लोकगीतों ने इनको अमरता प्रदान की है।

(3) राजस्थानी एवं गुजराती लोकगीतों में देश-प्रेम की भावना

लोकगीतों में देश-प्रेम की भावना की प्रचुर मात्रा में अभिव्यक्ति नहीं हुई है। सामान्य जीवन में 'देश' शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थ में किया जाता है। लोक-जीवन में देश शब्द का अर्थ अपने जन्म-स्थान से ही लिया जाता है। जन्म-स्थान के अतिरिक्त सभी स्थान सामान्य रूप से 'परदेश' समझे जाते हैं। भौगोलिक-सीमाएं एवं राजनैतिक सीमाओं के आधार पर देश न मानकर एक क्षेत्र विशेष (जिसमें जन्म हुआ हो) को ही देश माना जाता रहा है, यथा—

धीया नु क्यू दीन्हो 'परदेश'।[2]

यह उदाहरण एक राजस्थानी लोकगीत का है। सामान्य रूप से विवाह सम्बन्ध एक विशेष क्षेत्र तक ही सीमित रहते हैं, किन्तु यहां पुत्री कहती है कि मुझे परदेश में क्यों दे दिया (विवाह किया) यहां अपने जन्म स्थान से दूरस्थ स्थान को ही परदेश मान लिया गया है।

प्रत्येक मनुष्य को अपना जन्म-स्थान प्रिय लगता है और वह उसी को अपना देश मानकर वहीं के प्राकृतिक सौंदर्य से आकृष्ट होता है। एक राजस्थानी लोकगीत में नायिका अपने प्रवासी प्रियतम से अनुरोध करती है कि अपने देश में लौट चलें। जहां ककड़ी, मतीरे डटकर खाएं और खेतों में बाजरा के लम्बे-लम्बे 'हट्टे' (बालियां) तोड़ें। यही नहीं उस देश की बालू-रेत (मिट्टी) में चलकर कुश्ती लड़ें और देखें, कौन हारता है और कौन जीतता है। गीत की अन्तिम पंक्ति में जोधपुर के भव्य बाजार का वर्णन करते हुए, वह कहती है कि वहां की हाट में सुन्दर 'फुंदे' लटकते हैं, यथा—

देश मे चालो नी ढोला मत भटके,
काकड़ी, मतीरा खावां खूब डटके

1. गु० लो० सा० मा० (भाग 5) पृ० 20
2. सकलित

लाम्बा लाम्बा हट्टा तोडा बाजरा रा खेत मे,
आप दोनू कुश्ती लडा बालूडी सी रेत मे।[1]

अकाल के कारण राजस्थानी महिला अपने पति के साथ पशुओ को चराने के लिए मालवा गई, किन्तु मालवा उसको अटपटा लगता है, अत वह कहती है कि चलो देश लौट चलें—

मालहो अबराखो लागे रे चालो देश मे।[2]

गुजराती गीत की नायिका भी राजस्थानी महिला के समान ही अपने प्रवासी प्रियतम से आग्रह करती है कि अपने मुल्क चलो, वहा के मानव मायालु (स्नेही) हैं, तुम यहा की (परदेश की) माया (मोह) छोडकर घोडे पर चढ़ो और अपने मुल्क (देश) मे चलो, यथा—

आपणा मलक मा मायालु मानवी,
माया मैली ने घोडे चढो, मारा दरबार, हालो ने आपणा मलक मा।[3]

एक मेवाडी-महिला के हृदय मे मेवाड के प्रति श्रद्धा एव सम्मान की भावना का चित्रण इस प्रकार हुआ, यथा —

सोनो नी मागू, रूपोनी मागू, तावो तीन तलाक
मेवाडा रा दरसण मागू, उगतडे परभात। काई न मागू सा।[4]

एक राजस्थानी गीत की नायिका की देश-प्रेम की उत्कृष्ट भावना देखिए—मुझको अपना देश विशेष रूप से प्रिय है अत मैं विदेश किस प्रकार जा सकती हू, यथा—

वालो लागै छै म्हारो देसडो, ओ लो।
केमकर जाऊ परदेश, वाला जो।[5]

इन दोनो गीतों मे मेवाड के प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण नायिका उसको छोडकर 'परदेश' नहीं जाना चाहती है। यहां मेवाड को छोडकर मारवाड तक जाना भी परदेश जाना है। इस प्रकार देश एव परदेश शब्दो का लोकगीतो मे विशिष्ट प्रयोग दिखाई देता है। साथ ही गीतो मे व्यक्त भावना को देश-प्रेम की भावना न कहकर जन्मभूमि के प्रति मोह कहना ही अधिक तर्कसंगत होगा, किन्तु जन्म स्थान के प्रति इस मोह अथवा प्रेम को देश-प्रेम या राष्ट्र-प्रेम का प्रथम सोपान कहा जा सकता है। मेरे विचार से समस्त भारत मे विशेषकर राजस्थान और गुजरात मे पुरानी छोटी छोटी रियासतो के कारण देश शब्द भी सकीर्ण अर्थ म ग्रहण किया जाता रहा। इसलिए एक स्थानीय या क्षेत्रीय

1 सकलित
2 वही
3 मरोहुमको—पृ० 103
4 मरुभारती—जनवरी, 1965
5 परम्परा—वर्ष 1 अक 1, पृ० 171

इकाई को देश और अन्य स्थान को परदेश मान लिया गया।

निष्कर्ष

इस अध्याय के प्रथम भाग मे राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो मे चित्रित जीवन के आर्थिक पक्ष का विमर्श किया गया जिससे निम्न शीर्षक प्राप्त हो सकते हैं—

(1) लोक-जीवन मे ग्रामीण समाज का ही अधिकतर चित्रण होता है, जिसका प्रमुख व्यवसाय कृषि के साथ-साथ पशुपालन होता है, अत इनसे सम्बन्धित लोकगीत, दोनो ही प्रातो मे प्रचुर मात्रा मे मिलते हैं। इनके अतिरिक्त उस समाज मे व्यापार और चाकरी करने वालो की सख्या भी पर्याप्त है। व्यापार मे बजाजी, बजारे, सुनार, तेली, कदोई (हलवाई), दर्जी, कुम्हार, लुहार, मनिहारा और मोची के व्यवसायो का उल्लेख दोनो प्रातो के लोकगीतो मे हुआ है। जहा तक चाकरी का सम्बन्ध है, उसकी विभिन्न परिस्थितियो एव विवशताओ तथा उनके परिणामो का निरूपण भी अनेक लोकगीतो मे हुआ है।

(2) लोकजीवन के विभिन्न अभावो का चित्रण भी लोकगीतो मे उपलब्ध है। ऋण, *ऋण पर दिया जाने वाला ब्याज और अकाल के कारण अभावो के जन्म का* विशेष उल्लेख मिलता है। निर्धनता के फलस्वरूप अन्न, वस्त्र और आवास जैसी अनिवार्य वस्तुओ का अभाव साथ ही नायिका के लिए स्वाभाविक आभूषणो के अभाव का भी उल्लेख लोकगीतो मे विविधता के साथ हुआ है।

(3) अभाव के बावजूद उपलब्धियो का वर्णन भी अनेक गीता म मिलता है किन्तु इनम लोकगायक की कल्पना का अतिरेक ही अधिक है। वास्तव म लोक-जीवन अभावग्रस्त ही है।

अध्याय के द्वितीय भाग मे राजस्थानी एव गुजराती लोकगीतो मे चित्रित जीवन के राजनैतिक पक्ष पर विचार किया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि—

(1) लोकगायक राजनैतिक परिस्थितियो के प्रति सदैव जागरूक रहा है। अग्रेजी शासन को उसकी आत्मा कभी स्वीकार न कर सकी, अत उसने अग्रेजी के प्रति अपनी घृणा और विद्रोह की भावना को लोकगीतो म बडे जोर शोर से व्यक्त किया है और उनके शासन काल की दुर्दशा का भी विस्तृत निरूपण किया है।

(2) इतिहास द्वारा उपेक्षित वीरो एव क्रातिकारियो के प्रति लोकगायक ने अपनी श्रद्धा लोकगीतो द्वारा व्यक्त की है। उसने विदेशी शासन के विरुद्ध सघर्ष करने वाले लोगो को अत्यधिक सम्मान दिया है। लोकगीतों के माध्यम से लोकगायक ने अनेक ऐतिहासिक घटनाओ का यथातथ्य चित्रण किया है, जबकि इतिहासकार ने उन घटनाओ को या तो महत्व ही नहीं दिया या तथ्यो को तोड-मरोडकर प्रस्तुत किया। इस प्रकार ये लोकगीत एक प्रकार से अलिखित सत्य इतिहास है।

(3) देश-प्रेम की भावना के गीतो मे 'देश' शब्द का अर्थ जन्म-स्थान का क्षेत्र और 'परदेश' शब्द का अर्थ अन्य समीपस्थ या दूरस्थ स्थान ही लिया गया है ।

जहा तक देश-प्रेम की भावना का उल्लेख है वह इसी सकुचित क्षेत्रीय मोह से ही सम्बद्ध है, क्योंकि उस समय अपना देश विशेषकर राजस्थान और गुजरात का भाग छोटी-छोटी भौगोलिक इकाइयो मे बटा हुआ था और लोक निष्ठा भी उसी प्रकार केन्द्रित थी। देश-प्रेम का जो स्वरूप आज है, उसका सर्वथा अभाव था।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध म राजस्थानी एव गुजराती एव गुजराती लोकगीतो के कतिपय पक्षो का तुलनात्मक दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है। अब तक लोकगीतो का अध्ययन प्राय प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय आधार पर ही होता रहा है, किन्तु तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र मे यह अभिनव प्रयास है। इस अध्ययन के अन्तर्गत लोकगीतो के जिन महत्वपूर्ण पक्षो का विमर्श किया गया है, वे राजस्थान एव गुजरात के लोकजीवन की समान परम्पराओ, प्रथाओ आदि पर प्रकाश डालन मे सर्वथा सक्षम है।

सर्वप्रथम पारिवारिक जीवन के विभिन्न सम्बन्धो को रुचिकर एव अरुचिकर भागो मे विभक्त करके दोनो प्रान्ता के लोकगीतो मे चित्रित *सामाजिक मूल्यो का* उद्घाटन किया गया है। देवर-भाभी, सास-बहू, ननद-भावज, पति-पत्नी आदि सम्बन्धो के विवेचन स यह भी प्रमाणित किया गया है कि लोकगीता मे आदर्शोन्मुखी दृष्टिकोण के स्थान पर यथार्थ चित्रण की प्रवृत्ति ही प्रधान है। साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि राजस्थान एव गुजरात म इस सबध मे सामाजिक मान्यताए एव मूल्य समान हैं, जिनकी अभिव्यक्ति अनेकानेक लोकगीतो मे हुई है।

द्वितीय अध्याय म विवेच्य प्रान्तो के संस्कारो से सम्बन्धित गीतो का विवेचन किया गया है। जन्म, विवाह एव मृत्यु लोकजीवन के प्रमुख संस्कार हैं। इनसे अनेक लोकाचार जुडे हुए हैं और इन अवसरों पर विविध लोकगीत गाए जाते हैं। दोनो प्रान्तो म समान लोकाचार प्रचलित हैं किन्तु यत्र तत्र विभिन्नता भी प्राप्त होती है। *राजस्थान म विवाह के अवसर पर 'सेवरा' के गीत गाए जाते हैं किन्तु गुजरात मे* 'गजरा' के गीत। इसी प्रकार मृत्यु के अवसर पर गगोज एव मौसर के गीत राजस्थान मे प्रचलित हैं किन्तु गुजरात मे नहीं हैं। इस अध्याय मे हिन्दुओ के मृत्यु गीतो के साथ मुसलमानो के मृत्यु गीतों का भी विवेचन किया गया है जिससे शोकगीतो या मरसिया गीतो की सार्वभौमिकता स्पष्ट हो जाती है।

तृतीय अध्याय म दोनो प्रान्तो के त्योहार-पर्वों से सबधित लोकगीतो का विवेचन किया गया है। लगभग दोनो प्रान्तो मे होली, दीवाली, गणगौर आदि

त्योहार समान रूप से मनाए जाते हैं किन्तु कुछ विशिष्ट त्योहार क्षेत्रीय आधार पर भी मनाए जाते हैं, उदाहरणार्थ राजस्थान का घुडला और गुजरात का देदा एव गोधी-बावो। इसी अध्याय के दूसरे भाग मे धार्मिक गीतो का विवेचन किया गया है। दोनो प्रान्तो मे बहुदेववाद प्रचलित है। इन देवताओ को दो श्रेणियो मे विभक्त किया गया है, पौराणिक देवता और लौकिक देवता। लौकिक देवताओ मे भी दो वर्ग हैं, एक तो प्रात स्मरणीय क्रातिकारी एव बलिदानी वीर जिन्होने देश एव मानवमात्र की रक्षा के लिए अपने प्राणो को समर्पण कर दिया। वीर-पूजा की भावना इन गीतो का प्राण है। दूसरे वर्ग मे अभीष्ट सिद्धिदायक अन्य लौकिक देवताओ का वर्णन है, जो प्रतिग्राम भिन्न है। पीरजी मुसलमानो के लोक देवता हैं और रामदेवजी हिन्दुओ के। फिर भी हिन्दू एव मुसलमान समान श्रद्धा से उनकी पूजा करते हैं। इससे भारतीय जीवन का धर्म-निरपेक्ष दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त लोकजीवन मे अनेको अध-विश्वास भी प्रचलित है, जिनसे सबधित लोकगीतो का अध्ययन अध्याय के अन्त मे किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के दो भाग हैं—प्रथम भाग मे लोकगीतो मे चित्रित जीवन के आर्थिक पक्ष का विवेचन किया गया है जिसमे कृषि, पशुपालन व्यापार एव नौकरी आदि से सबधित गीतो का निरूपण है।

इन लोकगीतो मे लोकजीवन के अभावो का भी चित्रण मिलता है जिनके मूल मे अकाल, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक कारणो से लेकर मद्य सेवन और विविध ऋण आदि अन्य लौकिक कारण भी वर्णित हुए हैं।

इसी अध्याय के द्वितीय भाग मे लोकगीतो मे चित्रित जीवन के तत्कालीन राजनैतिक पक्ष का विवेचन किया गया है जिसम अग्रेजो के राज्य मे भारत की दुर्दशा और अग्रेजो के प्रति घृणा भाव का स्पष्ट शब्दा मे वर्णन किया गया है। लोकगायक ने इन गीतो के माध्यम से क्रातिकारियो के कृत्यो को भी अमर रखा है। इतिहास द्वारा उपेक्षित इन वीरा के इस स्मरण से मानो अलिखित इतिहास का वास्तविक चित्रण किया गया है। वस्तुत लोकगायक शासन के भय एव प्रभाव से सर्वथा मुक्त होते हैं। इसीलिए वे अग्रेजो के शासन काल मे उनके अत्याचारो और भारतीय प्रजा के दु खो एव अभावों आदि का स्पष्ट शब्दों मे वर्णन कर सके हैं।

अन्त मे निष्कर्ष रूप मे यह कहा जा सकता है कि राजस्थान मे गुजरात के लोकगीतो का यह तुलनात्मक अध्ययन वस्तुत बहुत रोचक एव आकर्षक है। इसके साथ ही वह विभिन्न अनुल्लिखित पक्षों के मर्मोद्घाटन की प्रेरणा भी देता है।

राजस्थान और गुजरात तो जुडवा प्रान्त है, अन्य दूरस्थ प्रान्तो के लोकगीतो मे भी लोकमानस की यह समरसता और सात्विकता सर्वत्र मिल सकती है, जो यहा सहज उपलब्ध है।

परिशिष्ट

आधार-सामग्री-सूची

(1) प्रकाशित ग्रंथ सूची

1	बयू दीनी परदेश	श्री विजय दान देथा
2	कविता कौमुदी (भाग पाचवा)	प० राम नरेश त्रिपाठी
3	गई-गई समद तलाब	श्री विजयदान देथा
4	गीत रत्न माला	सुश्री मोहिनी देवी
5	गोरी गीत सग्रह	श्री दीनदयाल ओझा
6	दोरो धीया नै सासरो	श्री विजयदान देथा
7	मरवण मादीओ	वही
8	मारवाड के ग्राम गीत	श्री जगदीश सिंह गहलोत
9.	राजस्थानी लोकगीत	रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत
10	राजस्थान के लोकगीत (भाग 1 व 2)	ठा० रामसिह, नरोत्तम स्वामी, सूर्य करण पारीक (स० त्रय)
11	राजस्थानी लोकगीत	डॉ० राम प्रसाद दाधीच
12	राजस्थानी लोकगीत	डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया
13	राजस्थानी लोकगीत	श्री गगा प्रसाद कमठान
14	राजस्थानी लोकगीत (भाग 1 से 6)	साहित्य सस्थान, उदयपुर
15	राजस्थानी लोकगीत	डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल
16	बीरो म्हारो भाई ए मा	श्री विजयदान देथा

17. गुजराती लोक साहित्य माला (भाग 1 से 12)	गु० राज्य लो० सा० स०, अहमदाबाद
18. चूदडी (भाग 1 व 2)	श्री झवेरचन्द मेघाणी
19. तुलसी विवाह ना गीतो	गु० राज्य लो० सा० स०, अहमदाबाद
20 नवोद्‌ळको	प्रो० पुष्कर चदरवाकर
21. रढियाळी रात (भाग 1 से 4)	श्री झवेर चद मेघाणी
22. हारलडा	वही

(2) अप्रकाशित ग्रंथ सूची

1. राजस्थान के त्योहार गीत	जगमाल सिंह ग्रामीण
2 राजस्थान के लोक देवता	वही
3 राजस्थान के प्रेमाख्यान	वही
4 राजस्थानी लोकगीत (भाग 2)	डॉ० स्वर्णलता अ याल
5 राजस्थानी लोकगीतो के विविध रूप	जगमाल सिंह ग्रामीण
6 राजस्थानी लोकगीत (सकलन)	स० वही

(3) पत्र-पत्रिकाए

1 मरुभारती	पिलानी (राज०)
2 परम्परा	जोधपुर
3 शोध-पत्रिका	उदयपुर
4. वरदा	बिसाऊ
5 राजस्थान भारती	बीकानेर
6 लोक कलानुसधान पत्रिका	बीकानेर
7. विश्वम्भरा	बीकानेर
8 मधुमती	उदयपुर
9. जनभारती	कलकत्ता
10 अध्ययन अन्वेषण	उदयपुर विश्वविद्याल—
11. राजस्थान यूनिवर्सिटी स्टेडिज (सस्कृत-हिन्दी)	जयपुर
12. परिषद् पत्रिका	पटना

परिशिष्ट

आधार-सामग्री-सूची

(1) प्रकाशित ग्रंथ सूची

1	बयू दीनी परदेश	श्री विजय दान देथा
2	कविता कौमुदी (भाग पाचवा)	प० राम नरेश त्रिपाठी
3	*गई-गई समद तलाव*	*श्री विजयदान देथा*
4	गीत रत्न माला	सुश्री मोहिनी देवी
5	गोरी गीत सग्रह	श्री दीनदयाल ओझा
6	दोरो धीया ने सासरो	श्री विजयदान देथा
7	मरवण मांदीओ	वही
8	मारवाड के ग्राम गीत	श्री जगदीश सिंह गहलोत
9.	राजस्थानी लोकगीत	रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत
10	राजस्थान के लोकगीत (भाग 1 व 2)	ठा० रामसिंह, नरोत्तम स्वामी, *सूर्य करण पारीक (स० त्रय)*
11.	राजस्थानी लोकगीत	डॉ० राम प्रसाद दाधीच
12	राजस्थानी लोकगीत	डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया
13	राजस्थानी लोकगीत	श्री गगा प्रसाद कमठान
14	राजस्थानी लोकगीत (भाग 1 से 6)	साहित्य सस्थान, उदयपुर
15	राजस्थानी लोकगीत	डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल
16	बीरो म्हारो भाई ए मा	श्री विजयदान देथा

17. गुजराती लोक साहित्य माला (भाग 1 से 12)	गु० राज्य सा० सा० स०, अहमदाबाद
18. चूंदड़ी (भाग 1 व 2)	श्री झवेरचन्द मेघाणी
19. तुलसी विवाह ना गीतो	गु० राज्य सा० सा० स०, अहमदाबाद
20 नवोहळको	प्रो० पुष्कर चंदरवाकर
21. रढियाळी रात (भाग 1 से 4)	श्री झवेर चंद मेघाणी
22. हालरडा	वही

(2) अप्रकाशित ग्रंथ सूची

1. राजस्थान के त्योहार गीत	जगमाल सिंह ग्रामीण
2. राजस्थान के लोक देवता	वही
3. राजस्थान के प्रेमाख्यान	वही
4. राजस्थानी लोकगीत (भाग 2)	डॉ० स्वर्णलता अ० वाल
5. राजस्थानी लोकगीतो के विविध रूप	जगमाल सिंह ग्रामीण
6. राजस्थानी लोकगीत (संकलन)	स० वही

(3) पत्र-पत्रिकाएं

1 मरुभारती	पिलानी (राज०)
2. परम्परा	जोधपुर
3. शोध-पत्रिका	उदयपुर
4. वरदा	बिसाऊ
5. राजस्थान भारती	बीकानेर
6. लोक कलानुसधान पत्रिका	बीकानेर
7. विश्वम्भरा	बीकानेर
8. मधुमती	उदयपुर
9. जनभारती	कलकत्ता
10 अध्ययन अन्वेषण	उदयपुर विश्वविद्या—
11. राजस्थान यूनिवर्सिटी स्टेडिज (संस्कृत-हिन्दी)	जयपुर
12. परिषद् पत्रिका	

13 सम्मेलन पत्रिका (लोक सस्कृति अक)	प्रयाग
14 समीक्षालोक	आगरा

गुजराती

15 स्त्री जीवन	अहमदाबाद
16 लोक गुर्जरी	अहमदाबाद

सहायक ग्रन्थ-सूची

1 चन्द सखि रा भजन	ठाकुर रामसिह व नरोत्तम स्वामी
2 जीणमाता	ठा० सौभाग्य सिह शेखावत
3 जैसलमेर के गीत	श्री व्यास चताणी हीरालाल
4 जैसलमेर सगीत सुधा	श्री बलदेव प्रसाद पुरोहित
5 जैसलमेरीय सगीत रत्नाकर	श्रीरघुनाथ सिह मेहता
6 ढोला मारू रा दूहा	ठा० रामसिह, नरोत्तम स्वामी व श्रीसूर्यकरण पारीक
7 नरसी मेहता का बडा माहेरा	श्री शिवकरण रामलाल
8 पृथ्वी पुत्र	श्री वासुदेव शरण अग्रवाल
9 पुष्करणो के सामाजिक गीत	श्री पुरुषोत्तम लाल पुरोहित
10 ब्रज-लोक साहित्य का अध्ययन	डॉ० सत्येन्द्र
11 ब्रज लोक सस्कृति	वही
12 ब्रज लोक-सस्कृति का विवरण	वही
13 बीकानेरी गीत सग्रह	श्री अगर चन्द नाहटा
14 मारवाड के मनोहर गीत	प० राम नरेश त्रिपाठी
15 मारवाडी गीत सग्रह	श्री खेताराम माली
16 मारवाडी गीत सग्रह (चार भाग)	विद्यावरी देवी
17 मारवाड़ी गीत सग्रह	श्री ओम प्रकाश गुप्ता
18 मारवाडी गीत सग्रह	श्री वशीधर जी
19 मारवाडी गीत माला	श्री मदनलाल वैश्य
20 मारवाडी गीत सग्रह	श्री ताराचद ओझा
21 मारवाडी भजन सग्रह	श्री रघुनाथ प्रसाद सिह

22 मालवी लोकगीत . एक विवेचनात्मक अध्ययन — डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय
23 राजस्थान के ग्रामगीत — डा० रामसिंह न नरोत्तम स्वामी
24 राजस्थानी लोकगीतो मे राम कथा — श्री तुलाराम जोशी
25 राजस्थानी लोकगीत — श्री सूर्यकरण पारीक
26 राजस्थानी सगीत — श्री सागरमल गोपा
27 राजस्थानी स्वर लहरी — श्री महेन्द्र मनावत
28 राजस्थान का वासन्तिपर्व गणगौर — श्री दीनदयाल ओझा
29 राजस्थानी लोक सस्कृति की रूपरेखा — डॉ० मनोहर शर्मा
30 राजस्थानी लोकनृत्य — श्री देवीलाल सामर
31 राजस्थानी लोकोत्सव — वही
32 राजस्थानी लोक सगीत — वही
33 राजस्थानी स्वरलहरी — वही
34 लोककला निबधावली — श्री देवीलाल सामर
35 लोकायतन — डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय
36 लोक साहित्य की भूमिका — डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय
37 लोक साहित्य विज्ञान — डॉ० सत्येन्द्र
38 श्री माता जी का गीत — महारानी सा० राजावत जी
39 सचित्र मारवाडी गीत सग्रह — एक जानकार, हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता
40 हाडौती लोकगीत — डॉ० चन्द्रशेखर भट्ट
41 हिन्दुओ के त्योहार — कुवर कन्हैया जू

गुजराती

42 ऋतु गीतो — श्री झवेरचन्द मेघाणी
43 एकतारो — वही
44 ओल्यो काठना पखीडा — प्रो० पुष्कर चदरवाकर
45 ककावटी — श्री झवेरचन्द मेघाणी
46 कधुमरी ककावटी — श्री गुणार जहा
47 काव्य दोहन — श्री दलपत राम डाह्या भाई कवि
48 किल्लोल — श्री झवेरचन्द मेघाणी
49 खायणा — गुजरात राज्य लोक साहित्य समिति, अहमदाबाद
50 गुजराती साहित्य — श्री के० एम० मुशी
51 गुजराती साहित्य (मध्यकालीन) — श्री अनन्तराय रावल
52 गुजराती भाषा नी उत्क्राति — श्री के[illegible]रदाम जीवराज जोशी

53	गोरमानां गीतो	श्री गुजरात राज्य लोक साहित्य समिति अहमदाबाद
54	गुर्जर नारी	श्रीमती गुणीयल देसाई
55	चदर उग्ये घालवु	प्रो॰ पुष्कर चन्दरवाकर
56	चडीपाठ नागरवा	श्री॰ वी॰ एच॰ आचार्य
57	चूड विजोगण	प्रो॰ पुष्कर च दरवाकर
ᶜ8	ढोला मारू	श्री एम॰ एन॰ शाह
59	धरती नो धक्कार	श्री मीठाभाई पलसाणा
60	*धरती नो धावण*	*श्री झवेरचद मेघाणी*
61	नगर स्त्रियो मे गवता गीतो	कवि नमद
62	परकमा	श्री झवेरचद मेघाणी
63	पर्वोत्सव तिथ्यावली	श्री गथुलाल पडित
64	पाटीदार जाति ना सासारिक रीति रिवाजो के एकीकरण	शिक्षा विभाग, वडौदा
65	भवाई सग्रह	श्री महीपत राम रूपनाथ जी नीलकण्ठ
66	मैना गुर्जरी	पुतली बाई काबारा जी
67	मदी ना पान	श्री अविनाश व्यास
68	रस किलोल	छगनलाल पड्या
69	रादलना गीतो	गु॰ लो॰ सा॰ समिति अहमदाबाद
70	लोक साहित्य	श्री झवेरचद मेघाणी
71	लोक साहित्य नु समालोचन	वही
72	लोकगीत	श्री रणजीतराय मेहता
73	लग्नगीतो	श्री रमेश पाठक
74	लग्नगीतो	श्री मनसुख सोनेजी
75	लोकपुराण कथा गीत	श्री हरिलाल मोढा
76	वागे रूडी वासली	प्रो॰ पुष्कर चदरवाकर
77	वेणी ना फूल	श्री झवेरचद मेघाणी
78	सोरठियो दूहो	श्री झवेरचद मेघाणी
79	सोरठो गीत कथाओं	
80	सोरठो सतवाणी	
81	सोरठ नु तीरे तीरे	
82	सौराष्ट्र ना खडेर मा	
83	सोरठी विहार वृट्टिया,	
84	सूरज नी साखे अने तु	
85	हालरडा	

जगमल सिंह

जन्म : 22-12-1939

अनुभव-24 वर्ष से राजस्थान एवं मणिपुर मे अध्यापन एवं शोध निर्देशन।

अन्य कृतियां : 1. राजस्थानी लोकगीतो के विविध रूप, 2.राजस्थान के त्यौहार गीत, 3. राजस्थान के लोक देवता, 4. राजस्थानी लोकगीत (सकलन) भाग 1 व 2, 5 श्री राधा-कृष्ण भजन कोश, 6. मणिपुर, 7. मणिपुर की भक्ति परम्परा, 8. मणिपुर मे हिन्दी की स्थिति, 9. मणिपुर की सस्कृति, 10. मणिपुर की लोक क्रीडाए, 11. मणिपुर की लोक कलाएं, 12. मणिपुर की लोक कथाए 13. चयानिका (सपादित) एवं 14. राष्ट्र भारती (संपादित)

सम्प्रति : *एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मणिपुर* विश्वविद्यालय, कांचीपुर-795003.